Published by Javeri Panachand Bhagubhai,
Gopipura, Surat.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the 'Nirnaya Sagar'
Press, 26-28, Kolbhat Lane, Bombay.

॥ बृहत्स्तवनावलि अनुक्रमणिका ॥

ग्रंथांक.	विषय.		कर्त्तानुं नाम.	पृष्ठ.
१२६	ज्ञवियाज्ञावधरिने ज्ञेटोज्ञगवाननेरे	जामन० स्त०	जिनकृ०	२६०
१२७	धर्मजिनेसरजगधणी	जामनगर स्त०	जिनकृपा०	२६१
१२८	श्रीसिद्धाचलज्ञेटोरेज्ञ०	स्त०	जिनकृपा०	२६१
१२९	जेसलमेरनगरज्ञलो	पोषह स्त०	समयसुंदरजी	१६२
१३०	चांदलीयासंदेसो जिनवरने०	सीमंधर स्त०	जिनहर्ष०	२६९
१३१	श्रीअइमत्तामुनिवरजूके	स०	क्षमाकल्या०	२६९
१३२	चंपानगरी अति–ज्ञली	करकंडुस०	समयसुं०	२६९
१३३	ज्ञरतजीमनमेंहीवैरागी	स०	कनककीरत०	२७०
१३४	जलजलतिमिलतीघणीरे	सीतास०	जिनहर्ष०	२७०
१३५	दमकानांहिज्ञरोसा	उपदेशस०	सुविहितसाधु	२७१
१३६	बाहूबालिचारित्र लियोरे	स०	विमलकीरति	२७२
१३७	प्रवचनअमरीसमरीसदा	सचित्त अचित्त स०	नवविमल	२७३
१३८	सकलदेवसमरीअरिहंत	१९ काउसग्गदो० स०	”	२७६
१३९	त्रिसलानंदन प्रणमीये	७ नारकीनीढा०	मुक्तिक०	२७७
१४०	श्रीगोतमस्वामीपुछाकरे	सिद्धपदवर्णन०	नय०	२८४
१४१	पहिलोअंगसुहामणोरे	१ अंगस०	विनयचंदजी	२८५
१४२	बीजोरेअंगतुमेसांज्ञलो	२ अंगस०	”	२८६
१४३	त्रीजोअंगज्ञलोकह्योरे	३ अं० स०	”	२८७
१४४	चोथोसमयायांगसुणो०	४ अं० स०	”	२८८

थुइसंग्रह

॥ अर्हं ॥

॥ अर्हंतो ज्ञानभाजः सुरवरमहिताः सिद्धिसौधस्थसिद्धाः पंचाचारप्रवीणाः प्रगुणगणधराः पाठकाश्चागमानां ॥ लोके लोकेशवंद्याः सकलयतिवराः साधुधर्माभिलीनाः पंचाप्येते सदाप्ता विदधतु कुशलं विघ्ननाशं विधाय ॥१॥ श्रीमज्जिन–कृपाचन्द्रसूरे जगति यशसा ते धवलिते, पयःपारावारं करिवरमभ्रौमं कुलिशभृत् ॥ कपर्दी कैलासं सुरवरः सुधां च मृगयते, कलानाथं राहुः कमलभवनो हंसमधुना ॥ २ ॥

सूक्ष्मसें सूक्ष्म जो गुणसंघात है उसके ग्रहणकरनेंमें विचक्षण उेर रत्नोंकी खाण समान अहो सज्जनों सर्व आपलोक सावधान होकर श्रवणकरो, कि इस बृहत्स्तवनावलिनामक अत्युत्तम ग्रन्थमें सर्वत्र पृथ्वीमंमलमें (याने) सर्वदुनियामें बहुत प्रतिष्ठाको प्राप्त करनेवाले, अत एव बहुत बमी है कीर्त्ति जिणोंकी, और विद्वानोंमें शिरोमणि ऐसे अनेक गीतार्थोंके रचे हुवे, और बहु बहुतर बोधके देनेवाले, और अत्यंत सुगम प्राचीन (याने) जूने जूने बमे बमे बहुत स्तवनोंका तथा सिज्झायोंका संग्रह इस ग्रंथमे है, इस सिवाय और भी बहुत संग्रह है, इसवास्ते हे गुणरागिसज्जनो, आपलोक इस ग्रंथकुं पढके (याने) कंठस्थ करके निर्मल ज्ञानके भजनेवाले होवो, और इस पुस्तककी प्रथमावृत्ति छपवानेंमें युगप्रवरागम श्री श्री १००० श्री श्रीमज्जिनकृपाचंद्रसूरीश्वरजीके स्वहस्तदीक्षिता शिष्या आर्या श्रीमती सौभागश्रीकी शिष्या श्रीमती महिमाश्री तथा श्रीमती जवेरश्रीके

सदुपदेशसें श्रेष्ठ है नाम जिसका, और सद्गुणोंकी रागवाली श्रीसुरतशहरमें रहनेवाली श्रीमती सुश्राविका श्रीकमलाबाईका दियाहुया आर्थिक सहायकरके औरभी जामनगरमें रहनेवाली दीक्षाग्रहणकरनेवाली श्रीमती जमावबाईका दियाहुवा आर्थिसहायककरके श्रीजैनप्राचीनपुस्तकोद्धारफंडके द्वारा छपवाइगइथी, परन्तु इस ग्रन्थकी प्रथमावृत्तिकी सर्व नकलों शीघ्रतापूर्वक निकलजानेसें और फिरभी विशेष इस ग्रंथकी मांगणी होनेसे, अत्यावश्यकता समजकर द्वितीयावृत्तिमें श्रीजैनप्राचीनपुस्तकोद्धार फंडके कार्यवाहकोंनें छपवायके प्रगट कियाहै, औरभी स्तवनादिक विशेषकरके वृद्धि इस ग्रंथमे किगइहै, इसलिये इस ग्रंथका महत् प्रमाण होनेसें द्रव्यव्यय जादा लगणेंसें किमतकरके इस ग्रंथकुं अलंकृत कियाहै,

और इस ग्रन्थके द्वितीयावृत्तिमें सहाय देकर ज्ञानभक्तिका लाभ लियाहै, उनोंके उपकारको हम अनुमोदन करतेहैं तथाहि—जं । यु । प्र । भ । श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजीके सदुपदेशसें मरुधरदेशनिवासी श्रीबालोत्तरासहरके श्रीसंघके तर्फसें रुपिया ५०० दीयेहैं, सुंदरबाइ इंदोरभूतपूर्वनिवासिनीने रु. १५० और मुनिश्रीविवेकसागरजीके सदुपदेशसें ७५ रुपिया श्रावकोने भेजेहैं, और इस ग्रंथकी मूलकाफी विक्रयके अंदाज रुपिया ५५० से हैं और इस बृहत्स्तवनावलिकी द्वितीयावृत्तिमें कुल खर्च रु० २७५० अंदाज लगणेंका संभव है शेष श्रीसंघसहायतार्थ ज्ञानभक्त्यर्थ अर्पणकर लाभ लेनेका संभवहै

औरभी सुणो इस ग्रन्थके अत्यन्त मनोहर होनेपरभी प्रमाद और विस्मृतिकरके जो प्रथमावृत्तिमें क्रम उल्लंघन हूवा था, वह भी इसद्वितीयावृत्तिमें सुधारा गयाहै, औरभी इसमे विशेष संग्रहकरके इस ग्रन्थको पहिली आवृत्तिसें विशेष रोचक बनाया गयाहै, और इस ग्रन्थके प्रुफादिकदेखनेका परिश्रम शास्त्रविशारदजैनाचार्यश्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजीमहाराज साहबने उठायाहै, सो उनोंका आभारीहैं, तथा इस बृहत्स्तवनावलीकी प्रथमावृत्तिको श्रीसंघने जेसा अपने पढनेकु ग्रहणकर दूसरी आवृत्ति छपानेका हमारा उत्साह बढाया सो हम श्रीसंघके भी आभारीहैं और आशा रखतेहैं कि जिस तोरसें प्रथमावृत्तिको अपनाया उसीतरह इस द्वितीयावृत्तिकोभी अपनाकर तृतीयावृत्ति छपानेका उत्साह बढावेगें और अपणे आत्माका कल्याण करेंगे और इस ग्रन्थकी पहिली आवृत्ति केवल ५०० छपीथी सो शीघ्र खलास होणेसें और कइ श्रावकोंकी जादा मांगणी होणेसें द्वितीयावृत्ति २ हजार नकल छपाणी पडीहै, औरभी इस ग्रन्थमें दृष्टिदोषसें विस्मृतिदोषसें मतिमोहसें छापा आदिकके दोषसें अक्षर पद कानो मात्रा वगेरा ओछा अधिका हूवा होय सो दीर्घ दर्शीयोंकुं शुद्ध करणा उचितहै, यह सज्जनोंसें नम्र प्रार्थना युग प्रवरागमश्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजीके शिष्य रत्न विद्वच्छिरोमणि ज्येष्ठान्तेवासी श्रीमान् आणंदमुनिजीकें लघुगुरु भ्राता उ. । जय सागरगणिकीहै सो श्रीमान् सज्जन पाठकवर्ग अवश्य सार्थक करेंगे, इति अभिलषामहे ॥ चिरं नन्दन्तु पाठकाः ॥ चिरं नन्दन्तु गच्छेश्वराः ॥ चिरं नन्दन्तु कौटिकगच्छेश्वराः ॥ चिरं न

न्दन्तु श्रीखरतरेश्वराः ॥ चिरं नन्दन्तु श्रीवीरशासनेश्वराः ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु लेखकपाठकयोः ॥ श्रीसद्धर्माराधनं कृत्वा कल्याणभागस्तु ॥ स्वर्गापवर्गभागस्तु ॥ सत्सौख्यभागस्तु सज्जनः ॥ भद्रं भूयात् सत्स्वाध्यायकारकाणाम् ॥ पुस्तकमिदं बृहत्स्तवनावलिनामकं आचन्द्रार्कयोः वाच्यमानं चिरं नन्दतु श्रमणादिसंघैः ॥ विक्रमसंवत् १९८४, शाके १८४९, हिजरी-सन् १३४५, ईस्वीसन्–१९२८, नन्दीवर्द्धनसंवत्सर २४९६, श्रीवीरनिर्वाणात् २४५४ फाल्गुन शुक्ल तृतीयायां तारिख २४ फरवरी मास २ शुक्रे श्रीइन्दुरनगरे ऊ । श्रीजयसागरगणिना-ऽलेखि ॥ चिरं नन्दन्तु वर्त्तमानभट्टारकाः जं । यु । प्र । भ । श्रीमज्जिनकृपाचन्द्रसूरीश्वराः खरतरगणाधिपाः चिरं प्रतपन्तु ॥ शुभं भवतु ॥ अस्य वेतनम् रुप्यकद्वयम् ॥

॥ अर्हम् ॥

(ग्रन्थाङ्कः ११)

पूर्वाचार्यविरचिता

बृहत् स्तवनावली।

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः ॥
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ समवसरन विचार गर्भित स्तवनं लिख्यते ॥

॥ (दुहा) श्रीजिनसासनसेहरो । जगगुरु पासजिणंद । प्रणमी जेहना पायकमल । आवी चौसठइंद्र ॥ १ ॥ तीर्थंकर आवे तिहां । त्रिगडो करे तयार । समकितकरणीसाचवे । एह कहुं अधिकार ॥ २ ॥ करे प्रसंसा समकिती । मिथ्यात्वी होवे मुंक । सूर्य देखे हरखे सहु, घणें अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल वीर वखाणी राणी चेलना एचाल ॥

॥ आप अरिहंत जदे आवियाजी । गावे अपछरह गंधर्व समवसरण रचे सुरवरा जी । संखेपे ते कहुं सर्व ॥ ४ ॥ आ० भुवनपतिवीसइंद्रेमिल्याजी सोलहव्यंतरसार । जोइ-सदुदश वेमाणिय जुड्याजी । चौसठ इंद्र सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥ पवनसुर पुंज परमारजेजी । भूमि योजन सम भाव । मेघकुंमर रचे मेघने जी । करीय सुगंध छिडकाव ॥ ६ ॥

आ० । अगर कपूर सुगन्ध धूपणा जी । करेय श्री अगनि कुमार । वाणव्यंतर हिवे वेगसुंजी । रचे मणिपीठकासार ॥ ७ ॥ आ० । पुहुप पंच वरण ऊरध मुखे जी । वरषे जानुपरिमाण भवणवइ देव त्रिगभोगलोजी । करय ते सुणोज सुजाण ॥ ८ ॥ आ० । रचयगढप्रथमरूपातणोजी । सोवन कांगरे सार । रविशशि रयण कोसीसको जी । कनक नो वीय प्राकार ॥ ए ॥ आ० । रतन गढ रतननें कांगरे जी । रचय वेमाणीय सुरराज । भलो त्रीजो गढ भीतरे जी । जीहां विराजे जिन-राज ॥ १० ॥ आ० । भींत ऊंची धणु पांचसेजी । सवा तेत्रीस विस्तार । धनुषसे तेर गढ आंतरो जी । प्रौढ पंचास धणु-च्यार ॥ ११ ॥ आ० । दश पंच पंच त्रिहुंगढतणी जी । पावमी वीस हजार । थाक श्रम नहीय चढतांथकांजी । एककर उच्च विस्तार ॥ १२ ॥ आ० । पंच धणु सहस पृथवी थकी जी । उच्च रहै त्रिगढ आकाश । तेहतल सहु यथा स्थित वसे जी । नगर आराम आवास ॥ १३ ॥ आ० । तोरण चिहुं २ दिस तिहां जी । नीलमणि मोर निरमाण । डुसयधणु मध्य मणीपी-ठिका जी उच्च जिणदेह परिमाण ॥ १४ ॥ आ० । च्यार आसण तिहां चिहुं दिसेंजी । मोतीयें भाक भमाल । सम विचकूण ईसाणमें जी । देवछंदो सुविसाल ॥ १५ ॥ आ० । देव डुंडुभि नाद उपदिसेजी । जिनगुणगावसीतेह । अल जिम आइ शिरऊपरें जी । गाजसी तेहगुणगेह ॥ १६ ॥ आ० ।

॥ (ढाल) सफलसंसारनी ॥ * ॥ पुवदिशि आसणें आइ

बेसे पहू । सुरकृत चौमुखरूप देखे सहू । दीपे अशोकतरु बार गुण देहथी । देखि हरखे सहू मोरजिम मेहथी ॥ १७॥ मोतियां जालि त्रिण छत्र सुविसालए । रूप चिहुं चिहुं दिसें चामरढालए । योजन गामनीवाणी श्रीजिनतणी । जगवंत उपदिशें बार परषद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणा रूपथी अगनिकूणें- करी । गणधर साधवी तिम वेमाणीय सुरी । ज्योतषी जुवणनी विंतरी स्त्री पणें । नैऋत कूंण जिनवाणि ऊजी सुणें । त्रिहुंतणा पति वायव कूंणमें जाणए । सुर वेमानीय नरनारी ईशाणए । बारह परषदा मद मछर छोरुए । जूख त्रिष वीसरे सुणेंकरजोरुए ॥ १९ ॥ पूठ जामंरुल तेज प्रकास ए । जोयण सहस धज ऊंच आकास ए । ऊलहले तेज धर्मचक्र गगनें सही । महकसहु वारणें धूपधांणासही ॥ २० ॥ वाहण वहील सहुधरीय पहिले गढै । होइ पग चारि नर नारि ऊंचा चढे । जिनतणी वाणी सुणी जीव तिरजंच ए । वैर तजि बीय गढ रहे सुख संचए ॥ २१ ॥ पुण्यवंत पुरष ते परषद बारमें । सुणें जिन वाणि धन- गणय अवतारमें । चौविह देव जिण देव सेवा रचै । मणिमयी मांहिली प्रोलमांहे वसे ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावी चौ जाणीयें । विदिसि चौकूण दोइ दोइ वखाणिये । आठ जिहां वावी जलअमृत जेम ए । स्नान पानें वपु निरमल हेमए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अपराजिया । मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया । तुंबरु पुरुष खट्वंग अर्चिमाल ए । रजत गढ प्रोलना एह रख- वालए ॥ २४ ॥ पहिल त्रिगडो न हुवे जिण पुरग्राम ए । देव महर्द्धिकरचे तिणठामए । करण वारवार नहीं कारण कोईए ।

आठ प्रातीहारज ते सही होइए ॥ २५ ॥ जिणसमवसरणनी रिद्धिदीठी जीये । तेह धनधन्य अवतार पायो तिये । पास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो । हिव मुझ ताहरो सुद्धदरसण हुज्यो ॥ २६ ॥

(कलश) इम समवसरणें रिद्धिवरणें सहु जिनवर सारखी । सरदहै ते लहै सुद्ध समकित परम जिन धर्म पारखी । प्रकरण सिद्धांत गुरू परंपर सुणी सहु अधिकार ए । संस्तव्यो षासजिणंद पाठक धर्मवर्द्धनधारए ॥ २७ ॥ इतिश्री समवसरण विचार भाषा गर्भित स्तवनं ॥

अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनम् ॥

॥ ढाल बेकर जोडी तांम ए चाल ॥

रिषभानन वर्धमान । चंद्रानन जिन । वारिषेण नामे जिना ए ॥ १ ॥ तेहतणा प्रासाद त्रिभुवन सासता । प्रणमुं बिंब सोहामणाए ॥ २ ॥ चेईहर सगकोडि लाख बहुतर । चेईय प्रतिमा सो असीए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोडि । साठ लाख सुंदर । भुवनपती मांहि मन वसीए ॥ ४ ॥ बारे देव लोक प्रासाद चौरासी लाख । सहस छिन्नूनें सातसैए ॥ ५ ॥

(ढाल आव्यो तिहां नरहर ए चाल ॥)

हिवे नव ग्रीवेकै पंचानुत्तर सार । चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जांण । अडत्रीस सहस सतसाठ अछे गुण खांण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंडल रुचक वखांण । चउ चउ चेईहर साठ सवे त्रिहु ठांण । इकसो चौवीसे गुण प्रतिमा चिहुं नाम । चारसे चालीसा सात सहस प्रण

माम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसै सोलस कुलगिरि तीस । मेरूवन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस । मानुषोत्तर परबत च्यार च्यार इखुकार । ऐसो अतिसुंदर वक्षसकार मझार ॥ ८ ॥

॥ (ढाल ३) ॥

दिग्गजगिर चालीस । असीद्रह सुजगीस । कंचन गिर वरुए । एक सहस धरुए ॥ ए ॥ वृत्त दीरघ वैताढ्य । वीस सत्तरसो आढ्य । सत्तर महा नदीए । पंच चूला सदीए ॥ १० ॥ जंबू प्रमुख दसरूक्ख । इग्यारेसै सत्तर सुक्ख । कुंरू त्रण सय असी ए । वीस जमग वसी ए ॥ ११ ॥

॥ (ढाल ४) ॥

त्रिण सहस सो एक निवांणूंरे । जिनवर प्रासाद वखाणूंरे । वीससो ए अंक गुणीयेरे । तीर्थंकर प्रतिमा थुणीये ॥ १२ ॥ त्रिण लाख सहस वलि ब्यासीरे । प्रतिमा आठ सोने असी । सरवाले सब मेलीजेरे । जिनवर प्रसाद नमीजे ॥ १३ ॥ आठ-कोडि सत्तावन लक्खारे । दोयसे निव्यासी कयरुक्खा । द्दिव प्रतिमा ग्यान कहीजेरे । जिनवरनी आंण वही जे ॥ १४ ॥ पनरेसे वैतालीस कोडीरे । अरूवन्न लख अधिके जोडी । छत्तीस सहस अधिक कही रे । प्रतिमा सगली सरदहीयेरे ॥ १५ ॥

॥ (ढाल ५ मी) ॥

जोइस विंतर प्रतिमा सासती । असंख्यात वलि जेहोजी । पाय कमल तेहना नित प्रणमीये । सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥ विनयकरी जिन प्रतिमा वंदीये । सुंदर सकल सरूपोजी । पूजे प्रतिमा चौविह देवता । वलिय विद्याधर भूपो जी ॥ २ ॥

जिन प्रतिमा बोली जिन सारखी। हितसुख मोक्षनीदानो जी। भवियण नें भवसायर तारवा। प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ जीवाभिगम प्रमुख मांहि भाखीयो। एस हु अरथ विचारोजी। सांभलतां थाता सुखसंपदा। हियरे हरष अपारो जी ॥ ४ ॥ वि०

(कलश) ॥ इम सासता प्रासाद प्रतिमा संथुण्या जिनवर-तणा। चिहुं नांम जिण चंद तणा त्रिभुवन सकलचंद सुहावणा। वाचनाचारज समयसुंदर गुणभणें अभिरामए। त्रिहुंकाल त्रिकरण शुद्ध होयज्यो सदा मुझ परणांमए ॥ ५ ॥

॥ इति श्री सास्वताजिनचैत्यबिंवसंख्या स्तवनं ॥



॥ अथ साखता असास्वता जिनबिंब नमस्कार स्तवनम् ॥

॥ * ॥ (देशी सुरती) ॥

प्रहऊठी प्रभु ध्यानधरुं नमुं सिद्धअनंत। त्रिभुवन मांहे नमणकरुं जे बिंब रहंत। भुवनपति व्यंतर जोतषि वैमानिक-मांह। अद्भुत सास्वता बिंब नमुं मनधरि उछाह ॥ १ ॥ पंच-मेरू वैताढ्य हिमाचल निषध प्रमांण। नीलवंत चित्रसेल कुंरुद्ध गजदंत वखांण। रुचक नंदीसर मानुषोत्तर आदि सास्वता जांण। रिषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्धमान ॥ २ ॥ आठ-कोरू अरूठप्पण लाख सत्ताणुं हजार। चउसै ठयासी चैत्यसा स्वता मंगलकार। सहस अठावीस नवसै पचवीसकोरू मिलाय। तेपन लख चउसै अठ्याशी जग जिनराय ॥ ३ ॥ केइ आचार्य मतें आठकोरू सतावन लाख। दोयसै अठाणुं

त्रिभुवनमां सहु चैत्यनी साख । अठावनलख पनरेसे बयाली-सकोरू । अरुतीस सहस बिंब सहु सत असीकी जोरू ॥ ४ ॥ मगध कोसल अंग बंग कलिंग काशी कुरु देस । सोरठ कच्छ विदेह जांगल कुसावर्त्त कहेस । भंग सोवीर वैराट मलय सांफिल सूरसेन । वरण पंचाल दशार्ण कुंणाल देसमें चैन ॥ ५ ॥ लाट बिरद सिंधुदेससहु केकइ अर्ध जांण । साढां पचवीस देश भरतमें आर्य प्रधान । दोय कोरू अठावन लाख बयासी हजार । नवसै तिहुत्तर ग्रांम नगरमांहे बिंब अपार ॥ ६ ॥ वसुसत सात साठ जंबुद्वीप सहु आर्य होय । धातकी खंरू सहस एक सातसै चौतीस जोय । एताही अर्द्ध पुष्करमांहें देस गिणाय । ग्रांम नगर मांहे बिंब अनेक नमुं गुणगाय ॥ ७ ॥ सिद्धसेल उज्जित शिखरगिरि मोटा धांम । अष्टापद चंपा पावा-पुरि शिव सुख ठांम । तारंगा अर्बुद राजग्रही खेत्रप्रमाण। अंतरीक धूलेवा राणपुरो जग भांण ॥ ८ ॥ द्वीप असंख्या जल थल पर्वत शिखर सुहाय । कनक धातु पाखाण रयण सहु बिंब रहाय । इम त्रिहुं लोक असास्वती सास्वती थापना देख । त्रिकरण सुद्धे नितप्रति प्रणमुं सहुगुण लेख ॥ ९ ॥ स्थापना भगवंते कही आगम मांहि प्रमाण । अंग उपांग देखी मननिश्चय राखो सुजाण । जे उत्सूत्र वचन के भाषक जासी निगोद । अनंत काल भमतां क्षणअंतरनहिं पामें विनोद ॥ १० ॥ सोम्य मूरत प्रभुनी देखी भविपामें बोध । आर्द्रकुमारकी रीते देखो आगम-सोध । द्रव्य भाव विधिसंयुत सुरनर पूजे जेय । गुण पिंरुस्थ पदस्थ रूपस्थ रूपातीत लेय ॥ ११ ॥ रिषभादिक चौवीस तिर्थं-

कर नमुं मन लाय। गणधर सहुसंग मंगलकारी नितप्रति थाय। जन्म मरण सहु दुख दूरे करो दीनदयाल। गछ खरतर-गुरु लक्ष्मीप्रधानमोहन प्रतिपाल ॥ १२ ॥

॥ इति श्री त्रिभुवन मंफण सर्व जिन विंब नमस्कार स्तवनम् ॥

॥ ❋ ॥ अथ २४ जिन देह मान स्तवनं लिख्यते ॥

❋ ॥ ❋ ॥ प्रणमुं ऋषभ जिनेसरपाय। धनुष पांच से ऊंचीकाय। वीजो अजित जिन मुझ मन वसै। मान धनुष साढा च्यारसै ॥ १ ॥ तीजो संभव सुखदातार। ऊंची काय धनुष सो च्यार। अभिनंदन जिनसुं मनलीन। देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमति नाथ भगवान्। धनुष तीनसो देहीमान। पदम प्रभु पूरै मनआस। देह धनुष दोयसै पंचास ॥ ३॥ सामिसुपारस सत्तम होय। देह प्रमाण धनुषसोदोय। चंद्रा प्रभु जिन मुझ मन वसै। देह प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधिनाथ नमियें सुवि-वेक। ऊंचप्रमाण धनुषसोएक। शीतलनाथनमें जगसवे। देह प्रमाण धनुष जसु निवे ॥ ५ ॥ श्रीश्रेयांस नमुं उल्हसी। ऊंच प्रमाण धनुष तनु असी। वास पूज्य वारम जिनचंद। मान धनुष सित्तर सुखकंद ॥६॥ विमल विमल गुण करि गंभीर। साठी धनुष जसु मान सरीर। अनंत ज्ञान अनंतप्रकास। देहप्रमाण धनुष पंचास ॥ ७ ॥ पनरम धरमनाथ जगदीस। मान धनुष जसु पैंतालीस। शांति करण सोलम जिनशांति। देह धनुष चालीस सोभंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार। मान धनुष पैंत्रीस उदार। अर अढारम दीन दयाल। त्रीस धनुष तनु अति सुविशाल ॥ ए ॥ मल्लिनाथ जिन उगणीसमो। मान

पच्चीस धनुष पय नमो । वीसम मुनिसुव्रतअरिहंत । वीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥ इकवीसम नमि जिन राजान । धनुष पनरे तनु रूप निधान । बावीसम श्री नेमि जिणंद । दस धनु दीपे जाण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री पारस नाथ । नील वरन सोहै नवहाथ । चौवीसमा जिनवर श्रीवीर । सातहाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिणवर चौवीस । प्रणमें प्रह-सम धरीय जगीस । तांघर रिद्धि सिद्धि उछरंग । रंगविनय प्रणमें मुनिरंग ॥ १३ ॥ * ॥

॥ इति श्री चोवीस जिनदेहमान स्तवनं ॥ * ॥



॥ अथ २४ जिन आउ प्रमाण स्तवनं लि० ॥

॥ * ॥ ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय । लाखचोराशी पूरव आय । बीजो अजित जसु सूत्रे साख । आउ बहुत्तर पूरव लाख ॥ १ ॥ तीर्थंकर संभव तीसरो । आउ लाख पूरव साठीरो । अभिनंदन पूरे मन आस । आउ लाख पूरव पंचास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस । आउ लाख पूरव चालीस । श्री पदम प्रभुनी ए स्थिति जाण । लाख तीस पूरव परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरव वीस । दस लाख पूरव चंद्-प्रभु ईस । सुविधिनाथ लाख पूरव दोय । इक लख पूरव शीतल थिति होय ॥ ४ ॥ आउ वरस चोरासी लाख । श्री श्रेयांस तणो श्रुत साख । लाख बहुत्तर वरसां तणो वासुपूज्य परमायुष गिणो ॥ ५ ॥ विमल आउ लाख साठि वरीस । वरस अनंत तणो लख तीस । लाख वरस दस धरम जिणंद । लाख

वरस श्रीशांति जिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पंचाणवे । श्रीकुंथुनाथ तणी संभवे । सहस चोरासी अरजिन तणी । मल्लि सहस पंचावन भणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार । मुनिसुव्रत परमाउ उदार । वीस सहस नमि जिन थिति भणी । वरस सहस नेमीसर तणी ॥ ८ ॥ पास वरस एकसो सुख कंद । वरस बहुत्तर वीर जिनंद । ऋषभतणा तेरे अवतार । सात चंद्र संतीसर वार ॥ ९ ॥ सुव्रत भव नव नव नेमीस । पार्श्व वीर दश सत्तावीस । त्रिहुं त्रिहुं भव सतरे जगदीस । सगला भव एकसो अठतीस ॥ १० ॥ सिद्धि लही सहुनें धन धन्न । गणधर चवदेसे बावन्न । सहुनें मुनि लख अठाविस । सहस ऊपरे अडतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल छयाल हजार । षडधिक सहु साधवी सोच्यार । श्रावक लाख पचावन धुरे अडतालीस सहस ऊपरे ॥ १२ ॥ एक कोडि श्राविका सुज-गीस । लाख पांच सहस अडतीस । एसंघ चतुर्विध सहु जिन तणों । रंगविनें प्रणमें हितघणों ॥

॥ १३ ॥ * ॥ इति श्री चोवीस जिन आयुप्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ जीव विचार भाषा गर्भित स्तवनं लि० ॥

॥ * ॥ (दुहा) भुवन प्रदीपक वीरनमि । किंचित जीव सरूप । कहिसुं पूर्वाचार्य जिम । बालबोध गुरु रूप ॥

॥ १ ॥ (देशी सूरती महीनानी) ॥

एग मुगति बीजा संसारी जीवबुभेद । सत्ताभिन्नै सिद्धअनंतै रूप अभेद । संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार । भू अप तेउ बाउ वणस्सई थावर धार ॥ १ ॥ फिटक रयण मणि

विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल । मणसिल पारो सुवरण आदि धातु नीहाल । सेढी बन्नी अरणेटो पलेवो पाखाण । जोमल तुरी ओस जूमि पाहण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूंण जात ए पुढवी काय विछेद । जूमि आकास ओस हिम करग आकना जेद । हरित घास ऊपर जे जलकण धूंहर तेम । होय घणो दधि अप्प काय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा काला जोजर तिम उलकापात । अशणि कणगविद्युतादिक अगनजीव विख्यात । उष्भामग उक्कलिका मंमल वलि मुहवात । शुद्ध गुंज तिम घण तणु वाऊ जेदें ज्ञात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वण-स्सइ जीव दुजेय । एग सरीर अनंतजीव साधारण नेय । कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि सेवाल । जुंफोमा अद्दत्तिय सरबे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वथवो थेग पालंको साग । गुपत सिरा सांधा गांठां जाजे सम जाग । काटी माल जुंमिमें रोप्यां पल्लव थाय । जाल पान इत्यादिक साधारणवण काय ॥ ६ ॥ एग सरीरें एग जीव जे ते प्रत्येक । फूल गल फल मूल काठ बीजे जिय एक । वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवी काय । सयल लोगमें व्यापक अंतमुहूर्त्ते आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिठी निजर न होय । लोका लोक प्रकाश थकी वलि अलप न कोय । कवमी संख गंमोला लहिगा लटनी जात । चंदनका अलसी मेहर जोका विज्ञात ॥ ८ ॥ माय बाहा कृम पौरादिक बेइन्द्री होय । गोमी माकण जुआ कीमा कीमी दोय । बीपक ईली घीवेली गोगींमा जात । चरम जुका गादहिया गोबर कृम उतपात ॥ ए ॥ धान कीमा जिम चोरकीमा गोवाली

तेह । इंद्री कुंथुक इंद्रगोप तेइंद्री एह । वींछू ढंकन ज्रमरा ज्रमरी इंद्री च्यार । तीडा माखी डांस मच्छर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवरू डोला मांकडिय पतंग इत्यादिक ज्ञेद । नारक तिरिमणु देव पंचेंद्री च्यार विज्ञेद । घम्मा वंसा सेला अंजण रिठा ज्ञात । मघा माघवई नारग ए नामें सात ॥ ११ ॥ जलचारी थलचारी नज्ञचारी तिरजंच । मछ कछ सुसुमार मगर गाहा जल अंच । चौपय उरपरि ज्रुजपरि साप ज्रूचारी तेय । तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रमे लेय ॥ १२ ॥ खेचर चरम रोमपंखी चमचेरू कपोत । मनुज लोकथी वाहिर समुग विगय पंख होत । सरवे जल थल खचर समुछिम गप्नज दोय । कम्म अकम्म ज्रूमि अंतर दीवा मणुजोय ॥ १३ ॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अठ । जोइस पंच वेमाणिय डुविहा सुत्तें दिठ । पनरै ज्ञेदै सिद्धकह्या ए जीव प्रकार । तनुमानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार ॥ १४ ॥ देह आउखो एक सरीरें थितनो मांण । प्राण जेहनें जेता तिम वलि योनि प्रमाण । अंगुल ज्ञाग असंख सहू एगिंदीकाय । जोयण सहस साधिक पत्तेय वणस्सई काय ॥ १५ ॥ विति चौरिंद्री अनुक्रम उकिठ देह ऊंचास । वारे जोयण तीन गाऊ इग जोयण ज्ञास । सत्तमना नेरइया धनु सय पंचप्रमाण । तेहथी अरध अरध ऊणा अनुक्रम रयणाण ॥ १६ ॥ जोयण सहस गप्नधर मछ उरगनो देह । गाऊ धणुहपहुत ज्रूचारी पंखी जेह । खेचर नवधणु ज्रुयंग उरग जोयण नव होय । नव गाऊ परिमाण समुछिम चौपय सोय

॥ १७ ॥ षट्‌ गाउ ऊंचास चउप्पय गब्नयमांण । तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण । नवण व्यंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत । सातहाथ उक्कोसे ऊंचपणे तणु हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेंद्रे षट्‌ ब्रह्म लांतक पांच । शुक्र सहस्रारें उक्कोस च्यार कर वांच । आणतप्राणत आरण अच्युत हाथें तीन । नव ग्रैवेयक दोय पंचानुत्तर इगलीन ॥ १९ ॥ बावीस सात तीन दशवरस सहस्सें आय । नूआउ वाउ वण ती दिन तेउ काय । बारवरस गुणचास दिवस तिम वलि छम्मास । अनुक्रम बेइंद्री तेइंद्री चौरिंद्री रास ॥२०॥सुर नारग तेतीस अयर उक्कोसें आय । चौपय तिरिय मनुजनो तीन पल्योपम थाय । जलचर उरपर भुजपर उक्कोसें पुव कोड़ । पंखीनें इग नाग असंख पल्यनो जोड़॥ २१ ॥ सरब सूखम साधारण समुछिम मणु जेह । जहन्न उक्कोसे अंतमुहूत्त नियम थिति तेह । इम ओगाहण नाख्यो संखेपे अधिकार । जे वलि इत्थ विसेस विसेस सुत्रसूं धार ॥ २२ ॥ असंख उसप्पणि सहुएगिंदी आपणीकाय । उपजे चवे अनंत साधारणवणस्सईकाय । संख्याता संवछर विगल आपणी देह । सात आठ नव पंचिंद्री तिरि मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथकी उदवरती जीव नरक नवि जाय । देव चवीनें ते वलि देवपणें नवि थाय । इंद्रीय सासोसास आउ बल ए दस प्राण । च्यार छ सात आठ इग दुति चौरिंद्रीय जाण ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचिंदी दश नव अनुक्रम जोय । प्राणथकीजे विप्रयोग जिय मरणें होय । नीमसायर संसार अपार अनंतीवार । नमियो जीव धरम विण जोणि अशीनें च्यार

॥ २५ ॥ सग सग सग सग दश चवदे दो दो दो लाख। च्यार च्यार तिम च्यार चवद लख सूत्रे साख । नू अप तेऊ वाऊ वणपत्तेय साधार । वि ति चौ पण तिर नारग सुरनर अनुक्रम धार॥ २६॥ काय न आय न पाण न जोणी कुल नहीं जात। सादि अनंत नंग जिन आगम थिति विख्यात । रोग न सोग न नोग जोग नहीं नारि लिंग । नहीं य नपुंसक पुरष तणा नहीं अंग उपांग ॥ २७ ॥ नाण दंशण चारित्त वीरज ए च्यार अनंत । सिद्ध थया तेहथी सिद्धांते सिद्ध कहंत । इमए जीव विचार गाथाथी नाषा रूप । श्रावक आग्रहथी में कीनो सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गछ नट्टारक श्रीजिनलानसूरीस । रत्नराज गणिग्यान सार मुनिसीस जगीस। संवत शशि रस वारण ससिहर धर निरधार। माघ चौथ दिनकी नो जैपुर नगर मफार ॥ २९॥ इति श्रीजीवविचार प्रकरण नाषा गर्निनत स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ नवतत्व भाषा गर्भित स्तवनं लि० ॥

॥ * ॥ दुहा ॥

नमस्कार अरिहंतनें । सिद्धसूरि उवफाय । साधु सकल-प्रणमीकरी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नवतत्वनी । गाथा नाषा रूप । मंदबुद्धि गुरु सानिधे । कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥ (सुरती महीनानी देशी) जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आसव सोय । संवर निजर बंध मोक्ष ए नव तत्व होय। चवद चवद बायाल वयासी वलि बायाल । सत्तावन बारे चौ नव क्रम नेद निहाल ॥ १ ॥ इग दुति चौविह पणविह छविह

जीव कहा य । चेतन त्रस थावर वेदे गई करणें काय । एगिंदी सूखम बादर ए दो जिय ठाण । सन्निअ असन्नि पणिंदी बि ति चौरिंदी आण ॥ २ ॥ ए सग पजत्ता अपजत्ता चवदे होय । अनुक्रम जीवठाण ए सूत्र प्ररूप्यासोय । नाणदंसण चारित वीरज तप तिम उवयोग । ए षट्लक्षण लक्षित जीव द्रव्य इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पजत्ती तीन । सासो सास नाषा मन षट्ए अनुक्रमलीन । च्यार एगिंदी पंचपजत्ती विगलें जोय । पंच असन्नि सन्नितें षट् पजत्ती होय ॥ ४ ॥ इंद्रिय पांच उसास आऊ बल ए दस प्राण । च्यार छ सात आठ एगिंदी विगले जाण । असन्नि सन्नि पंचिंदीने नव दस क्रम थाय । प्राणांथी जे विप्रयोग जिय मरण कहा य ॥ ५ ॥ धम्मा धम्म आगास तीनूंना त्रिण त्रिण नेद । काल दशम इग आगास पुग्गल च्यार विछेद । खंधा देश पएस परमाणु चवद अजीव । धम्मा धम्म पुग्गल नन काल ए पांच न जीव ॥ ६ ॥ चलण सहाई धम्में । थिर संठाण अधम्म । अवगाहें पूरण गलणें नन पुग्गल धम्म । समया वलिय महुत्त दीह पख्ख मासनें साल । पल्योपम सागर उस्सप्पणी सप्पणी काल ॥ ७ ॥ षट् इग दो सग सग सग षट् इग अंक गिणाय । एग महुत्तें आवलि संख्या सूत्रकहाय । तीन सात वलि सात तीन ऊसासें माण । केवल नाणी नणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्चगोय मणु सुर डुग पंचिंदी जाय । पांच शरीर आदिम तिसरीर उवंग कहाय । आदिसंघेण संठाण चौवर्ण अगुरुलहु होय । परघ ऊसास तेम वलि आतपनें उजोय ॥ ए ॥ सुन-

खगई निम्माण तसादिदशुंनीमाल । सुरनर तिरिय आऊ तित्थंकर पुण्य वायाल । तस वादर पजत्त पत्तेय थिरं सुज सोय । सुजग सुसर आइज्ज जसें त्रस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दसक नववीजा नीच असाय । मिछ थावर दश नारग त्रिक पचवीस कसाय । तिरयंच डुग एकिंद्रीत्रिति चौरिंद्री तेय । कूखगई उपघा अपसत्थ वण चौज्नेय ॥ ११ ॥ पढम संघ- यण विना संघयण तेम संठाण । एम वयासी प्रकृति पापतत्वनी ए जाण । थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिरे गेय । असुज डुजग दूसर णाइज्ज अजस दसलेय ॥ १२ ॥ पण चौपण तिय इंदिकसाय अव्वय तिम जोग । वायालीस सेस पच्चीस क्रिया संयोग । काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप । प्राणाति- पात आरंजकी परिगहियानो लाप ॥ १३॥ माया प्रत्यय मिछा दंसणवत्ती तेम । अपच्चक्खाणकी दिठ पुठि पाडुच्चिय जेम । सामंतोपनवणिय नेसत्थि साहत्थै जेह । आज्ञापनकी वेयारण अणजोगा तेह ॥ १४ ॥ अणवकंख पच्चयना उवर्जगी समु- दाय । प्रेम घेष इरियावही किरिया ए कहिवाय । सुमति गुपति परिसह जइधम्म जावण चारित्त । पण तिग वावीस दस वारै पण संवर तत्त ॥ १५ ॥ इरिया—जाषा एषणा सुमतीना जेद होय । आदान जंरू उच्चार निक्खेवण पांचे जोय । मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जाण । हिव आगे वावीस परीसह कहुं हित आण ॥ १६ ॥ जूख पिपासा सीत ऊसन मांसा निर- वत्थ । अरति जोषा चरिआ नैषिद्या सिज्झासत्त । अक्कोस वह जायण अलाज रोग त्रणफास । मल सक्कार पन्ना अन्नाण

समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम सम्म । सत्यं सौच अकिंचन बंज्ञचेर जईधम्म । पढमअनित्य अशरण संसार एग अनत्त । असुचि आश्रव संवर निज्जर ज्ञवि ज्ञावो नित्त ॥ १८ ॥ लोकसुज्ञाव बोधडुरलज्ञ इग्यारम गाव । धरमसाधक अरिहंत ए बारे ज्ञावनज्ञाव । सामायक ढेदोप स्थापन बीजो सोय । परिहारविसुद्ध सूखमसंपराय चउत्थो जोय ॥ १ए ॥ तिम अहक्खायचरित्त सर्वजियलोग प्रसिद्ध । जेह सुविधिआचरणें केइजिय पाम्यासिद्ध । बारेविध निर्जर- तत्व बंधना च्यार प्रकार । प्रकृति ठिई अनुज्ञाग प्रदेश ज्ञेदें निरधार ॥ २० ॥ अणसण उणोदर वृत्तिसंखेप रसनो त्याग । कायकलेस संलीनता बाहिरतपषड्ज्ञाग । पायढित विनय वेयावच्च तेम सज्झाय । ध्यान काउसग्ग अज्यंतर तप षरुविध थाय ॥ २१ ॥ प्रकृतिस्वज्ञाव कालअवधारण थिति निरबंच । अनुज्ञागैरसतेमप्रदेसें दलनोंसंच । पट प्रतिहार धारतरवार मद्य वलितेम । निगरु चित्रकर कुंज्ञकार ज्ञंरुारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठनानाम ज्ञाख्याजेजे ज्ञाव । तिम ज्ञानावरणादिक अरुना एहसज्ञाव । इमसंखेपें विवरण कीना आठे तत्त । प्रस्तावे पाम्यो वरणवस्युं हिव मोख तत्त ॥ २३ ॥ संतपदे परूवण रुव्यनें क्षेत्रप्रमाण । फरसना काल पांचमों ढठो अंतर जाण । ज्ञागसातमो ज्ञावआठ तिम अलपबहुत्त । ए नवज्ञेदें ज्ञावन करस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक पदथी ढे जे पदे अविनाज्ञाव । व्योम कुसुम तिम ससिक शृंग जिम नहींय अज्ञाव । एहवो जे पद मोक्ष तेहनों

मग्गणद्वार । विवरणकर वरणवस्युं सुणज्यो सुहमविचार ॥ २५ ॥ गति नर इंदिय पंचेंद्री कायें त्रसकाय । नाणे जेहनें केवल संयमथी अहखाय । दंसणमें इक केवलदंसण अवरन होय । भव्य अभव्यें भव्यपणो परिपाके जोय ॥ २६ ॥ संमत्ते क्षायक सन्नी असन्नीयें सन्नि । अणहारी आहारी अणहारी उप्पन्न । द्रव्यप्रमाणें सिद्धजीवद्रव्यहोय अनंत । लोग असंखम भाग एगसिद्ध होय अणंत ॥ २७ ॥ फरसना खेत्रथि अधिक काल इगसिद्ध प्रतीत । सादिअनंतीथिति जिनआगमथी सुविदीत । प्रतिपाती भावे नहीं सिद्धां अंतर जोय । सरव जीवथी भाग अनंतम सहु सिद्धहोय ॥ २८ ॥ दंसण नाण जेहनें वे ते क्षायकभाव । जीवत जेहनें वलि परिणामिक भाव समाव । सहुथी थोमा वेद नपुंसकथी जे-सिद्ध, तेहथी थी नर अनुक्रम संखगुणा सुपसिद्ध ॥ २९ ॥ जे जाणें जीवादिक नवतत्त तस सम्मत्त । अण जाणंतानें हुय ज़े सरधानें रत्त । सरव–जिणेसर मुखथी भाख्या वयण जहत्थ । ए बुद्धीजेहनें मन सम्मत निच्चलतत्थ ॥ ३० ॥ अंतरमहुरत एगमात्र फरस्यों संमत्त । अर्द्धपुग्गलपरियट्ट नियम संसार निमत्त । उस्सप्पणीयअणंत एगपुग्गलपरि-यट्ट । अनंत अतीत अनागत तदगुणवयणप्रगट्ट ॥ ३१ ॥ इम नवतत्त भेद पभिभेदे विवरणकीध । श्रावकआग्रह कीन सहाय पूरण रसवीध । कोटिकगण सुभसदन प्रकास नदीउपमान । श्रीजिनलाभ चंदकुल पूनमचंदसमान ॥ ३२ ॥ अग्यानादिक करिवरसिंहें वयरीसाख । रत्नराजमुनि ते

वरूसाखानी पमिसाख । ग्यानसार ते पमिसाखानी सूखमरुाल । ए नवपद नवरयण विनाणें गूंथीमाल ॥ ३३ ॥ संवछरनिश्चय नय विगई प्रवचनमाय । परम सिद्धपद वामगतें ए अंक गिणाय । माघकिसन ससिवार मेरुतिथिपूरनकीध । च्यार कथा तजि तत्वकथा जज नर फल लीध ॥ ३४ ॥

इति श्रीनवतत्वज्ञाषागर्जित स्तवनं संपूर्ण ॥



॥ अथदंडक भाषागर्भित स्तवनं लिख्यते ॥

॥ * ॥ रुषज्ञादिकचौवीसनमि । तेहनो सूत्रविचार । दंरूक रचनाये स्तवुं । संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंरूक पढम । असुरा नाग सुवन्न । विज्जु अगनि दीवोदही । दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आऊ तेऊ वलि । वाऊ वणस्सईकाय । बि ति चौरिंदी गप्रधर । तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया । ए दंरूक चौवीस । एहना धार कहुं हिवे । गणनायें तेवीस ॥ ४ ॥ * ॥ वीरजिणेसरनी देशी ॥ * ॥ सरीर ओगाहण संघयणें सन्ना संगण । कोहाई लेसिंदिय दो समुग्घाय प्रमाण । दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि जपयोग । जपपात वलिय चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ के दिसिनो आहार सन्नि गइ आगइ वेय । दार गाहा डुगनो ए अरथ कह्यो संखेव । हिव चोवीस दारनो रचिस समय अनुसार । अलप रुची हुं तेहथी कहिसुं अलपविचार ॥ २ ॥ * ॥ सूरती महीनानी देशी ॥ * ॥ चौगप्रयतिरि वाऊकाये च्यार सरीर । मनुष्यमें पांच दंरूक इकवीस रह्या ति सरीर ।

थावर च्यारनें जहन्न उक्कोसें देह प्रमाण । भागअसंख्यातम इगअंगुलनों परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो जघन्य स्वाभाविक अंगुल भाग असंख्यात । उक्कोसें पणसेंधणु नारगमें विख्यात । सुरनो सात हात गब्भयतिरि वणस्सईकाय । जोयणसहस साधिक इकसहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाऊ बेइंदी जोयणबार । एगजोयण चौरिंदी देह ऊंचे आकार । आरंभकाले वैक्रियदेहनो ए परिमाण । भागएक इक अंगुलनो संख्यातम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इकलाख जोयण इगलाख । नवसेजोयण तिरजंचनें एसूत्रेसाख । स्वाभाविकथी डुगणो नारक वैक्रिय काय । एकमहूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पक्खएग उक्कोस विउव्वण काल । विगर संघयणी थावर सुर नारकनी माल । गब्भय नर तिरिनें षड् विगलनें छेवठ्ठ एक । सरव जीवनें च्यार दसे सन्नायें लेख ॥५॥ नर तिरिनें षरू सुरनें समचौरस संठाण । हुंडक इग नारग विगलेंदी सूत्र प्रमाण । नाणाविह धय सूइ मसूरनी चंद्र आकार । वणस्सइ वाउ तेउ भू बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सहुनें च्यार कषाय गब्भय षरू नर तिरि दोय । वेमाणिय नारग तेउ वाउ विगल त्रिक होय । जोयसि तेऊ लेसा सेस रह्यांने च्यार । हारइंद्रियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥ समुदघात सग नरनें पण गब्भय तिरि देव । नारक वायुनें च्यार सेसनें तीनुं भेव । दिठी दोय विगलमें थावरने मिथ्यात । सेसनें तीन दिठि जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावर वि तिनें एक अचक्खूदंसण होय । चौरिंदी ते चक्खु

अचक्खूदंसण होय । मनुजनें च्यार सेस दंडगमें दंसण तीन । नाण अनाण तीन सुर तिरि नारगनें तीन ॥ ए ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण । गब्भयमणुनें तीन अनाणनें पांचुं नाण । सुर नारग एकादश तिरनें तेरेजोग । मनुजनें पनरे च्यार॰ विगलनें जोगप्रयोग ॥ १० ॥ वाऊका-यनें पांच तीन थावर संयोग । मनुजनें बार नरग तिरि देवनें नव उपयोग । विगल डुगे पण षट्ट चौरिंदी थावर तीन । उववाय इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एगसमें संख्यात असंख्या चवणुपपात । गब्भयतिरि विगलेंदी नारय सुर विख्यात । मणुआ थावर वणस्सइ संख असंख अणंत । मणुजअसन्नि असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सहस्स उक्किठ । वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊनें जिठ । नर तिरि तीनपल्य सुर नारग अयर तेतीस । व्यंतर पल्य अधिक लखवरस पल्य जोईस ॥ १३ ॥ असुरादिक दशनें इकसागर अधिकोआय । देसेंऊणा दोय पल्यनो नवेय निकाय । विगलनें बारबरस गुणचास दिवस छम्मास । अंतमहुत्त जहन्नें पुढवाई दसरास ॥ १४ ॥ भुवनपती नारग व्यंतर दसवरसहजार । पल्य तेना अंस वेंमाणिय जोइस धार । सुर नर तिरि नारगनें षट थावरनें च्यार । विगलनें पंच पजत्ती ए अढारम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवनें होय छए दिसनो आहार । होय न होय पंचादिक दिस ए सूत्र मझार । दीह कालकी चौविह सुर नारग तिर-जंच । विगलनें हेउवएशा सन्निरहितथिरपंच ॥ १६ ॥

गब्नयमणुजनें दीहकालकीसन्नाहोय । केइक आचारज कहै दिठिवायकी होय । निश्चय पज्जत्तापंचिंदी तिर नर जेह । चौविह देवां मांहे आवी ऊपजे तेह ॥ १७ ॥ संखाउ पजत्त पंचिंदी तिरि नर तेम । पजता नू दग पत्तेय वणस्सई जेम । ए सर्वमें निश्चय सुरनी आगति हुंति । पजात्त संख गब्नय तिरि नर सग नरके जंति ॥ १८ ॥ नरक उदवरत्या नर तिरि उपजे नहुवे सेस । नू अप्प वणस्सईमें नारग विण उपजे असेस । पुढवाई दसपयमें नू आउ वणजंति । पुढवाई दस पयसैं तेउ वाउ उपजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाउनो गमण पुढवी प्रद नवमें हुंत । पुढवाई दस पदमें विगल जावंत आवंत । सहुमें तिरि गति आगति मणुआ सहुमें जाय । तेउ वाउथी मरीनें जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ थी पुरसे चौविह सुर तिरि नर तीनूं वेद । थावर विगल नारगनें एक नपुंसक नेद । पजात्त मणु वादर अगनि वेमाणिक तेम । नवण नारग व्यंतर जोईस चौ पण तिरि एम ॥२१॥ वेइंडी तेइंडी पृथवीनें अप्पकाय । वाउ वणस्सई अधिक अनुक्रम करि कहिवाय । हे जिन ए सहु नव में पाम्या वारअनंत । तेहनो अनुक्रम गणितां किम ही न आवे अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विण सहु दंरूगमें ते गति संयोग । लाधो नहीं तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग । सुरसे पिण दंसण लहि विरति नपामी मूल । ते सुर जात सहावे देस विरति प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरज देस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेश । तेहथी तुह दंसणनो किंचित पाम्यो लेस । धारक तारक कारक वारक दंसण देव । आतम

गुण संजारक सम्मत्त कम्म सयमेव ॥२४॥ खरतरगछ जट्टारक श्रीजिनलाजसूरिंद । रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद । रजमकरंदें लीणो ग्यानसार तसुसीस । तेण स्तव्या चौवीसदार दंरूक चौवीस ॥ २५ ॥ संवत शशिरसवारणतेम चंद निरधार । पोष मास पखऊजल सातमनें सोमवार । श्रावक आग्रहथी एकीनो अल्पविचार । अष्मचौमासो कर जैपुर नगरं मऊार ॥ २६ ॥ इति श्री चतुर्विंशतिदंरूकस्तवनं संपूर्णं ॥*॥

॥ * अथ श्री शीतलनाथ स्वामीनो स्तवनं लि० ॥

मोरा साहिवहो श्रीशीतलनाथ कि । वीनतीसुणो इक मोररूी । ऊखजांजेहो जगदीनदयालकि । बातसुणी में तोररूी ॥ १ ॥ मो० ॥ तिण तोरे हो हुं आयो पास कि । मुऊमन आस्या ले घणी करजोरूीहो कहुं मननी बातकि । तुं सुणिजे त्रिजुवनधणी ॥ २ ॥ मो० ॥ हुं जमियो हो जवसमुऊमऊारकि । ऊरकअनंता में सह्या । ते जाणें हो तुंहीज जिनराज कि । में किमजायें ते कह्या ॥ ३ ॥ मो० ॥ जागजोगे हो तोरो श्रीजगवंत कि । दरसन नयणें निरखियो । मन मान्यो हो मोरे तुं अरिहंत कि । हियरूो हे जे हरखियो ॥ ४ ॥ मो० ॥ एकनिश्चे हो में कीधो आज कि । तुज विण देव बीजो नहीं । चिंतामणि हो जो पायो रतन्न कि । काच ग्रहै कहो कुण सही ॥ मो० ॥ ५ ॥ पंचामृत हो जिण जोजन कीध कि । खल खायवा मन किम थीये । कंठतांइ हो जो अमृत पीधतो । खारो जल कहो कुण

पिये ॥ ६ ॥ मो० ॥ मोतीकोहो जोपहस्यो हारकि । चिरमठि कुण पहिरे हीये । जसु गांठे हो लाख कोकि गरत्थ कि । व्याज काढी दाम कुण लीये ॥ ७ ॥ मो० ॥ घरमांहें हो जो प्रगस्यो निधान तो । देसदेसांतर कुणजमें । सोना नोहो जो पोरसो सीधतो । धातुरवादी कुण धमें ॥८॥ मो० ॥ जिण कीधो हो जवहरव्यापार कि । मणिहारी मन किम गमें । जिण कीधो हो सदा हाल हुकम्म कि । ते तूंकारो किम खमें ॥ ए ॥ मो० ॥ तूं साहिब हो मोरो जीवन प्राण कि । हुं सेवक प्रजु ताहरो । मुऊ जीवत हो आज जनम प्रमाण कि । जव डुख जागो माहरो ॥ १० ॥ मो० ॥ तुऊ मूर्ति होदेखंता प्राय कि । समवसरण मुऊ संजरे । जिन प्रतिमा हो जिन सरिखी जाण कि । मूरख जे सांसो करे ॥११॥ मो०॥ तुह्म दरसण हो मुऊ आणंद पूर कि । जिम जग चंद चकोरमा, तुह्म नामें हो मोरा पाप पुलायकी । जिम दिन उगे चोरमा ॥ १२ ॥ मो० ॥ तुह्म दरसण हो मुऊ मन उछरंग कि । मेह आगम जिम मोरमा । तुह्म नामें हो सुख संपत्ति थाय कि । मन वंछित फल मोरमा० ॥ १३ ॥ मो०॥हुं मांगुं हो हिव अविहम प्रेम कि । नित नित करूं निहोरमा । मुऊ देज्यो हो स्वामी जव जव सेवकि । चरण न छोकुं तोरमा ॥ १४ ॥ मो० ॥ कलश ॥ इम अमरसरपुर संघसुखकर मातनंदा नंदनो । सकलाप शीतलनाथ स्वामी सकल जन आनंदनो । श्रीवछलंछन वरणकंचन रूपसुंदर सोह ए । एतवन कीधो समयसुंदर सुणितजनमनमोह ए ॥ १५ ॥ ❊ ॥ इति श्री शीतलनाथजिनस्तवनम् ॥ ❊ ॥

॥ अथ ८४ आसातनास्तवनं लि० ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धिनी ॥ जय जय जिणपास जगत्र धणी । सोभा ताहरी संसार सुणी । आयो हुं पिण धर आस घणी । करिवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन धन जे न पडे जंजाले । उपयोग सुं बैसै जिन आले । आसातना चउरासी टाले । सास्वता सुख तेहीज संभाले ॥ २ ॥ जे नाखे श्लेखम जिनहरमें । कलहकरे गाली जूयरमें । धनुशादिकला सीखण ढूके । कुरलो तंबोल भखे थूके ॥ ३ ॥ सुरे वायवडी लघुनीत तणी । संज्ञा कुंगुलिया दोष सुणी । नख केस समारण रुधिर क्रिया । चांदीनी नाखे चांबडिया ॥ ४ ॥ दांतणनें वमन पीये कावो । खावे धाणी फुली खावो । सूवे वेसामण विसरावे । अज गज पशुनें दामण दावे ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दसन आखे । नख गाल वपुषना मल नाखे । मिलणो लेखो करे मंत्रणो । विहचण अपणो करि धन धरणो ॥ ६ ॥ वेसे पग ऊपरि पग चढियां । थापे छांणा छडे ढूढणीयां । सूकवे कप्पड पप्पड वडियां । नासीय छिपे नृप भय पडियां ॥ ७ ॥ शोके रोवे विकथाज कहै । इहां संख्या बेतालीस लहै । हथियार घडेनें पशु बांधे । तापें नांणों परखे रांधे ॥ ८ ॥ भांजी निसही जिनगृहपेसे । धरे छत्रनें मंडप में बेसे । पहिरे वस्त्र अनें पनही । चामर वीजें मनठाम नहीं ॥ ९ ॥ तनु तेल सचित्त फल फूल लीये । भूषण तजि आप कुरूप थीये । दरसणथी सिर अंजलि न धरे । इगसाडे उत्तरा संग न करे ॥ १० ॥ छोगोसिरपेचमोडजोडे । दडियेरमनें

वेसे होके । सयणां सुं जुहार करे मुजरो । करे अंकचेष्टा कहै वचन बुरो ॥ ११ ॥ धरेधरणो कगके छहंठी । सिर गुंथे वांधे पालंठी । पसारे पग पहरेचाखकीयां । पगकटक दिरावे कुरवकीयां ॥ १२ ॥ करदमलूहै मैथुनमंके । जूआं वलि अँठ तिहां ठंके । उघाके गुजकरे वायदा । काढे व्यापार तणा कायदा ॥ १३ ॥ जिनहरपरनालनो नीरधरे । अंघोले पीवा ठामन्नरे । दूषण जिनन्नवनमें ए दाख्या । देववंदण न्नाष्यमें जे न्नाख्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानीश्रावक सगतिछतां । आसातनाटाले वारसतां । परमादवसे कोईथाये । आलोयां पापसहूजाये ॥ १५ ॥ तंवोलनें न्नोजनपान जूआ । मल मूत्र सयन स्त्री न्नोग हुआ । न्नूषण पनही ए जघन्य दसे । वरज्या जिनमंदिर मांहि वसे ॥ १६ ॥ द्रव्यतनें न्नावत दोय पूजा । एहना द्विज न्नेद कह्या दूजा । सेवा प्रन्नुनी मन सुद्धकरे । वंछितसुख लीला तेहवरे ॥ १७ ॥ * ॥ कलश ॥ * ॥ इम न्नव्यप्राणी न्नावआणी विवेकी शुन्न वातना । जिनविंव अरचे परीवरजे चोरासीआसातना । ते गोत्र तीर्थंकर उपार्जे नमें जेहनें केवली । उवज्काय श्री धर्मसींह वंदे जैन सासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्रीचोरासी आसातनास्तवनम् ॥

॥ अथ ६३ सिलाकापुरुषस्तवनं लि० ॥

॥ * ॥ (ढाल १) धरम महारथ सारथि सारं ए चाल ॥

सद्गुरुचरणकमलमनधारं । त्रेसठउत्तमनरअधिकारं ।

पन्नणिसु श्रुत अनुसारं । जेहनें नाम लिये निसतारं । आपण सफल हुवे अवतारं । पामी जे जव पारं ॥ १ ॥ ऋषन्न अजित संन्नव अन्निनंदन । सुमति पदमप्रन्नु नयना नंदन, सत्तम तेम सुपास । चंद्र प्रन्नुनें सुविधि सीतल जिन । श्रेयांस वासपूज्य जिन सुरमणि, विमलगुणेंकरिवास ॥ २ ॥ अनंतधर्म श्रीशांति जिनेसर, कुंथुनाथ अरमल्लि सुहंकर । मुनिसुव्रत नमि नेम । पार्श्व वीर ए जिन चोवीस । जगवल्लल जगगुरु जगदीस । प्रणमी जे धर प्रेम ॥ ३ ॥

(ढाल २) प्रथम सुपन गज निरख्यो ए चाल ॥ * ॥

प्रथम न्नरत नर इंद । बीजो सगर सुरिंद । मघवा तीजो उदार । चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचम सांतिचक्कीस । ठ्ठो कुंथुगणीस । सातमो अरनरनाथ । आठम सुन्नुम॰ सनाथ ॥ ५ ॥ नवमो पदमनरेस । हरिषेण दसमकहेस । इग्यारम जयताम । बारम ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्की सर बार । खेत्र न्नरत सिणगार । मघवा सनतकुमार । पुहता स्वरग मझार ॥ ७ ॥ सुन्नुम अनें ब्रह्मदत्त । सत्तम निरय निरत्त । आठ थया सिवगामी । ते प्रणमुं सिरनामी ॥ ८ ॥

॥ (ढाल ३) ॥ * ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति एचाल ॥*॥

पहिलो त्रिपृष्ट जाण । दि्पृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंप्रन्नु जाणीये ए । पुरुषोत्तम ए चोथो । पंचम परगमो । पुरुषसिंह प्रमाणिये ए, ॥ ए ॥ ठ्ठो पुरुषपुंमरीक । दत्त तिम सातमो । लक्ष्मण नामें आठमो ए, नवमो कृष्ण नरेस । ए नव केसवा । प्रहऊठी एपिण नमुं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव ।

नारकी सातमी । आगला पांच छठी गया ए । सातमो पंचम नयर । चोथी आठमो, नवमो तीजी नारीयें ए ॥ ११ ॥ अचल विजयनें नद्र । सुप्रनु सुदर्शन । आनंद नंदन सुन्न-मती ए । रामचंद्र बलनद्र । बलदेव ए नव । आठथया तिहां सिवगती ए ॥ १२ ॥ बलनद्र ब्रह्मदेवलोक । काल उत्सर्पणी । जास्यें सिव कृष्ण सासणें ए । अथवा निपुलाक नाम । तीर्थंकर होस्ये । चवदमो इम बहु श्रुत नणें ए ॥ १३ ॥

(ढाल ४) कुमरपणें प्रभु रहतां काल सुखे गमें ए, ए चाल ॥ * ॥

अश्वग्रीवनें तारक मेरुक बली मधु तिसा ए । निशुंन्न बलय प्रह्लाद रावण जरासिंधु जिसा ए । ए नव प्रति वासुदेव नरक गति गामिया ए । ते पिण नावि जिणेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४ ॥

(ढाल ५) सफल संसारनी ॥ * ॥

सांतिने कुंथु अर एह नव एकही । चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही । वीर वासुदेव अरिहंतनव जूजूआ । देह तिण साठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव बलीय बलदेव केरा पिता । एकहीज थाय नव एण लेखे छता । तीन चक्रधरतणा मिलिय वारे टल्या । एम त्रेसठ ना तात इकवनमिल्या ॥ १६ ॥ तीनचक्रधरतणी टालदीजे जिसे । माय सहुनी थई साठ लेखे इसे । एह नररयणनो ध्यान नित जे धरे । तेह सुर पद लही मोक्ष पदवी वरे ॥ १७ ॥

(कलश) इम थुण्या तीर्थंकर चक्कीसर वासुदेव बलदेव ए । प्रतिवासुदेव सुसेव जेहनी करे सुर नर सेव ए । त्रेसठ

सिलाका पुरुष उत्तम जगें जयवंतो सदा । प्रह्समें तेहना चरणपंकज नमें मुनि वसतो मुदा ॥ १७ ॥ इति त्रेसठ सिलाका पुरुषस्तवनं ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं लिख्यते ॥ ※ ॥

॥ ※ ॥ ढाल कपूर हुवे अति ऊजलोरे ए चाल ॥ ※ ॥

वरधमान जिनवरतणाजी । चरण नमुं चित्तलाय । ग्यान क्रिया जिण उपदिसेजी । शिवसुखतणो उपाय ॥ १ ॥ (ज्ञविकजन धर श्रीजिन उपदेश । बूटे कर्म किलेस ज्ञ०) ॥ पमि लेहण मुहपति तणीजी । ज्ञाखीछे पचवीस । तिहां ए ज्ञाव विचारीयेजी । इम ज्ञाखे जगदीस ॥ २ ॥ ज्ञ० ॥ प्रथम वे पास विलोकियेजी । सूत्र अर्थनी दृष्टि । ए पमिलेहण दृष्टिनीजी । करे धर्मनी पुष्टि ॥ ३ ॥ ज्ञ० ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननोत्याग । कामराग स्नेहरागनें जी । तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ ज्ञ० ॥ सीषवधूटक गुरु थकी जी । वाम हाथ करनाउ । नव अखोमा आदरो जी । नव पखोमा गमाउ ॥ ५ ॥ ज्ञ० ॥ देवतत्व गुरुतत्व सुंजी । धर्मतत्व गृहसार । कुगुरु कुदेव कुधर्म नो जो । तीन तणो परिहार ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ ज्ञान दरसण चारित्रना जी । संग्रह तीन आचार । तजो विराधना तीनएजी । एह अर्थ अवधार ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ मन वचन कायानी सदा जी । गुपति ग्रही जे सुद्ध । परिहरीये वलि जाणनें जी । तीने दंम विसुद्ध ॥ ज्ञ० ॥ ८ ॥ पमिलेहण पचवीसएजी । मुह-पत्तीनी सार । हिव पमिलेहण अंगनीजी । ते पिण चतुर

विचार ॥ ज० ॥ ए ॥ हास्य अरति रति तीननें जी । सुद्ध करो वाम वांह । तजि जय शोक डुगंछना जी । दक्षिण पिण करे साह ॥ ज० ॥ १० ॥ धुरली लेश्या तीन ए जी । ते शिरथी–करि दूर । रिद्धि रस शाता गारवो जी । करि मुख थी चकचूर ॥ ज० ॥ ११ ॥ काढसट्य तीन उरथकी जी । माया नियाण मिथ्यात । च्यार कसाय बे वगलथी जी । क्रोधादिक करि घात ॥ ज० ॥ १२॥ तज षट् काय विराधना जी । चरण बेहुं शुद्ध होय । ए पमि लेहण अंगनी जी । पचवीसे तुं जोय ॥ ज० ॥ १३ ॥ इम पमिलेहण जे करे जी । धर मन ज्ञान विवेक । सकल कर्म दूरे करे जी । पामें सुक्ख अनेक ॥ ज० ॥ १४ ॥ कलश । इम वीरजिणवर तणा मुख थी अर्थ गणधर सांजली । कहे सूत्रवाणी मन सुहाणी सुणो जवियण मनरली । उवज्झाय वर सिरिलच्छिकीरति मुख थकी ए संग्रही । मुहपत्ती पमिलेहण तणी विधि लच्छिवल्लज गणि कहि ॥ १५ ॥ इति श्री मुहपत्ती पमिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ श्री महावीर वीनती लिख्यते ॥

॥ * ॥ वीर सुणो मोरी वीनती । कर जोमी हो कहुं मन निवात । बालकनी परै वीनवुं । मोरासामी हो तूं त्रिजुवन तात ॥ वी० ॥ १ ॥ तुम दरसणविण हुं जम्यो । जवमाहें हो सामी समुद्र मझार । डुक्ख अनंता में सह्या । ते कहितां हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तुं प्रज्ञु । डुख जांजे हो जगदीनदयाल । तिण तोरे चरणें हुं आवीयो । सामी मुझनें हो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी

पिण ऊधस्या । तें कीधी हो करूणा मोरासाम । हुतो परम भगत ताहरो । तिण तारो हो नहिं ढीलनो काम ॥ वी० ॥४॥ शूलपाणि प्रतिबूझव्यो । जिण कीधा हो तुझनें उपसर्ग । डंक दीयो चंडकोसीये । तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोशालो गुनही घणुं । जिण बोल्या हो तोरा अवरण वाद । ते बलतो तें राखीयो । सीतल लेश्या हो मूकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुणछे इंद्र जालीयो । इम कहितां हो आयो तुम तीर । ते गोतमनें तें कीयो । पोतानो हो प्रभुता नो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उत्थाप्या ताहरा । जे झगड्यो हो तुझ साथ जमाल । तेहनें पिण पनरे भवे । सिवगामी हो तें कीध कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ अैमत्तो रिषि जे रम्यो । जलमांहें हो बांधी माटीनी पाल । तिरती मूकी काचली । तें तास्यो हो तेहनें तत्काल ॥ वी० ॥९॥ मेघकुमर रिषि दूहव्यो । चित्त चूको हो चारित्रथी अपार । एकावतारी तेहनें । तें कीधो हो करुणा भंभार ॥ वी० ॥ १० ॥ बारे वरस वैश्या घरे । रह्यो मूकी हो संयमनो भार । नंदीषेण पिण ऊधस्यो । सुरपदवी हो दीधी अतिसार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी । गृहि वासे हो वसियो वरस चौवीस । ते पिण आर्द्र कुमारनें । तें तास्यो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणिक राणीचेलणा । रूपदेखी हो चित्त चूका जेह । समवसरण साधु साधवी तें कीधा हो आराधक तेह ॥ वी० ॥१३॥ विरति नहीं नहीं आंखडी । नहीं पोहोसो नहीं आदरी दीख । ते पिण श्रेणिकरायनें । तें कीधो हो

स्वामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें उधस्या । कहुं तोरा हो केता अवदात । सारकरो हिव माहरी । मन-माहें हो आणो मोरमी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नवि पले । नहीं तेहवो हो मुफ दरसण नाण । पिण आधार छे एतलो । इक तोरोहो धरुं निश्चल ध्यान ॥ वी० ॥ १६ ॥ मेह महीतल वरसतो । नवि जोवे हो समविषमी ठाम । गिरुआ सहि जे गुण करे । स्वामी सारो हो मोरा वंछित काम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नामें सुख संपदा । तुम नामें हो दुख जाये दूर । तुम नामें वंछित फले । तुम नामें हो मुफ आणंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलश ॥ * ॥ इम नगर जेशलमेरु मंरूण तीर्थंकर चौवीसमो । सासना धीसर सिंह लंछन सेवतां । सुर तरु समो । जिनचंद त्रिशला मात नंदन सकलचंद कलानिलो वाचना चारिज समयसुंदर संथुण्यो त्रिभुवनतिलो ॥ १९ ॥ इति श्री महावीर स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ चौवीस दंडकस्तवनं लिख्यते ॥

॥ ढाल आदर जीव क्षमा गुण आदर ए चाल ॥

॥ पूर मनोरथ पासजिनेसर । एह करुं अरदास जी । तारण तरण विरुद तुफ सांभलि । आयो हुं धरि आस जी ॥ १ ॥ पू० ॥ इण संसार समुद्र अथागे, भमियो भवजल मांहि जी । गिलगिचिया जिम आयो गिफतो । साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तुं ज्ञानी तो पिण तुफ आगे । वीतक कहिये वातजी । चौवीसेदंरूक हुं भमियो । वरणुं तेह विख्यातजी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरकतणो इकदंरूक,

असुरादिकदसजाण जी । पांचथावरनें तीनविकलेंद्री । उगणि-सगिणतीआणजी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्रीतिर्यंचनें मानव । एहथया इकवीसजी । व्यंतर ज्योतिषीनें वैमानिक । इमदंडकचौवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्रीतिर्यंच अनेंनर । पर्याप्ता जे होय जी । ए चौविहदेवां मे उपजे । इमदेवां गतिदोयजी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्याते आउखे नरतिरि, निश्चे देवजथायजी । निजआ-उखे समके ओछे । पिण अधिके नवि जायजी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपतीके व्यंतरतांई । समूर्छिमतिर्यंचजी । सरगआठमे तांई पुहचे । गरभज सुकृतसंचजी ॥ पू० ॥ ८ ॥ आउ सं-ख्याते जे गरभज । नर तिर्यंचविवेकजी । बादरपृथवीनें वलि पाणी । वनस्पतीप्रत्येकजी ॥ पू० ॥ ९ ॥ परियाप्ता इण पांचें ठामें । आवी उपजे देवजी । इणपांचेमाहें पिण आगे । अधि-काईकहुं हेवजी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजासरगथकी मांडीसुर । एकेंद्री नवि थायजी । अठमथीउपरलासगला । मानवमाहें जायजी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ * ॥ ढाल २ आज निहेज्योरे दीसेनाहलो ए चाल ॥

॥ नरकतणीगतिआगति इणपरें । जीवभमें संसार । दोय-गतिनें दोयआगतिजाणीयें । वलीयविशेषविचार ॥ १२ ॥ नरक० ॥ संख्याते आउ परयाप्ता । पंचेंद्रीतिर्यंच । तिमहीज मनुष्य एहिजवेनरकमें । जायेपाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरकलगि जाय असन्नियो । गोहनकुलतिमबीय, गृध्रप्रमुख पंखीत्रीजीलगे । सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी

नरके सीमा सापनी । छठीलगि स्त्रीजाय । सातमीये मांणस के माछलो । ऊपजे गरन्नजअाय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंरूके । तिरयंच के नरआय ॥ तेपिणगरन्नजनें परयापता । संख्याती जसुआय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियांनें नरकथीनीसर्यां । जे फलप्राप्तिहोय । उत्कृष्टेन्नांगे करि ते कहुं । पिण निश्चेनहींकोय ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथमनरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवे । बीजी हरि बलदेव । तीजी लगि तीर्थंकरपद लहै । चोथी केवल हेव ॥ न० ॥ १८ ॥ पंचमीनरकनो सरब विरति लहै । छठी देसविरत्त । सातमी नरक नो समकितही-जलहै । न हुवे अधिकनिमित्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ * ॥ ढाल ३ करमपरीक्षाकरण कुमरचल्योरे ॥

मानवगतिविण मुगतिहुवे नहींरे । एहनो इम अधिकार । आऊसंख्याते नर सहुदंरूकेरे । आवीलहै अवतार । मानव० ॥ २० ॥ तेऊ वाऊ दंरूक बेतजीरे । बीजा जेबावीस । तिहां थीआयाथाये मानवीरे । सुख-दुःखकर्मसरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असंखीआऊखेरे । सातमीनरकना तेम । तिहांथीमरिने मनुष्यहुवेनहींरे । अरिहंतन्नाख्योएम ॥ मा० ॥ ॥ २२ ॥ वासुदेवबलदेव तथा वलीरे । चक्रवर्तिनें अरिहंत । सरग नगरना आया एहुवेरे । नरतिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चौविहदेवथकी चवि ऊपजेरे । चक्र-वर्त्ति बलदेव । वासुदेव तीर्थंकर ए वे हुवेरे । वैमानिकथकी सेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ * ॥ ढाल ४ नाभि अने मरुदेवा ए चाल ॥

॥ हिव तिरयंचतणी गति आगति कहीयेअशेष । जीवभमें इणपरभवमांहें करमविशेष । आऊसंख्याती जे नर तिर्यंच विचार । ते सगला तिरयंचांमाहें लहै अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचांमाहें आवे नारक देव । तेकह्या पहिली तिण कारण न कहुं हेव । पंचेंद्रीतिरयंचसंख्यातेआऊखे जेह । ते मरी चिहुंगतिमांजावे इहां नहींसंदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंद्री आठेकहावे । तिहांथी आऊसंख्याता नर तिरयंचमें आवे । विकलचवी लहै सर्वविरतिपिण मुगति न पावे । तेऊ वाऊथी आयो तेहनें समकितनावे ॥२७॥ नारक वरजीनें सगलाही जीवसंसार । पृथवी आऊ वनस्पती माहें लहै अवतार । ए तीनें इहांथीचविआवे दसेठामें थावर विकल तिरीनरमाहें उतपत्ति पामें ॥ २८ ॥ पृथवी कायआदिदेई दसदंडके एह । तेऊ वाऊ माहेंआवी उपजे तेह । मनुष्य विना नवमाहें तेऊ वाऊवें जावे । विकलेंद्री ते दसमाहिंजावे पूठाहीआवे ॥ २९ ॥ एमअनादि तणोमिथ्याती जीवएकंत । वनस्पतीमाहें तिहांरहीयो कालअनंत । पुढवी पाणी अग्नि अनें चोथोवलिवाय । कालचक्र असंख्याता तांइ जीवरहाय ॥३०॥ बेइंद्री तेइंद्री अनें चौरिंद्री मझारे । संख्यातावरसांलगे भमियो कर्मप्रकारे । सात आठ भव लगतां नर तिरयंचमें रहियो । हिवमानव भव लहिनें साधुने वेषमें रहियो ॥३१॥ रागद्वेष छूटे नहीं किम होवे छूटकवार । पिणछे माहरे मन सुधता

हरो एकआधार । तारणतरण में त्रिकरणसुद्धे अरिहंत लाधो । हिव संसार घणोन्नमिवो तो पुद्गलआधो ॥ ३२ ॥ तूं मनवंछितपूरण आपदचूरणसामी । ताहरी सेवलहीतो में नवनिध सिधपामी । अवर न कांइछुं इणनव तुहीजदेव । सूधे मन एक होयजो नव नव ताहरीसेव ॥३३॥ कलश । इम सकलसुखकर नगरजेशलमेर महिमादिनदिनें । संवत्तसतरेगणतीसे दिवसदीवालीतणें । गुणविमलचंद्रसमान वाचक विजयहरष सुसीसए । श्रीपासना गुण एमगावे धरमसी सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्रीचौवीसदंडकस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री इरियावही मिच्छामिदुक्कड संख्यास्तवनं लिख्यते ॥

॥ * प्रभु प्रणमुंरेपासजिणेसरथंभणो ए देशी ॥

पदपंकजरे प्रणमी वीरजिनंदना । त्रिकरणसुधरे करि मुनिवरपयवंदना । अैमत्तेरे पडिकमी जिमइरियावही । श्रीवीरनीरे वाणी तहत्तकरि सरदही । उल्लालो । सरदहीवाणी मन सुहाणी चित्त आणी तेवली । मिच्छामिदुक्कडतणी संख्या कहिसुं जिमकही केवली । भूदगजलण तिम वाउ वणसई विमल पणइन्नी तणी । करतांविराहण करमबंध्या दूर ते करिवानणी ॥ १ ॥ ढाल ॥ पुढवीदगरे तेऊ वाऊ वणस्सई । पणथावर रे बादरसुहमदसेंथई । प्रत्येकजरे वणस्सईइग्यारेंथया । बावीसरे पजत्तग अपजत्तया ॥ उल्लालो ॥ पजत्त अपजत्तग वखाण्या विगलतिंय छह भालए । जलथलखचरभुयंग

छइ पणइंद्रिय तिरि अरुयालए। घम्मादिसातेनरकपुढवी नारकी तिहां सातए। तेचवदभेदेकरीजाणो पजत्तय अपजत्तए ॥ २ ॥ ढाल ॥ पनरहविधरे सुरगणपरमाहम्मिया। किल्लविषियारेत्रिविधकरम ते निम्मिया। जंभियदसरे नवलो-कांतिकजाणिये। सोलह विधरे व्यंतरदेव वखाणिये ॥ उल्लालो ॥ वखाणिये दसविध भुवनपतिना तार रवि शशि रिषिगाहा। चर थिरदसेविध जोइसीसुर वखाणया जिणवरजिहां। बारह वैमानिक पणअणुत्तर नवग्रेवेके नवभणया। पजत्त अपजत्तग अठाणुंअधिकसतसंख्यागिणया ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ ॥ मेघ आगम सही ए देशी ॥

॥ पंचभरत वलि ऐरवतपंचए पंचविदेहवरभूमिका ए। खेत्र ए पनरह करमभूमिजाणीये असिकसिमसिहि आजीविकाए। हेमवतखेत्र वलि हरिवर्ष, रम्यक, ऐर-एयवतसहीए। मेरु पिणपाखती चारि चारि खेत्रए दस कुरु अकरमकभूमि कहीए ॥ ४ ॥ हिमगिरि सिमरीय दाढ चिहुंआरिअ लवणसमुद्रमांहिविस्तरीए। सात सात अंतर दोयपासे दीपछप्पन्न अंतरधरीए। दोइसेभेद छइ आगला जांणिये मणुय पजत्त अपजत्तयाए। एकसो एक समुर्छिम भेद ए। तीनसेतीन मणुआ थया ए ॥ ५ ॥

॥ढाल३॥ हिव जनम्याजगगुरु जगत्र हुवो जयकार ए चाल॥

॥ पणसय तेसठविध जीवसहू छे एह, अभिहयआदिक

दस गुणितकरीजे तेह । पणसहसछसे वलि तीसअधिकते जाण । ते रागे दोसे दुगुणा करीवखाण ॥ ६ ॥ दुइ सहस इग्यारह दुइसयसाठप्रमाण । ए प्रवचनवाणी जाणी हित उर आण । मनवच काया करि त्रिगुणा करि ते अंक । तेतीस सहस सतसात असी निःसंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुणाकिद्ध । इकलक्ख सहसइग तिसयचालीस प्रसिद्ध । अतीत अनागत वर्त्तमान वलि काल । जे अइय विराधना तिणि त्रिगुणा संभाल ॥ ८ ॥ तीनलाख सहस च्यार बीसअधिक ते थाय । अरिहंत प्रमुख छहसाखे छ गुणा भाय । इम लाखअढारह वलि सहसचउवीस । इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४ ॥ चोपईनी ॥

॥ इणपणि मिछामिदुक्कडं देई । भविकतस्या भवजलनिधि केई । तरे अछे वलि आगलतरसी । निरमलकेवललखमी-वरसी ॥ १० ॥ इरियावही धरमगंगाजल । स्नानकरि आतम-करे निरमल । संमुखभाषे वीरजिनेसर । सूत्रकरिगूंथे ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इमपडिक्कमी मुनिवरअइमतो । वीरसीस केवलपदपत्तो । त्रिकरणसुध तसु पयप्रणमीजे । मानवजमन सफल इमकीजे ॥ १२ ॥ कलश ॥ इम वीरजिणवर ज्ञानदि-णयर सयललोयसुहंकरो । तियलोयसामी सिद्धिगामी सुद्धधरम धुरंधरो । उवज्झाय लक्ष्मीकीर्त्ति सीसे जैनवाणी मनधरी । गणि लब्धिवल्लभ स्तवनभाण इम संथुण्यो भावे करी ॥ १३ ॥ इति श्रीइरियावहीस्तवनं संपूर्ण ॥

॥ * ॥ चवद्गुणठाणा स्तवनं लिख्यते ॥
॥ थंभणपुर श्रीपासजिणंदो ॥ ए चाल ॥

॥ सुमतिजिणंद सुमतिदातार । वंदुं मनसुधवारंवार । आणीभावअपार । चवदे गुणस्थानकसुविचार । कहिस्युं सूत्र अरथ मनधार । पामें जिम भवपार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो । बीजो सास्वादनमनआणो । तीजो मिश्र वखाणुं । चोथो अविरतिनाम कहाणो । देशविरति पंचम परमाणो । छठो प्रमत्तपिछाणुं ॥ २ ॥ अपरमत्त सत्तम सलहीजे । अठम अपूरबकरणकहीजे । अनिवृत्ति नाम नवम्म । सूखमलोभ दसम सुविचार । उपशांतमोह नाम इग्यार । खीणमोहबारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगीगुणधाम । चउदम थयो अयोगीनाम । वरणुं प्रथमबिचार । कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाणें । एहलक्षण मिथ्यागुणठाणें । तेहनां पंचप्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी चाल ॥

॥ जेह एकांतनयपक्ष थापी रहै, प्रथमएकांतमिथ्यामति ते कहे । ग्रंथ उत्थापि थापे कुमतिआपणी । कहे विपरीत मिथ्यामती ते भणी ॥ ५ ॥ जैन शिवदेवगुरु सहुनमें सारिखा । तृतीय ते विनयमिथ्यामतिपारिखा । सूत्र नवि सरदहे रहे विकलपघणें । संसयीनाम मिथ्यातचोथोभणें ॥ ६ ॥ समझनहींकाई निजधंध रातोरहे । एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै । एह अनादि अनंत अभव्यनें । करिय अनादिथिति अंत सुभव्यनें ॥ ७ ॥ जेम नर खीरघृतखंडजीमनें वमें ।

सरसरसपाय वलि स्वादकेहवोगमें। चौथ पंचम छठे ठाण चढिनेंपडे। किणहिकपायवसि आय पहिले अडे॥ ८॥ रहे विच एकसमयादि षट् आवली। सहीय सासादनें स्थिति इसी सांभली। हिव इहां मिश्र गुणठाण त्रीजोकहे। जेह उत्कृष्ट अंतरमहुरतलहे॥ ए॥

॥ ढाल ३॥ बेकर जोडीताम एहनी॥

॥ पहिलाचारकषाय। शमकरिसमकिती। केतो सादि मिथ्यामतीए। एवेहिजलहे मिश्र। सत्यअसत्य जिहां। सरदहणाबेउंछतीए॥ १०॥ मिश्रगुणालयमांहि। मरणलहे नहीं। आउबंध न पडे नवो ए। केतो लहे मिथ्यात। के समकित लहे। मति सरखी गतिपरभवे ए॥ ११॥ च्यारअप्रत्याख्यान। उदयकरी लहे। मतिविण किहां समकितपणो ए। ते अविरतगुणठाण। तेतीससागर। साधिकथिति एहनी भणो ए॥ १२॥ दया उपशमसंवेग। निर्वेदआसता। समकितगुणपांचेधरेए। सहुजिन वचनप्रमाण। जिन शासनतणी। अधिकअधिक उन्नति करे ए॥ १३॥ केईक समकितपाय। पुद्गलअरधतां। उत्कृष्टाभवमेरहेए। केईकभेदीगंठि। अंतरमहुरतें। चढतें गुण सिवपदलहे ए॥ १४॥ च्यारकषाय प्रथम्म। त्रिण वलि मोहनी। मिथ्यामिश्रसम्यक्तनी ए, सातेप्रकृति, जास। परही उपसमें। ते उपसमसमकितधणी ए॥ १५॥ जिण साते क्षयकीध। तेनर क्षायकी। तिणहीज-

नव सिव अनुसरे ए। आगलवांध्यो आउ। तातें तिहांथ-
की। तीजे चौथेनवतरेए ॥ १६ ॥

॥ ढाल ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ए चाल ॥

॥ पंचम देसविरतिगुण ठाण। प्रगटे चउकरूी प्रत्याख्यान।
जेण तजे बावीस अन्नक्ष। पाम्यो श्रावकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥
गुण इकवीस तिके पिण धारे। साचा बारे ब्रत संजारे। पूजा-
दिक षट्कारज साधे। इग्यारे प्रतिमाआराधे ॥ १८ ॥ आरत
रौद्र ध्यान हुवे मंद। आयो मध्य धरमआनंद। आठ वरस
ऊणी पुवकोरू, पंचमगुणठाणें थितिजोरू ॥ १९ ॥ हिव आगे
साते गुणठाण। इकइक अंतरमहुरतमान। पंच प्रमाद वसे
जिण ठाम। तेण प्रमत्तछठोगुणधाम ॥ २० ॥ थिवर कलप
जिनकलपआचार। साधे षट्आवस्यकसार। उद्यतचोथा
च्यारकषाय। तेण प्रमत्तगुणठाणकहाय ॥ २१ ॥ सूधो राखे
चित्तसमाधे। धरमध्यान एकांतआराधे। जिहां प्रमाद क्रिया-
विध नासे। अपरमत्त सत्तमगुणन्नासे ॥ २२ ॥

॥ ढाल ५ ॥ मी नदी यमुनाके तीर उडे दोय
पंखीया ए चाल ॥

॥ पहिलेअंसे अष्टमगुणठाणातणें। आरंन्ने दोयश्रेणि
संखेपे ते गिणें। उपशमश्रेणिचढे जे नरहुवे उपसमी। क्षपक-
श्रेणि क्षायकप्रकृतिदश क्षयगमी ॥ २३ ॥ तिहां चढतापरि-
णाम अपूरवगुण लहे। अष्टम नाम अपूरवकरण तिणें कहे।
सुकलध्याननो पहिलो पायो आदरे। निरमल मनपरिणाम
अग्गिध्यानें धरे ॥ २४ ॥ हिवअनिवृत्तिकरणनवमो गुण

जाणिये । जिहां न्नावथिररूप निवृत्ति न आणिये । क्रोध मा-
ननें माया संजलणाहणें । उदेनहीं जिहां वेद अवेदपणों
तिणें ॥ २५ ॥ जिहांरहे सुखमलोन्न काइंकशिवअन्निलखे । ते
सूखमसंपरायदशम पंरूित दखे । संतमोह इण नाम इग्यारम
गुणकहे । मोहप्रकृति जिणठाम सहु उपसमलहे ॥ २६ ॥
श्रेणिचढ्यो जो कालकरे किणहीपरे । तो थाये अहमिंद्र
अवर गतिनादरे । च्यारवारसमश्रेणि लहे संसारमें । एकन्नवे
दोयश्रेणि अधिक न हुये किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम
समी पहिले परू । मोहउदे उत्कृष्ट अरधपुद्गल रूरू । क्षपक
श्रेणि इग्यारम गुणठाणो नहीं । दशम थकी बारम्मचढे
ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ६ ॥ एकदिन कोई मागधआयो पुरंदर
पास ए चाल ॥

॥ खीणमोहनामें गुणठाणो बारमजाण । मोहखपायो नेरूो
आयो केवलनाण । प्रगटपणें जिहां चारित अमल यथा आ
ख्यात । हिवआगे तेरमगुणठाणतणी कहे वात ॥ २९ ॥
घातीय चौकरूी क्षयगई रहीय अघातीय एम । प्रकृतिपच्यासी
जेहनें जूनाकापरू जेम । दरसणज्ञानवीरजसुखचारित पंचअनं-
त । केवलज्ञानप्रगटथयो विचरे श्रीन्नगवंत ॥ ३० ॥ देखे
लोक अलोकनीठानी परगट वात । महिमावंतअढारे दूषण
रहितविख्यात । आठवरसे जणीकही इकपूरबकोरूि । उ-
त्कृष्टी तेरमगुणठाणें ए थितिजोरूि ॥ ३१ ॥ करशैलेसीकरण
निरूध्या मनवचकाय । तेण अयोगी अंतसमे सहु प्रकृतिख-

पाय । पांचे लघुअक्षरकचरतां जेहनोमान । पंचमगति पामें सिवपद चउदमगुणथान ॥ ३१ ॥ त्रीजे बारमें तेरमें माहें न मरे कोय । पहिलो बीजो चोथो परभव साथेहोय । नारक देवनी गति माहें लाभे पहिलाच्यार । धुरला पांच तिरि माहिं मणु ए सर्व विचार ॥ ३२ ॥ कलश ॥ इम नगरबाहड़-मेरुमंडन सुमतिजिनसुपसाउले । गुणठाणचवदविचार वरण्यो भेद आगमनेबले । संवत्तसतरेसे छत्तीसे श्रावणवदि एकादसी । वाचक विजय श्रीहरष सानिध कहे मुनि इम धर्म्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्रीचतुर्दशगुणस्थान विचार स्तवनं संपूर्णम् ॥ ॥ * ॥

॥ अथ अढाईद्वीप २० विहरमान स्तवनं लिख्यते ॥

॥ वंदुं मनसुध विहरमाण जिणेसरवीस । दीपअढीमें दीपे जयवंताजगदीस । केवलज्ञाननें धारे तारे करि उपगार । किण किणठामें कुणकुणजिन कहि स्युं सुविचार ॥ १ ॥ ए पैंतालीस लक्षयोजन मानुषक्षेत्रप्रमाण । वलया कारे आधे पुष्कर सीमा-जाण । दोयसमुद्र सोहे द्विपअढाई सार । तिणमें पनरे करम-भूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूदीप समे थिचथाल आकार । लांबो पिहुलो इकलखजोयणनें विसतार । मोटो तेहनें मध्य सुदरशणनामें मेर । तिणथी दिसा विदिसानी गिणती च्यारें फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षण दिसि एह भरत सुभक्षेत्र । पांचसेछवीस जोयण छकला तेहनो चेत्र । उत्तरखं-डमें एहवो ऐरवतक्षेत्रकहाय । इण विहुं करमांभूमी आरा छई फिरताजाय ॥ ४ ॥ तेत्रीससहस छसे चौरासी जोयण

जाणिये । जिहां त्रावथिररूप निवृत्ति न आणिये । क्रोध मानने माया संजलणाहणें । उदेनहीं जिहां वेद अवेदपणें तिणें ॥ २५ ॥ जिहांरहे सुखमलोत्न काइंकशिवअभिलखे । ते सूखमसंपरायदशम पंमित दखे । संतमोह इण नाम इग्यारम गुणकहे । मोहप्रकृति जिणठाम सहु उपसमलहे ॥ २६ ॥ श्रेणिचढ्यो जो कालकरे किणहीपरे । तो थाये अहमिंद्र अवर गतिनादरे । च्यारवारसमश्रेणि लहे संसारमें । एकन्नवे दोयश्रेणि अधिक न हुये किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समी पहिले पमे । मोहउदे उत्कृष्ट अरधपुद्गल रमे । क्षपक श्रेणि इग्यारम गुणठाणो नहीं । दशम थकी वारम्मचढे ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ६ ॥ एकदिन कोई मागधआयो पुरंदर पास ए चाल ॥

॥ खीणमोहनामें गुणठाणो वारमजाण । मोहखपायो नेमो आयो केवलनाण । प्रगटपणें जिहां चारित अमल यथा आख्यात । हिवआगे तेरमगुणठाणतणी कहे वात ॥ २९ ॥ घातीय चौकर्म क्षयगई रहीय अघातीय एम । प्रकृतिपच्यासी जेहनें जूनाकापम जेम । दरसणज्ञानवीरजसुखचारित पंचअनंत । केवलज्ञानप्रगटथयो विचरे श्रीन्नगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनीठानी परगट वात । महिमावंतअढारे दूषण रहितविख्यात । आठेवरसे जाणीकही इकपूरबकोमि । उत्कृष्टी तेरमगुणठाणें ए थितिजोमि ॥ ३१ ॥ करशैलेसीकरण निरूध्या मनवचकाय । तेण अयोगी अंतसमे सहु प्रकृतिख-

पाय । पांचे लघुअक्षरऊचरतां जेहनोमान । पंचमगति पामें सिवपद चउदमगुणथान ॥ ३१ ॥ त्रीजे बारमें तेरमें माहें न मरे कोय । पहिलो बीजो चोथो परन्नव साथेहोय । नारक देवनी गति माहें लाज्ने पहिलाच्यार । धुरला पांच तिरि माहिं मणु ए सर्व विचार ॥ ३२ ॥ कलश ॥ इम नगरबाहरू- मेरुमंरून सुमतिजिनसुपसाउले । गुणठाणचवदविचार वरण्यो न्नेद आगमनेबले । संवत्तसतरेसे छत्तीसे श्रावणवदि एकादसी । वाचक विजय श्रीहरष सानिध कहे मुनि इम धम्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्रीचतुर्दशगुणस्थान विचार स्तवनं संपूर्णम् ॥ ॥ * ॥

॥ अथ अढाईद्वीप २० विहरमान स्तवनं लिख्यते ॥

॥ वंदुं मनसुध विहरमाण जिणेसरवीस । दीपअढीमें दीपे जयवंताजगदीस । केवलज्ञाननें धारे तारे करि उपगार । किण किणठामें कुणकुणजिन्न कहि स्युं सुविचार ॥ १ ॥ ए पैंतालीस लक्ष्योजन मानुषक्षेत्रप्रमाण । बलया कारे आधे पुष्कर सीमा- जाण । दोयसमुद्र सोहे द्विपअढाई सार । तिणमें पनरे करम- न्नूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूदीप समे त्रिचथाल आकार । लांबो पिहुलो इकलखजोयणनें विसतार । मोटो तेहनें मध्य सुदरशणनामें मेर । तिणथी दिसा विदिसानी गिणती च्यारें फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षण दिसि एह न्नरत सुन्नक्षेत्र । पांचसेछवीस जोयण छकला तेहनो वेत्र । उत्तरखं- रूमें एहवो ऐरवतक्षेत्रकहाय । इण विहुं करमांन्नूमी आरा छई फिरताजाय ॥ ४ ॥ तेत्रीससहस छसे चौरासी जोयण

जाण । च्यारकला ए महाविदेह विखंभ्नवखाण । बावीससे तेरे जोयण एक विजय पहुलाण । एहवि बत्तीसविजयविराजे जेहनें ठाण ॥ ५ ॥ मेरुविचेकर पूरव पच्छिम दोयविभ्नाग । सोले सोले विजय तिहां विचरे श्रीवीतराग । सासते चोथे आरे तारे श्रीअरिहंत । एहवो महाविदेह करमभ्नूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरव विदेह विजयपुष्कलावतिआठमीठाम । पुंडरीकणीनगरी तिहां श्रीसीमंधरस्वाम । वप्रविजयपच्चवीसमी विजयापुरनोनाम । पच्छिमविदेह बीजा युगमंधर कीजे प्रणा-म ॥ ७ ॥ तिमहीज नवमीवच्छविजय वलि पूरवविदेह । नयरि सुसीमा त्रीजाबाहु नमुं धरिनेह । नलिनावर्त्त चौवीसमी पच्छिमविदेह वखाण । वीतशोकानगरी तिहां चौथा सुबाहु जाण ॥ ८ ॥ एच्यारेईजिणवर जंबुद्वीपमझार । महाविदेह सुदरशण मेरु तणों परकार । एहवो जंबुद्वीप महा गढ जेम गिरिंद । खाई रूपे दोयलखजोयण लवण समंद ॥ ए ॥

॥ ढाल दीवाली दिन आवीयौ ए चाल ॥

॥ दीपे बीजो द्वीप ए । धनधनधातकीखंड । पिहुलो चिहुंलखजोयणे । मंडलरूपेमंड ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय भ्नरत दोयऐरवत, दोय वलि महाविदेह । करमभ्नूमी षट् छे जिहां । तणहीज नामेंएह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरव पच्छिम धातकी । खंडगिणीजे दोय । विजयमेरूपूरबदिसे । पच्छिम अचल जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥ इक इक मेरुनें आंतरे । करम भ्नूमि तीन तीन । निजनिज मेरुथी मांडिनें । लेखो चिहुं दिसलीन

॥ १३ ॥ श्रीसुजातजिनपांचमो । छठो स्वयंप्रनूईस । रिषजा-
ननजिन सातमो । समरीजे निसदीश ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंत
वीरजजिन आठमो । ए च्यारे जिनराय । पूरब धातकीखंममें ।
महाविदेह रहाय ॥ १५ ॥ दी० ॥ पहिली चिहुं जिननी परे ।
विजय नगर दिशि ठाए । तिए हीज नामें अनुक्रमें । विजय
मेरु अहिनाए ॥ १६ ॥ दी० ॥ नवमो सूरप्रनु नमुं । दशमो
देवविशाल । इम वज्रधर इग्यारमो । त्रिकरणनमुं त्रिहुंकाल
॥ १७ ॥ दी० ॥ बारमो चंद्राननजिन । पछिमधातकी मांहि ।
विचरे च्यारे जिणवरा । अचलमेरु उछांहि ॥ १८ ॥ दी० ॥ एहवो
धातकी खंरुए । परदक्षणा परकार । अठलखजोयणविंटीयो,
समुद्र कालोदधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ३ ॥ पहिलि प्रतिमा एकणमासनी० ए चाल ॥

॥ कालोदधिनें पेलेपारए । वींट्यो चूरी जेम विचालए ।
सोलहलख जोयण विसतारए । दीपपुष्करवर अतिसुखकार
ए ॥ उल्लालो ॥ सुखकार पुष्करदीपन्नीजो तेहनें आधेपगे ।
विचपड्यो परबत मानुषोत्तर मनुष्यक्षेत्रतहांलगे । तिए
अधिकार आठ लाख । जोयए अरधपुष्कर एमए । तिहां
करमनूमी छए कहीजे धातकीखंरु जेमए ॥ २० ॥ ॥ ढाल ॥
आधेपुष्करनें पूरबदिसे । मंदरनामें मेरु तिहांवसे । पछिम
विज्जुमाली मेरु ए । इहां किए इतरो नामें फेर ए ॥ उल्लालो ॥
फेर ए इतरो इहां नामें अवरठामें कोनहीं । एक एक मेरे
तीन तीने करमनूमी तिहां कही । इम नरत ऐरवत महावि-

देहे नाम सरिखो एह ए। तिणहीज नामें विजयसगली सासता धर्मक्षेत्र ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकीखंडे तिम पुष्कर सही। इहां खेत्रांनी रचनाविधकही। वारवारकहतां विसतार ए। पहिलां पर लेज्यो सुविचार ए ॥ ॥ उल्लालो ॥

सुविचार बाकी तेह सगलो नगर तिमहीज मनगमें। पूरवे पछिम जेह नीते तेह तिमहीज अनुक्रमें। श्रीचंद्रबाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थंकरा। पूरवे पुष्कर अरधमांहे सरव जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदु जिन सतरमो, श्रीमहाभद्र अठारमनितनमो देवजसा उगणीसमजिनदेवए। अजितवीर्य वीसम जिणदेवए ॥ उल्लालो ॥ जिण च्यार पुष्कर अरध मांहि कह्या पछिमभागए। तिहां मेरु विद्युन्मालि चिहुंदिसि विचरता वीतराग ए। चौरासीपूरवलाख वरसां आउ इक इक जिनतणो। पांचसेधनुषसरीर सोहे सोवनवरण सुहामणो ॥ २३ ॥ ढाल ॥ कालजघन्यै ए जिणवीसए। हिव उत्कृष्टे भेदकहीसए। एकसोसत्तरि तिहां जिणवर कहे। पांचे भरते जिम पांचे लहे ॥ उल्लालो ॥ जिणलहे पांचे तेम पांचे ऐरवत मिल दशहुवा। इक इक विदेहे बत्तीस विजयां तिहां पिण छे जूजूआं। एकसोसत्तरि एम जिनवर कोडिनवसय वलि केवली। नवसहसकोडी अवर मुनिवर वंदीये नित ते वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां भरतें ऐरवतें आज ए, पांचमें आरे नहीं जिनराजए। धनधन पांचे महाविदेह ए। विचरे वीसजिनगुणगेहए ॥ उल्लालो ॥ गुणगेह दोष

अढारवरजित अतिशया चौतीसए। चोसठिइंद नरिंद सेवित नमुं ते निसदीस ए। तिहां आज तारण तरण विचरे केवली दोयकोड ए। दोईसहसकोडि सुसाधु बीजा नमुं बेकरजोड ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इमअढीदीपे पनरकरमाभूमिखेत्रप्रमाण ए। सिद्धांतप्रकरणमांहिभाष्या वीसविहरमाणए । श्रीनगर जेशलमेरु संवत सतर गुणतीसे समे । सुखविजयहरष जिणंद सांनिध नेहधरि धर्मसींह नमें ॥२६॥ इति श्रीमेरुपर्वत कर्मभूम्यादि विचार गर्भितं विंशति विहरमाण जिनानां वृद्धि स्तवनं ॥

जंबुद्वीप, धातकी खंड, २ आधो पुष्कर द्वीप, ३ एवं २ ॥ द्वीपमें ५ भरत, ५ ऐरवत, ५ महाविदेह, १५ कर्म भूमीमें विचरता सास्वता २० विहर मानकों मेरा नमस्कार होवो ॥

॥ अथ श्रीशीतल जिनचैत्यप्रतिष्ठा स्तवनं लिख्यते ॥

॥ भविजनपूजोरे शीतलजिनपतीरे। नयनानंदन चंद। प्रभुजी विराजे रे सूरतबिंदरे। नंदा देवीना नंद ॥ १ ॥ भ० ॥ जगहितकारीरे जिनजी अवतर्यारे। श्रीदृढरथ नृपगेह। श्रीवछसोहेरे लांछनसुंदररे । कनकवर्ण प्रभुदेह ॥ २ ॥ भ० ॥ विषयनिवारी रे संयमसंग्रह्यो रे। लाधुं केवल नाण। सघनघनाघनजिमधर्म वरसतारे। विचर्या त्रिभुवन भाण ॥ ३ ॥ भवि० ॥ वेदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुतारे। च्यार अघाती कर्म, दूर निवार्या रे अनुक्रम तेहनें रे। पाम्युं शिव पदसर्म ॥ ४ ॥ भ० ॥ संप्रतिकालेरे श्रीजिनराजनोरे। पूजीजेरे प्रतिबिंब । प्रतिदिनलहीयेरे प्रभुसुप्रसादथीरे वांछित

फल अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥ श्रीजिनवरनो विंब विलोकतां रे । दुकृतदूरपुलाय । इंद्रीयनिग्रह सुग्रहसंपजेरे । समकित पिण दृढथाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसद्गुरुनामुखथी सांजल्यारे । एहवा वचनविलास । ते वहुमानें रे निजचित्तमें धस्यारे । नेमी सुत जाईदास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्यकराव्युंरे सुंदरसोजतोरे । मनधरिअधिकउल्लास । शीतलप्रजुनोरे विंबजरावियोरे । सहसफणा वलिपास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस अढारह सत्तावीसमें रे । माधवमास मझार । उज्जलद्वादसी दिवसे थापीयारे । विंब अनेकउदार ॥ ए ॥ ज० ॥ एकसोइक्यासीसहु मेले थया रे । विंवादिकसुविचार । कीध प्रतिष्ठा तेदिनतेहनीरे । विधि पूर्वकमनधार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाजसूरीश्वरदीपतारे । श्रीखरतरगच्छजांण । तासपसायमें शीतलजिनथुण्यारे । विबुध क्षमाकल्याण ॥ ११ ॥ जवि० ॥ इति श्री १० शीतल जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ बयालीस दोस वृद्ध स्तवनं लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सासनपतिचौवीसमो । महावीरजगवंत । दोष बयांलीस दाखीया । टाले ते मतिमंत ॥ १ ॥ धारक दसविध धरमना । चाले जे इणचाल । निरदूषणआहारल्ये । ते विरला इणकाल ॥ २ ॥ सोले श्रावकथी टले । सोले साधु सरीर । वली दस फीरतां गोचरी । समजे तिके सधीर ॥ ३ ॥ मांफ-लना दूषण कह्या । पणधारीनें पंच । माहें ते पिण मेलतां । सैंतालीसनो संच ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हूवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उदगम नाम संज्ञाइसीरे । श्रावकथीजेसोल । पहिली ते परिकासीयेरे । विवरोकरीयविरोल । मुनीसर समजील्यो आहार । नालिकवचननिहालज्यो रे । आहारजिस्यो उद-गार ॥ मुनी० ॥ ६ ॥ मुनिनेंकाजेजेकरेरे। आधाकर्मी अबुद्ध। कीधोऋो ऊनोकरीरे । ध्येतेपूर्वविसूद्ध ॥ मुनी० ॥ ७ ॥ एदो-नुंमेलीदीयेरे । तेत्रिजोपूतिकर्म । अन्यमतिनें आपतांरे । ध्येते मिश्रितमर्म ॥ मुनी० ॥ ८ ॥ थाप्यो दूजे ठाममें रे । थापना-दूषणजाण । प्राभृतिकादूषणछठो रे । अठीयउठीसुंध्ये आंण । मुनी० ॥ ए ॥ जालीगोखजोई दीयेरे । प्राडुःकरण ते प्राय । मोललेइथैं मुतिप्रतैंरे । क्रीततीको कहिवाय ॥ मुनी० ॥ १० ॥ ऊधारोलेइ आपतां रे । नवमो प्रामित्यनेम । असनसटेलेइ असनध्येरे । ते परवर्तनप्रेम ॥ मुनी० ॥ ११ ॥ अन्याहृतइ-ग्यारमोरे । जेदे थानकआय । उद्भिन्ननांमे बारमोरे । आपे जे उघराय ॥ मुनी० ॥ १२ ॥ ऊपरथीउतारीध्येरे । माला-हृततेमोस । बालकना करथी ग्रहिरे । देतेआछिद्यदोस ॥ मुनी० ॥ १३ ॥ पाकादिकपंचांतणोरे । अनपृष्ट दे जो एक । अधिकेरो ऊरे वलीरे । देखी साधुअनेक ॥ मुनी० ॥ १४ ॥ अध्यवपूरक ते सोलमो रे । लेतांलागे पाप । सुविवेकी श्राव-कहूवे रे । तो सहिजेटले संताप ॥ मुनी० ॥१५॥ दुहा ॥ उत पादनसंज्ञातणा । दाखूं सोले दोष । जयणाकरी टालीसजो । तो मुनिवरपामीसमोख ॥ १६ ॥

॥ ढाल २ ॥ सुगुण सोभागी हो साहिब माहारा एदेशी ॥

॥ प्रथमखेलावे बालकवहूपरे । ते धाईदूषणतंत । चतुरनर, दाखे संदेसा दूतितणा । ते दूतिदोषकहंत ॥ चतु० ॥ १७ ॥ जिनवरनेंवचनें चालेजिके । तेराखे एकतार ॥ चतु० ॥ असनादिकलेतांअणसूझतां । आगेदोष अपार ॥ चतु० ॥ १८ ॥ जिन० ॥ निमित्तप्रकाशकरे नितनितनवो । निमितदूषण तेह नेम ॥ चतु० ॥ जातवतांयां आपणीजनप्रते । आजीविकदोषएम ॥ चतु० ॥ १९ ॥ जिन० ॥ शिवशासननीवातसुणावतां । वनीगमदोषविचार ॥ चतु० ॥ विविधआहारकरीदयैं वैद्यगी । तेह चिकित्सानीतार ॥ चतु० ॥ २० ॥ जिन० ॥ असनादिक जे क्रोधेआचरे । क्रोध दूषण कहिवाय ॥ चतु० ॥ मानतणें बस जेहग्रहें मुनि । ने मानपिंड कहिवाय ॥ चतु० ॥ ॥ २१ ॥ जिन० ॥ केलवणा जे कपटतणीमिलें । तेतोमायाविनाम ॥ चतु० ॥ लालसा दूषणरसलुब्धो लीयें । ते समजुनो नहिं कांम ॥ चतु० ॥ २२ ॥ जिन० ॥ परसंसी दातव्यगुणपूछला । लेतांसंस्तवनो लाग ॥ चतु० ॥ लेइने परसंसें लोकनें । ते परसंसा पिण त्याग ॥ चतु० ॥ २३ ॥ मंत्रतणी लाघवताये मिले । तो मंत्रदूषणतास ॥ चतु० ॥ वसीकरणकरदेई वहिरतां, चूरणपिंडसरास ॥ चतु० ॥ २४ ॥ अंजनादिकजोगे अदसीकरे । योगपिंडदूषणजाण, मूलकरमपिंडदूषणसोलमो, पातन गर्भ्भप्रमाण ॥ चतु० ॥ २५ ॥ जिन० ॥ दुहा ॥ गौच-

रीयें जातां गुरें । दाख्या दूषणदस्स । ते टाली ल्यावे तिके संयम गुणें सरस्स ॥ २६ ॥

॥ ढाल श्रीसंखेसरपासजिणेसरभेटिये एदेशी ॥

आधाकरमीआदिक सोलह जे कह्या, संकाकरतां संकित पिंडवसेकह्या । सचित्तजलादिकलागां मृक्षितपिंडए । प्रथवी प्रमुखमुकाणो निक्षितपिंडए ॥ २७ ॥ सचितप्रमुख फलस्पर्शें असनग्रह्यां सदा । चोथोपिहितदोष हूवो परगट तदा । संहृत-दोष मोटाथी लघुमे मूकतां । दायकनांमे दोष देवालअसूजतां ॥ २८ ॥ उनमिश्रलागे जोग्य अजोग्य अजाणतां । अपरिण-त्तइणनांम असीनो आणतां । कररेखाविणसूकां लिप्तदूषण-लीयो । छर्दितदूषणजे लेतां धरति नांखीयो ॥ २९ ॥ ए दसदूषण एहनें संज्ञाएषणा, साधुजिकेसुविहांण चलंति गवे-षणा । जिनवरनेंवचनेंएहबेतालीस जो टले, तोइणपंचमेंआरे साधुपणोपले ॥ ३० ॥ मुनिवरनें वली पांचदूषण मांडल तणा । जे भाख्याजिनराज सुणो भवियणजणा । खीरखांडघृतमेल्यां संजोजनसुणो । अपरिमाण आहार लेतां दूजो गिणो ॥ ३१ ॥ धूम दूषण इण नाम तेहिजकुवखाणतां । ईंगालनांमे दूषणस-खरवखांणतां । ग्लानिविनारसलेतां अनिमित्त आंणीयें । मांडलना ए दोष । सुगुरु मुखजाणीयें ॥ ३२ ॥ पिण हूं संय-मपाय नको टाली सक्यो । तिणकारण हिव स्वामि सरणता-हरोतक्यो । मोटांनें उंलाजअछे मिटवातणी । कारजपडियां काजसुधारे ते धणी ॥ ३३ ॥ आगेपिण अपराधितारयाछे इता ।

सहूजाणे संसारकविदाखेक्किता । इमजाणी मुजक्कपरमहिर करी जीये । बांहग्रह्यांकीलाजनिवाजसदिजिये ॥ ३४ ॥ तारण तरणजिहाज विरुद छे ताहरो । तो मानवनोअवतारसफल करमाहरो । ज्ञवज्ञव ताहरीसेव चरणसेवकरहूं । तिम करज्यो ज्ञगवंत किसुवलिवलिकहूं ॥ ३५ ॥ (कलश) इमनगरदेसलसरनिरंतर विंवज्ञेव्यासुज्ञमनें । जिनवचने संजमशुद्धपाले दोषटाले दिनदिने । सुविवेकविध पुहिवीराज श्रावक तासुआग्रहवहूपरे । रुघनाथमुनिये । कीधरचना अगरे अठ्मोत्तरे ॥३६॥ इति श्रीवेंयांलीस दोष विवरण स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ दश पच्चक्खाण वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथनंदननमूं । महावीर ज्ञगवंत । त्रिगडे छेठा जिनवरू । परषदवारमिलंत ॥ १ ॥ गणधरगौतम तिण समें । पूछे श्रीजिनराय । दश पच्चक्खाण किसाकह्या । कीयां कवणफलथाय ॥ २ ॥

॥ ढाल पहली ॥ सीमंधरकरज्यो मया एदेशी ॥

॥ श्रीजिनवर इमउपदिशे । सांज्ञल गोयमस्वाम । दश पच्चक्खाणकियां थकां । लहिये अविचलठाम ॥ ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी । साढपोरसी पुरिमड्ढ । एकासण नीवी कही । एकलठाण देवड्ढि ॥ ४ ॥ श्री० ॥ दात आंबिल उपवासही । एहीज दश पच्चक्खाण । एहना फलसुण गोयमा । जूजूवाकरूं वखाण ॥ श्री० ॥ ५ ॥ रतनप्रज्ञा शरकरप्रज्ञा । वालुकातीजीजांण । पंकप्रज्ञातिमधूमप्रज्ञा । तमप्रज्ञा तमतम

ठाम ॥ श्री० ॥ ६ ॥ नरक सात कही ए सही । करम कठिन कर जोर । जीवकरमवस ते सही । उपजे तिणहीज ठोर ॥ श्री० ॥ ७ ॥ छेदनभेदनताड़ना । भूखत्रिषा वलि त्रास । रोमरोम पीड़ाकरे । परमाहम्मीतास ॥ श्री० ॥ ८ ॥ रात दिवश खेत्रवेदना । तिलभरनहीं जिहांसुक्ख । किया करम जे भोगवे । पामें जीव बहु दुक्ख ॥ श्री० ॥ ए ॥ इक दिनरी नवकारसी । जे करे भाव विशुद्ध । सो वरस नरक नो आऊखो । दूर करे ज्ञान बुद्धि ॥ श्री० ॥ १० ॥ नित्य करे नव कारसी । ते नर नरक न जाय । न रहे पाप वलि पाछला । निरमल होवे जी काय ॥ श्री० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ श्रीविमला चल सिरतिलो एदेशी ॥

सुण गोतम पोरसी कियां महामोटोफलहोय, भावसुं जे पोरसीकरे । दुरगति छेदे सोय । सु० ॥ १२ ॥ नरक मांहें जे नारकी । वरषें एक हजार । करमखपावे नरकमें । करता बहुत पुकार । सु० ॥ १३ ॥ एकदिवशनीपोरसी । जीवकरे कइ तार । करमहणें सहसएकना । निह्चेसुं गणधार ॥ सु० ॥ १४॥ दुरगतिमांहें नारकी । दसहजारप्रमाण। नरक आयुखिणएकसें। साढपोरसीकरेंहांण ॥ सु० ॥ १५ ॥ पुरमढ्ढकरे नित जीव जे । नरके ते नविजाय । लाखवरष करमनेंदहे । पुरमढ्ढकरमखपाय ॥ सु० ॥ १६ ॥ लाखवरषदशनारकी । पामें दुःखअनंत, इतरा करमएकासणें । दूरकरे मनखंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ एककोड़ीवरसांलगे । करमखपावे जीव । नीवीयकरतांभावसुं । दुरगति

हणें सदीव ॥ सु० ॥ १८ ॥ दशकोमी जीव नरकमें । जितरो करे कर्मदूर । तितरोएकलगणही । करेसहीचकचूर ॥ सु० ॥ १९ ॥ दातकरंतांप्राणीयो । सोकोमीपरमांण । इतरा वरष दुरगतितणा । छेदे चतुरसुजांण ॥ सु० ॥ २० ॥ आंबिल नो फल्ल बहुकह्यो । कोमीएक हजार, करम खपावे इणपरे । ज्ञाव-आंबिलअधिकार ॥ सु० ॥ २१ ॥ कोमिसहसदशवरसही । सहे-दुःखनरकमझार । उपवासकरे इकज्ञावसुं । तो पामें मुगति-मझार ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ३ ॥ केकेइ वरलाधो एदेशी ॥

॥ लाखकोमीवरसांलगे । नरकेकरतांरीवरे । गौतम गण-धारी । छठतपकरतांथकां । सहीनरकनिवारे जीवरे ॥ गौ० ॥ ॥ २३ ॥ नरके वरसकोमलाखही, जीवलहे तिहांदुःखरे । तेदुख अठमतपहुंती । दूरकरी पामेंसुखरे ॥ गौ० ॥ २४ ॥ छेदन ज्ञेदन नारकी । कोमाकोमिवरसांइ रे । कुगतिकुमतिनें परहरो । दशमें एतो फलहोइरे ॥ गौ० ॥२५॥ नितफासू जल पीवतां । कोमाकोमी वरसनो पापरे । दूरकरे खिण एकमें । निश्चै होय निःपापरे ॥ गौ० ॥ २६ ॥ वलिय विशेषे फलकह्यो। पांचमकरे उपवासरे । पामें ज्ञान पांचेज्ञला । करता त्रिज्ञुवन परकासरे ॥ गौ० ॥ २७ ॥ चवदश तप विधिसुंकरे चवदह पूरव होय धाररे । इम अनेक फल तप तणा । कहितां वलि नावे पाररे ॥ गौ० ॥ २८ ॥ मन वचने कायाकरी । तप करे जे नर नार रे । इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहे ज्ञवपार रे ॥ गौ० ॥ २९ ॥ आठमतप आराधतां । जीव न फिरे

संसार रे । अनंतभवानां पापथी । बूटे जीवनिरधाररे ॥ गौ० ॥ ३० ॥ तपहुंती पापीतस्या । निसतरीयो अरजुनमाल रे ॥ गौ० ॥ ३१ ॥ तपनाफल सूत्रेकह्या । पच्चक्खाण तणा दश-भेदरे । अवरभेद पिण छे घणा । करतां छेदे त्रयवेद रे ॥ गौ० ॥ ३२ ॥ (कलश) पच्चक्खाणदशविधफलप्ररूप्या महावीरजिणदेवए । जे करे भवियणतपअखंडित तासु सुरपयसेवए । संवत्तनिधिगुणअश्वशशि वलि पोश सुददशमीदिनें, पदमरंगवाचकसीसगणिवर रामचंद्र तप विधिभणें ॥ गौ० ॥ ॥ ३३ ॥ इतिदशपच्चक्खाणफलगर्भित वृद्ध स्तवनम् ॥

॥ अथ श्रीऋषभजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरपाटीये पधारो एदेशी ॥

सुणसुण सेत्रुंजगिरिस्वामी । जगजीवनअंतरजामी । हुंतो अरजकरुं सिरनामी । कृपानिधि वीनती अवधारो ॥ १ ॥ भवसायरपारउतारो । निजसेवकवानवधारो । कृपानिधि विनतीअवधारो । प्रभुमूरतिमोहनगारी । निरख्यां हरखे नर-नारी । जाउं वारीहुंवारहजारी ॥ कृ० ॥ २ ॥ हिवकिसियवि-मासणकीजे । मुझपरमहिरधरीजे । दिलरंजनदरसनदीजे ॥ कृ० ॥ ३ ॥ आजसयलमनोरथ फलिया । भवभवना पाति-कटलिया । प्रभु जो मुझसैंमुखमिलिया ॥ कृ० ॥ ४ ॥ समस्यां संकटटलिजाये । नवनवनितमंगलथाये । मुझआतमपुण्यभरायें ॥ कृ० ॥ ५ ॥ करजोडी वीनतिकीजे । केसरचंदनचरचीजे । दिन धन धन तेह गिणीजे ॥ कृ० ॥ ६ ॥ प्रभु दरससरसलहि-

तोरो । अतिहरखितहुवोचित्तमोरो । जिमदीठां चंदचकोरो ॥ कृ० ॥ ७ ॥ परतिखप्रनु पंचमे आरे। विषमहाजयसंकटवारे । सहुसेवककाजसुधारे ॥ कृ० ॥ ८ ॥ सेवोस्वामिसदा सुखदाई । कमणा न रहे घरकाई । बाधे संपतिसोजसवाई ॥ कृ० ॥ ए ॥ नाजिरायकुलांबरचंदा । जविजनमननयणआणंदा । उलगे सुरअसुरसुरिंदा ॥ कृ० ॥ १० ॥ जयकारी रिषजजिनंदा । प्रहसमधरपरमआणंदा । वंदे श्रीजिनजक्तिसूरिंदा ॥ कृ० ॥ ११ ॥ इति श्रीऋषजदेवजी स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीअजितशांतिस्तवनं लिख्यते ॥

॥ मंगलकमलाकंदए । सुखसागरपूनिमचंदए । जगगुरु अजियजिणंदए । शांतीसरनयणानंदए ॥१॥ बिहुं जिनवर प्रणमेवए । बिहुं गुणगाइससंखेवए । पुण्यजंमारजरेसए । मानचजवसफलकरेसए ॥ २ ॥ कोमहिलाखपचासए । सागर जिणसासणजास ए । रिषहजिणेसरवंसए । उवज्जायसरोवरहंसए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजीयोए । राजा जितशत्रु जगगाजीयो ए । विजयातसु घर नार ए । बिहुं रमयति पासासारए ॥ ४ ॥ कूखहिजिनअवतारए । तिणरायमनाव्यो हारए । उयरवस्यो दसमास ए । प्रजुपूरी जणणीआसए ॥ ५ ॥ बिहुं जण मन आणंदीयोए । सुत नाम अजियजिण तो दीयो ए । तिहुअणसयल उछाह ए । क्रम क्रमवधे जगनाहए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारसतणी ए । गति सुललितनिजगतिनिरंजणी ए । मलपतिचालेगेलए । जाणें नयणअमीरसरेल ए ॥ ७ ॥ अवरन-

समो संसार ए । वलि ज्ञानविवेक विचारए । गुणदेखी गजग-हगह्योए । छंढनमिसि पगलागीरह्योए ॥ ८ ॥ जोवनवय जब आवीयो ए । तब वररमणीपरिणावियो ए । पीयसाधे सब काजए । प्रभुपालेपहुवीराज ए ॥९॥ हिव हत्थणाउर गामए । विश्वसेणनरेसर नाम ए । राणीअचिरादेवए । मनहरसुखमाणें वेवए ॥ १० ॥ चवदहस्वप्नेंपरिवस्योए । अचिराउयरे सुतअव-तस्योए । मानवदेव वखाणीयोए । चक्कीसर जिनवर जाणीयो ए ॥ ११ ॥ देसनयरहुइसंतए । तिण नामदीयो सिरिशांतए । जिणगुणकुणजाणेंकही ए । तिहुं भुवणे तसु उपमा नहीं ए ॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिरणलोए । वनसिंघे वीहे एकलोए । नयणसमाधिनिरोधए । इणनयणे नारिनिरोध ए ॥ १३ ॥ गीतहीरागसुरंगए । पिण पभणे लोक कुरंगए । तो उग्यो-शशिसंकए । तिण पाम्यो नाम कलंकए ॥ १४ ॥ इणपरमृग-अतिखलभल्यो ए । जयभंजणस्वामीसांभल्योए । आणंदीयो मनआपणो ए । पायसेवे मिस लांढणतणोए ॥ १५ ॥ लीला-वति परणें घणीए । नवनवीय कुमरी रायांतणी ए । बलढल अरियणजोगवे ए । पीयरायभलीपरभोगवेए ॥ १६ ॥ कुमर-तणेंमंडलसमें ए । पंचाससहसवरसां गमें ए । तोतेजे दिण-यरजिसोए । ऊपन्नो चक्करयणतिसोए ॥ १७ ॥ साधीभरह-छहखंड ए । वरतावीआणाअखंडए । चवदरयण नवनिहि-सही ए । वसु सोलसहस जक्खे अहीए ॥ १८ ॥ सहसबहुत्त-रपुरवराए । बत्तीस मौडबद्धनरवराए । पायकगामे कोडए ।

छिन्नवे नमें वेकरजोडए ॥ १ए ॥ हयगयरहवर जूजुवाए । लखचौरासीमंदिरहुवाए । लाखत्रि वाजित्र घमघमेए । वत्तीससहसनाटकरमेए ॥ २० ॥ रूपजिसीसुरसुंदरीए । लक्षणलावन्य लीलाभरीए । जंगम सोहगदेहमीए । इसीचौसठसहस अंतेउरीए ॥ २१ ॥ अवरजरिद्धिप्रकारए । मणिकंचणरयणभंमारए । ते कहिवा कुणजाणए । वपुवपुरे पुण्यप्रमाणए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसरपंचमोए । चौथो दूसमसुपमसमोए । वरससहस पचवीसए । सवपूरीमनह जगीसए ॥ २३ ॥ इणपरि विहुं तीर्थंकराए । चिरपालीराज विविहपराए । जाणीअवसरसारए । विहुंलीधो संजमभारए ॥ २४ ॥ विहुं खमदम धीरमधीरए । विहुं मोहमयणमदपरिहरीए । विहुं जिणझाणसमाणए । विहुंपाम्यो केवलनाणए ॥ २५ ॥ विहुं देवहिकोमहिमहिय । विहुं चौतीसेअतिसयसहिय । समवसरणविहुंठाणए । विहुं जोयणवाणीवखाणए ॥ २६ ॥ नाचतरणकतनेउरीए । विहुं आगलि इंद्रअंतेउरीए । टिगमिग जोवे जग सहुए । रंगहि गुणगावे सुरवहुए ॥ २७ ॥ विहुंसिरछत्रचमरविमल । विहुं पगतल नवसोवनकमल । विहुं जिनतणें विहारए । नवि रोग न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ विहुं जवयाभुवणभरीए । विहुं सिद्धिरमणिसयंवरीए । विहुंभंजी भवकंदए । विहुं उदयो परमाणंदए ॥ २ए ॥ इम वीजोनें सोलमो ए, जाणें चिंतामणि सुरतरुसमोए । थुणिअ तिसंझविहाणए । तिहां इहपरभव नवि हाणए ॥ ३० ॥ विहुं उछवमंगलक-

रण । बिहुं संघसयलडुरियहरण, बिहुं वरकमलवयणनयण । बिहुं श्रीजिनरायत्नुवनरयण ॥ ३१ ॥ इमजगते जोलिमतणीए । श्रीअजियशांतिथुइ जणीए । सरण बिहुं जिणपायए । सिरिमेरुनंदनजवजायए ॥ ३२ ॥ इति श्रीअजितशांति जिनस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरि स्तवनं लिख्यते ॥

॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो । आदीसरअरिहंत । जुगला धरमनिवारणो । जयजंजणजगवंत ॥ १ ॥ श्री० ॥ मुजमन जलट अतिघणो रे । सोदिनसफलगिणेस । स्वामीश्रीरिहेसरू । जब नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगमतीरथविहरता । साधुतणें परिवार । आदिजिणंदसमोसस्या । पूरब निवाणुंवार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचरा विजयानंदनें । जगबंधव जगतात । इणगिरिचजमासे रह्या । थिवरकहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामें शिवसुखसासता, गणधरश्रीपुंरूरीक । पुंरूरगिरितिणकारणें । जगति करो निरजीक ॥ श्री० ॥५॥ नमिनें विनमि सहोदरू । विद्याधरबलवंत । सेत्रुंजयशिखरसमोसस्या । जेगिरवागुणवंत ॥ ६ ॥ श्री० ॥ थावच्चामुनिवरशुक, सहस्रसहसपरिवार । पंथगवयणेंजागीयो । सो सेलगअणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांरुवपांचमहाबली । सुणी जादवनिरवाण । ते सीधा सिद्धा चले । सुरनरकरे वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इमसीधा इणडूंगरे । मुनिवरकोराकोरि । पाजचढंतां सांजरे । ते प्रणमुंकरजोरि ॥ श्री० ॥ ए ॥ जेवाघणी प्रतिबूजवी । ते दरवाजे-

जोय । गोमुखयक्षकवरूमिली । सानिधकारीहोय ॥ १० ॥ श्री० ॥ जेविधिसुं यात्राकरे । सुरनर सेवक तास । राजसमुद्र गुणगावतां, अविचललीलविलास ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति सीसेत्रुंजय स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीआदिजिनवीनती (आलीयण) स्तवनं ॥

॥ सुणजिनवर सेत्रुंजाधणीजी । दासतणी अरदास । तुज आगल बालकपरेजी, हुंतो करुं वेखासरे जिनजी मुजपापीनें तार । तुंतो करुणारसभस्योजी । तुं सहुनोहितकाररे जिन जी ॥ मुज० ॥ १ ॥ हुं अवगुणनोओरूमोजी । गुण तो नहीं लव-लेश । परगुणपेखी नवि शकुंजी । केमसंसारतरेसरे जिनजी । मुज० ॥ २ ॥ जीवतणावधमें कस्याजी । बोल्या मृषावाद । कपटकरी परधनहस्याजी । सेव्या विषयसवादरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ३ ॥ हुं लंपट हुं लालचीजी । कर्मकीधां केई कोरू । त्रणभुवनमां कोनहींजी । जे आवे मुजजोरूरे जिन जी ॥ मुज० ॥ ४ ॥ छिद्रपरायां अहनिशेजी । जोतोरहुं जगनाथ । कुगति-तणी करणीकरीजी । जोड्यो तेहशुं साथरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ५ ॥ कुमतिकुटिल कदाग्रहीजी । वांकी गतिमतिमुज्झ । वांकीकरणी माहरीजी । शीसंभलावुं तुज्झरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ६ ॥ पुन्यविना मुजप्राणिओजी । जाणे मेलुंरेआथ । ऊंचां तरुवरमोरीयांजी । त्यांहीपसारे हाथरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ७ ॥ विणखाधां विणभोगव्यां जी । फोगटकर्मबंधाय । आर्त्तध्यान मिटे नहींजी । कीजे कवणउपायरेजिनजी ॥ मुज० ॥ ८ ॥

काजलथीपण शामलाजी । मारा मनपरणाम । सोणामांहीं ताहरुंजी । संभारुं नहींनामरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ए ॥ मुग्धलोक ठगवाभणी जी । करुं अनेकप्रपंच । कुरूकपट बहु केलवीजी । पापतणो करुं संचरे जिनजी ॥ मुज०॥१०॥ मनचंचलनरहेकिमे जी । राचे रमणीरेरूप । कामविटंबणशीकहुंजी । पमीश हुं डुरगतिकूपरे जिनजी ॥ मुज० ॥ ११ ॥ किश्याकहुं गुण महाराजी । किश्याकहुं अपवाद । जेमजेमसंभारुं हीयेजी । तेमतेमवधे विखवादरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १२ ॥ गिरुआते नविलेखवेजी । निगुणसेवकनीवात । नीचतणे पण मंदिरेजी । चंद्रनटालेजोतरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १३ ॥ निगुणो तो पण ताहरोजी । नामधरावुंरे दास । कृपाकरी संभारजोजी । पूरजो मुजमनआसरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १४ ॥ पापीजाणी मुजभणीजी । मत मूको विसार । विष हलाहल आदस्योजी । ईश्वर न तजे तासरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १५ ॥ उत्तमगुणकारीहुवेजी । स्वार्थविनासुजाण । करसण चिंते सरभरेजी । मेह नमांगेदाणरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १६ ॥ तुं उपगारी गुणनिलोजी । तुं सेवकप्रतिपाल । तुं समरथसुखपूरवाजी । कर माहरीसंभालरे जिनजी ॥ मुज० ॥ १७ ॥ तुजने शुं कहीये घणोजी । तुं सहुवाते जाण, मुजने आजो साहिवाजी । भवभवताहरी आणरे जिनजी । मुज० ॥ १८ ॥ नाभिराया कुलचंदलोजी । मारुदेवीनोनंद । कहे जिनहरष निवाजज्यो जी । देजो परमानंदरे जिनजी । मुजपापीने तार ॥ १९ ॥ इति श्रीआलोयण आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवनं लिख्यते ॥

॥ सुरमणीसम सहु मंत्रमां । नवपद अभिरामीरेलो ॥ अहो नव० । करुणासागर गुणनिधी । जगअंतरजामीरे लो ॥ अहो जग० ॥१॥ त्रिभुवनजनपूजितसदा। लोकालोक प्रकासीरे लो ॥ अहो लोका० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी । नमुं चित्तउल्लासीरे लो ॥ अहो नमुं० ॥ २ ॥ अष्टकरमदलक्षयकरी । थयासिद्धसरूपीरे लो । अहो थया० । सिद्धनमो भविभावथी । जे अगमअरूपीरे लो ॥ अहोजे० ॥ ३ ॥ गुणछत्तीसे सोभता । सुंदरसुखकारीरेलो ॥ अहो सुं० ॥ आचारज तीजेपदे, वंदुंअविकारीरेलो ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी। तप दुविध अराधीरेलो ॥ अहोत० ॥ चोथे पद पाठक नमो । संवेग समाधीरे लो ॥ अहोसं० ॥ ५ ॥ पंचाचारपालणपरा पंचाश्रवत्यागीरे लो ॥ अहो पं० ॥ गुणरागीमुनि पांचमें । प्रणमुं वडभागीरे लो ॥ अहो प्र० ॥६॥ निजपरगुणनें उलखे । श्रुतश्रद्धाआवेरे लो ॥ अहो श्रु० ॥ छठेगुण दरशणनमो । आतम शुभभावेरे लो ॥ अहो आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो गुण सातमें । जे पंचप्रकारेरेलो ॥ अहो जे० स्वपर प्रकाशक दिनमणि । अज्ञाननिवारेरेलो ॥ अहो अ० ॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपदनमो । परभावनिवारीरेलो ॥ अहो प० ॥ खांत्यादिकदसधर्मनो । जेह अछे अधिकारीरेलो ॥ अहो जे० ॥९॥ नवमेंवलितपपदनमो । बाह्याभ्यंतर भेदेरे लो ॥ अहो बा० ॥ बांध्याकालअनंतना । जे कर्मउछेदेरे लो ॥ अहो जे० ॥१०॥ ए नवपदबहुमानथी । ध्यावे शुभभावेरे लो ॥ अहो ध्या० ॥

नृपश्रीपालतणीपरे । मनवंछितपावेरे लो ॥ अहो म० ॥ ११ ॥
आसू चैत्रक मासमां, नवआंबिलकरियेरे लो ॥ अहो नव० ॥
नवळेली विधियुतकरी । शिवकमलावरियेरे लो ॥ अहो शि०
॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहुपरे । वरमहिमाकीजेरे लो ॥ अहो
व० ॥ श्रीजिनलाभकहे सदा । अनुपमजशलीजेरे लो ॥
अहो अ० ॥ १३ ॥ इति श्रीनवपदजीका वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ चैत्री पूनम वृद्ध स्तवनं लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ पयप्रणमीरे जिनवरना सुपसाउले । पुंडरगिरिरे
गाइस हुं सुभभाउले । मतिसुरगुरुरे सहसजीभ जो मुखहुवे ।
किमते नररे विमलाचलना गुणस्तवे । उल्लालो । किमस्तवे
गुणगणएहगिरिना जिहां मुनिसीधाबहु । गिरि रायना गुणछै
अनंता कहै जिनवर मुखसहु, निज जनम सकली करण कारण
केटला गुणभाषिये । तिरयंच नारक तणीगतिना दुःखदूरेराखिये
॥ १ ॥ चाल ॥ जिनराजारे पहिलो आदिजिनेसरू । तसु नंद-
नरे चक्रवर्त्तिभरतेसरू । तसुअंगजरे पुंडरीकगुणगणनिलो ।
शमदमरसरे विनयविवेक गुणेभलो । उल्लालो । गुणभलो अनु-
क्रम आदिजिनवरपास संयमसिवपुरी । पुंडरीकगणधरप्रथम-
विहरे खुमतिगुपतेसंचरी । पणकोडि साथे विमलगिरवर मुग-
तिपदवी पावए । सुदिचैत्रपूनिम तेण एगिरि पुंडरीककहावए
॥ २ ॥ चाल ॥ हिवचैत्रीरे पूनिमपर्वसुहामणो । सेत्रुंजेरे आ-
राध्यां फलहुवेघणो । मनसुध्धेरे आपणपे थानकरही । आरा-
ध्यांरे यात्रपुन्यपामेसही । उल्लालो ते पुन्यपामें दानतपजप
धर्मध्यानमनेधरे । बहु भावभत्तें त्रिविधपूजा आदिजिनवरनी-

करे । ज्ञावनाज्ञावे तेणदिवसे पंचकोमि गुणोफले । अनुक्रमे ते नर मुगतिपामी सिद्धिसुंदरीनें मिले ॥ ३ ॥ चाल ॥ दश वीशरे तीश चालीश पूजाकही । पन्नासारे श्रावक निरती सरदही । चउथउठेरे अठम दशम डुवालसे । पूजाफलरे अनुक्रम ए मुजमन वसें । उल्लालो । मनवसे पूज कपूरधूपे मासखमणफलेवली । सामन्नधूवे पक्खनोफल जेकरेमननीरली । हिवपूजाविधि जेम गुरुमुखसुणीअछे परंपरा । तेमोहमाया कपटछंमी सुणो ज्ञवियण सादरा ॥ ४ ॥ ढाल ॥ तंडुलराशि विमलगिरिथापी । तसुऊपरि पट्टादिकआपी । प्रतिमाआदि जिणेसरकेरी । पुंमरीकनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेत्रुंजगिरिनें मनचिंती जे । करमतणामलदूरकरीजे । मोती तंडुलकरीयवधावो । तीन प्रदक्षिणा पूजरचावो ॥ ६ ॥ मंगलीकपहिलातिहां आठ । करमबंधदूरेकरिआठ । प्रतिमामूल सनात्रकरेवा- जिनवरनागुणहीयमेधरेवा ॥ ७ ॥ कन्नाथई नवकारगुणंता । दश दश जेती तिलककरंता । माला पुष्प पुंगीफलढोवो मेरु ज्ञरण वरधूपउखेवो ८॥ढाल॥शक्रस्तवपांचे देववांदे । जघन्यनां वंदण पापछेदे । दशे नमस्कारकरंतजेती । राखी करीदृष्टिजिनेंडसेती ॥ ए ॥ आराधिवाकीजेकाउसग्ग । जिणें कीये ज्ञाजेकर्मवग्ग । लोगस्सउज्जोयदसे वखाणुं । वेलाप्रमाणें अहिं एगआणुं ॥ १० ॥ इणेंप्रकारे धुरपूज एह । इसीपरे बीजी च्यार तेह । दशांतणीवृद्धि तिहां गिणी जे । एकचित्तसूधे सुज्ञपुन्यकीजे॥ ११॥ धजातणोरोप तिहां करीजे । एकेकपुठे अथवा गिणीजे । सहुत्तरेआरति

मंगलेवो । पछे प्रभु आगलितेकरेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करियपूजा यथायोगे संघपूजाआदरो । साहमीवछलकरो भवि-का भवसमुद्र लीलातरो । संपदासोहगतेहमानव रिद्धि वृद्धि-बहुलहे । श्रीअमरमाणिकसीससुपरे साधुकीरति इम कहे॥१३॥
॥ इति श्रीचैत्रीपूनिमवृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ नंदीसरद्वीपस्तवनं लिख्यते ॥

॥ नंदीसरबावन्नजिनालय । शाश्वताचौमुखसोहेरे । ऋषभा-नन चंद्राननवारिषेण । वरधमानमनमोहेरे ॥ नंदी० ॥ १ ॥ आठमोद्वीपनंदीसरअदभुत । वलयाकारविराजेरे । तेहनें मध्ये चिहुंदिशिशोभित । अंजनगिरिवरगाजेरे ॥ २ ॥ नंदी० जोयणसहसचउरासीऊंचा । ऊंचपणें अभिरामारे । मूले पृथुल सहसदशजोयण । उवरिसहसइकश्यामारे ॥ ३ ॥ नंदी० ॥ ते ऊपर प्रासादप्रभुना । अतिउत्तंग उदारारे । साधु-जंघा विद्याचारण, वांदे विविधप्रकारारे ॥ ४ ॥ नंदी० ॥ चैत्ये-चैत्ये एकसोचोवीस । बिंबसंख्या सविदाखीरे । ध्यावो सेवोभ-विजनभक्तें । सुधआगमकरि साखीरे ॥ ५ ॥ नंदी० ॥ ऊंच-पणें सहु जोयणबहुत्तर । सोजोयण आयामारे । पिहुलपणें पंचासजोयणना । प्रभुप्रासाद सुठामा रे ॥ ६ ॥ नंदी० ॥ धनु-षपांचसे आयतप्रभुनी । विविधरतनमयकायारे । जिनकल्य-णकउछवकरवा; सुरपति भगतें आयारे ॥ ७ ॥ नंदी० ॥ अंज-नअंजनचिहुंगिरी उवरे । चौमुखवाविशालारे । वाविवाविविच इकइक पर्वत । राजतरंगरसालारे ॥ ८ ॥ नंदी० ॥ चौसठस-हस जोयणउत्तंगे । दशसहस सम पिहुलारे । चिहुदिशि सोल-

सोहे दधिमुखगिरि । तिहां प्रासादसुविमलारे ॥ ए ॥ नंदी० ॥ वाविवाविनें अंतर विदिशें । रतिकरपर्वतरूमारे । दोयदोय-संख्याजगदीसे । कह्यानहींएकूमारे ॥ १० ॥ नंदी० ॥ जोयण-सहसमानदशऊंचा । दशदशसहस विस्ताराारे । ऊप्परिसमसंठा-णजगतगुरु । ए निश्चयनिरधारारे ॥ ११ ॥ नंदी० ॥ ते ऊपर प्रासादसतोरण । अंजनगिरिपरिमाणेरे । जिनप्रतिमानीसंख्या-तेहिज । श्रीजिनराजवखाणेंरे ॥ १२ ॥ नंदी० ॥ इमप्रासादप्र-नूनावावन । नंदीसरवरद्दीपेरे । इव्य नाव विधिपूजकरंतां । मोहमहानरूजीपेरे ॥ १३ ॥ नंदी० ॥ प्रवचनसारउद्धा-रप्रकरणें । जीवानिगमें जाणोरे । इमअधिकारछे ग्रंथअनेके । इहांसंका मतआणोरे ॥ १४ ॥ नंदी० ॥ जिमसुरपतिविरचेतिहां पूजां । ते अनुनव इहांह्यावोरे । ध्यावोजिमपावो परमातम । जैनचंद्रगुणगावोरे ॥ १५ ॥ इतिश्रीनंदीसरद्वीपस्तवनं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणकस्तवनं लिख्यते ॥

॥ मारगदेशकमोक्षनोरे । केवलज्ञाननिधान । नावदयासा-गर प्रनूरे । परउपगारीप्रधानोरे ॥ १ ॥ वीरप्रनु सिद्धथया । संघसकलआधारोरे । हिवशणनरतमां । कुणकरस्ये उपगारोरे ॥ २ ॥ वीर० ॥ नाथविहूणी सेन्यजूंरे । वीरविहूणोरे संघ । साधेकुण आधारथीरे । परमानंद अनंगोरे ॥ ३ ॥ वी० ॥ मातविहुणा वालज्युंरे । अरहोपरोअथमाय । वीरविहूणाजीव-मारे । आकुलव्याकुलथायेरे ॥ ४ ॥ वी० ॥ संशयछेदकवीर-नोरे । विरहतेकेमखमाय । जेदीठेंसुखऊपजेरे । ते विण किमर-हिवायोरे ॥५॥ वी० ॥ निर्यामक नवसमुद्रनोरे । नवअटवीस-

त्थवाद । ते परमेशर विन मिट्यांरे, किमवाधेउच्छाहोरे ॥ ६ ॥ वी० ॥ वीरअकांपिण श्रुततणोरे, हुंतोपरमआधार । हिवणां श्रुतआधारछेरे । एह जिनआगमसारोरे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इण-कालेसहूजीवनेंरे । आगमथीआनंद । ध्यावोसेवोजविजनारे । जिनपडिमासुखकंदोरे ॥ ८ ॥ वी० ॥ गणधरआचारजमुनिरे । सहुने इणपरिसीध । जवजव आगन संगथीरे । देवचंद्रपदलीधरे ॥ ए ॥ वी० इति श्रीनिर्वाणकल्याणकस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीसिद्धक्षेत्रपुंडरीकगिरिवृद्धस्तवनं लिख्यते श्रीचंद्राप्रभूप्राहूणोरे एदेशी ॥

॥ नमोरेनमोशेत्रुंजगिरीरे । त्रिकरणशुद्धत्रिकालरे । पापपडलदूरेटलेरे । तूटे करमजंजालरे । नमो० ॥ १ ॥ पूरब निनाणूं समवसख्यारे । प्रथमजिनंदजगदीशरे । बावीसम जिनवरविनारे । समोसख्यातेवीसरे ॥ नमो० ॥२॥ साधु अनंता अणशणग्रहीरे । सीधाएहीजठोडरे । कालआगामी वलिसीझस्येरे । साधु अनंतीकोडिरे॥नमो०॥३॥ अनंत कल्याणकजूमिकारे । महिमावंतमहंतरे । सासतोतीरथ ए सहीरे । अतिशयजासअनंतरे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ कोडिजवंतरे जेकियारे । पातिकविविधउपायरे । सेत्रुंजे सनमुखचालतांरे । पग पग ते सहूजायरे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ धनदिनतेहीजजाणसुंरे । वहिस्युंसेत्रुंजकेरीवाटरे । छहरीयथा विधिपालस्यूंरे । संघसहितगहगाटरे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ पगपग-उछवअतिघणारे । पगपगजाचकदानरे । प्रेमजगतिसाहमीतणीरे । जीर्णोद्धारप्रधानरे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ धन ते गिरिराय-निरखसुंरे । वढतीमंगलमालरे । मणिमोतीयरू वधावस्युंरे ।

रजतसोवनन्नरथादरे ॥ नमो० ॥ ८ ॥ धनदिन ते गिरिफरसस्यूंरे । करस्युंपावन मोरीकायरे । जगतिजुगतिजुहारसुंरे । नाभिनंदनजिनरायरे ॥ नमो० ॥ ए ॥ द्रव्यभावकरसुंमुदारे । पूजाविविधप्रकाररे । भावेभावनाभावसुंरे । करसुंसफलअवतारे ॥ नमो० ॥ १० ॥ रतनत्रयीभमतीभलीतरे । देसुं ते धरिबुद्धिरे । भवभवभ्रमणनिवारसुंरे । लहिसुंआतमसुद्धिरे ॥ नमो० ॥ ११ ॥ विधिफरसणमनमाहरोरे । मोहिरह्यो दिनरातरे । पुन्यप्रबलथीपामियोरे । उजलगिरीकेरीजातरे ॥ नमो० ॥ १२ ॥ नाथधूलेवा सुपसायथीरे । कारजसगलासिद्धरे । कहेजिनहरखसूरि सदारे । होय जो मंगलवृद्धरे ॥ नमो० ॥ १३ ॥ इति श्रीसिद्धाचलवृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वनाथवृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ वाणी ब्राह्मावादनी । जागे जन विख्यात । पासतणागुणगावतां । मुझमुखवसज्यो मात ॥१॥ नारंगे अणहिलपुरे । अहमदावादेपास । गौडीनोधणीजागतो । सहूनीपुरेआस ॥ २ ॥ शुभवेला शुभदिनघडी । महुरत एकमंडाण । प्रतिमा ते इह पासनी । थई प्रतिष्ठाजाण ॥ ३ ॥ ढाल ॥ १ ॥ गुणहिविशाला मंगलीकमाला । वामानोसुतसाचोजी । धणकणकंचणमणिमाणकदे । गौडीनोधणीजाचोजी ॥४॥ गुण० ॥अणहिलपुरपाटणमाहेंप्रतिमा । तुरकतणें घरहूंतीजी । अश्वनीभूमि अश्वनीपीडा । अश्वनी वालविगुतीजी ॥ ५ ॥ गुण० ॥ जागंतोजक्ष जेहनें कहियें । सुहणो तुरकनें आपेजी । पासजिनेसरकेरीप्रतिमा । सेवक तुझसंतापेजी ॥ ६ ॥ गुण० ॥ प्रहऊठीनें परग-

टकरजे । मेघागोठीनें देजेजी । अधिकोमलेजे उंछोमलेजे । टक्का पांचसेंलेजेजी ॥ ७ ॥ गुण० ॥ नहिंआपिसतो मारीस मुरझीस । मोरबंध बंधास्येजी । पुत्रकलत्रधनहयहाथी तुझ । लाठघणी घरजास्येजी ॥ ८ ॥ गुण० ॥ मारग पहिलो तुझनें-मिलस्ये । सारथवाह जे गोठीजी । निलवटटीलो चोखाचेढ्या । वस्तुवहे तसु पोठीजी ॥ ९ ॥ गुण० ॥ दुहा ॥ मनसुंवीहनो तुरकझो । मानें वचन प्रमाण । बीबीनें सुहणातणो । संभलावे सहिनाण ॥ १० ॥ बीबीबोले तुरकनें वझादेवहे कोय । अब-सतावपरगटकरो, नहींतर मारे सोय ॥ ११ ॥ पाछलीरात परो-झीये । पहिलीबंधेपाज । सुहणामाहें सेठनें । संभलावेयक्षराज ॥ १२ ॥ ढाल ॥ एमकही यक्ष आयोराते । सारथबाहनें सुह-णेंजी । पासतणीप्रतिमा तुं लेजे । लेतो शिरमतधुणेजी ॥१३॥ एम० ॥ पांचसेंटक्का तेहनेंआपे । अधिकोमआपिसवारोजी । जतनकरी पुहचाझे थानक । प्रतिमागुणसंभारोजी ॥ १४ ॥ एम० ॥ तुजनेंहोसी बहुफलदायक । जाई गोठी सुणजेजी । पूजीस प्रणमीस तेहनापाया । प्रहऊठीनें थुणजेजी ॥ १५ ॥ एम० ॥ सुहणो देईनें सुरचाल्यो । अपने थानक पहुतोजी । पाटणमाहें सारथबाहू । हींझेतुरकनें जोतोजी ॥ १६ ॥ एम० ॥ तुरके जातां दीठोगोठी । चोखातिलक दिलाझेजी । संकेतप-हुतो साचोजाणी । बोलावेबहुलाझेजी ॥ १७ ॥ एम० ॥ मुज-घरप्रतिमा तुंझनेंआपुं । पासजिणेसरकेरीजी । पांचसेंटक्का जोमुझआपे । मोलनमांगुं फेरीजी ॥ १८ ॥ एम० ॥ नांणोदेई प्रतिमालेई । थानकपहुतो रंगेजी । केशरचंदनमृगमदघोली,

विधिसुंपूजारंगेजी ॥ १ए ॥ एम० ॥ गादीरूमीरूनीकीधी । ते मांहि प्रतिमाराखेजी । अनुक्रमआव्या परिकरमांहे । श्रीसंघनें सुरसाखेजी ॥ २० ॥ एम० ॥ उछवदिनदिन अधिकाथायें । सत्तरन्नेदसनात्रोजी । गामगामना दरशणकरवा । आवे लोकप्रन्नातोजी ॥ २१ ॥ एम० ॥ दुहा ॥ इकदिनदेखेअवधिसुं । परिकर पुरनो न्नंग । जतनकरुं प्रतिमातणो । तीरथअछेअन्नंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठनें । थलअटवीउजाम । महिमा थास्ये अतिघणी । प्रतिमातिहांपुहचाम ॥ २३ ॥ कुशल खेमतिहांअछे । तुऊनें मुऊनें जाणि । संकाछोमीकामकर । करतो मकरिसंकाणि ॥ २४ ॥ ढाल ॥ पासमनोरथपूरणकरे । वाहणएक वृषन्नजोतरे । परिकरथीपरियाणोकरे । इकथलचढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारकोसआव्या जेतले । प्रतिमा नविचाले तेतले । गोठीमनह विमासणथई । पासन्नुवनमंमावूंसही ॥ २६ ॥ आअटवी किमकरुंप्रयाण । कुटकोकोई नदीसेपाहाण । देवलपासजिनसरतणो, मंमावुं किमगरथेविणो ॥ २७ ॥ जलविन श्रीसंरहस्ये किहां । सिल्लावटो किमआवेइहां । चिंतातुरथयो निज्ञालहे । यक्तराजआविनेंकहे ॥ २८ ॥ गुंहलीऊपरनांणो जिहां । गरथघणो जाणिजे तिहां । स्वस्तिक सोपारीनें ठाण । पाहणतणी उघ्नटस्येखाण ॥ २ए ॥ श्रीफलसजलतिहां किलजुउ । अमृतजलनीसरसीकूउ । खाराकूआतणो इहसेंनांण । न्नूमिपड्योछे नीलोछाण ॥ ३० ॥ सिल्लावटो सीरोहीवसे । कोढपरान्नवियो किसमिसे । तिहांथकी तूं इहांआणजे । सत्यवचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनोमनथिरथापियो ।

सिद्धावटेनें सुहणोदियो । रोगगमीनें पूरुंआस । पासतणो मंडे-आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहे मान्यो ते वैण । हेमवरण देखा-ड्यो नैण । गोठीमनहमनोरथहुवा । सिद्धावटेनें गयातेमवा ॥ ३३ ॥ सिद्धावटो आवे सूरमो । जीमें खीरखांडघृतचूरमो । घडेघाट करेकोरणी लगनभले पायारोपणी ॥ ३४ ॥ थंभथंभ कीधीपूतली । नाटककौतिककरतीरली । रंगमंडपरलियामणोरसे । जोतां मानवनों मनवसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरोप्रासाद । स्वर्ग समो मंडे आवास । दिवसविचारी इंडो घड्यो । ततखिण देव-लऊपरचड्यो ॥ ३६ ॥ शुभलगन शुभवेलावास । पबासण-वेठा श्रीपास । महिमामोटी मेरुसमान । एकलमिल वगमेरहै-वान ॥ ३७ ॥ वातपुराणीमें सांभली । तवन माहिं सूधी सां-कली । गोठीतणागोतरियाअछे । यात्र करीनें परणेंपछे ॥ ३८॥ ॥ दुहा ॥ विघनविडारणयक्षजगि, तेहनो अकलसरूप । प्रीत-करे श्रीसंघनें । देखाडे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरुउ गौडीपास-जिन । आपे अरथभंडार । सांनिधकरे श्रीसंघनें । आस्यापू-रणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणें नीलहय । नीलोथईअसवार । मारगचूकामानवी । वाटदिखावणहार ॥ ४१ ॥ ढाल ॥ वरण-अढारतणोलहे भोग । विघननिवारे टालेरोग, पवित्रथई समरे-जेजाप । टाले सगला पापसंताप ॥ ४२ ॥ निरधननेंघरि धन-नोसूत । आपे अपुत्रीयानें पुत्र, कायरनें सूरापणधरे । पारभतारे लछीवरे ॥ ४३ ॥ दोभागीनें दे सोभाग । पगविहूणानें आपे-पग । गामनहीं तेहनें धेगाम । मनवंछितपूरे अभिराम ॥ ४४ ॥ निरधाख्यानें धे आधार । भवसायरऊतारेपार । आरतीयानी

आरतभंग । धरेध्यानतेलहेसुरंग ॥ ४५ ॥ समस्थांसाददी-येयछराज । तेहना मोटाअछे दिवाज । बुध्धिहीणनें बुध्धिप्रकास । गूंगानेंद्ये वचनविलास ॥ ४६ ॥ दुखियांनें सुखनोदातार । भयभंजणरंजणअवतार । बंधनतूटे बेमीतणा । श्रीपार्श्वनाम अछरसमरणा ॥ ४७ ॥ दूहा ॥ श्रीपार्श्वनाम अछरजपे । वि श्वानरविकराल । हस्तियूथदूरेटले । दुध्धरसींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा भयचूकवे । विष अमृत ऊमकार । विषधरनो विष-ऊतरे । संग्राममें जयजयकार ॥ ४९ ॥ रोगसोगदालिद्रदुख । दोहग दूरपुलाय । परमेशरश्रीपासनो । महिमामंत्रजपाय॥५०॥

॥ कडखानी चाल ५ ॥

ॐजितुं ॐजितुं ॐजि उपशम धरी । ॐह्री श्री श्रीपार्श्व अछर जपंते । भूतनें प्रेत झोटिंगव्यंतरसुरा, उपसमे वारइकवीश गुणंते ॥ ५१ ॥ ॐ० ॥ दुध्धरा रोगसोगजराजंतनें । ताव एकां-तरा दुत्तपंते । गर्भबंधनबणं सर्प विछुविषं । चालिका बालमे-बाऊखंते ॥ ५२ ॥ ॐ० ॥ साइणीमाइणी रोहिणी रंकणी । फोटका मोटका दोष हुंतें । दाढकंदरतणी कोल नोलातणी । स्वानसीयालविकरालदंते ॥ ५३ ॥ ॐ० ॥ धरणेंद्र पदमावती समरसोभावती । वाटआघाट अटवी अटंते । लखमीलोर्डुमिले सुजशवेलावले । सयलआस्या फले मनहसंते ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्टमहाभयहरे कानपीमाटले । ऊतरे सूल सीसगभणंते । वदतवरप्रीतसुं प्रीति विमलप्रभू । श्रीपार्श्वजिननामअभिराममंते ॥ ५५ ॥ इति श्रीगौमीपार्श्वनाथजी वृध्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ यह स्तवन ॥

संध्यासमय निरंतर पवित्रहोकर गुणे या सुणे सुद्धअक्षरसे तो सर्वउपद्रवमिटे महामंगलहोवे ॥

॥ अथ अठ्ठाईसलब्धितपस्तवनं लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथमजिनेसरु । शुद्धमनें सुखकार । लब्धिअठावीसजिनकही । आगमनें अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याकरणेंप्रगट, भगवतीसूत्रमझार । पन्नवणा आवस्यके । बारू लब्धिविचार ॥ २ ॥ आंबिलतपकरछपजे । लवध्यां अठावीस । तेहिव परगटअरथसुं । सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ ढाल १ सफलसंसारनी ॥ अनुक्रमे हेव अधिकारगाथातणें । लब्धिना नाम परिणामसरिखाभणें । रोगसहुजाय जसु अंगफरस्यांसही । प्रथम ते लबधिछे नाम आमोसही ॥४॥ जासु मलमूत्र उंषधसमाजाणीये । बीयविप्पोसहीलबधिवखाणीये । श्लेषमउंषधिसारिखो जेहनो । तीजीखेलोसही नामछे तेहनो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढदूरेहुवे । चोथीजल्लोसहीनामतेहनोछवे । केशनखरोमसहुअंगफरसेसही । रहेनहींरोग सबोसहीतेकही॥६॥ एकइंद्रियकरी पांचइंद्रियतणा । भेदजाणें तिका नामसंभिन्नणा बस्तुरूपीसहूजाणियें जिणकरी । सातमीलबधि ते अवधि ज्ञानेंकरी ॥७॥

॥ ढाल २ आव्यो तिहांनरहर एचाल ॥

॥ हिव आंगुलअढीये जणो मानुषक्षेत्र । संज्ञीपंचेंद्री तिहां जेवसयविचित्र । तसुमननो चिंतितजाणेंथूल प्रकार । ते ऋजुमतिनांमें आठमीलबधिविचार ॥ ८ ॥ संपूरणमानुषक्षेत्रे संज्ञावंत । पंचेंद्रियजेछे तसुमनवातां तंत । सूखमपरजायें जाणें सहु-

परिणाम । एनवमीकहीये विपुलमती सुजनाम ॥ ए ॥ जिणलबधिप्रभावे उमीजायआकाश । ते जंघा विद्याचारणलबधिप्रकाश । जसुवचनसरापे खिणमेंखेरुथाय । ए लब्धिइग्यारमी आसीविषयकहाय ॥ १० ॥ सहुसूखमवादर देखे लोकालोक । ते केवललबधि बारमिये सहुथोक । गणधरपद लहिये तेरमीलबधिप्रमाण । चवदमलबधेकरी चवदेपूरवजाण ॥ ११ ॥ तीर्थंकरपदवीपामें पनरमीलबधि । सोलमसुखदाई चक्रवर्त्तिपदरिद्धि । बलदेवतणोपदलहिये सतरमीसार । अढारमी आखी वासुदेवविस्तार ॥ १२ ॥ मिसरीघृतखीरमेंल्यां जेहसवाद । एहवीलहे वाणी उगणीसमीपरसाद । भणीयो नविभूले सूत्रअरथसुविचार । ते कुष्टिकबुद्धिवीशमी लबधिविचार ॥ १३ ॥ एकेपदभणातां आवे पद लखकोड । इकवीशमीलबधिपायाणुसारणीजोड । एकेअरथेकरी उपजे अरथअनेक । बावीसमीकहीये वीजबुद्धिसुविवेक ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूरहुवे अतिऊजलोरे एचाल ॥

॥ सोलहदेशतणी सही रे । दाहकसगतिवखाण । तेह लबधि तेवीसमी रे । तेजोलेश्याजाण ॥ १५ ॥ चतुरनर सुणज्यो एसुविचार । आगमनें अधिकार । वारूलबधि विचार ॥ चतु० ॥ चवदहपूरवधरमुनिवरू रे । उपजंतां संदेह । रूपनवोरचिमोकलेरे । लबधिआहारकएह ॥ चतु० ॥ १६ ॥ तेजोलेश्या अग्निनेंरे । उपशमवाजलधार । मोटीलबधिपचवीशमीरे । शीतोलेश्याजाण । चतु० ॥ १७ ॥ जेणसगतिसुंविकुरवेंरे । विविधप्रकाररूप । सद्गुरुकहे छावीसमी रे । वेक्रियलबधिअनूप॥ चतु०

॥ १८ ॥ एकणपात्रेआदमीरे । जीमावे केईलाख । तेह अक्षी-णमहाणसीरे । सत्तावीसमीसाख ॥ चतु० ॥ १९ ॥ चूरेसेना चक्कीसनीरे । संघादिकनेंकाज । तेहपुलाक लबधिकहीरे । अट्ठावीशमीसाज ॥ चतु० ॥ २० ॥ तेजशीतलेश्याबिहुंरे । तेम पुलाकविचार । भगवतीसूत्रमें भाखियोरे । एत्रिहुंनो अधि-कार ॥ चतु० ॥ २१ ॥ चक्रवर्त्ती बलदेवनीरे । वासुदेवत्रणएह । आवश्यकसूत्रेअछे रे । नहिंइहांसंदेह ॥ चतु० ॥ २२॥ पन्नवणा आहारनी रे । कल्पसूत्रगणधार । तीनतीन इकइक मिलीरे, वारूआठविचार ॥ चतु० ॥२३॥ प्रश्नव्याकरणें कहीरे । वाकी-लबध्यांबीश । सांभलतां सुखऊपजेरे । दोलतहुवे निशिदीश ॥ चतु० ॥२४॥ (कलश) संवत्त सतरेसेंछवीशे मेरुतेरसदिनभले । श्रीनगरसुखकरलूंणकरणसर आदिजिनसुपसावले । वाचना-चारज सुगुरु सांनिध विजयहरखविलासए। श्रीधर्मवर्द्धनस्तवन-भणतां प्रगटज्ञानप्रकाशए ॥२५॥ इति श्री २८ लब्धिस्तवनं ॥

॥ अथ १४ पूर्वस्तवनं लिख्यते ॥

॥ ढाल * बेकर जोडीताम ए चाल ॥

॥ जिनवरश्रीवर्द्धमान । चरमतीर्थंकर । प्रहऊठीप्रणमुं मुदाए । श्रुतधरश्रीगणधार । सूरिशिरोमणी । नमतां नवविधि-संपदाए ॥ १ ॥ चवदेपूरबनाम । सूत्रे जूजूवा । वीरजिणंदे-भाखीयाए । तेहिव सुगुरुपसाय । वरणवस्युंइहां । आगममें-जिम ऊपदिश्याए ॥ २ ॥ पहिलोपूरबऊत्पाद । दूजो आग्रा-यणी । वीर्यप्रवाद तीजोनमुंए । अस्तिनास्तिप्रवाद सत्ता जाणीये । नाणप्रवादए पंचम गिणुंए ॥ ३ ॥ छट्ठो सत्य

प्रवाद । सत्तमआतम । कर्मप्रवाद अठमगिणीए । प्रत्याख्यान प्रवाद । नामें नवम । विद्याप्रवाददशमो कह्योए ॥ ४ ॥ इग्या-रम नाम कल्याण । प्राणायाम बारमो । क्रियाविशाल तेरमभ-णीए । बिंदुसारइणनाम । चवदे ए कह्या, सास्त्रथकी में संग्र-ह्याए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ श्रीविमलाचलसिरतिलो एदेशी ॥

उत्पादपूर्वसोहामणो । कोटीपदपरिमांण । षट्भाव प्रगटछे तेजिहां । त्रिपदीभावविखाण ॥ १ ॥ सर्वद्रव्यपर्यायतणो । जीवविशेषप्रमाण । दूजोपूर्वआग्रायणी । छिन्नूलखपदजाण॥२॥ पदलखसित्तरजेहनी । संख्या परगटएह । वीर्यप्रवलताजीवनी । भाखीतीजेतेह ॥ ३ ॥ चोथेपूर्वे जेकह्यो । अस्तिनास्तिप्रवाद । पदसंख्या साठ लाखनी । सप्तभंगीस्याद्वाद ॥ ४ ॥ ज्ञानप्रवाद-पदपंचमो । सूत्रे आणयोजोरु । मत्यादिकपणभेदसुं । पदसंख्या इक कोरु ॥ ५ ॥ सत्यप्रवादछठो कहुं । भाखुं सत्यस्वरूप । संख्यापदइगकोरुनी । भाखी अगमअनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्य-पणोइहां । आतमद्रव्यसुभाव । छवीसपदकोरु जेहना । सूत्रे-आण्यांभाव ॥ ७ ॥ कर्मप्रवादतणो हिवे । प्रगटपणें अधिकार । लाखअसीपदजेहना । कोरुीइग निरधार ॥ ८ ॥ नवमोपूर्व कहुंहिवे । नामें प्रत्याख्यान । लाखचौरासीजेहना । पदसंख्या चित्तआन ॥ ए ॥ अतिसयगुणसंयुतभणी । साधनसाध्यनि-दांन । विद्याअनुपम सातसें । कोरुीदसलखजांन ॥ १० ॥ कल्याणनामइग्यारमो । छवीसकोरुप्रमांण । ज्योतिषशास्त्रवि-चारणा । चौविहदेवकल्यांण ॥ ११ ॥ प्राणायुपदबारमो ।

उप्पन्नलख इगकोरु । प्राणनिरोधनजेक्रिया । शास्त्रेंआण्यो जोरु ॥ १२ ॥ कायिक्यादिकजेक्रिया । छंदक्रियासुविसाल । पदसंख्यानवकोरुनी । तेरमो किरियाविशाल ॥ १३ ॥ लोक-सारबिंदुचवदमो । नामें अरथनिहाल । पदसंख्या इगकोरुनी । लाखपचवीशसंभाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्ययदेखणभणी । संख्या गजपरिमाण । सोलसहस अरुतीनशें । उर तेंयांसीजांण ॥ १५ ॥ पूरबसंख्याएकही । गुणमालाथीदेख । आगे बुधजनसोधज्यो । बाकीदेश विशेष ॥ १६ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वीरजीनेसर इम उपदिशे ए चाल ॥

सूत्रेगूंथे गणधरा । अरथे श्रीअरिहंतभाखेरे । ते श्रुत ज्ञान-नमुंसदा । पापतिमिरजिमनासेरे ॥ १ ॥ वाणीरे वीरजिनं-दनी । सुणज्यो चितहितआणीरे । तत्वरमणता अनुसरे । संपूरणगुणखाणीरे ॥ वा० ॥ २ ॥ विषयकषायतजीकरी । ज्ञानभगति उरधारीरे । विधिसंयुत जिनमंदिरे । प्रभुमुखपास-जुहारीरे ॥ वा० ॥ ३ ॥ तपजपसंयमआदरी । श्रीश्रुतज्ञान-निधानोरे । सदगुरुचरण नमीकरी । संबरजोगप्रधानोरे ॥ वा० ॥ ४ ॥ अक्षतलेई ऊजला । गुंहली सुंदरकीजेरे । नांणदंसण-चारित्रनी । ढिगली तीनधरीजेरे ॥ वा० ॥ ५ ॥ चवदपूर्व व्रत इणपरे । सुगुरुसंजोगेलेईरे । विधिसुंपुस्तकपूजीयें । चितअति आदरदेईरे ॥ वा० ॥ ६ ॥ इम तपसंपूरणथयां । ऊजमणो हिवकीजेरे । घरसारूधनखरचनें । नरभव लाहोलीजेरे ॥ वा० ॥ ७ ॥ पूठा परत विटांगणा । पूरबनामप्रमाणोरे । नवकर-वाली कोथली । लेखणठवणीजाणोरे ॥ ८ ॥ देहरे देवजुहारनें ।

आरतीमंगलकीजेरे । सनात्रपूजा वलि साचवी । तत्वसुधारस-पीजेरे ॥ वा० ॥ ए ॥ इणपरतपआराधतां । दुरगतिकारणछे-देरे । चवदहरज्जुसिरोमणि । जीवअक्षयगतिवेदेरे ॥ १० ॥वा०॥ तपआराधनविधभणी । आगमवचनेजोईरे । भवियणपिण तुमे आदरो । ज्युं भवभ्रमण न होईरे ॥ ११ ॥ वा० ॥ (कलश) इम सयलसुखकर गछखरतर तपे रविजिमकांतए । सोभाग्यसू-रिमुणिंद इणपर कह्यो पूर्ववृत्तांतए । संवतअठारे वरशछिन्नूं नयरश्रीबालूचरे । एस्तवनभणतां श्रवण सुणतां सयलमनवंछि-तफले ॥ १२ ॥ इति चवदेपूर्वस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ तिलकतपस्तवनं लिख्यते ॥

दूहा ॥ सासणदेवीसारदा । वाणीसुधारसवेल । बालक हितभणीवगसिये । सुबुद्धिसुरंगीरेल ॥ १ ॥ नवअंगे जिनपू-जतां । मनलहि सुभपरिणाम । तपतिलके फल पामियें । दवदं-तीगुणधाम ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीरजिणेसरउपदिसे एदेशी ॥

॥ कमलाजिमकुंरूणपुरे । भुजबलनरपतिभीमोरे । पदमनी-पदमसुवासना । श्वेतगजस्वप्नेंनीमोरे ॥ पदम० ॥ १ ॥ परतख्य-फल एपुन्यना । प्रसवीसुता पूरेमासेरे । दवदंतीनामदीपतो । गुणमणीबुद्धिप्रकाशेरे ॥ पदम० ॥ २ ॥ चौसठकलाविचक्षणा । रूपगुणेंकरीरंभारे । देवगुरु धर्मदीपावती । व्रतधारी दृढथंभा रे ॥ पदम० ॥ ३ ॥ प्रतिमापूजे श्रीसांतीनी, देवेदीधी त्रिकालो रे । मातपिता प्रमोदसुं ॥ स्वयंबर वरमालो रे ॥ पदम० ॥ ४॥ अजेज्झाधिपश्रीनिषदनो । नललिखीयो निलाडेरे । आनंदसुं

पंथ आवतां । पूरवपुन्यउघाम्हेरे ॥ पदम० ॥ ५ ॥ मज्झम रयणीतमन्नरी । मधुरवकुंत इहां वनमेंरे । मणिन्नाले तेज दिनमणी । जाग्रतदेखी अहोमनमेंरे ॥ पदम० ॥ ६ ॥ ज्ञानधारी गुरुकोईमिले । पूछीये एहप्रसन्नोरे । कर्मबले मुनि आवीया । परीसहजीतमदन्नोरे ॥ पदम० ॥ ७ ॥ पंचजीत पंचपालता । टालता दुस्सहसबलारे । संजमशुद्ध संन्नालता । उद्यमशिवसुखकमलारे ॥ पदम० ॥ ८ ॥ (दुहा) मणितेजें मुनि तरुठये, रथथकी स्त्रीन्नरतार, देवेतीनप्रदक्षिणा, विधिसुं चरणजुहार ॥ ९ ॥ देशनासुनपावनथया, ज्ञानसुधारसपाय, कोतपपरन्नवतिलकहै कहियै श्रीमुनिराय ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ भरतनृपभावसुं ए एचाल ॥

॥ मधुरस्वरे मुनिवरकहेए, नाणीगुरु सुपसाय । दीपक सहूलोकनाए । कर्मसुन्नासुन्नपरन्नवेए । इहन्नवफलनिपजाय । करमगतिवांकमीए ॥ ११ ॥ उहिनांणन्नव प्रागनोए । नृपसुणें निरमलन्नाव । समकितसाहीयोए । धर्मवती को नृपवधुए । जांणयोहैं तत्वप्रस्ताव । साचीजिनवाचनाए ॥ १२ ॥ चौथप्रमुख नृप चुंपसुंए । किरिया शुद्धकरीएह । न्नले चित्तन्नावसुंए । नवअंगपूजे तिलकसुंए । चाढेजिनचौवीश । रयणकंचणजड्याए ॥ १३ ॥ तिलक तिलकसें पामियोए । समकितएहस-तीस । जनम सफलोगिणेंए । न्नगवन तपविधिन्नाखीयेए । नलकहे बोधवरीस । पीहरषटकायनाए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतनाए । षट्उपवासकहीस । त्रिचौबीहारस्सुंए । चौथदोय जिनवीरनाए । अजितादिकबावीस । आणा गुरुशिरवहीए

॥ १५ ॥ पौषधत्रीश त्रीनेंथयाए । पूजनतिलक चढाय । तारक-जगदीसनेंए । उद्यापन संघत्रक्तिसुंए । जन्मसफलनलराय । सूधेमनसाधीये ए ॥ १६ ॥ सुणवाणी समकितगहेए । पयप्रणसी गुरुवीर । चित्तउमाहीयोए । इणपरजेत्रविआदरेए । थाये चरमशरीर, मूलसुखशासतोए ॥ १७ ॥ (कलश) श्रीशांतिदाता त्रिजगत्राता त्रविक ध्याता सुखकरा । इमसतीयसाध्यो तपआराध्यो सुजसवांध्यो शिवघरां । आगमेआखे सुरीयसाखे सुगुरुत्राखेसुणयथा । सुध्ध्यावे त्रविकत्रावे विजयविमलजिनवरकथा ॥ १८ ॥ इति तिलक तपस्यास्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ शोलीयेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ वीरजिनेसरत्राखीयोरे लाल । सहुव्रतमेंसिरताज । त्रविप्राणीरे । कषायगंजनतपआदरोरे लाल । इणथी पातिकजाय त्रविप्राणीरे ॥ वी० ॥ १ ॥ कोरुवरष तपआदररे लाल । क्रोधगमावे फलतास त्रविप्राणीरे । मानकरे जे प्राणियारे लाल । ते जगमेंनसुहाय ॥ त्र० ॥ वी० ॥ २ ॥ व्रतमें माया-आदरीरे लाल । स्त्रीपणोपायोमल्लिनाथ ॥ त्र० ॥ रूपपरावर्त्त-कीयाघणारे लाल । आषाढत्रुतिगणिकासाथ ॥ त्र० ॥ ३ ॥ च्यारकषायछे मूलगारे लाल, उत्तमसोलेत्रेद ॥ त्र० ॥ इमत्रव्रत्रवत्रमतोथकोरे लाल । जीवपामेंवहुखेद ॥ त्र० ॥ वी० ॥ ४ ॥ एकाशणव्रत जेकरेरे लाल । लाखवरषदुखहांण ॥ त्र० ॥ नीवीव्रत दूजो कह्योरे लाल । एधारो जिनवरवांण ॥ त्र० ॥ वी० ॥ ५ ॥ आंबिलनोफलवहुकह्योरे लाल । उपजे लबधि-अपार ॥ त्र० ॥ उपवासकरतां त्रावसुंरे लाल । पामेंत्रवनो-

पार ॥ ञ० ॥ वी० ॥६॥ इमदिनशोले तपकरेरे लाल । पूरण एव्र-तथाय ॥ ञ० ॥ देवगुरुपूजाकरेरे लाल । तिणथीपातिकजाय ॥ ञ० ॥ वी० ॥ ७ ॥ एतप आदरथीकरेरे लाल । मनवंछित-फलथाय ॥ ञ० ॥ नरसुर रिद्धिपिणञोगवेरे लाल । निश्चैमुगति जाय ॥ ञ० ॥ वी० ॥ ८ ॥ इति १६ कषाय गंजन तप स्तवनं ॥

॥ अथ ९६ भगवानकास्तवनं लिख्यते ॥

॥ वरतमानचोवीसी वंदुं । मनसूधेनितमेवरीमाई । ऋषञ १ अजित २ संञव ३ अञिनंदन ४ सुमति ५ पदमप्रञु ६ सेवरी माई ॥१॥ वर० ॥ श्रीसुपार्श्व ७ चंद्रप्रञु ८ प्रणमुं । सुविधि ए शीतल १० श्रेयांसरी ११ माई । वासपूज्य १२ विमल १३ अनंत १४ धरम १५ जिन, शांति १६ कुंथु १७ परसंसरी माई ॥ वर० ॥ २ ॥ अरजिन १८ मल्लि १९ अनें मुनिसुव्रत २० । नमि २१ नेमि २२ पास २३ जिणंदरी माई । चोवीसमा श्री-वीरजिणेसर २४, प्रणमुं परमाणंदरी माई ॥ वर० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ प्रह्शम सूधा साधु नमुं नित एदेशी ॥

नितनितअतीतचोवीशीनमीये । जेह्ना नामप्रगट ए जाण । केवलज्ञानीनें १ निरवाणी २ । सागर ३ महाजश ४ विमल ५ बखाण ॥ नि० ॥ ४ ॥ सर्वानुञूति ६ श्रीधर ७ दत्त ८ जिन-वर । दामोदर ए सुतेजा १० श्रीस्वामि ११ । मुनिसुव्रत १२ सुमति १३ शिवगति १४ जिन । श्रीअस्ताग १५ नेमीसर १६ नाम ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल १७ यशोधर १८ ॥ तेम कृता-रथ १ए । श्रीजिनेसर २० सुधमति २१ सुजगीस । शिवकर २२ स्यंदन २३ संप्रतिनामें २४ । वंदीजे जिनवरचौवीश॥६॥नि०

॥ ढाल ३ सफल संसारनी देशी ॥

॥ जे नविस्संति अनागएकालए । तेहचौवीशप्रणमीस त्रिहुंकालए प्रथममहाराजश्रेणिकतणोजीवए । श्रीपदमनान प्रणमीससदीवए ॥ १ ॥ वीरनो पितरीयो नाम सुपासए । हुसी जिनबीय सूरदेव सुप्रकास ए । कोणिकसुतउदाई नरिंदए । तीसरो तेह सुपास जिणंदए ॥ २ ॥ सिष्यश्रीवीरनो पोट्टलो-साधए । चोथोस्वयंप्रनुनामआराध ए । दृढायुषजीवसिद्धांतमें-जाणीये । पंचमसर्वानुनूतिप्रमाणीये ॥ ३ ॥ कीर्त्तिणनामक-जीवकहीजीये । देवश्रुत ते छठो स्वामि सद्दहीजीये । शंखश्राव-कहुस्ये उदयजिणसातमो आणंदनोजीव पेढालजिणआठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनोजीवते नवम पोट्टलजिणं । शतकश्रावक शत-कीर्त्तिदशमोनणं देवकीजीवमुनिसुब्रतइग्यारमो । सत्यकीजी-वते अममजिणबारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकषायजिनते-रमो । बलदेवजीव निपुलाक चवदमनमो । पनरमो निरममदेव सुलसा कही । रोहिणीजीव चित्रगुप्तसोलमसही॥६॥समाधि जिन सतरमो श्राविकारेवती । अढारमो शद्दालजीव संवर जिनपति । दीपायनजीव यशोधरउगणीसमो । कृष्णकोई जीव ते विजयजिन-वीशमो ॥ ७ ॥ मल्लिइकवीशमो जीवनारदतणो । देव बावी-शमो अंबरूश्रावकनणो । तेवीशमो अमरजीव अनंतबीरज-नमो । स्वातिबुधजीवते नद्रचौवीशमो ॥ ८ ॥ एहआगामी-चौवीशजिणजाणीया । प्रवचनसार उद्धारथीआणीया । केई परसिद्धनें केई अप्रसिद्धकह्या । शास्त्रअनुसारथी साचकरसर-दह्या ॥ ए ॥

॥ ढाल ४ आजनिहेजोरेदीसे नाहलो० एदेशी ॥

विहरमानजिणवीशेवंदीये । महाविदेहविख्यात । सीमंधर १ युगमंधर २ बाहुजी ३ श्रीसुबाहु ४ सुजात ५ ॥ ६ ॥ वि० ॥ स्वयंप्रभु ६ रिषभानन ७ अनंतवीरजी ८ । सूरप्रभु ९ तेम विशाल १० । वज्रधर ११ चंद्रानन १२ चंद्रबाहुजी १३ । भुजंग १४ ईसर १५ नेम १६ भाल ॥ ७ ॥ वि० ॥ वैरसेन १७ महाभद्र १८ नमुंवली । देवयशा १९ यसोरिद्ध २० । अढी द्वीपमें विचरेआजए । नामलीयेनवनिद्ध ॥ ८ ॥ वि० ॥

॥ ढाल ५ रेजीव जिनधर्मकीजीये० ए देशी ॥

च्यारतीर्थंकरशाश्वता । इणहीजअभिधान । रुषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमान ॥ ९ ॥ च्या० ॥ अठकोडिछप्पन लाखसुं । सत्ताणुंहजार । चउसेछयासीदेहरा । त्रिहुंलोकमझार ॥ २० ॥ च्यार० ॥ नवसेपणवीसकोडीया । बिंब त्रेपनलाख । सहसअठावीश च्यारसे । अठ्यासीभाख ॥ २१ ॥ च्यार० ॥ छिन्नूंजिणवरनामए । समरयांसुखदाय । प्रणम्यां पापमिटेपरा । समकितसुद्धथाय ॥ २२ ॥ च्यार० ॥ (कलश) इमत्रिणचौवीशीवीशविहरमांनचौजिण शाशता । संथुण्यां सतरेसे त्रयांले अधिकआंणीआसता । जिनरतनचिंतामणितणीपरि प्रघलवंछितपूरए । प्रहसमे त्रिकरणसुद्धप्रणमें सदाजिनचंदसूरए ॥ २३ ॥ इति श्रीछिन्नूंभगवानका स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीउपधानतप वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीरधरमपरकासे । वेठी परषदवारजी । अमृतवचनसुणी अतिमीठा । पामें हरषअपारजी ॥ १ ॥ सुणो सुणो

रे श्रावक उपधानवह्यांविन । किमसूझे नवकारजी । उत्तरा-
ध्ययनबहुश्रुतअध्ययनें। एहनणयो अधिकारजी ॥२॥ सुणो०॥
महानिशीथसिद्धांत मांहेपिण । उपधान तपविस्तारजी । अनु-
क्रमसुद्धपरंपरदीसे । सुविहितगछ आचारजी ॥ सुणो० ॥ ३ ॥
तपउधानवह्यांविनकिरिया । तुछअलपफल जाणजी । जे उ-
पधानवह्या नरनारी । तेहनो जनमप्रमाणजी ॥ ४ ॥ सुणो०॥
तपउपधानकह्यो सिद्धांते । जो नविमानेंजेहजी । अरिहंत दे-
वनीआणविराधे नमस्ये नवनवतेहजी ॥ ५ ॥ सुणो० ॥ अघ-
ट्याघाटसमां नरनारी । विणउपधाने होयजी । किरियाकरतां
आदेश निरदेश । कामसरे नहीं कोइजी ॥ ६ ॥ सुणो० ॥
इकघेवरनें खांडेभरियो । अतिघणोमीठोथायजी । एकश्रावक
उपधानवहेतो, धनधनते कहवायजी ॥ ७ ॥ सुणो० ॥ ढाल २
॥ नवकार तणो तप पहिलो वीसरूजाण । इरियावही नो तप
बीजोवीसरू आण । इण विहुं उपधाने निश्चे नांणमंडाण ।
बारेउपवासे गुरुमुख बेबेवांणि ॥ ८ ॥ पैंत्रीसरूत्रीजो णमो-
त्थुणं उपधांन । त्रिणवायण उगणीसतपउपवास प्रधांन । अ-
रिहंतचेईतप चोथो चोकडएह । उपवास अढाई वायण एक-
गुणगेह ॥ ९ ॥ पांचमो लोगस्सतप अठावीसडनाम । साढा-
पनरहउपवासे वायणत्रिणठाम । पुरकरवरदीतप छठो छक्कड-
सार । साढात्रणउपवासे वायणएकसुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणं-
वुद्धाणं सातमो उपधानमाल । उपवासकरेइक चौविहारतत-
काल । एकवायण करे वलि गुरुमुख सरसरसाल । गछनायक-
पासे पहरे मालविशाल ॥ ११ ॥ मालपहरणअवशर आणी-

मनउछरंग । घरसारूवारू खरचे धनबहुन्नंग । अतिउच्छवकीजे रातीजोगोदिलखोल । गीतगान गवावे पावेअतिरंगरोल ॥ १२ ॥ ढाल ॥ ३ ॥ एसातेउपधान । विधिसे जे वहे । ते सुधीकिरियाकरेए । खिणनकरे परमाद । जीवजतनकरे । पुंजि पुंजि पगलान्नरेए ॥ १३ ॥ नकरे क्रोधकषाय । हरू हरू हसे- नहीं । मरम केहनो नविकहेए । नाणें घरनोमोह । उत्कृष्टीक- रणीकरे । साधुतणीरहणीरहेए ॥ १४ ॥ पहुरसीमसिझाय । करपोरसीन्नणी । उंचेस्वरबोलेनहींए । मनमांहेंन्नावेएम । धनधनएदिन । नरन्नव मांहिं सफलसहीए ॥ १५ ॥ जे साते उपधान । विधसेतीवहे । पहिरेमालसोहावणींए । तेहनी कि- रियाशुद्ध । बहुफलदायक । करम निरजरा अतिघणीए ॥१६॥ परन्नव पामे रिद्ध । देवतणासुख । बत्रीस बद्धनाटक पखेए । लान्ने लीलविलास । अनुक्रमशिवसुख । चढती पदवी जे चढे ए ॥ १७ ॥ (कलश) इमवीरजिणवरन्नुवण दिणयर मातत्रि- शलानंदणो । उपधाननाफल कहे उत्तम न्नवियजण आणं- दणो । जिणचंदजुगपरधानसदगुरु सकलचंद मुनीसरो । तसु शीश वाचक समयसुंदर न्नणें वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥ इति श्रीसातउपधानगर्भितश्रीमहावीरस्वामी वृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ पक्खवासे तपका वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ सीमंधरकरजोमया एदेशी ॥

॥ जंबुद्वीपसोहामणो । दक्षिणन्नरतउदार । राजग्रही नग- रीन्नली । अलिकापुरअवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामीजी॥ समरंता सुखथाय । मनवंछितफलपामीये । दोहगदूरपुलाय

॥ २ ॥ श्री० ॥ राजकरे तिहां राजियो । सुमित्रनरेसरनाम । पटराणीपद्मावती । शीलगुणें अभिराम ॥ श्री० ॥ ३ ॥ आवणकजलपूनमें । श्रीजिनवरहरिवंश । माताकुक्षिसरोवरे । अवतरीयोरायहंस ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जेठपढमपक्षअष्टमी । जायो श्रीजिनराय । जनममहोछव सुरकरे । त्रिभुवनहरखनमाय ॥ श्री० ॥ ५ ॥ शामलवरण सोहामणो । निरुपमरूपनिधान । जिनवर लंछनकाछवो । वीशधनुष तनुमान ॥ श्री० ॥ ६ ॥ परणीनार प्रभावती । भोगपुरंदरसाम । राजलीलासुख भोगवे पूरे वंछितकाम ॥ श्री० ॥ ७ ॥ तब लोकांतिकदेवता । आविजंपे जयकार । प्रभु फागुणवदिबारसे लीधोसंयमभार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ शुभ फागुणवदिबारसे । मनधर निरमलध्यान । च्यारकरम प्रभु चूरिया । पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ॥ ए ॥

॥ ढाल २ सुखकारण भवियण समरो श्रीनवकार एदेशी ॥

॥ ततखिणतिहांमिलिया चलिया सुरनरकोडि । प्रभुना पदपंकज प्रणमे बेकरजोडि । बेकरजोडी मछरछोडी समवसरणविरतंत । माणकहेम रूपमयत्रिगडो छत्रत्रयझलकंत । सिंहासनबेठा तिहांस्वामी चोविहधर्मप्रकासे । बारेपरखदाबेठी आगलि सुणे मनउल्हासे ॥ १० ॥ तपनें अधिकारे पखवासोतपसार । पडिवाथीकीजे पनरहतिथि उदार । पनरहतिथि कीजे गुरुमुखलीजे । जिसदिन हुवे उपवास । श्रीमुनिसुव्रतनामजपीजे वांदी देवउल्लास । तपऊजमणे रजतपालणो सोवनपूतलीचंग । मोदकथाल देहरे मूंकी जिनवरस्नात्रसुरंग ॥ ११ ॥ तपकरिये निरंतरअडुरव दरशनीजेम । मनवंछितकेरा सुखपा-

मीजेतेम, सुखपामीजे कारजसीजे तपकरतां सुखकार, पुत्र मित्रपरिवार परंपर अतिवल्लभभरतार।जसकीरतसोभागवडाई महियल महिमाजांण। परभव मुगतिफल लहीये एतपनेंप्रमाण ॥ १२ ॥ थिरथापी चतुर्विधसंघतणो अधिकार। भरुवछप्रमुखनगरादिककरियविहार। विहारकरी प्रतिबोधे खंदक पंचसयांपरिवार। कार्त्तिकसेठ जितशत्रुतुरंगम सुव्रतनामकुमार। तीशसहसवरसआउखो पाले जगदयासार। श्रीसम्मेतसिखरपरमेसर पोहतामुगति मझार ॥ १३ ॥ इमपंच कल्याणक थुणियात्रिभुवनताय। मुनिसुव्रतस्वामीवीशमो जिनवरराय। वीशमोजिनवर राय जगगुरु भयभंजणभगवंत। निराकार निरंजननिरुपमअजरामरअरिहंत। श्रीजिनचंदविनेयशिरोमणि सकलचंद गणिसीस। वाचक समयसुंदर इमपभणे पूरो मनहजगीस ॥ १४ ॥ इति श्रीपक्खवासातप वृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वारेमासीतपस्तवनं लिख्यते ॥

दानउलटधरीदीजीये। (एदेशी) त्रिभुवननायक तुं धणी, आदिजिणेसरदेवरे। चौसठइंद्रकरेसदा। तुझपदपंकजसेवरे (त्रिभु०) ॥ १ ॥ प्रथमभूपालप्रभु तुं थयो। इणअवसरपणीकालरे। तुजसमअवरनको प्रभु। तुं प्रभु दीनदयालरे(त्रि०) ॥ २ ॥ प्रथमतीर्थंकर तुं सही। केवलग्यानदिनंदरे। धर्मप्रज्ञापकप्रथमतुं। तूंही है प्रथमजिनंदरे। (त्रि०) अंतरअरि जे आतमतणा। कालअनादिथिति जेहरे। ते तपशक्तिये तेंहण्या। आतमबीरजगुणगेहरे (त्रि०) ॥ ४ ॥ ताहरीशक्ति कुणकह शकै। जेहनो अंतनपाररे। द्वादश-

भाशनो तपकर्यो । तेह अपानकसाररे (त्रि०) ॥ ५ ॥ एहउ-त्कृष्टतपवरणव्यो । आगममे जिनराजरे । ते करवुं अतिआ-करूं । तपविना किमसरे काजरे (त्रि०) ॥ ६ ॥ तीनशेसाठ-उपवासते । जेइनपंचमकालरे । अवसरआदरै क्रमविना । ते पिण नवि सुविलासरे (त्रि०) ॥ ७ ॥ एतप गुरूमुखआदरै । शास्त्र तणे अनुसाररे । पडिक्कमणादिकनावथी । सुद्धक्रिया मन धाररे (त्रि०) ॥ ८ ॥ चित्तसमाधि सुनावथी । धरे ताहरो ध्यानरे । ते नर उत्तमफललहे । वलि लहे उत्तमज्ञानरे (त्रि०) ॥ ए ॥ कालअनादिसंसारमें । जन्ममरणतणा दुःख रे । ते लह्या धर्मपायांविनां, तपविना किमहुवे सुक्खरे (त्रि०)॥१०॥ हिवलह्यो नरनवपुन्यथी । वलि लह्यो श्रीजिनधर्मरे । तत्व-नीरुचिथईहैं मुझे । हिवमिट्यो मन तणोनर्मरे (त्रि०)॥११॥ नवनव एकजिनराजनो । सरणहोज्यो सुखकाररे कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । में कीधो हिवे परिहाररे (त्रि०) ॥ १२ ॥ दर्शन-ज्ञानचारित्रए । मोक्षमारगसुविसालरे । नवनवजे मुझसंपजे । तोफलेमंगलमालरे ॥ त्रि० ॥ १३ ॥ श्रीजिनशासनतपकह्यो । ते तप सुरतरुकंदरे । धनधन जेनरआदरे । काटेते करमनो फंदरे ॥ त्रि० ॥ १४ ॥ कलश ॥ इम नाभिनंदन जगतवंदनस-कलजनआनंदनो । में थुण्यो धनदिनआजनोमुझ मात मरुदेवी-नंदनो । संवत सुनेत्राकाशनिधिशशि (१ए०२) नयर श्रीवालूचरे । श्रीजिनसौभाग्यसूरिंदके सुपशाय विजयविमलवरे ॥ १५ ॥ इति श्रीबारमाशीतपवृद्धस्तवनम् ॥

॥ अथ छम्मासीतपस्तवनं लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामीरे बुध दो निरमली । आपो करिय पसाय, महावीरस्वामी जे जे तपकिया । तेहनोकहिसुंविचार । वलिव-लिवांदु वीरजीसुहामणा ॥ १ ॥ नावठनंजण सेव्यां सुखकरे । गातां नवनिधिथाय । वारेवरसां वीरजी तपकियो । दूरकरे सहुअपाय ॥ व० ॥ २ ॥ बेकरजोमी एहूं वीनवूं । श्रीजिनशा-सनराय । नामलियांथी नवनिधि संपजे । दरिशणदुरितपुलाय ॥ व० ॥ ३ ॥ नवचौमासा जिनजीरा जाणिये । एककीयो ठम्मास । पांचेऊणा ठ वलि जाणिये । बारेकेकोजीमाश ॥ व० ॥ ४ ॥ बहुत्तर माशखमण जगदीपता । ठ दोमासीरे-जाण । तीन अढाई दो दो कीया । दो दोढमाशीवखाण ॥ व० ॥ ५ ॥ नद्र महानद्र शिवगतिजाणियें । उत्तमएहनाप्र-कार । विचमें पारणो स्वामी नहिंकियो । नहिंकीयो चोथोआ-हार ॥ व० ॥ ६ ॥ तिहुंउपवासे प्रतिमाबारमी । कीधाबारेजी-माश । दोयसें बेला जिनजीराजाणिये । इणगुणतीसविलास ॥ व० ॥ ७ ॥ तीनसेपारणा जिनजीराजाणियें । तीन गुणतीसप-चास । एहमें स्वामीकेवलपामिया । पाम्यामुगतिआवास ॥ व० ॥ ८ ॥ कलश ॥ इमवीरजिनवर सयलसुखकर अतिहि दुक्करतपकरी । संयमसुपाली कर्मटाली स्वामी शिवरमणी वरी । सेवकपनणें वीरजिनवर चरणवंदितुमतणा । संसारकूपपऊंत-राखो । आपो स्वामी सुखघणा ॥ ९ ॥ इति ठम्मासीतपस्तवनं ॥

॥ अथ रोहिणीतपवृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ शाशणदेवतासामिणीए मुऊ सांनिधकीजे । नूलो अक्षर

जगतजणी समझाईदीजे । मोटोतप रोहणीतणोए जिणरागुण-गाउं । जिम सुखसोहग संपदाए वंछितफलपाउं ॥ १ ॥ दक्षि-णभरते अंगदेसछे चंपानयरी । मघवाराजा राज्यकरेतिणजी-त्यावयरी । पाटतणीराणी रूवडीए लखमीइणनामें । आठपूत्र जायाजिणेंए मनमें सुखपामें ॥ २ ॥ रोहणीनामे कन्यकाए सवकुं सुखकारी । आठां पुत्रां ऊपराए तिणलागेप्यारी । वाधे-चंद्रतणीकलाए । जिम पखउजवाले । तिमतेकुमरी धायमाय-पांचेप्रतिपाले ॥ ३ ॥ कुमरीरूपे रूवडीए घरअंगणवैठी । दीठी राजा खेलतीए तिण चिंतापैठी । तीनभुवनविचएहवीए नहिं दूजीनारी, रंभा पउमा गवर गंग इणआगलहारी ॥ ४ ॥ पुरुष न दीसे कोइइसो जिणनेंपरणाउं । आंख्याआगल साल वधे तिण चयननपाउं । देशदेशना राजवीए ततखिण ते ज्ञाया । सवलसजाई साथकरी नरपतिपिणआया ॥ ५ ॥ वीत-शोकराजातणोए छे कुमरसोभागी । कन्याकेरी आंखडीए तिणसेतीलागी । ऊभादेखे सकललोक चढिया केइपाला । चित्रसेनरेकंठेठवी कुमरीवरमाला ॥ ६ ॥ देव अने दैवांगनाए जपेजयजयकार । रलियायतथयो देखने ए सारोसंसार । कर-जोडीकहे लोकवखतकन्यारोजाडो । वीतशोकनो कुमरथयो सिरऊपरलाडो ॥७॥ इमविवाह थयोभलोए । दीयादानअपार । घरआयापरणीकरीए हरख्योपरिवार । वीतशोकनिज पूत्रभणी अपणोपाटदीधो । आपणसंजमआदरीए जगमें जसलीधो ॥८॥

॥ ढाल २ प्रभुप्रणमुंरे पासजिणेसरथंभणो एदेशी ॥

तिणनगरीरे चित्रसेन राजाथयो । सुखसाहीरे केटलो काल-

वहीगयो । इणअवसररे आठपूत्रहुवाभला । चढते पखरे चंद्र-
जिसीचढतीकला ॥ उल्लालो ॥ चढतीकला हिव रायवेठो
पासबेठीरोहणी । सातमीभूमी कंतसेती करेक्रीमा अतिघणी ।
आठमो बालकगोदऊपररंगसूं राणीलियो । पूत्रने प्रीतम
आंखआगलदेखतां हरखेहियो ॥ ए ॥ ढाल ॥ इककामणीरे
गोखचढी द्रष्टेपमी । शिर पीटेरे दीनस्वरे रोवेखमी । बूढापणेरे
मनगमतो बालक मूर्ज । हुंतो एकजरे तिणअधिकेरो ङुखहुर्ज ॥
उल्लालो ॥ ङुखहुवोदेखीरोहिणीकहेइमप्रीतमभणी । एनार
नाचे अनेकूदे कहो किम मोटाधणी । एहवोनाटक आजताई
मेंकदे देख्योनहीं । मुऊनेतमासो अनेहासो देखतां आवेसही
॥ १० ॥ ढाल ॥ इणवचनेरे रीसाणो राजाकहै । तूं पापणीरे
परतणीपीमा नविलहै । एङुखणीरे पूत्रमुए तम फमकरे । जब-
वीतेरे वेदना जाणीजेतरे ॥ उल्लालो ॥ जाणीजेतरेतूं वातङु-
खनीगरबगहिलीकामीनी । इमकही राजा हाथऊाल्यो तेहना-
बालकभणी । सातमीभूमीथी तले नाख्यो तिसेहाहारवथयो ।
रोहिणीहसती कहैप्रीतम पूत्र नीचेकिमगयो ॥ ११ ॥ ढाल ॥
हिव राजारे पूत्रतणे शोके करी । थयोमुरछितरे रोवे अति-
आंख्यांभरी । पमतोसुतरे सासणदेवतजाणियो । कंचनमयरे
सिंहासणबेसाणियो ॥ ढाल ॥ वेसाणियोकरजोमीआगे करेना-
टकदेवता । गोदी खिलावे केइहसावे पायपंकजसेवता । ऊपनो
भूपतिने अचंभो देखि ए कारणकिसो । जो कोइज्ञानीगुरुप-
धारे पूछियेसांसो इसो ॥ १२ ॥ ढाल ॥ चिंतवतांरे चारित्रि-
याआया जिसे । राजापिणरे पुहतो वंदणनेतिसे । सुणिदेश-

नारे पूछे प्रश्न सोहामणो । कहोस्वामीरे पूरवन्नव वालकतणो॥ उल्लालो ॥ वालकतणोन्नव न्नूपपूछे कहै इणपरिकेवली । रोहिणीराणीनो न्नवांतर अने राजानोवली । श्रीसुगुरुपासे पाछले- न्नवे रोहिणीतपआदस्यो । तपतणेसगते साधुन्नगते तुम्हन्नवसा- यरतस्यो ॥ १३ ॥ ढाल ॥ कहैराजारे किम रोहिणी तप कीजिये। विधिन्नाखोरे जिमतुमपासे लीजीये ॥ तव मुनिवररे विधि रोहिणीरातपतणी । इमजंपेरे चित्रसेन राजान्नणी ॥ उल्लालो ॥ राजा- न्नणी विधि एहजंपे चंद्र रोहणीजबआविये। उपवासकीजे लान्न- लीजे न्नलीन्नावना न्नाविये । बारमाजिनवरतणीप्रतिमा पूजिये मनरंगसु । इम सातवरसांलगेकीजे तजी आलसअंगसुं ॥१४॥

॥ ढाल ॥ वीरसुणोमोरीवीनती एदेशी ॥

॥ तपकरिये रोहिणीतणो । वलिकरियेहो ऊजमणो एम । तपकरतां पातिकटले । तिण कीजेहो तपसेतीप्रेम ॥ १५ ॥ तप० ॥ देवजुहारीदेहरे । तिणआगेहो कीजे वृक्षअशोक । गुणनो बारमजिनतणो । न्नलानेवजहो धरिये सहुथोक ॥ तप० ॥ केशर चंदनचरचिये, कीजे आगे हो आठेमंगलीक । विधिसुं पुस्तकपूजिये । ते पामेहो शिवपुरतहतीक ॥ तप० ॥ ॥ १७ ॥ सेवाकीजेसाधूनी । वलिदीजे हो मुंहमाग्यादान । संतोषीजेसाहमी मनरंगे हो करकर पकवान ॥ तप० ॥ १८ ॥ पाटीपोथीपूंछना । मिसलेखण हो झिलमिलसुजगीस । नवकर- वाली वींटणा । गुरुआगे हो धरोसत्तावीस ॥ तप० ॥ १९ ॥ चोथोव्रत पिण तिणदिने, इमपालेहो मनआणविवेक। इणविध रोहिणीआदरे । तेपामेहो आनंदअनेक ॥ तप० ॥ २० ॥

॥ ढाल ४ धर्मंकरो जिनवरतणो ए देशी ॥

इम महिमा रोहणीतणी । श्रीज्ञानीगुरुपरकाशेरे । चित्रसेननेरोहिणी । वासुपूज्य तीर्थंकरपासेरे ॥ इम० ॥ २१ ॥ इणपरि रोहिणी आदरी । ऊपरऊजमणोकीधोरे । चित्रसेननने रोहणी । मनसूधे संजमलीधो रे ॥ इम० ॥ २२ ॥ आठेपूत्रे आदरी । दीक्षा बारमजिनआगेरे । वलि नाना विध तपतपे । धरमतणी मतिजागेरे ॥ इम० ॥ २३ ॥ करि अणसणआराधना । लहिकेवल शिवपदपायारे । जिन वाणीआणीहिये । प्रभुचरणां चितलायारे ॥ इम० ॥ २४ ॥ मनमोहन महिमानीलो । में स्तव्यो शिवपुरगामीरे । मन मान्या साहिबतणी । हिव पुन्ये सेवापामीरे ॥ इम० ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम गगनयुगमुनि चंद्र वरसे (१७२०) चोथ श्रावण शुदिभली ॥ में कही रोहिणीतणीमहिमा सुगुरुमुख जिम सांभली । वासुपूज्य अमने थया सुप्रशन चितनीचिंताटली । श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकलमनआस्याफली ॥ २६ ॥ इति श्रीरोहिणीतप वृद्धस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥ पैंतालीसआगमवृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थपति । नमूं देवअरिहंत ॥ अर्थप्रकाशेगणपपुर । द्वादशअंगमहंत ॥१॥ त्रिपदी लहि गणपतिरचे । सूत्रअर्थसंजोग । अक्षररूपे सारदा । प्रणमूं त्रिकरणयोग ॥ २ ॥ टीकाकर्त्ता जगतगुरु । सूत्रकरे गणधार ॥ पंचांगी युतविस्तरे । नयनिक्षेपविचार ॥ ३ ॥ दुषम काल दुर्भिक्षसें । भूले बारम अंग ॥ कंठ पाठसें लिखतकर । रचनारचीअभंग ॥ ४ ॥

खंदिल अरु देवर्द्धिगणि । आचारज सयपंच ॥ चौरासीआ-
गमलिखे । कोटिग्रंथ तजखंच ॥ ५ ॥ कालदोषसें अबमिले ।
आगमपैंतालीस ॥ ताको मुनिविवरणकरे । मानेविसवावीस
॥ ६ ॥ ढाल ॥ जगत गुरु त्रिशलानंदनजी एदेशी ॥ आचा-
रांगपहिलोकह्यो जी । मुनिआचारविचार ॥ सुयगडांगदूजोअ-
छेजी । पाखंडीनिरधार ॥ जगतगुरु जाखे वीरजिनंद ॥ १ ॥
दस ठाणाठाणांगमेंजी । समवायांगसंख्यात ॥ सहसछत्तीस
जला प्रश्ननोजी । जगवईअंगविख्यात ॥ जग० ॥ २ ॥ धर्म
कथा ज्ञाताजणीजी । दसश्रावकव्रतधार ॥ दसा उपासक सात-
मोजी । अंगकह्योनिरधार ॥ जग० ॥ ३ ॥ अंतगड केवलीजे-
थयाजी । वरणनअष्टमअंग ॥ पंचानुत्तरजे गयाजी । अणुत्तरो-
वाईचंग ॥ जग० ॥ ४ ॥ अंगुष्टादिक प्रश्ननोजी । प्रश्नव्याकरण-
नाम ॥ सुखदुखना फलजाषिया जी । सूत्रविपाकेताम ॥ जग०
॥ ५ ॥ अढारसहस आचारांगमेंजी । पदसंख्यापरिमाण ॥
वर्शसंख्यातेपदहुवेजी । ठाणदुगुण सबजाण ॥ जग० ॥ ६ ॥
उववाईउपांगमेंजी । कोणिक अंबडरूप ॥ वर्णन नगरी आदि-
देजी । सांजल जविजनचूंप ॥ जग० ॥ ७ ॥ सूरियाजपूजाक-
रीजी । जिन प्रतिमानवरंग ॥ द्रव्यजावविहुंजेदसूंजी । राय-
प्रश्नी चितचंग ॥ ज० ॥ ८ ॥ जीवतणो अजिगमसहीजी ।
विजय देवप्रस्ताव ॥ जीवाजिगम तीजोकह्योजी सुरकृतबहुविध-
जाव ॥ जग० ॥ ए ॥ पन्नवणामें जाणज्योजी । जीवाजीव
विचार ॥ जंबुद्वीपनीवर्णनाजी । नामथकी गुणधार ॥ जग०
॥ १० ॥ सूरचंदग्रहगतीजी । पन्नत्ती बिहुंजाण ॥ कप्पिय-

कप्पवर्डिसियाजी । पुप्फिया नामेवखाण ॥ जग० ॥ ११ ॥ पुप्फचुलिया जाणीयेजी । वन्हिदशा इणनाम ॥ नामथीअर्थ-पिबाणज्यो जी । सांजलता सुखधाम ॥ जग० ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ख्यालीलाल अणवटरंगलागो ए देशी ॥

बेदतणा प्रायश्चित्तनाजी । बेदबए एजाण ॥ वृहत्कल्प व-वहारमेंजी । जाख्यो जगवंतज्ञान ॥ सुज्ञानीलालइणसुं नित-राचो ॥ राचोराचोरे जविक दिलधार । इणसुंनितराचो । सुज्ञा० ॥ १३ ॥ महानिशीथे जाखियोजी । जिनपूजा विहुं-जेद ॥ श्रावक इव्यजावसुंजी । मुनिवरजाव उमेद ॥ सु० ॥ ॥ १४ ॥ जीतकल्प वलि निसीथबेजी । उर दशाश्रुतस्कंध ॥ दशपयन्नाजाणियेजी । चौसरण संथार प्रबंध ॥ १५ ॥ सु० ॥ तंडुलवयाली चंदाविजयाजी । गणिविज्ञा अजिधान । देववि-जया वीरथुवोजी । गञ्चाचारनिधान ॥ सु० ॥ १६ ॥ ज्योति-षकरंम महापच्चरकाणजी । च्यारसूत्र बे मूल ॥ आवश्यक दश-वैकालिकजी । उत्तराध्ययनअमूल ॥ सु० ॥ १७ ॥ च्यारे अनुयोगे करीजी । रचना सूत्रे जाण । तेह नय निक्षेपथी-जी । अनुयोगद्धारप्रधान ॥ सु० ॥ १८ ॥ इव्यानुयोग बए इव्यनीजी । चर्चाविधिविस्तार ॥ चरण करण अनुयोगमेंजी । मुनि श्रावकआचार ॥ सु० ॥ १ए ॥ गणितानुयोगगणनाकरी जी । पृथ्वीनगविमाण ॥ वर्ग मूल घनमूलथीजी । जाणो चतु-रसुजाण ॥ सु० ॥ २० ॥ धर्मकथा अनुयोगमेंजी । धर्मकथा दृष्टांत ॥ ए चारों विस्तारियाजी । पैंतालीससिद्धांत॥सु०॥२१॥

॥ ढाल ३ सांगानेरविराजे एदेशी ॥

॥ सुण सुण गौतमवाणी । इम वीरवदेगुणखाणीरे । जवियां आगमसुं मनलावो ॥ मनकल्पितवातमागावोरे ॥ ज० ॥ आ० ॥ २१ ॥ नंदीसूत्र चिरनंदो । यामें पंचज्ञाननेवंदोरे ॥ ज्ञाननाजेदवखाण्या । मतिअठावीसे आण्यारे ॥ ज० ॥ आ० ॥ २३ ॥ श्रुतचवदेवीसांजेदे । एमिथ्यामतने छेदेरे ॥ ज० ॥ आ० ॥ अवधि छ असंख्यप्रकारे । मनपर्यवदुयजेदधारेरे ॥ ज० ॥ आ० ॥ २४ ॥ केवलएक प्रकासे । ए सबविधिनंदीजासेरे ॥ एतो सहुआगमनी नूद । स्याद्वादगंगनीबूंदरे ॥ ज० ॥ आ० ॥ २५ ॥ अंग उपांगनीटीका । कर्त्तानेनमूंनिरजीकारे ॥ प्रथम हरिजद्र शीलांगाचारी । श्रीअजयदेवबलिहारीरे ॥ ज० ॥ आ० ॥ २६ ॥ मलयगिरी गुरुस्वामी । इत्यादिकने सिरनामीरे ॥ सामान्य विशेषेजाख्यी । निश्चय व्यवहारछे साखीरे ॥ ज० ॥ आ० ॥ २७ ॥ उत्सर्गवचनछेकेइ । अपवाद वचननेलेइरे ॥ ज० ॥ इकमनसुंआराधो । मनवंछित सगला-साधोरे ॥ ज० ॥ आ० ॥ २८ ॥

॥ ढाल ४ मंगलकमलाकंदए एदेशी ॥

पैंतालीसआगमतणीए । हिव तपविधि सुणज्यो हित ज-णीए । दूजपांचमएकादशीए । ज्ञानतिथितपथीकर्म जायख-सीए ॥ २ए ॥ शक्तिछतेउपवासए । आंबिलनिवीथी उल्लासए। एकासण अथवा करेए । इम पैंतालीस दिन आचरेए ॥ ३० ॥ जापकरे दोहजारए । देववंदनपूजनसारए । प्रतिक्रमणकरे दोनुंटंकए । आगमसुणे अर्थनिसंकए ॥ ३१ ॥ कज़मणो हित

चितकरेए । गुरुभक्ति चित्तसुंआदरेए । भक्ति करेसाहमीतणीए । जेपढेपढावे तेभणीए ॥ ३२ ॥ अन्न वस्त्र पुस्तककरे दानए । तिणमनुष्यजनमपरिमाणए । ते पामे श्रुतज्ञानए । क्रमथीलहैपदनिर्वाणए ॥ ३३ ॥ (कलश) शुभ नंद शर निधि चंद्र वरषे माघसुदिपंचमीदिने । वर नयरबीकानेरसुंदर बृहत्खरतरगणघणे । गणधारकीर्ति सुरिंदपाठक रामगणि ऋद्धिसारए । इमकरियस्तवना सुय महोदय सदाजयजयकारए॥३४॥ इति श्रीपैंतालीस आगमतपवृद्धस्तवनं ॥

॥ अथ पंचसमवायस्तवनं लिख्यते ॥

॥ सिद्धारथसुतवंदिये । जगदीपक जिनराज । वस्तुभाव सब जाणिये । जिनआगमथी आज ॥ १ ॥ स्यादवादथीसंप जे । सकलवस्तुविख्यात । सप्तभंगीरचनाविना । बंध न बेसे बात ॥ २ ॥ वादवदे नय जूजुवा । आपआपणेंठाम । पूरणवस्तुविचारतां । कोई न आवे काम ॥ ३ ॥ अंधप्ररूपे एकगज । ग्रहीअवयवएकेक । दृष्टिवंतलहे पूर्णगज । अवयवमिलीअनेक ॥ ४ ॥ संयुतसकलनयेकरी । जुगत जुगत सुधबोध । धन जिन सासन जगजयो । तिहां नहीं कोईविरोध ॥ ५ ॥ ढाल १ आसाउरीराग ॥ श्रीजिनसासन जगजयकारी । स्यादवाद शुद्धस्वरूपरे । नयएकांत मिथ्यात्वनिवारण । अकलअभंगअनूपरे ॥ ६ ॥ श्री० ॥ कोईकहे एकालतणोंवस । सकलजगतगतहोयरे । काले उपजे विणसेकाले । अवर न कारनकोयरे ॥ ७ ॥ श्री०॥ कालेगर्भधरे जगवनिता । काले जनमे पूतरे । कालेबोले काले चाले । कालेझाले घरसूतरे ॥ ८ ॥ श्री० ॥ काले दूधथकी

दहींथाये । काले फलपरिपाकरे ॥ विविधपदारथकालउपाये । अंतकरे बेवाकरे ॥ ए ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसे वारेचक्कि । वासुदेवबलदेवरे । काले कवलित कोईनदीसे । जसुकरतासुरसेव रे ॥ १० ॥ श्री० ॥ उत्सर्पणि अवसर्पणिआरा । ठठ जूजूय आंतरे । षट्रितुकाल विशेषविचारो । भिन्नभिन्नदिनरातरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥ काले वालविलासमनोहर ॥ यौवनकालाकेश रे । बुढापणें हुयवलिवलिदुर्बल । सक्तिनहीं लवलेसरे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ गिरुआगुणश्रीवीरजीएचाल ॥

॥ तव स्वभाववादिवदेजी । कालकिसुंकरेरंक । वस्तु स्वभावे नीपजेजी । विणसे तेमज निस्संक ॥ १३ ॥ विवेकी जुउजुउ वस्तुस्वभाव । ठतेयोग जोवनवतीजी । वांऊणी न जणेंबाल । मूंठनहीं महिलामुखेजी । करतल ऊगेनवाल ॥ १४ ॥ वि० ॥ विणस्वभाव नविसंपजेजी । किमह पदारथकोय ॥ अंबनलागे नींबमेजी । वागवसंते जोय ॥ १५ ॥ वि० ॥ मोरपींठकुणचीतरेजी । कुणकरे संध्यारंग । अंगविविध सविजीवनाजी । सुंदरनयनकुरंग ॥ १६ ॥ वि० ॥ कांटाबोर बंबूलनाजी । कुणें अणियाला कीध । रूपरंगगुण जूजूआजी । तस फलफूलप्रसिद्ध ॥ १७ ॥ वि० ॥ विसहरमस्तके नितवसेजी । मणिहरे विस ततकाल । परवतथिर चलवायरोजी । उरध अगननीझाल ॥ १८ ॥ वि० ॥ मछतुंब जलमांतरेजी । बूडे काग पाहाण । पंखजातिगयणें फिरेजी । इणपरेसहिज विनाण ॥ १९ ॥ वि० ॥ वाय सूंठथी उपसमेंजी । हरडे करे विरेच । सीजे-

नहि कणकोरडुजी । सकलस्वन्नावअनेक ॥ २० ॥ वि० ॥ देशविशेषे काठनोजी । नुयमां थाये पाखाण । संखअस्थिनो नीपजेजी । क्षेत्रस्वन्नावप्रमाण ॥ २१ ॥ वि० ॥ रवितातो शशिसीयलोजी । नव्यादिकबहुन्नाव । ठएड्व्य आप आपणाजी । नतजे कोइस्वन्नाव ॥ २२ ॥ वि० ॥

॥ ढाल ३ कपूरहुवे अतिऊजलोरे ए चाल ॥

॥ काल किसुंकरे बापडोरे । वस्तुस्वन्नावअकज्ज । जो न होइ न्नवतव्यताजी । तोकिमसीऊेकज्जरे ॥ २३ ॥ प्राणी मकरो मनजंजाल । एतो न्नावीन्नावनिहालरे ॥ प्रा० ॥ जलधितरे जंगलफिरेजी । कोडियतनकरेकोय । अण न्नावीहोवे नहींजी । न्नावीहोयते होयरे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आंबे मोर वसंतमांजी । डाले कोइ लाख । कश्या केई खांखटी जी । केईआंबा केईसाखरे ॥ २५ ॥ प्रा० ॥ वांउलजिमन्नवतव्यताजी । जिण जिण दिशेउजाय । परवसमनमाणस तणोजी । तृणजिम पूठेधायरे ॥ २६ ॥ प्रा० ॥ नियतवसे विण चिंतव्यूंजी । आवीमिले ततकाल । वरसां सोनुं चिंतव्योजी । नियमकरेविसरालरे ॥ २७ ॥ प्रा० ॥ आठमो चक्रि सुन्नूम ते जी । समुड्पड्योविकराल । ब्रह्मदत्तचक्री तणाजी । नयनहरे गोवालरे ॥ २८ ॥ प्रा० ॥ कोकूहा कोयलकरेजी । किम राखीसरेप्राण । आहेडी शरताकीयोजी । ऊपरन्नमेंसींचाणरे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ आहेडीनागेंडस्योजी । बाणलग्योसींचाण । कोकूहोऊडीगयोजी । जोउनियतपरमाणरे ॥ ३० ॥ प्रा० ॥ सस्त्रहण्यासंग्राममां जी । रानपड्यां जीवंत । मंदिरमांहें मानवीजी । राख्याही न रहंतरे ॥ ३१ ॥ प्रा० ॥

॥ ढाल ४ राग मारुणीमनोहरणी ए चाल ॥

॥ कालस्वभावनियतमतिकूडी । करमकरे तेथाय । करमें नरय तिरिय नर सुरगति । जीवभवंतरेजाय ॥ ३२ ॥ चेतन चेतज्योरे करमनबुटेकोय । करमें रामवस्या वनवासे । सीता-पामीआल । कर्मे लंकापतिरावणनुं । राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चेत० ॥ कर्मे कीडी कर्मे कुंजर । कर्मे नर गुणवंत । कर्मे रोगसोगदुखपीडित । जनमजाये विलसंत ॥ ३४ ॥ चेत०॥ कर्मेंवरसलगेरिसहेसर । उदकनपामें अन्न । कर्मे जिननें जोउ-गिमारे । खीलारोंप्याकन्न ॥ ३५ ॥ चेत० ॥ कर्मे एकसुखपाल-बेसे । सेवकसेवेपाय । एक हयगयचढ्या चतुरनर । एकआग-लजजाय ॥३६॥ चेत० ॥ उद्यममानी अंधतणीपरि । जगढींडे हाहूतो । कर्म वली तेलहे सकलफल । सुखभर सेजे सूतो ॥ ३७ ॥ चेत० ॥ उंदरएके कीधोउद्यम । करंडीयोकरकोले । मांहे घणा दिवसनो भूखो । नागरह्योडमडोले ॥ ३८ ॥ चेत० ॥ विवर करी मूषक तसुमुखमां । दीयेआपणुंदेह । मार्गलहि वन नागपधास्या, कर्ममर्मजोवोएह ॥ ३९ ॥ चेत० ॥

॥ ढाल ५ मी तोचढियोघणमाणगजे ए चाल ॥

॥ हिव उद्यमवादीभणेंए । एच्यारे असमत्थतो । सकल पदारथसाधवाए । उद्यमएकसमरत्थतो ॥ ४० ॥ उद्यमकर-तांमानवीए । स्युंनविसीझेकाजतो । रामें रयणायर तणीए । लीयो लंकाराजतो ॥ ४१ ॥ करमनियतिनें अनुसरए । जेहमां सत्व न होयतो । देवलवाघसुखपंखियाए । पिउपैसंता जोयतो ॥ ४२ ॥ विणउद्यम किम नींकलेए । तिलमाहेंथी तेलतो

उद्यमथी ऊंचीचढेए । जोवो एकेंद्रियबेलतो ॥ ४३ ॥ उद्यम-
करतां इकसमेंए । जेह न सीझे काजतो । तेफिर उद्यमथीहु-
वेए । जोनविआवेवाजतो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि कर्यांविनाए ।
नविरंधाये अन्नतो । आवी न पडे कोलीयोए । मुखमांखेपेज-
तन्नतो ॥ ४५ ॥ कर्मपूत उद्यमपिताए । उद्यमकीधा कर्म्मतो ।
उद्यमथी दूरेटलेए । जोउकर्मनोमर्मतो ॥ ४६ ॥ दृढप्रहारी
हत्या करीए । कीधापाप अनंततो । उद्यमथी षट्मासमांए ।
आपथया अरिहंततो ॥ ४७ ॥ टीपेटीपे सरवरन्नरेए । काकरे
काकरे पालतो । गिरिजेहवा गढनीपजे ए । उद्यम सक्तिनिहा-
लतो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंदुउंए । करे पाहाणमांठामतो ।
उद्यमथीविद्यान्नणेए । उद्यमजोडे दामतो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एछिंडीकिहांराखी ए देशी ॥

॥ एपांचेही वादकरंता । श्रीजिनचरणेआवे । अमीयरसे
जिनवयणसुणीनें । आणंद अंगनमावेरे ॥ ५० ॥ प्राणी ॥ सम-
कितमति मनआणो रे । नय एकांत मताणोरे । ते मिथ्या मत-
जाणोरे । आंकणी ॥ एपांचे समुदायमिल्यांविण । कोईकारज
नसीझे । अंगुलीजोगे कवलतणीपर । जेबूझे तेरीझेरे ॥ ५१ ॥
प्राणी० ॥ आग्रहआणीकोईएकनें एहमां दियेबडाई । पिणसे-
नमिल सकलरणांगण । जींते सुन्नटलडाईरे ॥ ५२ ॥ प्रा० ॥
तंतुसन्नावे पटउपजावे । कालक्रमें वणाई । न्नवितव्यता होय ते
नीपजे । नहींतो विघनघणाईरे ॥ ५३ ॥ प्राणीस० ॥ तंतु-
वाय उद्यमन्नोक्तादिक । न्नाग्य सबल सहकारी । एपांचे मिल-
सकलपदारथ । उतपत जोवोविचारीरे ॥ ५४ ॥ प्रा० ॥ निय-

तिवसें हलुकर्मथईने । निगोदथकी नीकलियो । पुण्यें मनुजभवादिकपामी । सदगुरुनें जईमिलियोरे ॥ ५५ ॥ प्रा० ॥ भवथितिनो परिपाक थयोतव । पंमितवीर्यउलसियो । भव्यस्वभावे शिवगतिगामी । शिवपुरजईनेंवसियोरे ॥ ५६ ॥ प्रा० ॥ वर्द्धमानजिन इणपरिवीनवे । सासननायकगावो । संघसकलसुखदाई जेहथी । स्यादवादरसपावो रे ॥ ५७ ॥ प्रा० ॥ (कलश) इम धर्म नायक मुगतिदायक वीरजिनवरसंथुण्यो । सयसतरसंवत वन्हिलोचन वर्षहर्षधरीघणो । श्रीविजयदेवसूरींद पटधर विजयप्रभु मुणिंदए । कीर्त्तिविजयवाचकसीसइणपरिविनयकहैआणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्रीपंचसमवायवृद्ध स्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ वैरागनी स्तवनं ॥

॥ मोक्षनगरमारुंसासरुं अविचलसदासुखवासरे । आपणाजिनवरनेभेटिये, त्यां करो लीलवीलासरे मो० ॥ १ ॥ ज्ञानदर्शनआंणे आविया । करोकरो भक्तिअपाररे ॥ शीलशिणगार पहेरो पदमणी, उठीउठी जिनसमरो साररे मो० ॥ २ ॥ विवेकसोवनटीलुं तपतपे, साचोसाचो वचनतंबोलरे ॥ संतोषकाजलनयणे भर्यां, जीवदया कुंकुमघोलरे मो० ॥ ३ ॥ समकीतवाटसोहामणी, संजमवहेलजमाल रे ॥ तपजप बलदीया जोतर्यां, भावना रासरसाल रे मो० ॥ ४ ॥ कारमो सासरोपरीहरो, चेतोचेतो चतुरसुजाणरे ॥ समयसुंदरमुनि एमभणे, त्यांछे भविनिर्वानरे, मो० ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ थांपरवारिहोजिनजी श्रीसिद्धाचलशिखरे रुपभजमले

ज्ञेटियाहो राज रु० ज० ज्ञे० श्रां० पूर्वसंचितअशुज्ञकरम सहु मेटियाहो राज० श्रां० सोरठदेशमे शोज्ञताहो राज श्रां० दोय तीरथमनुहार ज्ञव्यजन तारताहो राज० ज० श्रा० ॥ १ ॥ प्रथम शेत्रुंजयगिरिजयोहो राज श्रां० तीनज्ञुवनशिरताज आजदरशणलह्योहो राज० आ० श्रां० ॥ २ ॥ नेमिजिनेसर-राजियोहो राज० श्रां० श्यामसलूणोदीदार रेवतगिरिगाजि-योहो राज० ॥ ३ ॥ पांचकोमुनिपरिवर्याहो राज० श्रां० पुंडरीकगणधार, चैत्री शिवसुखवर्या हो राज० श्रां० ॥ ४ ॥ आदीश्वरअलवेसरुहो राज० श्रां० पूर्वनिवाणवार रायणपग-लाठव्याहो राज रा० श्रां ॥ ५ ॥ कातिपूनम दशकोमुसुंहो राज० श्रां० शिवसुखपाम्यासार, ज्ञाविडवारिखिल्लजीहो राज ज्ञा० ॥ ६ ॥ इनअनेकमुनि इहांहो राज० श्रां० सिद्धिवधुज्ञर-तार, श्रयागिरिफरशतांहो राज० श्रां० ॥ ७ ॥ पूरवपुन्यपसा-उलेहो राज श्रां० सफलफलीसहु आस, जात्राविधिसुकरीहो राज जा० श्रां० ॥ ८ ॥ रतनपुरीश्रीआवीयाहो राज० श्रां० आनंदकुंवरशुज्ञज्ञाव लाज्ञलिधोघणोहो राज० ला० श्रां० ॥९॥ चतुराचोमासो रह्याहो राज० श्रां० ज्ञगवतिसुण्यो ज्ञलेज्ञाव, उपधांनतप आदर्यो हो राज उ० श्रां० ॥ १० ॥ उछव-रंगवधामणांहो राज श्रां० वरत्याजयजयकार, सुगुरुसुपसाय-श्रीहो राज० सु० श्रां० ॥ ११ ॥ खरतरवसी ठिंपावसीहो राज श्रां० साकरउजूम हेम, प्रेम वालावसीहो राज प्रे० श्रां०॥१२॥ मोती विमलवसीआवीयाहो राज श्रां० उलकाफोल सिद्ध सिला, सिद्धवमफरसीया हो राज० सि० श्रां ॥ १३ ॥ सुज्ञज-

गणीसे सित्तरेहो राज थां० पोसदशमीसुविदीत, आनंद सुख-
पामीयाहो राज० आं थां० १४॥ नवनवचाहुं चाकरीहो राज
थां० प्रनुचरणांरीनित्त, कृपाचंद्रवीनवेहो राज० कृ० थां०
श्रीसिद्धाचलशिखरे ऋषनजलें नेटियाहो राज ॥ १५ ॥ इति
सिद्धाचलस्तवनं संपूर्णं ॥

॥ अथ वीशस्थानकतप वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

॥ श्री सिद्धाचलभेटीये ए देशी ॥

॥ वीशथांनकतपसेवीए । धरकरि सुनपरिणांम लालरे ।
तीजेनवसेव्योथको । बांधेतीर्थंकरनाम लालरे ॥ वी० ॥ १ ॥
तपरचनाअधकीकही । ज्ञाताअंगमझार लालरे । सुणजो नवि
तुमे नावसुं । चितसेंकरिएउच्चार लालरे ॥ २ ॥ सुविहितगु-
रुपासेग्रहे । वीशथांनकतप एह लालरे । निरदूषण सुनमहुरतें।
उचरीजे ससनेह लालरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २
प्रवचन नमुं ॥ सूरि ४ थिवर ५ उवज्झाय ६ । लालरे ॥ साधु
७ नाण ८ दंसण ए अरु ॥ विनय १० नमुं उलसाय लालरे ॥
वी० ॥ ४ ॥ चारित्र ११ वंन्न १२ क्रियापदे १३ ॥ तप १४
गोयम १५ जिण १६ ईस लालरे ॥ चारित्र १७ ॥ ज्ञाननें १८
श्रुत १ए नणी नमुं तीर्थ २० पद वीश लालरे ॥ वी० ॥ ५ ॥
वीशदिवशमेंएककही । पदगुणनो करमेव लालरे । अथवा दिन
वीशांलगे । वीशेपद गुणमेव लालरे ॥ वी० ॥६॥ एक उंलीषट्-
माशमें । पूरीजो नविहोय लालरे । फेरनवी करणीपके । पिछली
निष्फलजोय लालरे ॥ ७ ॥ वी० ॥ छठ अठम उपवाससुं ।
अथवा देखीशक्ति लालरे । पोसहकरआराधिये । देववांदेनि-

जन्नक्ति लालरे ॥ वी० ॥ ८ ॥ संपूरणपदसेवतां, पोसहरो नहींजोग लालरे । तोहीसातपदेसही । पोसहकरिएसंजोग लालरे ॥ वी० ॥ ए ॥ सूरि थिवर पाठक पदे । साधु चारित्र सुजांण लालरे । गौतम तीर्थ पदे सही । सातथांनक-मनमान लालरे ॥ वी० ॥ १० ॥ पदपददीठ करेसदा । दोयदो-यजापहजार लालरे ॥ पम्किमणो दोयटंकही । करिएपूजासार लालरे ॥ वी० ॥ ११ ॥ शक्तिमुजबतपकीजीए । एकउलीक-रोवीश लालरे । वीशावीशीच्यारसे । तपसंख्याएमकहीस । लालरे ॥ वी० ॥ १२ ॥ जिसदिन जोपदतपकरे । तिसके गुण चितधार लालरे । काउसग्ग परदक्षणा । मुखन्नणियेनवकार लालरे ॥ वी० ॥ १३ ॥ जिसपदकी स्तवनासुणे । कीजे जिन-पदन्नक्ति, लालरे । पूजन शुन्नमनसाचवे । दिन दिनवढती-शक्ति लालरे ॥ १४ ॥ मृतकजननऋतुकालमें । कबिधास्यो उपवास ला० सो लेखे नाहिं लेखवो । निकेवलतपजास लालरे ॥ वी० ॥ १५ ॥ सावज्जत्यागपणो करे। सोकनधारेचित्त लालरे। शीलआन्नूषणआदरे । मुखसुंबोलेसत्य लालरे ॥ वी० ॥ १६ ॥ जेठआसाढ वैशाखमें । मिगसर फागुणमाघ लालरे ॥ एषट् मास मांहिनें । व्रतग्रहिए वरुन्नाग लालरे ॥ वी० ॥ १७ ॥ तपपूरणहुवां थकां । उजमणो निरधार लालरे । कीजेशक्ति-विचारीनें । उच्छवविविधप्रकार लालरे ॥ वी० ॥ १८ ॥ वीस-वीसगिणती तणा । पुस्तकपूठाआदि लालरे । ज्ञानतणीपूजाकरे । मुंकीजे हठवाद लालरे ॥ वी० ॥ १ए ॥ फलवर्द्धिनगरनी श्रा-विका, कीधीविधि चितलाय लालरे । जनमसफलकरवा न्नणी

उंहिज मोक्षउपाय लालरे ॥ वी० ॥ २० ॥ (कलश) इम वीरजिनवरतणीआज्ञा धार चित्तमझार । सद्गुदेख आगमतणी-रचना रची तपविधिसारए । वसु नंद सिद्धि चंद्र वरसे चैत्र-माससुहंकरू । मुनिकेशरीशशि गच्छखरतर भणीस्तवनामनहरू ॥ २१ ॥ इति वीस स्थानक तप वृद्धस्तवनं ॥

॥ श्रीशांतिनाथजी भगवाननुं स्तवन ॥

सेवा शांतिजिणंदकी । कीजे अतिसारीरे । अहोकीजे सा-रीरेलो । पदपंकजपूजेसदा । जेहना नरनारीरेलो ॥ अहो० ॥ १ ॥ एकवारसुरलोकमें । मेघरथराजारीरेलो ॥ अहो० ॥ इंद्रे कीधीप्रसंसा । मोटोउपगारीरेलो ॥ अहो० ॥ २ ॥ जीणवेला सुरबोलीयो । मिथ्यामतिधारीरेलो ॥ अहो० ॥ धानतणो एकी-रूलो । मलमूत्रभंमारीरेलो ॥ अहो० ॥ ३ ॥ तीणमांहे कहो क्यांथकी । एहवी इकतारीरेलो ॥ अहो० ॥ उत्तरवैक्रीयरूपें-करी । चाल्यो तिणवारीरेलो ॥ अहो० ॥ ४ ॥ कीधादोय पंखीतणा । रूपबुद्धिविचारीरेलो ॥ अहो० ॥ ध्यानधरी बेठांतिहां । नरपतिनिरधारीरेलो ॥ अहो० ॥ ५ ॥ राख-राख करतोपड्यो । पारेवो तिण वारीरेलो ॥ अहो० ॥ राजारूडीरीतसुं । लीधो बुचकारीरेलो ॥ अहो० ॥ ६ ॥ भय-मतकररेबापडा । कोय न शके मारीरेलो ॥ अहो० ॥ पापी-पुंठे आवीयो । हुलबोहीलकारीरेलो ॥ अहो० ॥७॥ भक्षदीजे नृपमाहरो । तिमखाउं मारीरेलो ॥ अहो० ॥ भोजनआपुं तोभणी । मीठांसुखकारीरेलो ॥ अहो० ॥ ८ ॥ मांसविना खाउंनहि । नृपजात हमारीरेलो ॥ अहो० ॥ भक्षनहियोमा-

हरो । तो हत्या हमारीरेलो ॥ अहो० ॥ ए ॥ दयापिण तुज-नेहोसी । हत्या परिवारीरेलो ॥ अहो० ॥ राजा० ॥ राजाआपे तेहने । निजअंगविदारीरेलो ॥ अहो० ॥ १० ॥ तोपण ना-एयोचित्तमे । रायदुःख लीगारीरेलो ॥ अहो० ॥ तिणवेला सुर बोलीयो । सुरवाणी सारीरेलो ॥ अहो० ॥ ११ ॥ परिक्षाका रणआवीयो । हुं आशासारीरेलो ॥ अहो० ॥ इंद्रवखाएयो तोहवो । जेहवो उपगारीरेलो ॥ अहो० ॥ १२ ॥ जीवदया-प्रतिपालने । निजकाजसुधारीरेलो ॥ अहो० ॥ राजापहोतो-मंदिरे । निज पोषोपारिरेलो ॥ अहो० ॥ १३ ॥ तेरमेभवलाधी भली । दोयपदवीसारीरेलो ॥ अहो० ॥ तीर्थंकरथयासोलमा । पंचमचक्रधारीरेलो ॥ अहो० ॥ १४ ॥ शांतिजिनेसरवीनति, चित्तमें अवधारीरेलो ॥ अहो० ॥ भावसागरकहे थाय जो, संघमंगलकारीरेलो० ॥ अहो० ॥ १५ ॥ इति श्रीसांतिस्तवनं० ॥

॥ अथ पंचकल्याणकस्तवनम् ॥ १३०

॥ नमियपदकमल शुभभावसविजिनतणा, पंचकल्याण दिन-भणिसुं जिनवरतणा । कसिणकत्तितणैं परकपंचमिदिणैं, नाणसं-भवतणै खयकरमतणै ॥ १ ॥ नेमिजिणचवनसुरभवनथीबारसै, पउमपहजम्मवलिदिरकतसुतेरसै । वीरसिवमांवसैपरिकिहविउ-जलै, बाणसिरिसुविधिअरतीजबारसिमिलै ॥ २ ॥ ढाल ॥ मिगसरवदिरेसुविधि पंचमीजनमियो, सोछठैरै संयमधरसुरप-णमियो, दशमीदिनरेवीरेसंयमआदस्यौ, इग्यारसिरे पउमप्पह-सिवसिरि वस्यौ ॥ सिववस्यौ मिगरससुदिदशमी दिणरयणि अर जिनजामीयो, वलि मुगतिपिण तिणदिवसपोतो व्रतइग्यार-

सिपांमीयो । इग्यारसैं वलिमल्लिजिणने जम्मदिरकसुनाणीया, वलि मल्लिदिरकाजाण छठैअंगपोसिवखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारणरे लिखितदोषसंज्ञाविचै, कहैकोइरे अवरहेतुपिणज्ञाविचै ॥ तेपरिसवीरे गीतारथसदगुरुलहै, श्रुतकेवलीरे वचन सहुसमसद्दहे ॥ सदहै सहूयै ते प्रमाणज वलि इग्यारसि नमितणौ श्रीनाणकल्याणक चउदसि जनमसंज्ञवनों पुणौ । पूनिमेंसंज्ञवदिरकपामी दयाधरि जगजीवनी, हिवपोसवदिदसमीइग्यारस जनमदिरका पासनी ॥ ४ ॥ वारसतिथिरे चंदप्पहजिणजाइयौ, वलि तेरसिरे संजमरंग सुणाइयौ । चउदसदिनरे श्रीशीतलथयो केवली, पोससुदिरेछठ विमलनाणी वली, नाणीवलि थयो नवमिसंती अजितनाथ इग्यारसें, चउदसेंअज्ञिनंदनें केवल पूनिमैंधम्मैंवसें माहाइछठे पउम चवियो वारसैं शीतल थयौ, वलि तासुसंजमकसिणतेरसि रिसहजिणशिवपुर गयो ॥ ५ ॥ अम्मावसिरे दिवसैं नाणइग्यारमें, जिनपामीरे माहसुदें हिव अनुक्रमें ॥ सितवीजेरे अज्ञिनंदन वासुपूजनों, कल्याणकरे जनमठांण अनुक्रममनों ॥ अनुक्रमें मांनों विहू त्रीजे विमलधर्मसुजामीया, श्रीविमलदिरका चउथिअठमि अजितउत्पत्ति पामिया ॥ नवमियेंदिरकाअजितपामी वारसें अज्ञिनंदनें, श्रीधर्मनाथें सारसंयमसिरिवरितेरसिदिनें ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फागुणवदिछठें सुपासकेवलसिरिपत्तो, सत्तम वलि तसु सुगति चंद्रप्रज्ञु नाणेंजुत्तो ॥ नवमिसुविहजिनचवण रिसहइग्यारसि केवल, वारससुव्रय नाण जन्म सेयंसहनिम्मल ॥ ७ ॥ तेरसिव्रत सिज्जंसतणो चउदसवसुपुज्ज, जम्म हुउ अम्मावसें ए

तसु संजम रज्ज ॥ सुकलबीज चउथि अठमियें अर मल्लि संभव, चवणसुबारसि मल्लिमुगतिसुव्रयवयउछव ॥ ८ ॥ (ढाल फागणी) ॥ चैत्रपढमपरिकचउथि नाण चवणं पासस्स पंचमि ससि पह चवण जम्म अठमि रिसहेस ॥ वलि संजमपिणरिसहसांमिअठमिआदरियो, धवलतीज हिव कुंथुनाथनें केवलफुरियो ॥ ९ ॥ पंचमिअजित अनंत संभवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगतिनांण बलिपांम्यो सुमति ॥ त्रिसलादेवे वीरनाह तेरसनिसिजायो, पूनिमदिन श्रीपदमनाह केवलसिरिपायो ॥ १० ॥ भास ॥ हिव वैशाखवदिपरिवादिन कुंथुसिद्ध, शीतलबीजे दिनपंचमीकुंथु चरित्र ॥ छठे श्रीशीतलअवतरियो दशमैंनमिजिण सिवसिरिवरियो तेरसिजनमअनंत ॥ ११ ॥ चवदसदिरका नाण अणंतह जनम हुर्ज श्रीकुंथुजिणंदह वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेतचउथ अभिनंदनउत्तम धरमनाथचवियो वलि सत्तमि अठमिसिद्धचउथ ॥ १२ ॥ सुमतिनाथअठमिये जायो नवमेंसंयमसांमे पायो गायोधरिआणंद, दशमेंनाण वीरजिणपामी बारसिचव्यो विमलजगस्वामी तेरसिअजित जिणंद ॥ १३ ॥ (ढाल) ॥ जेठकसिण परिकछठीचवियो सेयंस अठमीसुव्रयजनमियोए ॥ नवमिमुगति संपत तेरस चवदसिसन्तिजम्म सिववयहुओए ॥ धरमनाथसिवपत्त धवलीपंचमें नवमेंवसुपुजअवतरियोए ॥ श्रीसुपासजिण जम्मबारसि तेरसिजगगुरुसंयमसिरिवर्योए ॥ १४ ॥ भास ॥ हिवै आसढवदिचउथि रिसहेसचवण सत्तमिहि सिरिविमल ॥ मुरकनवमिनमि वयगहण सेयछठैचवण ॥ वीरनो अठमिनेमिमुरक चवदसें श्रीवसु-

पुज्जजिणंद ठसय वरसाधुकरपरवस्योए ॥ वहुतरवरसलख पुरिचंपापुरें कर्महणि मुगतिरमणीवस्योए ॥ १५ ॥ (ढाल) ॥ श्रावण वदि हिव तीज मुगति सेयंसहपामिय सत्तमि चविउं-अणंत नाह अठमी नमिजामिय ॥ नवमिकुंथुजिणचवणहुउं अह निम्मलवीजै, सुमतिचवण पंचमिहनेमि जिणजम्म भणीजै ॥ १६ ॥ ठठेमुनिवरनेमि हुय अठमिसीधोपास ॥ मुनिसुव्वयपुनिम रयणिचविउं गुणमणिवास ॥ १७ ॥ भाद्रववदि सत्तमें संति ससिचवणभवक्खय अठमिचविय सुपास नवमिसुदि सुविधसिवंगय ॥ हिव आसु वदि तेरसि ए श्रीवीरजिणेसर गर्भहरण अम्मावसीए नांणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पूनिमनमिजिणवरचविय इणपरवारह मासि ॥ श्रीआवस्यकदाखवी जिणकल्याणक रासी ॥ १९ ॥ जिणचवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दिने अरिहंतभत्ते सुद्धचित्ते तपकरे जेइकमनें ॥कल्यांणनी ते कोमी पांमी अनुक्रमें सिवसुखलहे, एहेतुजांणी सुगुरुवाणी एह कल्याणक कहे ॥ २० ॥ इन पांचभरते ऐरवतकरि एकादिजिनवरतणा, दसकल्याणकहुवे इणदिन सुरकरे उत्तवघणा ॥ जिमहूआ ते तिम वलि होस्ये पंचकल्याणकसदा, श्रीपुन्यसागरकहे खरतर एह आराहोमुदा ॥ २१ ॥ इति पंचकल्याण स्तवनं ॥

॥ नेमनाथ लावणी ॥

नेमकीजान वणीभारी देखनकुं आवै नरनारी ॥ (ए आंकमी) अनंता घोमा रथहाथी । मनखकीगिणती नही आती ॥ ऊंठपर धजा जो फरराती, धमकसेंफरती परराती (दोहा-)

समुद्रविजयकालाफ्ला, नेमजनोंका नाम ॥ राजुलदेकुं आया-परणवा, उग्रसेनघरगाम ॥ प्रसनन्नइ नगरीसबसारी ॥ नेमकी० ॥ १ ॥ कसुंबलवागाअतिन्नारी, काने कुंफलछवि है-न्यारी ॥ किलंगीतुररा सुखकारी मालगले मोतियनकीफारी ॥ (डुहा-) कानेकुंफलफगमगे, शीशमुगटफलकार ॥ कोमीन्ना-नुकी करुउंपमा, शोन्ना अधिक अपार ॥ वाजरह्या वाजाटंक सारी ॥ नेमकी० ॥ २ ॥ छूटरही उनकी छरराइ, व्याहमेंआ-येवरफेन्नाई ॥ फरोखे राजुलदे आई जानकुं देखी सुखपाइ ॥ (डुहा-साखी) ॥ उग्रसेनजीदेखके, मनमेंकरेविचार ॥ बहोत जीवकरिएकठा वाफोन्नरयोअपार ॥ करीसबन्नोजनकीत्यारी ॥ नेमकी० ॥ ३ ॥ नेमजीतोरणपरआये, पशुजीव सबहीकुरलाये ॥ नेमजी वचनफुरमाये, पशुजीव काहेकुंलाये ॥ (डुहा-साखी) याकोभोजनहोयसी जानवासतेएह ॥ एहवचनसुणी नेमजी, थरथरकांपेदेह ॥ न्नावसें चढगयेगिरनारि ॥ नेमकी० ॥ ४ ॥ पीछेसें राजुलदेआइ, हाथ जब पकड्यो छिन मांही ॥ कहांतुं जावै मेरीजाई उंरवरहेरुं मुकताइ ॥ (डुहा-साखी) मेरेतो वरएकही, होगयानेमकुमार ॥ उंर त्रुवनमें वरनही, कोटीकरो विचार ॥ दीक्षाजदराजुलने धारि ॥ नेमकी० ॥ ५ ॥ सहेल्यां सबहीसमफावे, हियै राजुलके नहिआवै ॥ जगतसब झूठोदरसावै, मेरेमन नेमकुमर न्नावे ॥ (डुहा-साखी) ॥ तोफयाकांकणदोरफा, तोड्यानवसरहार ॥ काजलटीकी पान-सुपारी, त्याग्यो सबसिणगार साहेल्यां सबविलखाणी ॥ नेमकी० ॥ ६ ॥ तज्यासब शोले सिणगारा । आन्नूषणरतज-

ळितसारा ॥ लगे मोहे सबहीसुख वारा छोमकरचालिनिरधारा ॥ (दुहा-साखी) ॥ मात पितापरिवारकुं तजतां न लागी-वार ॥ वियोगकर चली आपसुं जायचढिगिरनार ॥ तुरति-छोमि माप्यारी ॥ नेमकी० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुवनकिआइ-त्यागजबकीनो छिनमांहि ॥ नेमिजिन गिरनारेजाइ, पशुवनके-वंधनछुरूवाइ ॥ (दुहा-साखी) ॥ नेमराजुल गिरनारपें, लीनोसंजम दान, ॥ नवलरामकरिलावणी उपज्योकेवलग्यान ॥ जिनोकी किरियाबुधसारी ॥ नेमकी० ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पारणामहावीरस्वामीका ॥

॥ दोहा ॥ श्रीअरिहंतअनंतगुण । अतिसयपूरणगात्र ॥ मुनिजे ज्ञानीसंजमी । ते कहिये उत्तमपात्र ॥ १ ॥ पात्र तणी अनुमोदना । करतोजीरणसेठ । श्रावक अच्युयगतिलेह । नवग्रेवेकाहेठ ॥ २ ॥ दसचउमासी वीरजी, विचरतसंजम। वास ॥ वेशालापुर आविया, इग्यारमीचउमास ॥ ३ ॥ (ढाल) ॥ एकघर घोमाहाथियाजी (देशी) चोमासीइग्यारमीजी, विचरतसाहस धीर ॥ वेसालापुरबाहिरेजी आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगत गुरुत्रिशलानंदनजी नलेमें नेव्यां श्रीजिनराय ॥ सखीरीचोक पूरावोआय, मेरेभाग्यअनोपममाय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो छे देहरोजी, तिहां प्रभुकाउसग्गलीध ॥ पच्चख्खाणचो-मासनो जी, स्वामीएतपकीध ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीरणसेठतिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिणउंलख्याजी, जाणेश्री जिनधर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आजअछे उपवासीयाजी, स्वामी श्री-वर्द्धमान ॥ कालेसही प्रभुजीमस्येजी, सेहथदेस्युंदान ॥ ज० ॥

॥ ५ ॥ सदासेठइमचिंतवेजी होसीसफलमुऊ आस ॥ पङमासगिणतांथकांजी, पूरीथइचोमास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्रीआहारनीजी, जीरणकीध तइयार ॥ प्रजुनो मारगदेखतोजी, बेठो घरनेबार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घरआवेछे पाहुणोजी, निहुत्यो एकणवार ॥ प्रजुजी कां न पधारसीजी, में निहुत्यावारंवार ॥ ८ ॥ पीछे करस्युं पारणोजी, हुं प्रजूने पमिलाज ॥ होय मनोरथ एहवोजी, तोयविनवरसे आज ॥ ज० ॥ ए ॥ अवसरजव्यागोचरीजी, श्रीसिद्धारथपूत ॥ वेसालापुरआवतांजी, पूरणघरेपहुत्त ॥ १० ॥ मिथ्यात्वीजाणेनहीजी, जंगमतीरथएह ॥ चेटीप्रते इम कहेजी कांइकभिक्षादेह ॥ ज० ॥११॥ चाटूजरनेबाकलाजी, प्रजुने आंणीदीध ॥ नीरागी तेहीलियाजी, तिहांप्रजू पारणोकीध ॥ ज० ॥१२॥ देववजावे उुदुंजिजी, जैबोले करजोमि ॥ हेमवृष्टिहुइ तिहांजी, साढीबारेकोमि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहोसेठतुमे स्युंदियोजी, कियोपारणोवीर ॥ लोकांप्रते इमकहेजी, में वहिराइखीर ॥ १४ ॥ राजादिक सहुइमकहेजी, धनधन पूरणसेठ ॥ उंचीकरणी तेंकरी जी, अवरसहू तुऊहेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठसुणे तबेजी, वाजित्रउुदुंजिनाद ॥ अन्यत्रकियो प्रजूपारणोजी, मनमें थयोविषवाद ॥ १६ ॥ हूंजगमें अजागि योजी, मेरे न आयासाम ॥ कल्पवृक्षकिमपांमीयेजी, मारुमंरुलगांम ॥ ज० ॥१७॥ जेता मनोरथमें कियाजी, तेता रह्या मन मांहि ॥ निरधन जिमजिमचिंतवेजी तिमतिम निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वामीतिहांकियो पारणोजी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आयापाससंतानियाजी, तिहां मुनीकेवल धार ॥ ज०

॥ १ए ॥ वेशालापुरराजियोजी, लोकास्युं आणंद ॥ रायप्रश्न-पूछेइस्योजी, सुगुरुचरणअरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरेनगरमे को-अछेजी, जीवपुन्यजसवंत ॥ कहे केवली आजतोजी, जीरण-सेठमहंत ॥ ज० ॥ २१ ॥ राय कहेकिणकारणेजी, जीरणसेठ-महंत ॥ दांनदियो जिन वीरनेजी, पूरणसेठमहंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ रायप्रतेकहे केवलीजी, पूरणदीनो दान ॥ हेमवृष्टि-फल तेहनेजी, अवर न कोइप्रमाण ॥ ज०॥२३॥ देवलोकतिणवा-रमेंजी, जीरणघाल्योबंध ॥ विनादानदियां लह्योजी, उत्तम फल संबंध ॥ ज० ॥ २४ ॥ घडीएकसुरडुंडुभिजी, जो न सु-णंतो कान ॥ लहितोजीरण तोसहीजी केवलअविचलठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥ राजाजीरणनेदियोजी, अधिकमानसनमान ॥ मुहनगरमेथापियोजी, जोवोपुन्यप्रमांण ॥ ज० ॥ २६ ॥ दांन-दियो सुपात्रनेजी, तेनिष्फलनविजाय ॥ पात्रदानअनुंमोदता-जी, जीरणजिम फलथाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इमजांणीअनुमो-दनाजी, दानसुपात्ररसाल ॥ दांनदेवे सुपात्रनेजी, तेहनेनमे-मुनीमाल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीरप्रजुपारणोसंपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजीनो वृद्धस्तवनं लि० ॥

मारीवीनतमी अवधारो साहिवसीमंधरमाहाराज । त्रिभुवन साहिव अरजसुणीजो अरजसुणीजो महिरकरीजो दरसणदी-जोराज मारिवी० ॥ १ ॥ आपवस्या महाविदेह खेतरमे । हुंइ-णभरत मझार । ओमेलोकिमहोवे साहिव । एहीसवल विचार मा० वी० ॥ २ ॥ भरत विचाले परवत आझो । नामें वैताढ्य-सार । पचीशजोजनको उंचोछेप्रभु । पचाशजोजन विस्तार

मा० वी० ॥ ३ ॥ गंगासिंधुदोनुंनदीयां । आषीछे किरतार । सहसअठावीसवीजी नदीयां । एवेकं नो विस्तार मा०वी०॥४॥ इणी आगलपरवत आष्यो । नानोहिमवंत नाम । एकसहस-वलिबावन जोजन बारकला अभिराम मा० वी० ॥५॥ खेत-रहेमवंतवलि प्रभुआष्यो । जुगल्यांकेरोवास । इकवीससैवलि-पांच योजन । पांचकलासुविलास मा० वी० ॥ ६॥ रोहितारो-हितांसानाम । नदियाछे असराल । छप्पन्नसहसवलिबीजीन-दियां । आवुंकेम दयाल मा०वी०॥७॥महाहिमवंत परवत आष्यो । मोटो अतिविसतार । च्यारसहसदोयसैदसजोजन । दसकला मनुहार मा०वी० ॥८॥ आठ सहस सतच्यारअनोपम । इकवीस-जोजनतास । एककला बलिरूपआनोपम । खेतरछे हरीवास॥९॥ मारीवीन० ॥ हरिकंतानेहरिसलीला नदीयाछे परतक्ख । बीजी-नदीयां आषीछे प्रभु । सहसबार एकलक्ख ॥ १० ॥ मारी-बीन० ॥ परबतनिषधछे वलि आष्यो । जोयणबलिविसतार । सोलसहस सतआठबयांलीस । दोयकलामनुहार ॥ ११ ॥ मारीवीन० ॥ खेतरछे वलि जुगल्यांकेरो । देवकुरु इणनाम । ते पिण जोयणबहुविस्तारे । पोलोछे सुणोस्वाम ॥ १२ ॥ मारी-वीन० ॥ सीतानामे नदीवडेरी । सबनदीयांसीरदार । पांच-लाख बलि बीजीनदीयां । अने बत्तीसहजार ॥ १३ ॥ मारी० ॥ लाखजोजनको मेरूपरबत । नाम सुदरसणसार । गजदंता बलि च्यारवीचमे । आऊं केम कृपाल ॥ १४ ॥ मारी० ॥ वनगिरीने परवतबहुला । नदीयां ओघटघाट । किण विधि आवुंसुगुणासाहिब । मारग विषमीवाट ॥ १५ ॥ मारी० ॥ कं-

चन गिरी वखारापरवत, गजदंतागिरिराय । भद्रसालवन मारग विचसे । लागेकेमउपाय ॥ १६ ॥ मारी० क्यांमुज देश छै भरतखेतर । क्यां पुखलावतीजिनराज । ओमेलोकिम होसीसाहिब । तारणतरणजिहाज ॥ १७ ॥ मारी० ॥ निसदिनमारे तुंही आलंबन । वसीयोहृदयमझार । भवदुख भंजन तुंहीनिरंजण । करुणाकलाभंडार ॥ १८ ॥ मारी० ॥ मनवंछित सुखसंपतिदाता, प्रभु शाहेवछो खास । मुजने सेवक साचो जाणी, पुरोमननीआस मा०वी ॥१९॥ खरतर हरखगुरुसुपसाये। रूपचंद गुणगाय। अगरचंदको श्रीजिनवरजी। तारो दीन दयालाय॥२०॥ मारी० ॥ संवत् अढारसे इकवीसे । पोसवदी सुभ मास । वीज भइ बुधवार अनोपम, जिनपदवंदनभास ॥ २१ ॥ मारी वीन० ॥ इति श्रीसीमंधरस्वामीवृद्धस्तवनं संपूर्णम्

॥ अथ श्रीनवपदजीकी लावणी लिख्यते ॥

जगतमें नवपदजयकारी । पूजतां रोगटलेभारी । प्रथमपदतीरथपतिराजे । दोषअष्टादशकूंत्याजे । आठप्रातिहारजछाजे । जगतप्रभु गुणवारेसाजै ॥ दोहा ॥ साखी ॥ अष्टकरमदलजीतके । सकलसिद्धते थाय । सिद्धअनंता भजो वीजेपद, एकसमयशिवजाय । प्रगटभयो निजस्वरूपभारी ॥ जग० ॥ १ ॥ सूरिपदमें गौतमकेशी । उपमा चंद्रसूरजजेशी ॥ उधार्यो राजापरदेशी । एकभवमांहे शिवलेशी ॥ दोहा ॥ साखी ॥ चोथेपदपाठकनमूं । श्रुतधारीउवझाय सर्वसाधुपंचमपदे । धनधन्नोमुनिराय । वखाणयोवीरजिणंदभारी ॥ जग० ॥ २ ॥ द्रव्यषट्की श्रद्धाआवे । समसंवेगादिकपावे । विनायहग्यानमही

किरिया । जैनदरशनसें सबतिरिया ॥ दोहा ॥ साखी ॥ ज्ञानपदारथसातमें । पदमें आतमराम । रमतारम्यअध्यातमें । निजपदसाधेकाम । देखतावस्तुजगतसारी ॥ जग० ॥ ३ ॥ जोगकीमहिमाबहुजाणी । चक्रधरभोगी सबराणी । यतिदशधरमकरी सोहे । मुनि श्रावक सब मनमोहे ॥ दुहा ॥ साखी ॥ करमनिकाचितकापवा । तपकुठारकरध्याय । क्षमायुतनवमापदधरे । कर्ममूलकटजाय । भजोतुम नवपदसुखकारी ॥ जग० ॥ ४ ॥ श्रीसिद्धचक्रभजोभाई । आचामलतपविधिसेंथाई । पापत्रिहुंजोगेपरिहरजो । भावश्रीपालपरे करजो ॥ दुहा ॥ साखी ॥ संवतउगणीस सतरसमें । जेपुर श्रीजिनपास । चैत्रधवलपूनिमदिने । सफलफली मुझआस । बालकहे नवपदभविप्यारी ॥ जग० ॥ ५ ॥ इतिश्रीनवपदजीनी लावणी संपूर्णा ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीकी चतुरमासक लावणी लिख्यते ॥

॥ छाईघटागगनमेंकारि राजुलकुं विरहदुःखभारी ॥ छा० ॥ चौमासालग्या रसभीना । अलि अषाढरंगमहीना । च्यारुंतरफसें वाद्दलपीना । बिजलिने चमकणाकीना । दिल होत धरूकतासीना । मैं अबलासखीपतिहीना । उमावनी ॥ सररररर चलतसमीर । थररररर करतसरीर । मररररर मरतसमीर । अलि केसीकरुं तदबीर बुरीतकदीर । पीया विनप्यारी ॥ राजलकूं० ॥ १ ॥ श्रावणमें श्यामघनघोर । भरजोरबोलते मोर । दादुरमिल करतेदोर, पिउपिउ पपइयासोर । झरलग्यो बूंदझमझोर । बिचचमके दामनी कोर ॥ उमावनी ॥ खररर रर खघनमाला । तरररर जलपरनाला । अररररर

नालाखाला । में दुखीहुइ वेहाल हीयेमेंसालहुइजलधारी ॥ राजु० ॥ २ ॥ ज्ञादवमें पवन प्राचीना । वादलमें धनुपरंगीना । जंगलमें नदीस्वरझीणा । ज्युं वाजे मनोहरवीणा । अब एसें कहो क्याजीना । प्रीतमनें मुझे दुखदीना ॥ छमावनी ॥ युं-विलपतमुखमुरझाई । सखियनमिल दौरूजगाई । यूंविलखतव-चनसुनाई । सखि देखो पीयाकीरीत । तोरूकेप्रीत । गयेगिर-नारी ॥ राजुं० ॥ ३ ॥ आश्विनमेंजरानहींधीर । यदुचंदज्ञये वेपीर । उठचली नेमकेतीर । काटनकूं कर्मजंजीर । प्रीतमसें लियो अकसीर, व्रतसंजमसमकितहीर ॥ छमावनी ॥ शिवरा-जुल नेमसिधाए । इंद्रादिकजसगुणगाये । ज्ञविजनमिल शीश नमाए । मुनिकहे कपूराचंद । प्रेमसेंछंद । जाउंवलिहारि ॥ राजुल० ॥ ४ ॥ इति श्रीनेमनाथजीकी लावणी संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीकेसरियानाथजीकी महातम लावणी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ आदिकरण आदिमजगत । आदिजिनंद जिन-राज । धूलेवानाथजाचोधणी । वरणुं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ चाल लावणी ॥ कास्यपगोत्रइक्ष्वाकुवंशमें मरुदेवाजननी जायो,नाज्नि-नरेसरवंशउजालन । आदिधर्म जस प्रगटायो ॥ २ ॥ चौसठ-सुरपति देवदेवीमिल । मंदिरगिरपे न्हवरायो । इसोरिषज्न निधि प्रगटकल्पतरु । सुरनरमुनिजननितध्यायो ॥ ३ ॥ मेवाड-देशमेंनगरधुलेवे । जास दलामाधुरताहे । जाकीमहिमा अपरं-पारा । कविजनकीरत करताहे ॥ ४ ॥ आदौ मूरत कालअसं-ख्यकी । पूजीसुरगण असुरिंदा । सुरपति नरपति वंदितपदयुग । वलि पूजतसूरज चंदा ॥ ५ ॥ लाखइग्यार हजारपंचासी । वर-

सपांचसें पचासा। इतनेवरसपर लंकागढमें । पूजितरावण गुण-
रासा ॥ ६ ॥ रामचंद्र शीता अरुलछमन । ए मूरतपूजनलाए ।
नयरी अयोध्या जाते अधविच । नयरउजेणीठहराए ॥ ७ ॥
प्रजापालनरपतिकी तनया । सुंदरिमयणा धरमनकी । पापक-
रम अरु आपकरमकी । जईलमाईमरमनकी ॥ ८ ॥ आपक
रमके ऊपरनृपनें, कुष्टीवरपें परणाई ॥ मयणाचिंतेकांइ
नवाई । करमलिखीसो वनआई ॥ ए ॥ इकदिन जिनपूजन
गुरुवंदन । आई श्रीजिनमंदिरपें । वंदनपूजनकरके इकचित ।
ध्यानधरे मन कंदरपे ॥ १० ॥ मोतीदाम छंद ॥ तूंहि अरि-
हंत तूंहि जगवंत । तूंहि जिनराज तूंहि जगसंत । तूंहि जग-
नाथ तूंहि प्रतिपाल । तूंहि मनमोहन तूंही दयाल ॥ ११ ॥
तूंहि जवजंजन जावसरूप । तूंहि अरिगंजन रंजनजूप, तूंहि
अविनासी तूंहि वीतराग । तूंहि माहाराज तूंहि वरुजाग॥१२॥
तूंहि गुणधाम तूंहि विसराम । तूंहि नवनिद्ध तूंहि वमुनाम
तूंही अघनाश तूंहि अविनाश। तूंही मतिवंत तूंही मतिवास॥
॥ १३ ॥ तूंही गुणकेवलरूपअनंत । तूंही जगतरणतारण संत ।
तूंही जगध्येय तूंही जगध्यान । तूंही चिदरूप, तूंही जगवान
॥ १४ ॥ तूंही ममतात तूंही ममभात तूंही मम भ्रात तूंही
ममगात ॥ तूंही सरणागतराखणहार । तूंही डुख दोहगटाल-
णहार ॥ १५ ॥ चाल लावणी ॥ करूं अरजएक तोपें जिनप-
ति । कंतकुष्टसें नहीमरते । पूरबकरमके लिखित लेखजे । कि-
सकेटारेनहींटरते ॥ १६ ॥ पणतुफसासन जगतहेलना । जगत-
ढंढेरावाजतहे । आपकर्म अरु जैन धर्मके । फलपाई यों

छाजतहे ॥ १७ ॥ योदुख मोसें सह्यो जातनाही । आदिनाथ जगरखपाला करुणाकरके रोग निवारण । गुणकीजे जगप्रतिपाला ॥ १८ ॥ यक्षप्रसन्न हुय फलबीजोरो । हाथतणो फल तबदीनो । मयणा तब भक्षासन्नई । मनचिंते सबकारजसीनो ॥ १९ ॥ नौदिन नमणनीर तनुफरसें ॥ कुष्टरोगसबनासतहे, कामदेव अरु अमरसमोवरू । नृपश्रीपालसोहावतहे ॥ २० ॥ या कीरत प्रभु तिहारीभूतल । प्रगटप्रबलहे जसतेरो । आसुचैत्र मासमें महिमा । देशदेशमेंप्रभुतेरो ॥ २१ ॥ फिरवागरू देशवरूोदनगरमें । जगपर प्रभुकरुणाकीनी । कितनेवरस लगमहिमेंमहिमा । अविचलभूतलऋद्धिदीनी ॥ २२ ॥ दिल्लीपर तुरकान भयोतब । पातस्याह लरूवाआयो । छूत भूतपत्थरकीमूरत जरूमुलांसेंजखरायो ॥ २३ ॥ बहुत दिनांलग कीविलफाइ । शाकोयों वाचावोले । देवहिंदको वरूोजागतो । यूं बोलतफिरफिररूोले ॥ २४ ॥ सुनोवात काजी मुल्लां तुम । एकवातसेंत्रासेगा । गौब्राह्मणप्रतिपाल कहाई । गोवधसें ये नासेगा ॥ २५ ॥ गोवध करण लगे जवनिजरे । देखसके क्यो प्रतिपाला । करणयुद्धजबभये महाबल । शस्त्र झमोझरूविकराला ॥ २६ ॥ दुहो ॥ महायुद्ध करणे लगे । घाव चौरासीअंग । करी मलोखा गारूली । आये धूलेवसुरंग ॥ २७ ॥ चाल लावणी ॥ गांवधूलेवा वंशजालमें । गुप्तरहे हें प्रभुधरती गायएककोई वनियनकी । आइ वाहां चरती चरती, स्रवें तिहा पयधारा शिरपर सांझ समे फिर नहि दुजे ॥ रीसकरी तब गोपालन पर । गोपाल थरहर धूजै । दूजे दिन गौवारे

आयो । लह्यो भेद कह्यो वनियनपें । शेठ आय जब नजरे देख्यो । चकित भयो हे तन मनपें ॥ २८ ॥ मध्यरातमे सुपनोदीनो । ऋषभनाथकी मूरतहे । बहिरनिकासो करोलापसी । भीतर मूरतपूरतहे ॥ २९ ॥ नवदिनमें सबघावमिलासी । मतकाढे तूं नवदिनमें । कियो शेठने हुकमप्रमाणे । आये संघबहुठदिनमें ॥ ३० ॥ केइउपवासी केइव्रतधारी केइअलुआणे पांवचले । केइ लोककूं दुक्करबाधा । कब प्रभुकोदरशनमिले ॥ ३१ ॥ यू सब लोकां दरसतरसकी । कहे लोकमूरति काढो । लाओ लाओ महाराजकीमूरत । संघसबे लीनोआरो ॥ ३२ ॥ जवर दस्तसें दिवससातमें । लापसीबाहिर तबकीने । अंसअंस भर व्रणरहाए । संघ लोकदर्शनदीने ॥ ३३ ॥ फिर सुपनेमें भव्यदिखायो । संघे मिलदेवलकीनो । मध्येविराजे ऋषभतखतपर । कलियुगमें यो जसलीनो ॥ ३४ ॥ दुहा ॥ संवतअढारेतेसठे । भाउ सदाशिवराय । कियोधगानो दुष्टने, भाखूंवरणवनाय ॥ ३५ ॥ मोतीदाम छंद ॥ सदा शिवराय चिंतेमनएह, लूंटे बहुधाम जमीपरजेह । भिलांपति नाथ धूलेवकहाय, लखोलगद्रव्य भंमारसुणाय ॥ ३६ ॥ जावांअबलूंटण गामधूलेव । ग्रहुंसबमाल जईततखेव । आया निजफोजलेई दलगाज तोपांदोयसाथ लियां बहुसाज ॥ ३७ ॥ तंबुदोयलार लियेफिरंगाण । ऊंटाभर साथ लियाकोकवाण ॥ तवां बहुलोककहेमहाराज । नही इहकारण कृत्यअकाज ॥ ३८ ॥ एतो वह जाजलदेव कहाय । रहेनहींलाज तिहारियकाय । तवांफिरबोले सदाशिवभूप । ग्रहांसवमाल अबां चढीचूप ॥ ३९ ॥ इसोकहिआ-

वत दुष्टकरूर । कीयो नजराणहनाथ हजूर । राख्यो नही नाथ तवेनजराण । भयोमन चक्कितमानगिलाण ॥ ४० ॥ तवां मनाचिंतभंडारीबुलाय । मीठेवचनवोलसवेललचाय । लईसंगआयमुकाममझार । कियो तव कूचलइसवलार ॥ ४१ ॥ करे तव गामपुकारपुकार । भंडारीसवेइपुकार पुकार । करो अब-बाहर नाथदयाल । गयोकिहांआज गरीब निवाज । चढोअ-बबाहर राखणलाज ॥ ४२ ॥ दुहा ॥ उण समें कोउसेठको, वाहणतारणकाज । गये अधिष्टायक नाथजी । भेरुंगये वहां-गाज ॥ ४३ ॥ सुणोअरजपृथ्वीनाथजी, सहेरधूलेवमझार । कियोअकारजदुष्टने । शीघ्र चले जनतार ॥ ४४ ॥ आये तु-रत महाराजजी । करवाजनसंभाल । दो घोडे दोउंचढे । भेरुं-अरुप्रतिपाल ॥ ४५ ॥ निज्जकोप आपेकियो । दशदिशि फौज-हजार । मारमारचोतरफते । भई लराईत्यार ॥ ४६ ॥ भुजंग-प्रयातछंद कूकूकुकूकुकू वहे कोकवाणं, सणणणं सणणणं तीरतर-कस्स वाणं । धुंवाके धडाके वहे नालगोला । जिसा कर्कसाजम्मरा नयनझोला ॥ ४७ ॥ किते अंगपें शस्त्रराघावलागे । कितेमा-रतेंकंपते दूरभागे, किते दंतपेंतिरणलेवेवराका । कितें थरथरे-त्रास होवेतिराका ॥ ४८ ॥ किते रसुल्लाइलल्लापुकारे । किते दीन होकेखुदापेंसंभारे । कितें नाथपेंकेसरा खूनमाणे । किते नाथकूं जागतीज्योतजाणे ॥ ४९ ॥ सदाशिवनें घावलागो अटारो । पुनी भाउजसवंत दोनुंसंहारो । वडोकोपजाणी सबे फोज भाजी । हुई केशरीयानाथकीजीतवाजी ॥ ५० ॥ सदा-शिवनें आंखडी अटकलीनो । सवापांचसें, रुकमरोखून दीनो ।

इसोधूलेवरोमर्द्दगाजी । सदा केशरानाथरीजीतवाजी ॥ ५१ ॥
कुहा ॥ याविधकलियुगजगजणा । ताथ्याकेइ जिनराज । दीप
विजयकविराजकूं । महेरकरोमहाराज ॥ ५२ ॥ मोतीदाम छंद
॥ तूंही नवनिध्ध तूंही अमृसिध्ध तूंही मनवंछित वंछितऋध्ध॥ तूंही
सिरदार तूंही किरतार । तूंही सरणागत दीनदयाल ॥ ५३ ॥
तूंही कामकुंभ तूंही कामधेनु । तूंही सुरवृक्ष तूंही ममसेन ।
तूंही दक्षणावर्त्तदायक देव । तूंही विसराम तूंही वरुसेव
॥५४॥ तूंही ममप्राण आधारजरूर । तूंही ममइछितदायकनूर ।
तूंही ममरूप तूंही पतसाह तूंही मम ऋध्धभंडारअ-
गाह ॥ ५५ ॥ तूंही ममंत्र तूंही ममयंत्र तूंही ममसत्य तूंही
ममतंत्र । तूंही गछनायक तूंही श्रीपूज्य । तूंही ममपूज्य तूंही
जगपूज्य ॥ ५६ ॥ चाल लावणी ॥ नाथधूलेवाकीरतसुणके ।
देशदेशनृप आवतहे । केशरमें गरकाबरहतेहे । केशरनाथकहा-
वतहे ॥ ५७ ॥ सहर परगणे देशदिशावर । फिरेकुहाई नाथ-
नकी हिंदुमूसलवरुराणाहाजर । पूरेइछितसबमनकी ॥ ५८ ॥
जलवटथलवटवाटघाटमें । रणरावलदुखदूरहरे । इक चित-
ध्याने जे नितसमरे । अखयखजानाभंडरभरे ॥ ५९ ॥ धिधि-
मप धिधिमप धपमप धपमप । तालपखावतराजत हे । गरुग-
रुगरु दौंगरुगरुदौंगरु धोंधों नोवत वाजतहे ॥ ६० ॥ हिंदूप-
तिपतसाहकदेपुर । भीमसिंहकेराजनमें एहलावणी खूबवणाई ।
सकलसंघकेसागनमें ॥ ६१ ॥ संवत अढारपच्चोत्तरवरषै । फा-
गुणसुदितेरशदिवसै । मंगलकेदिन दीपविजयकूं दरशन परशन
दोजलसे ॥ ६२ ॥ कलश ॥ छप्पय छंद ॥ समवशरण जगश-

रन । तीनलोक कलिमलहरन । धुनि वरसत जलधरन । नर-
णपौषपावन करन ॥ जुगलधर्मनीतिहरन । सब करमऊंघघन-
जरन । मोहमल्ल अरिदरन । सुकनुवरन शुद्धचरन । इंद्रचंद्र पद
जुगलसेवन । जगतविरुद तारनतरन । दीपविजयकविराजवाहा-
दुर । ऋषभनाथअसरनशरन ॥ ६३ ॥ रिषभनाथ महाराज सबे
दुखदालिद्रभंजन । रिषभनाथमहाराज । सबे भूपमनरंजन ।
रिषभनाथपृथ्वीनाथ । मंगलनामगवाये॥ दीप विजयकविराजवा-
हदुर ॥ खलकमुलकहाजरहे ॥ कलिजुगजयो देवतुं । सुरनर-
सब कीरतकहे ॥ ६४ ॥ इति श्री केसरयाजीकी लावणी संपूर्ण ॥

॥ अथ वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथजीकी लावणी लिख्यते ॥

अगरुडु अगरुडु वाजे चोघमा । सवाइफकासाहेवका ॥
ठननं ठननं अवाजहोता । महेलवनायागगनोका ॥ कल्याण
पार्श्वनाथनामका । नितनितवाजेचोघमा ॥ तीनलोकमें सच्चा-
साहिब । पार्श्वनाथअवतारवमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा-
जनमहे । मातावामाकेनंदा ॥ अश्वसेनकेकुलमें शोभे । जेसा
सरदपूनमचंदा ॥ स्वर्गलोकमेंहुवाआनंदा । इंद्राणीमंगलगावे ।
तेत्रीसकोमदेवतामिलकर । ओछव करणेकुं आवे ॥ २ ॥ कोइ-
आवता कोइगावता । कोइनाम लेतादेवा ॥ चोसठइंद्र अरज-
करंता । चंद्रसूरजकरता सेवा । केइसुरनर साहेवके आगे ।
अरजकरंता खमाखमा ॥ जिनकेसरूपको पारनपावे । जिनका-
गुणहे सबसेंबमा ॥ ३ ॥ दूरदेससें आयाजोगी । वमेजोरतप-
स्याकरता । नीचेलगाता ज्वालाजोगी । वमेवमे ऊोकेखाता ।

बारे वरसकी उमरप्रभुकी । छोटेपनमें बहोतकला ॥ बरोबरीकें लियेसोबती । तपशीकूं देखणचला ॥ ४ ॥ ज्ञानदेखकेबोले जोगीसें । एसी तपस्याकूं करता, ओ जोगी तेरेवमेलकमेमें बमा नागइक अधजलता ॥ पारसनाथजोगीसुं कहता । तोबी-जोगीनहिंसुणता । लकमेदिये फेंकजंगलमें लोकतमासादेखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगीतुमने । बमानागकूंजला दिया । दियासार नवकारनागकूं । धरणीधरपदवीपाया । वमीउमेदसें आयासाहिब । संवत्सरीका दानदिया । मातपिताकीआज्ञा-लेकर । महाराजनेजोगलिया ॥६॥ राज छोमके चलेजंगलमें । जुगतीसें काउसग्गकिया । वमेधीर गंभीरप्रभूनें । तीन लोकमें नामकिया । उष्णकालकीवमी धूपमें नीरंजननिराकाराखमा । कमठासुरने कियाकमाका । नभमेंमलवादलचमा ॥ ७ ॥ उसी दिनको कमठासुरने । पिछलादावाजगवाया । मेघमालीकी सेनालेकर । जलकूं जलदीबुलवाया । वमाकिया घनघोरजोरसें । पवनचलाया मतवाला । कममकमम कर हुआकमाका । चमक बीजका उजवाला ॥ ८ ॥ मूसलधारा मेघवरसता । गगनगा-जता चौताला । सातखूंटकी वमीऊमीमें । प्रभु खमा हे मत-वाला ॥ नाकबरोबरआयापाणी । नाथनिरंजनधीरवमा । पराजय नहिं होय जिनूंका । एसाप्रभुका ध्यानचढा ॥ ए ॥ संकटसें सिंहासणमोला । हुवा घंटकाआवाजा । अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाउ धाउ धरणीराजा ॥ धरणीधरजलदीसेंआया । पदमावतीकूं संगलिया । पदमावतीने लियेशीसपर । शेषना-गनेछत्रकिया ॥ १० ॥ कोमउपायतो कियाकमठने । कुछबी

इछाजनहिंचलता । तरणेवालासाहिबजनकूं । ठलणेवाला
क्याकरता । जीतेश्रीजिनराजहारके कमठ हाथदोजोमखमा ॥
धरणीधरसाहिबकेआगे । अरजी करताखमाखमा ॥ ११ ॥
केवलपाय शिवपदकूंपहुंचे । पार्श्वनाथ शुभ मतवाला । लगी
ज्योतमेंज्योतिदीपकी तपे तेजकाअजुवाला ॥ वीसनगरमें
पार्श्वनाथका । देवलवनाया तेंताला ॥ वमे देवलमें इंदरसोहे ।
घंटावाजताचोताला ॥ १२ ॥ वमीजुगतसें सिंहासणकर । कोट
बनायादेवलका ॥ जगों जगोंपर शिखरचढाया । दरवाजाशुभ
केवलका । नामंमलकेआगेशोभता । मूलगुंभाराआरसका ॥
पीछे पच्चीसदेरियांसोभित । सिरेकामसिंघासणका ॥ १३ ॥ मूल
नायकके ऊपरसोहे । सहसफणा प्रभुपारसका । चौमुखकी
चतुराईवणीहै । वहूकामहै सारसका । अढारसेंपैंसठ सवाई ।
सुहुर्त्त फागण मासभला । सुदीतीजकूं तखतेवेठे । जगोजगो-
पर नामचला ॥ १४॥ देश देशके संघ वहु मिलकर । तेरेदर्श-
नकुंआया । जगतगुरु जिनराजजगतमें । वमी तेरी अकल-
माया ॥ धर्मचंदजोमतासवाईने । वमासाहमीवात्सल्यकिया ।
सकलसंघकीआज्ञालेकर । वमाशिखर निशानदीया ॥ १५ ॥
करमचंद ने देवचंद ने खेमचंद ने खुबकिया ॥ पारसनाथकूं
तखतवैठाकर । जगोजगो पर नामकिया ॥ कीर्त्तिविजयगुरुरा-
जकूंप्रणमूं । पायगुरुका राजवमा ॥ गुलावचंद साहेब केआगे ॥
जिनसासनका कामवमा ॥ १६ ॥ तेजागाता चंगरंगमें । ज्ञान-
ध्यानसेंखमाखमा हाथजोमके अरजीकरता । पारसनाथ-
जीतूंहीवमा । वमा काम तेरे है साहिब । मुखसेंनहिं कहणे

आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी । ज्विजनकुं सुखके-
दाता ॥१७॥ इति श्रीकल्याणपार्श्वनाथजीकी लावणी संपूर्ण ॥

॥ श्रीनेमिराजीमतिनो बारमासो लि० ॥

सीयालैखाटुज्रलीरे लाल एदेशी ॥ तोरणथी रथफेरीयोरे
लाल निवुर नेमकुमार । प्रेमविलूधी पदमणीरे ला० वीनवेरा
जुलनारहोरंगीला नेमसुणमाहरी अरदाश १ ॥ सहेल्यासुंरा
जुलकहेरे ला० ॥ मगसिरनाव्योपीव । प्रीतमविनहिव
माहरोरे ला० धीरजनधरे जीव हो०२॥ पोसमहीनो आविवो-
हो ला० आयोमो डुखदैण । तो सुरतने सांवला हो० ला०
देखण तरसैनेण हो० ३ ॥ माहमहीनेसीपर्फेहो ला० पीउसंग
पोढेनारी । प्रीतमविणहूं एकलीरे ला० केमरहूं निरधारी
हो० ४॥ होलीखेले हेतसुंहो ला० फागुणमें नरनार । हुं किण
सुं खेलुं हिवेहो ला० पासनहींज्ररतार हो० ५ ॥ चेतमहीने
चांदणीरे ला० संजोगण सुखदैण । विरहणने वालमविनारे
ला० रोवत जावैरेण हो०६॥ वनहरिया वैशाखमेंरे ला० मांज-
ररहीमहकाय । अरजसुणी अवलातणीहो ला० तपतमिटावो
आय हो० ७॥ जेठतपेलू आकरोहो ला० दाफे कोमल गात ।
ससनेहीसाहिवविनाहो ला० कुणपूछे मुफवात हो०८॥ आषाढे
काली घटाहो ला० ऊनमि आयोमेह । कंतमिल्या निजनार-
सुंरे ला०धरती मिलिया मेह हो०९॥ श्रावण चमके दामनीहो
ला० घनवरसै फरूलाइ । इणरुतुसूतांएकलीहो लाल । क्यूं-
कररैणविहाई ॥ हो० १० ॥ कालीकलायणमिलिहो लाल ।
ज्राजवरूे वर संत । अरजसुणीनेंसाहिवाहो लाल । पूरोमोमन-

इलाजनहिंचलता । तरणेवालासाहिबजनकूं । छलणेवाला क्याकरता । जीतेश्रीजिनराजहारके कमठ हाथदोजोमखमा ॥ धरणीधरसाहिबकेआगे । अरजी करताखमाखमा ॥ ११ ॥ केवलपाय शिवपदकूंपहुंचे । पार्श्वनाथ शुभ मतवाला । लगी ज्योतमेंज्योतिदीपकी तपे तेजकाअजुवाला ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका । देवलबनाया तेंताला ॥ वमे देवलमें इंदरसोहे । घंटावाजताचोताला ॥ १२ ॥ वमीजुगतसें सिंहासणकर । कोट बनायादेवलका ॥ जगों जगोंपर शिखरचढाया । दरवाजाशुन्न केवलका । न्नामंमलकेआगेशोन्नता । मूलगुंन्नाराआरसका ॥ पीछे पच्चीसदेरियांसोन्नित । सिरेकामासिंघासणका ॥ १३ ॥ मूल नायकके ऊपरसोहै । सहसफणा प्रन्नुपारसका । चौमुखकी चतुराईवणीहै । बहूकामहै सारसका । अढारसेंपैंसठ सवाई । मुहुर्त्त फागण मासन्नला । सुदीतीजकूं तखतेबेठे । जगोजगो-पर नामचला ॥ १४॥ देश देशके संघ बहु मिलकर । तेरेदर्श-नकुंआया । जगतगुरु जिनराजजगतमें । वमी तेरी अकल-माया ॥ धर्मचंदजोमतासवाईने । वमासाहमीवात्सल्यकिया । सकलसंघकीआज्ञालेकर । वमाशिखर निशानदीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने खेमचंद ने खुबकिया ॥ पारसनाथकूं तखतवैठाकर । जगोजगो पर नामकिया ॥ कीर्त्तिविजयगुरुरा-जकूंप्रणमूं । पायगुरुका राजवमा ॥ गुलावचंद साहेब केआगे ॥ जिनसासनका कामवमा ॥ १६ ॥ तेजागाता चंगरंगमें । ज्ञान-ध्यानसेंखमाखमा हाथजोमके अरजीकरता । पारसनाथ-जीतूंहीवमा । वमा काम तेरे है साहिब । मुखसेंनहिं कहणे

आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी । जविजनकुं सुखके-
दाता ॥१७॥ इति श्रीकल्याणपार्श्वनाथजीकी लावणी संपूर्ण ॥

॥ श्रीनेमिराजीमतिनो बारमासो लि० ॥

सीयालैखाटुजलीरे लाल एदेशी ॥ तोरणथी रथफेरीयोरे
लाल निठुर नेमकुमार । प्रेमविलूधी पदमणीरे ला० वीनचेरा
जुलनारहोरंगीला नेमसुणमाहरी अरदास १ ॥ सहेल्यासुंरा
जुलकहेरे ला० ॥ मगसिरनाव्योपीव । प्रीतमविनहिव
माहरोरे ला० धीरजनधरे जीव हो०२॥ पोसमहीनो आविवो-
हो ला० आयोमो दुखदैण । तो सुरतने सांवला हो० ला०
देखण तरसैनेण हो० ३ ॥ माहमहीनेसीपमेहो ला० पीउसंग
पोढेनारी । प्रीतमविणहूं एकलीरे ला० केमरहूं निरधारी
हो० ४॥ होलीखेले हेतसुंहो ला० फागुणमें नरनार । हुं किण
सुं खेलुं हिवेहो ला० पासनहींजरतार हो० ५ ॥ चेतमहीने
चांदणीरे ला० संजोगण सुखदैण । विरहणने वालमविनारे
ला० रोवत जावैरेण हो०६॥ वनहरिया वैशाखमेंरे ला० मांज-
ररहीमहकाय । अरजसुणी अवलालणीहो ला० तपतमिटावो
आय हो० ७ ॥ जेठतपेलू आकरोहो ला० दाझे कोमल गात ।
ससनेहीसाहिवविनाहो ला० कुणपूछे मुझवात हो०८॥ आषाढे
काली घटाहो ला० झनमि आयोमेह । कंतमिल्या निजनार-
सुंरे ला०धरती मिलिया मेह हो०९॥ श्रावण चमके दामनीहो
ला० घनवरसै झरलाइ । इणऋतुसूतांएकलीहो लाल । क्यूं-
कररैणविहाई ॥ हो० १० ॥ कालीकलायणमिलिहो लाल ।
जाद्रवझरै वर संत । अरजसुणीनेंसाहिबाहो लाल । पूरोमोमन-

खंत ॥ हो० ॥ ११ ॥ आसोजे आंसूझरेहो लाल । नाहविना निस दीस । सारनपूछीसाहिवेहो लाल । राखिरह्योमनरीस ॥ हो० ॥ १२ ॥ कातीदढगातीकरीहो लाल ॥ जायमिली गिरनार । देखीमुखनिजनाहनोहो लाल । सफलगिणे अवतार ॥ हो० ॥ १३ ॥ संयमले पिउसेंहथेहो लाल । पामेभवनोपार । इणपरपाले प्रीतमीहो लाल । धनधन ते नरनारि ॥ हो० ॥ १४ ॥ जेकीधी पशुऊपरे हो लाल । मोपरकरज्योदेव चंद-ज्ञणीद्यो करिदयाहो लाल । प्रभुचरणारीसेवहो ॥ १५ ॥ इतिश्रीनेमराजीसतीनो बारमास संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजीकी घग्घरनीसाणी लिख्यते ॥

॥ सुखसंपतिदायक सुरनरनायक । परतिख पासजिनंदा हे । जाकीछविकांति अनोपमउंपित । दीपत जाण दिणंदा हे । मुखज्योतिझिगामिग झिग मिग २ । पूरण पूनमचंदा हे । सवरूपसरूप वखाणहिभूपत । तूंही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर लोकसवेमिल । जाकाजससथुणंदाहे । तेरी खिजमत्तकरे इकचित्तसुं तो सेवकधरणिंदाहे । तेंजलता आग निकाल्या नाग । किया वरूनाग सुरिंदाहे । तो चरणां आय रह्या लपटाय । कलाअतिकेलिकरंदाहे ॥ २ ॥ इक दिन्न महारन्नवनपंचागनि । तापसतापतपंदाहे । फल फूल आहारी ऊर्द्धाधारी । अल्पआहारलियंदाहे । सवभेष सन्यासी रहेउदासी । अविनासीध्यावंदाहे । दिसीच्यारां दिठी वलेअंगीठी । सूरजतापतपंदाहे ॥३॥ महिमा वधारी सवनरनारी । जाकूं आयनमंदाहे । एसी सुणवत्तां धरिय उकत्तां । पुत्तां पासजिनंदा हे । वामादे-

अरके कुणतोपरके । मेरा हूंसपूरंदाहे । तिहांचालोपुत्तां जिहां अवधुत्तां । जोगारंजजगंदाहे ॥ ४ ॥ जननीमनआसापूरण-पासा । ऐरापत्तिसफंदाहे । गलघूग्घरमाला जाणहेमाला । दंत्ताला उंपंदाहे । वरवीरघंटाला मदमतवाला । फोलाली-फलकंदा हे । पंचरंगीपरकर सफीसखर । ढालांसुं ढलकंदा हे ॥ ५ ॥ धतकारेधत्तामत्ताअंकुस । मावतशीसदियंदाहे । गंगातटआये खफेरहाए । प्रभुज्ञानीआरकंदा हे । रे रे अभिमानी तपअज्ञानी । पावकजीवजलंदा हे । तिहां फारू डुफारूदि-खालेलकरू । वरूफणधरनागंदाहे ॥ ६ ॥ नवकार सुणाया सुरपदपाया । तापसजसघटंदाहे । तिणकिया नियाणा तपख-जाणा । कोफीसहेवेचिंदाहे । हुयके क्रोधातुरआतुरसो कमठा-सुरधुरजपजंदा हे । अश्वसेन सुतन महाराजविषयडुख । जाणत आपतजंदा हे ॥ ७ ॥ पंचमुठी लोचकिया आलोच । मनसुं सोच अफंदा हे । प्रभु अप्रतिबंध विहारकियो तब । रनबन वासवसंदाहे । उपशम अणगारे काउसग्ग मफारे कमठा सुरदाभलहंदाहे । वफा असुराणा वली हेराणा पिछाणवि लोकधुखंदाहे ॥ ८ ॥ करिआतसक्रोध विचारविरोध । महा अभिमानधरंदाहे । वाउलमतवाली नीलीकाली । वायुमहा-वाजिंदाहे । रविकिरणा कोट रही रजउंट । दिवाकर तेज छिपंदाहे । करघोरघटाचिकटाउमटी । अरुबीजूगाजंदाहे ॥ ए ॥ गरफाटा वाटा सुणियाथाटा । ऐरापतिलाजंदा हे । हुआअ-काला धुरवरसाला । बीजलियां खिवंदाहे । मोटीधारांसुं आरा-बांसु । यों अंबु वरसंदा हे । चल्ले जलखाला नदियांनाला ।

हेमालाहालंदा हे ॥ १० ॥ दरियावजलट्टां केतोफुटा । पाणीन हिमावंदाहे। दिगपालदहल्लांधरियजत्थल्लां । खोणीपतिखिसंदाहे। वरूपाहारुां ऊंगीऊारुां । सऊारुांढाहंदाहे । समदाहंदी देलवहंदी । जाणकजगरेलंदा हे ॥ ११ ॥ वहुवासरवूठा जाण किरुठा । जूठामनअसुरेंदाहे । तेवीशमराया वनमें पाया । काउसग्गकहाकरंदा हे । उवसग्गाहंदी कोलकरंदी । पाठान-हिंमुरूंदाहे । धरिमनमेंध्यानाक्रोधनमाना । निश्चलध्यानधरं-दाहे ॥ १२॥ प्रज्जु नासां ताइं नदीआई तोही नांहि खुजंदाहे। देवाचलजेसा धीरपएसा पावसपीरूसहंदाहे। तिणअवसरवरदां धरणीधरदां । आसणवेग चलंदाहे । तिण अवधिप्रयुंजी दीठेप्रज्जुजी । तनमनअति उलसंदाहे ॥ १३ ॥ तिहां पदमा-वती देव सकत्ती सुंमिल वेगवहंदा हे । पयकेहेराना वैठवि माना । पावां आयलगंदाहे फणनागहजारां करविसतारा । वगत्तर ज्यूंठावंदाहे । ले आपणखंधे प्रेमनिवंधे । पूरवप्रीत सुखंदाहे ॥१४॥ इंद्राणीनारी सवसिणगारी । जोवनअंग ऊिल-कंदाहे । राकापति वयणी मिरगानयणी । सुंदररूपसोहंदा हे। अणियाला कजल ऊलकेविजल । खूववणावंवणंदाहे । नकवे-सरनत्थां लालमुकत्थां । विच मोतीऊलकंदाहे । उढणपाटंवर ॥ १५ ॥ ऊीणीअंवर । आज्रूषणऊलकंदा हे उर कंचुकसिया तनउल्लसिया । कामघटा गहरंदाहे । पहिरणतनखूवा हरिया दूवा । सोलेहीसोहंदाहे । कटिमेखल ऊमियां सोनेजमियां । हीरावीचहलकंदाहे ॥ १६ ॥ घमके घूघ-रियां पाए धरियां । पगनेवररणकंदाहे । लोऊांऊरतालातालकं-

साला । पखावज वाजंदाहे । कुहके करनाला वीचरसाला । जंगी ढोल घुरंदाहे । वाजे सरणाई सखरीधाई । नगारा रोरूं- दाहे ॥ १७ ॥ पभमा वैरूट्टा आण उलट्टां । नाटिक मिलना- चंदाहे । तता थइ तत्ताथइ तानतरूरूा । रसभेदरमंदाहे । दिनतीन वितीता तोहि न वीता । पावसजलपसरंदा हे । धरणी धरजाण्या ग्यानपिछाण्या । कमठासुरकोपंदाहे ॥ १८ ॥ नागाधिपति आंख्यांरत्ती । कित्ती रीसआवंदा हे । रे मूढाधिग चित्तवि- णग । कयूं नांहि समरूंदाहे । साहिबवलवंता जोर अनंता । तूंतो नहि जाणंदाहे । ए क्षमासागर गुणके आगर । तीनूं लोकनमंदाहे ॥१९॥ असमांनखमाई रीसभराई । हिकाई बज- रंदा हे । कित्ती बहुगल्लां परूं दहल्लां धरूहरूदेह धूजंदा हे । धरणेंद्र रूराया तब ते आया । पावां आयलगंदा हे । करजो- रूिखमाया सीसनमाया । जगनायक जिनचंदाहे ॥ २० ॥ तूं साहिबसच्चा तोगुण रच्चा । मेरादिल खुलंदा हे । तें रीसनध- रियां छिणहीविरियां । तूं ही अचल गिरंदा हे । कमठासुर- कित्ती बहुविनत्ती । निजअपराध खमंदाहे सुरपतिसिधाये निजघरआये । प्रभुके गुणसमरंदाहे ॥ २१ ॥ सुधसंजमपाले दोष निहाके । तब केवल उपजंदा हे । सम्मेतशिखरपर चढके ऊपर । सिद्धपुरीपोहचंदा हे । तेरीकीरत्ती जग ऊपत्ती । पार न को पावंदा हे । तूं सच्चारक्खे भेदपरक्खे । गुमानी मोरूंदाहे ॥ २२ ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी । सुरनरसेवकरंदा हे । तूं दीवाणा तूं खूमाणा । तूं मोजी मकरंदा हे । तूं अल्लापीर फकीर मुसाफर । तूं जोगी तूं जिंदाहे । तूं काजीमुल्लां

मरदअटल्लां। तूं ही शेष फरींदाहे ॥ २३ ॥ तें ऊपाया धंदेलाया। मायामें मुलकंदाहे । तूं बूढाबाला मदमतवाला । तूं पकावाजंदा हे । तूं कच्चा कवला सबतेंसबला । सच्चामऊरहंदा हे । बाबा गोसांई भेद न पाई । भीरूपळ्यां आवंदाहे ॥ २४ ॥ तूं नारायण जोगपरायण । माधव तूं ही मुकंदाहे । तूं कवलाधारी तूं अवतारी । तूं देवांदेवंदाहे । तूं एकांथप्पे एकउथप्पे । थितिनिज सुधथापंदा हे । तोदेवलमऊां लोक तिसंऊां । सीरणियां वाटंदाहे ॥ २५ ॥ गुणगीतपयासे कीरतभासे । ऊीणे स्वरगावंदाहे । काला गुरुअगरसुंमलयागर । धूपेऊा धुखंदाहे । कुंकुमकसतूरी केसरपूरी । चंदनसुंचरचंदाहे । मरुआमचकुंदा फूलाहंदा । टोरूरकंठठवंदाहे ॥ २६ ॥ चंपागुलावां भरीयठाबां । परमल तिहां वासंदाहे । कसवोई चंगी । रचीये अंगी फूलां वीचफावंदा हे । आभूषण धरियां तन ऊपरियां । कुंरूलकानझिगंदाहे । सूरतसोहंदी मूरतहंदी । दीठां नेणठरंदाहे ॥२७॥ तेरी बलि जाउं मोजांपाउं । वीनती तूं हि सुणंदाहे । क्याकत्थूंगल्लां हुकम अदल्लां । समकितमन उलसंदाहे । सिद्धांदावासा तिहांरहासा । तुऊसेवकविलसंदा हे । घग्घरनीसांणी पासवखाणी गुणजिनहर्षकहंदा हे ॥ २८ ॥ इतिश्रीपार्श्वजिनघग्घर निसाणी संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवनं लिख्यते ॥

तूंमेरेमनमें प्रभु तूं मेरेदिलमें ध्यानधरूं पलपलमें । पासजिनेसरअंतरजामी । सेवाकरूं छिनछिनमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ काहूकोमन तरुणीसेंराच्यो । काहूकोचित्तधनमें । मेरो मन प्रभुतु-

महीसें राच्यो । ज्युं चात्रकचित्तघनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगी सरतेरी गतिजांणे । अलखनिरंजनछिनमें । कनककीरति-सुखसागर तूंही । साहिबतीनभुवनमें । तूं मेरे मनमे तूं मेरे दिलमे० ॥ ३ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथजीरो स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीचिंतामणी पार्श्वनाथजीका लघुस्तवनं लिख्यते ॥

॥ जिनजी महिरकरीने राज । दरसणवहिलोदीजे । दीजे दीजे जी माहाराज । कारजसगलासीझे । ए आंकणी । मुझ मनभमरतणीपरमोह्यो । छोड्यायोनविछूटे । प्रेमरागबंधाणो पूरण, तेतो कदियनखूटे ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभुतुमने । नहियविसारुं दिलसुं । रातदिवस एहवी मनवरते । जाणुं जइमिलुंतुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरबपुन्यथकी मेंपायो । ए अवसरआजूणो । मिलियोतूं प्रभुपासचिंतामण । साहिब-सहजसलूणो ॥ जि० ॥ ३ ॥ थारेतो सेवकछे बहुला । मो सरिखा लखग्याने । माहरेतो इण जगमे जोतां । थारे नहीं कोइटाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥ आसहीये इक ताहरीराखुं । बीजो-मुखनहीभाखूं ॥ अमृतजेमलही तुझ गुणरस, खारोजलकिम-चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन ए मुद्रानी महिमा । कहतां पार-नआवे ॥ सायरलहरमालानेंगिणतां, कहोकुणमतिउपजावे ॥ जि० ॥ ६ ॥ भगतपणे किंचित गुणभाखूं, हूं ह्मारी मतिसारू ॥ निरुपमअनुपमप तुझगुण लायक, त्रिभुवनजीवनसारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरसअढारवली इकताले, मिगसरपखउजवाले ॥ इग्या-रसदिन अधिक सनेहे, यात्रकरीसुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरिश्रीसंघ जुगतसुं, मेलो तिहां मंझायो ॥ लाभउदय-

जिनचंदनेप्रनुजी, वाध्योप्रेमसवायो ॥ जि० ॥ ए ॥ इतिश्रीपार्श्वजिन स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं लिख्यते ॥

आजआपें चालोसहीयां सिद्धाचलगिरिजइये ॥ सिद्धाचलगिरिजइये वहेनी विमलाचलगिरिजइयेरे ॥ आ० ॥ सुणवहेनी ए गिरिनीमहिमा । आदिजिनंदइमनाखी ॥ नरतादिकनरपतिनेआगल इंद्रादिकसहुसाखीरे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणगिरिवरियें कालअनंते । साधुअनंतासीधा ॥ जन्ममरणनां दुःखबोमीने । अमलअखयगुणलीधारे ॥ आ० ॥ २ ॥ इणगिरिसन्मुखपगलानरतां । आतमशुद्धसुनावे ॥ कोमिनवांरां पातककीधा । एकपलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए सेत्रुंजो । जोतां लागेमीगे ॥ तीननुवनमें इणगिरितोले । वीजोकोइनदीगेरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेहधरीने । आगे उलगकरस्यां ॥ अद्भुत आदिजिनेसरनिरखी । प्रेमसुधारसपीस्यांरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुष्पसुगंधालेइपंचरंगा । हारसुगंधागूंथी ॥ पैहिरावी प्रनुकंठेलहिस्यां । शिवमारगनीसूथीरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गहिरस्वरे जिनवरगुणगातां । जात्र नवाणूं करियें ॥ मनगमती नमतीविचनमतां । नवसायरनिसतरियेंरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरवनवाणूं वारप्रथमजिन, रायणरूखेआया ॥ एतीरथ शुननावेंफरसी । करियेनिरमलकायारे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लानजदेएगिरिवरलहिये । कहेइमकेवलनाणी ॥ श्रीजिनचंद सदाहितवत्सल, प्रेमघणे चित्तआणीरे ॥ आ० ॥ ए ॥ इतिसिद्धाचलस्तवंन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री तीरथमालास्तवनं लिख्यते ॥

शत्रुंजय ऋषन्न समोसर्या नला गुणन्नर्यारे सीधासाधु अनंत। तीरथते नमुंरे ॥ तीनकल्याणक तिहांथयां । मुगतें गयारे ॥ नेमीसरगिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो। गिरिसेहरोरे ॥ न्नरतेन्नराव्याबिंब ॥ ती० ॥ आबुचौमुख अति-न्नलो । त्रिन्नुवनतिलोरे ॥ विमलवसइवस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखरसोहामणो । रलियामणोरे ॥ सिद्धा तीर्थंकरवीश ॥ ती० ॥ नयरीचंपा निरखीये । हीये हरखीयेरे ॥ सीधाश्रीवा-सुपुज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशेंपावापुरी ऋद्धे न्नरीरे ॥ मुक्ति-गयामहावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेरजुहारीये । दुःखवारीयेरे ॥ अरिहंतबिंबअनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ वीकानेरजवंदीये । चिरनं-दीयेरे ॥ अरिहंतदेहराआठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो। पंचासरोरे ॥ फलोधी थंन्नणपास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिकअ-जावरो, अमीझरो,रे ॥ जीरावलोजगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलो क्यदीपकदेहरो, जात्राकरोरे ॥ राणपुरेंरिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडुलाईजादवो, गोडीस्तवो रे ॥ श्रीवरकाणोपास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनांदेहरां, बावन न्नलारे ॥ रुचक कुंडल चारचार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती । प्रतिमाछतीरे ॥ स्वर्ग मृत्युपाताल ॥ ती० ॥ तीरथजात्रा फलतिहां, होजो मुझ इहांरे । समयसुंदर कहेएम ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति तीरथमाला स्तवनं सपूर्णम् ॥

॥ अथ नवकारतप स्तवनं लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवरनमी । पंचपरमेष्टिसार ॥ परम

मंत्रनवकारनी महिमाञ्चणूउदार ॥ १ ॥ ढाल १ ली ॥ मुनि-वर आर्यसुहस्ति ॥ ए देशी ॥ समरोश्रीनवकार । सार पूरव-तणो । नवविधिसिद्धि आपेसदाए ॥ महिमामोटी जास । संकट सवटले । मिले मनोरथसंपदाए ॥ १ ॥ अरूसठ वरण-विख्यात । सातगुरुअक्षर । नवपदआठेसंपदाए ॥ सातसागर-नांपाप । जायेअक्षरे । संपूरणपांचसयमुदाए ॥ २ ॥ पुष्करव-रद्वीपार्द्ध । सिद्धावटगाम । पासेपरबत कंदराए ॥ चोमासीपच्च-रकाण । करनेतिहांरह्या । दमसार नामे मुनीसराए ॥ ३ ॥ जीवजीवणीवेत्र । मनसुधजावसुं । नवकार मुनिपासेजणीए । त्रीजेजवराजसिंह । रतनवतीरांणी । शिवसुखपांम्याकर्महणीए-॥ ४ ॥ रतनपुरीवसोजड । सेठतणोसुत । शिवनामा विसनी-घणूंए ॥ अति आदरसुंतात । नवकारसीखव्यो । महामंत्रगुण वहुजणूए ॥ ५ ॥ एकदा योगीएक । समसानेलेगयो । शिव कुमार मनमेंधस्योए ॥ नवकारने परजाव, सवलसंकटटल्यो । सोनापुरसो तिणकस्योए ॥ ६ ॥ ढाल २ जी ॥ चरणकरणधर मुनिवरवंदिये ॥ ए देशी ॥ श्रीनवकारतणी महिमासुणो । पोतनपुरसुजगामो जी ॥ सेठ सुजद्रतणी सुताश्रीमति । श्राविका धर्मनोकामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ मिथ्यामतेकिणएक-विवहारिये । परणी मनधररागोजी ॥ धरमनमूंके हियेमनधरी । कलशमें मूंक्यो नागोजी ॥ श्री० ॥ २ ॥ सापफीटीने फूल-मालाथई । महियलमहिमाएहोजी ॥ पिउने कुटुंबसहूप्रतिवू-झव्यो । साचोधर्मसनेहोजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ क्षितिप्रतिष्ठितब-लराजातिहां । इकदिनवूठो मेहोजी ॥ नदीपूरबीजोरोआवि-

यो ॥ नृपने दीधोतेहोजी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वादलहीचिठी राजाकरी । बीजोराने कामोजी ॥ व्यंतरन्नक्षकरे नरनेतिहां घेबीजोरोतामोजी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठीआवी जिनदाससेठनी । श्रावकशुद्धविवेकोजी ॥ नमस्कारन्नणबीजोरो ग्रह्यो । बूझव्यो व्यंतरछेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ जी ॥ नमणीखमणीने मनगमणी ॥ ए देशी ॥ श्रीवसंतपुरजितशत्रुराया ॥ न्नद्रानामें नारिसुहाया ॥ चंद्रपिंगल चोरघोनृपहारा । गणिकाने दीधोमनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयोहारते जाणी । सूलीदीधोचोरतेआणी ॥ निजप्रमादगणिकापछतावे । चोरसमीपेछानी आवे ॥२॥ नमस्कारपिंगलनेदीधो । तास प्रन्नावे वंछितसीधो नृपनेघरजइ अवतरियो । पापीचोर एणेक्कधरियो ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिणदास सेठ । तिहां किण हुंडक पापनीछेठ । एकदा चोरी करतां झाल्यो । राजा हुकमें सूलीघाल्यो ॥ ४ ॥ हुंडकचोरते प्यासेगाढो । सेठकने जलमांग्यो गाढो ॥ नवकारदीधो उपगारआंणी । सुरथयो ततखिण धर्मसहिनाणी ॥ ५ ॥ चंपानगरीमेंकीधुं ॥ सुन्नद्रासती निकलंकप्रसीधुं ॥ श्रीनवकार प्रसादतेजांणो । मनमेंएहनीआसतिआणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ थी ॥ न्नरतनृप न्नावसुंए ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिमकरीए । बीजलीबांधी आकास । नमुंनवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्षउपाडी-चलावियोए ॥ अनुपममहिमाजास ॥ न० ॥ २ ॥ वाछरूवा एकचारतोए । नदियप्रवाह्योबाल । नमस्कारमनचिंतव्योए । जलफाटोततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चारकरीहवेए । वली कस्यापापअनेक । छुटकवारो एहथीए ॥ आवेचित्तविवके

॥ न० ॥ ४ ॥ मंत्रमांहेमोटो कह्योए । लाखगुणेमनरंग । तीर्थंकरपदतेलहेए ॥ श्रीनवकारनेंसंग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिनदिन अधिकीसंपदाए । मनवंछितसुखथाय ॥ दयाकुशलवाचकवरूए । धर्ममंदिरगुणगाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इतिश्रीनवकारतपाधिकारे ४ ढाल नो वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥ १

२ ॥ अथ श्रीनवकार छंद लिख्यते ॥

सुखकारणभवियणसमरोनितनवकार ॥ जिनशासन आगम चवदेपूरबसार ॥ इणमंत्रनीमहिमा कहितांनलहुंपार, सुरतरु जिमचिंतित वंछितफलदातार ॥ १ ॥ सुरदानव मानव सेवकरे करजोड । भूमंडलविचरे तारे भवियणकोड ॥ सुरछंदे विलसे अतिसय जासअनंत । पहिलेपदनमिये अरिगंजन अरिहंत ॥२॥ जेपनरेभेदेसिद्धथयाभगवंत । पंचमि गति पुहता अष्टकर्म करि-अंत ॥ कलअकलसरूपी पंचानंतक जेह । सिद्धनापायप्रणमुं बीजे पदवलिएह ॥ ३ ॥ गछभार धुरंधर सुंदर शशिहरसोम । करशारणवारना गुणछत्तीसे थोभ ॥ श्रुतजाण शिरोमण साग-रजेमगंभीर । तीजेपदनमिये आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुत-धर गुण आगम सूत्रभणावे सार । तपविधिसंयोगे भाखेअरथ-विचार ॥ मुनिवर गुणयुत्ताते कहियेउवज्झाय । चोथेपदनमिये अहनिशतेहनापाय॥५॥पंचाश्रवटालेपाले पंचाचार । तपसीगुण-धारी वारी विषयविकार ॥ त्रसथावरपीहरलोकमांहि ते साध ॥ त्रिविधे ते प्रणमुं परमारथजिणलाध ॥ ६॥ अरिहरिकरिसाइण डाइण भूतवेताल । सबपापपणासे विलसेमंगलमाल ॥ इण समरयां

संकट दूरटलेततकाल । जंपे जिणगुणइम सुरवरसीसरसाल ॥७॥
इति श्रीनवकारनो छंद संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीबृहत् नमस्कार स्तवनं लिख्यते ॥

किंकप्पत्तरु रे अयाण चिंतवमणभ्भितरि । किंचिंतामणि कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काजकिसे देसांतर लंघउ । रयणरासि कारणकिसे सायरउल्लंघउ ॥ चवदे पूरवसार युगे लध्धउएनवकार । सयलकाज महियलसरे दुत्तरतरेसंसार ॥१॥
केवलीभासिय रीतिजिके नवकार आराहै । भोगविसुरकअनंत अंत परम पय साहै ॥ इणझाणे सुररिध्धि पुत्तसुहविलसेबहुपरि । इणझाणे देवलोक इंदपयपामेसुंदरि ॥ एहमंत्रसास्वतोजपे अचिंतचिंतामणि एह । समरणपापसबेटले रिध्धिसिध्धिनियगेह ॥ २ ॥
निय सिरउपरझाण मज्झचिंतवेकमलनर । कंचनमयअठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहांबेठा अरिहंतदेव पउमासणफिटकमणि । सेयवत्थपहरेवि पढमपयचिंतेनियमणि ॥ निवारय चउगइगमण पामियसासयसुरक । अरिहंतझाणे तुमलहो जिम अजरामरमुरक ॥ ३ ॥ पनरभेय तिहां सिध्ध बीयपद जे आराहे । रातेविद्रुमतणेवन्न नियसोहगसाहे ॥ रातीधोतीपहरजपे सिध्धहिं पुवदिसि । सयललोय तिहां नरहहोइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्रवशीकरणअवरसहू जगधंध । मणिमूली औषधकरे बुध्धि हीण जाचंध ॥ ४ ॥ दक्षिणदिसिपंखमी जपे नमोआयरिआणं । सोवन वन्नहसीससहितउवएसहनाणं ॥ रिध्धिसिध्धिकारणे लाभ ऊपर जेध्यावे । पहरिपीलावत्थ तेह मनवंछियपावे ॥ इण झाणे नवनिधिहुंवे रोगकदे नविहोइ ।

गजरथहयवर पालखी चामरछत्त सिरजोइ ॥ ५ ॥ नीलवन्न-उवज्झायसीस पाढंतापछिम। आराहिजे अंगपुव्वधारंतमणोरम॥ पछिम दिसिपंखरूी कमलऊपर सुहझाणं । जोवोपरमानंदतासु गयदेवविमाणं ॥ गुरुलघुजेलखे बिन्दुर तिहां नरवहुफल होइ । मनसूधेविणजेजपेतिहां फलसिद्धि नहोइ ॥ ६ ॥ सर्वसाधु उत्तरविभाग सामलावइछा । जिणधम्म लोय पयासंत चारित-गुणजिठा । मणवयण काएहिंजपे जेएके झाणे । पंचवन्नतिहां-नाणझाण गुण एहपमाणे ॥ अनंत चोवीसीजगहुइएहोसी अवरअनंत । आदिकोइजाणेनहीं इणनवकारहमंत ॥ ७ ॥ एसोपंचनमोक्कारो पददिसिअगनिहिं । सव्वपावप्पणासणो पद-जपैनेरेहिं ॥ वायवदिसिझाएह मंगलाणंचसव्वेसिं । पढमंहवइ-मंगलं ईसाणपएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुंविदिसेमिलिय अठदल-कमलठवेइ । जो गुरु लघु जाणीजपे सोघणपापखवेइ ॥ ८ ॥ इणप्रभावधरणिंदहुउ पायालहसामी । समलीकुंवर उपन्नभिव-सुरलोयहनामी ॥ संवलकम्बलवेबलद पहुता देवांकप्पे । सूली दीधोचोरदेवथयो नवकारहिजप्पे ॥ शिवकुंमार मनवंछिय करे जोगीदियोमसाण । सोनापुरसोसीधलो इणनवकार प्रमाण ॥ ए ॥ ठींकेबेठोचोरएक आकासेगामी । अहि फिट्टि-हुई फूलमाल नवकारहनामी ॥ वाछरूआ चारंत वाल जलन-दीप्रवाहे । वींध्योकंटहो उयरमंत जपियोमनमांहे ॥ चिंत्या-काजसवेसरे इरतपरतविमास ॥ पालितसूरितणी परे विद्यासिद्ध-आकास ॥ १० ॥ चौर धारु संकटटले राजा वसिहोवे । तित्थंकरसोहोइ लाखगुणै विधिसुंजोवे ॥ साइणडाइणभूतप्रेत-

वेताल न पुहवइ । आधिव्याधि ग्रहतणी पीरुते किमहिन-होवे । कुष्ठजलोदर रोगसबे नासेएणही मंत ॥ मयणासुंदरितणीपरे नवपयझाणकरंत ॥ ११ ॥ एकजीह इणमंत्रतणा गुण-कितावखाणुं । नाणहीण छउमत्थएहगुण पार नजाणूं ॥ जिमसत्तुंजयतित्थराउ महिमाउदयवंतो ॥ सयलमंत्रधुरि एह मंत्र-राजाजयवंतो । तित्थंकरगणहरभणिय चवदहपूरबसार । इण-गुणअंत नकोलहे गुणगिरउनवकार ॥ १२ ॥ अरुसंपय नव-पय सहित इगसठ लहुअक्खर । गुरुअक्खरसत्तेव इह जाणो परमाक्खर, गुरुजिणवल्लहसूरिभणे सिवसुक्खहकारण, नरयतिरियगइ रोगसोग बहुदुक्खनिवारण । जलथलमहियल वनगहण स्मरणहुवे इकचित्त, पंचपरमेष्ठिमंत्रतणीसेवा देज्यो-नित्त ॥ १३ ॥ इतिपंचपरमेष्ठीमहिमास्तवनं संपूर्णम्

॥ अथ सत्तरसोजिनको स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ स्वस्तिश्रीदायकसदा त्रैसलेयजिनचंद ॥ तत्पद नामीकंधरा, कारणसिवसुखकंद ॥ १ ॥ वाच्चर्यंका सारदा तणो, उरधरिसमरणशक्ति । सप्तत्युत्तरसतजिनतणी, रचस्युं-नुतिसुचिभक्ति ॥ २ ॥ छेजेद्वीपसमस्तनै, मध्यमेरू कनकाभ । पूर्वापरभवितेहने, विजयनामकोलाभ ॥ ३ ॥ मूलविजयवसु-प्रतिदिशा, कथनामेंयुगतीस । शीतोदा तरणीतणो, कारणवि-श्वावीस ॥ ४ ॥ अंकधातकीदूसरो, द्वीपमनोहरतेह । कंचन-गिरियुगछे तिहां, मनधारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतमपुष्करजां-णिये, द्वीपसकलगुणखांण । अर्धभागजसुउत्तमें, गिरियुग जलदसमांन ॥ ६ ॥ भोभवि संख्याविजयनी, प्रतिमेरौबत्तीस ।

धारो गणित अनुक्रमें, षष्ट्युत्तरशतहींस ॥ ७ ॥ एहआढाइ-द्वीपना विजयतणोपरिमांण । कालचतुर्थ तिहांसदा, जाख्यो-श्रीजिनजाण ॥ ८ ॥ जिणतीर्थंकरवारके, विचर्याजेजिनराय । तेहूं प्रति विजयेजणूं, आगमसुं चितलाय ॥ ए ॥ (ढाल पार-णेकी)॥ तिणकाले ने तिणसमेजी, तीर्थंकरमहाराज । अजित-जिनेसरराजताजी, तारणतरणजिहाज । जविकजन धारज्योधर्म-सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशयचौतीस संजुआजी, वांणीगुणपैं-तीस ॥ लोकालोकप्रकाशताजी, प्रणमतनरसुरईस ॥ ज० ॥ २ ॥ एहवाश्रीजिनवारकेजी, एकसोसाठजिनंद । विचर्या महियल बोधताजी विजय मझार सजंद ॥ ज० ॥३॥ पंच पंचजरतैरवतैंजी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरैजगजनतारताजी, समर्यासंपति-थाय ॥ ज० ॥ ४ ॥ एसत्तरसोजिनवरुजी, अतुलसकलगुण खांण । श्यामवरणसोलेकह्याजी, अकलकलाद्युतिवांन ॥ज०॥५॥ रक्ताकृति त्रिंशतकह्याजी, नीलवरणवसुतीस, रविजिमझलह-लजाधरुजी कनकवरणछत्तीस ॥ ज० ॥ ६ ॥ रजतमुक्तवय जलकणाजी, समसितविमलप्रकाश । जविक चकोरप्रमोदताजी, शशिजिमजिनपच्चास ॥ ज० ॥ ७ ॥ प्रतिजिन व्रत उपवासथीजी, वीसप्रमितजपमाल । त्यक्त कषाय शुजातमांजी, धरिये जाव-विशाल ॥ ज० ॥ ८ ॥ इम एतप पूरणहुयांजी, उजमणे निज-शक्ति । कीजे श्रीजिन शाशनेजी, संघसहूनीजक्ति ॥ ज० ॥ ए ॥ एतपविधि जवि जे करेजी, प्रेमसहितजिनधर्म । साधनगुण-अनुमोदताजी, तेलहे दिव शिवशर्म ॥ ज० ॥ १० ॥ कलश ॥ संवत मुनिसर लोक नारद चंद्र ज्येष्ट (१ए३७) पसुरए,

वदिसप्तमी रविदिने हितवह्लभकथनधरजूरए । गुरु खरतरांबर तरणि सन्निभ जैनचंद्रसनुरए, एतवनकीधोजीमगंजे श्रमण चंदकपूरए ॥ ११ ॥ इतिश्रीसत्तरसोजिनस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ कम्मपयडीस्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ सेनामाता जितारिसुत, श्रीसंभवजिनराज ॥ मूलकरम उत्तरपगइ, हणीचंढेसिवपाज ॥ १ ॥ अष्टकरमकुं क्षयकरी, गुणअष्टकनिष्पन्न ॥ सादिअनंत स्थिति लही, चिदानंदचिदघन्न ॥ २ ॥ तासुचरणप्रणमीकरी कम्म पयडिविस्तार ॥ वरणूं भविजनहितभणी, प्रवचननेअनुसार ॥ ३ ॥ ढाल रामचंद्रकेबाग ए देशी ॥ अष्टकर्म तीर्थेश, नांमे भिन्नकह्यारी ॥ हेयवस्तुपरित्यज्य, आतमगुणग्रह्यारी ॥ १ ॥ नाणदंशणआवर्ण वेदनीमोहबूरोरी । आउखो नाम गोत्र, कर्मांतरायचूरोरी ॥ २ ॥ ज्ञानावरणीकर्म, दर्शना वर्णतणोरी । वेदनीय अंतराय, तीसकोडाकोडी भणोरी ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म वीशकोडाकोडीहवेरी । आयु सागरतेतीस हिव मोहनीयथुवेरी ॥ ४ ॥ सत्तीरी कोडाकोडी, सागर मानभएयोरी ॥ ए उत्कृष्टस्थितिजोड, केवलीकाल गएयोरी ॥ ५ ॥ जघन्यस्थितिपंचकर्म, अंतरमुहुर्त्तपणोरी ॥ नामगोत्रदोयकर्म आठमुहुर्त्तगणोरी ॥ ६ ॥ अकषायवेदनीवर्ज्य, वेदनीकर्मवदेरी । बारेमुहुर्त्त मांन, शास्त्रानुसारमुदैरी ॥७॥ नाणावरण अंतराय, पंचपंचभेदजुदारी । वेदनीयगोत्रकर्मदोदोभेदउदारी ॥ ८ ॥ दर्शनावरण नवभेद, आयुच्यारविधेरी । मोहकर्म अडवीस, सौत्रिकनामसधेरी ॥ ९ ॥ एकसो अडावेन्न

उत्तर प्रकृतिकहीरी ॥ अष्टकर्मनाजांण, सर्वविकल्प सहीरी ॥ १० ॥ ढाल ॥ नणदलचुरुले जोवनफिलरह्यो ए देशी ॥ पाटेसम ज्ञानावरणछे, दर्शनावरणप्रतीहार नवियण कर्मविवेचन कीजिये । मधुलिप्ताअसिधारानीपरे, वेदनीकर्ममुदार । नविय० ॥ १ ॥ मदिराछाक समानछे, मोहसुनटमहराण ॥ नवि० ॥ खोरुवंधीखानेसारखो, आयुकर्मप्रमाण ॥ न० क० ॥ २ ॥ चीतारेसम नामकहीजे, गोत्रकुंनारसमान ॥ न० ॥ श्रीधरनंरुारीसम दाख्यो, अंतरायकुध्यान ॥ न० क० ॥ ३ ॥ अष्टकर्म ए नावना, वीरवदे व्याख्यान ॥ न० ॥ कर्मसंसार-स्वरूपछै, अकरमसिद्धिसुथान ॥ न० क० ॥ ४ ॥ मिछसासा-दनमिश्राविरति, देसविरतिप्रमत्त ॥ न० अप्रमत्त गुण अंतस-वीमे, करमवंध अठसत्त न० क० ॥ ५ ॥ अपूरव अनुवृत्ति गुणमें, आयुवरंजससबंध ॥ न० ॥ सुहुमसंपरायदशमठाणें-विनमोहायु षट्वंध ॥ न० क० ॥ ६ ॥ उपसम खीण सजो-गमें, वेदनीबंधउदार ॥ न० ॥ अयोगीगुण चउदमें, नहीवंधत कर्मघार ॥ न० क० ॥ ७ ॥ कर्मबंधहेतुकह्या, मिथ्यातअविरत-जोय न० ॥ क्रोध प्रमुखकषायथी, योगयुगतच्यारहोय ॥ न० क० ॥ ८ ॥ पन्नवणाउपांगमें, कर्मस्थितिपदलेय ॥ न० ॥ कर्मवेद पणवीसमें, कर्मप्रकृतिवेदज्ञेय ॥ न० क० ॥ ए ॥ कम्म पयरुीकर्मग्रंथमें, कर्मतणोनिरधार ॥ न० ॥ बंध सत्ता उदी-रणा, उदयप्रमुखपरकार ॥ न० क० ॥ १० ॥ एकसो अठ्वन-थया, चउत्थनत्ततप सार ॥ न० ॥ तप उद्यापन इमकरो, पूजअष्टप्रकार ॥ न० क० ॥ ११ ॥ अष्टज्ञानो पगरणनला,

अष्टमंगल वृधथाल ॥ ज० ॥ वात्सल्यचौविह संघनी, यथा-शक्तिसुविलास ॥ ज० क० ॥ १२ ॥ इग्यारोधन तपकरे, कर्म प्रकृतिनोसार ॥ ज० ॥ सुरनरसुखअनुक्रमलही, शिवरमणी-जरतार ॥ ज० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिनचंदसूरिमुणिंद-खरतरगण खशशिसमयुगवरा, तासुवचने स्तवनकीधो नयर श्रीवालूचरा । चंद्रानुयोगनिध्येकवरषे विशदफालगुनद्वादशी उवझायतत्वप्रधानगणिने अमृतगतिचित नितवशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयडी स्तवनं संपूर्णम् ॥

अथ श्रीशांतिनाथजीनो वृद्धस्तवन लिख्यते ॥

श्रीसारदमातनमुं सिरनामी, हुं गाउं त्रिभुवनकेस्वामी । संतहिसंतजपे सबकोई । जांघरशांति सदासुखहोई ॥ १ ॥ सांतिज-पीने कीजे कामा । सोईकामहुवै अभिरामा । सांतिजपी परदेश-सिधावे । तेकुशले कमलालेआवे ॥ २ ॥ गर्भथकीप्रभु मारि-निवारी । शांतिहि नाम दियोमहतारी । जे नर शांतितणा-गुणगावे । ऋद्धिअचिंति ते नर पावे ॥ ३ ॥ जानरकुं प्रभु शांतिसहाई । तानरकुं कुणआरतिनांहि । जो कछुवंछे सोही, पूरे । दारिद्रदोष मिथ्यामतचूरे ॥ ४ ॥ अलखनिरंजन ज्योति-प्रकासी । घटघटके भीतरप्रभुवासी । स्वामिसरूपकह्यो नवि-जावे । कहितां मोमनअचरिजआवे ॥ ५ ॥ डारदिया सबही-हथियारा । जीतामोहतणादलसारा । नारितजीसिवसुं रंगराचौ । राजतज्योपिण साहिबसाचो ॥ ६ ॥ महाबलवंतकहीजे देवा, कुंजरकुंथु न एकहणेवा । ऋद्धिसहू प्रभुपासलहिजे, भिक्षाहारी नामकहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे समभायक, पिणसेवगकुं

सदासुखदायक । तजीपरिग्रह भएजगनायक, नामअतीतसर्वे-
विधलायक ॥ ८ ॥ शत्रुमित्रसमचित्तगुणिजे, नामदेव अरिहंत
भणीजे । सयलजीव हितवंतकहीजे, सेवक जांण महापद-
दीजे ॥ ए ॥ सायरजेसा होय गंभीरा, दूषणनहिं इकमांहिं
सरीरा, मेरुअचलजिम अंतरजामी, पिणनरहे प्रभुएकण-
ठांमी ॥ १० ॥ लोककहे प्रभुजी सवदेखे, पिणसुपनोकवहु
नविपेखे । रीसविना वावीसपरीसह, सैन्याजीतीतें जगदीसह
॥११॥ मानविनाजग आंणमनावे, मायाविनासवसुं मनलावे ।
लोभविना गुणरासग्रहीजे, भिक्षुभये त्रिगमोसेविजे ॥ १२ ॥
निर्ग्रंथपणेसिरछत्रधरावे, नामजतिपिणचमरढुलावे । अभयदान
दातासुखकारण, आगेचक्रचले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिन-
राजदयालभणीजे, कर्म सवीको मूलखणीजे । चौविहसंघ जे
तीरथथापे, लछीघणीदेखी नविआपे ॥ १४ ॥ विनयवंत-
भगवंतकहावे, नाकिसहीकूं सीसनमावे । अकिंचनकोविरुद-
धरावे, पिण सोवन पंकजपगठावे ॥ १५ ॥ तजिआरंभ निज-
आतमध्यावे, शिवरमणीकुं साथचलावे, रागनहीं सेवगपिण-
तारे, द्वेषनहीं निगुणासंगवारे ॥ १६ ॥ तेरीमहिमाअदभुत
कहिये, तेरेगुणांको पारनलहिये । तुंप्रभुसमरथसाहिव मोरा,
हुं मनमोहन सेवकतोरा ॥ १७ ॥ तूंत्रिहुंलोकतणो प्रतिपाला ।
मेहूंअनाथ तूं दीनदयाला । तुं सरणागतराखणधीरा, तुंप्रभु
तारक छे वडवीरा ॥ तुमजेसें वडभागजपायो । तोमेरोकारज
चढ्योसवायो । करजोडीप्रभु वीनवुं तोसुं । करोकृपा जिनव-
-रजीमोसुं ॥ १ए ॥ जनममरणनिवारोतारो । भवसागरथी

पारउतारो । श्रीहथ्थणापुरमंरूणसोहे । तिहां जिनशांतिसदा मनमोहे ॥ २० ॥ पद्मसुरिगुरूराजपसाये, श्रीगुणसागरकेमनभाये । जेनरनारि इकचितगावे, मनवंछितफल निश्चैपावे॥२१॥ इति श्रीशांतिजिनवृध्दस्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री १२ मा वासुपूज्य भगवाननो स्तवनं लिख्यते ॥

॥ वीरजीआयारे चंपावनकेमेदान ॥ ए देशी ॥ भवियण ध्यावोरे । वासुपूज्य गुणखाण, वंछितपावोरे । जिनवरचतुरसुजाण ॥ भ० ॥ ए आंकणी ॥ अंगदेशचंपानयरिसोहंत । जयदेवीनाजातकहंत, वसुपुज्यराजाकुलदीवंत । चउदेसुपनारे देखेमातसुजाण । गर्भमांइंद्रेरेपूज्या जिनवरभाण ॥ भ० ॥ ॥ १ ॥ एहथ्थी वासुपूज्यदियोनाम । मातापितानावंछितकाम, सहुजनगावेगुणअभिराम । योवनवयमांरे संयमलीनोसुजाण । चारित्रपालिरे पाम्योकेवलनाण ॥ भवि० ॥ २ ॥ संघचतुरविधथाप्यो मुनीश, भविजनतार्या विचरिजगीश । बोधबीजविस्तारिईश । चंपापुरिआव्यारे । कीधोअणशणजाण । मुक्तिपदपायारे । सासनकेसुलतान ॥ भवि० ॥ ३ ॥ देरासरत्रण भूमि मनुहार । भुंयरेमांआदिनाथजुहार । मध्यमांबारमजिनसुखकार । ऊपरमजलेरे शीतलजिनवरजाण । नमिजिनस्वामीरे पारसनाथकहाण ॥ भवि० ॥ ४ ॥ मूलनायकबारमजिनचंद । बिंबावलीसोहेअतिचंग । बुहारि नगरमा अतिउछरंग, कृपाचंद्रसूरिरे । चउमासोकीनोजाण । उगणीसे चमोत्तेरे ।

गायाजिनगुणगान ॥ ज्ञवि० ॥ ५ ॥ इति श्री १२ मा वासुपूज्य ज्ञगवाननो स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ बीजनोवृद्ध स्तवनं लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ वर्द्धमानजिनवंदिये त्रिशलानंदनदेव । सिंहलंछनसेवितसदा । सुरपतिसारेसेव ॥ १ ॥ जन्मसमेथीजगगुरु । अतुलबलीवरवीर । तपउत्तमविधियुतकह्यो जलनिधिजिमगंज्ञीर ॥ २ ॥ ढाल १ ली ॥ कृपानाथ मुजवीनतिअवधार ॥ ए देशी ॥ धर्मकरो जिनराजनोजी । आणी उह्लटज्ञाव, दोयज्ञेदे आराधतांजी । पामो आतम स्वज्ञाव । ज्ञविकजन सेवो श्रीजिनवाणि निजगुणमणिनीखाण ॥ ज्ञ० ॥ १ ॥ तिथीआराधनफलतणोजी । शास्त्रमांहे अधिकार, बीजआराधोज्ञविजनाजी । तपकरिया विधिसार ॥ ज्ञ० ॥ २ ॥ दोयमासलघुदूजनेजी । जावजीवउत्कृष्ट, दोपवरस दोयमासमांजी । करोबीजसुज्ञइष्ट ज्ञ० ॥३॥ पडिकमणादोय टंकनाजी । देववंदननिरधार, विधिसेतीफलनीपजेजी । पामेज्ञवनो पार ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ बीजदिवसनो सहुजुवेजी । चंद्रोदयसुप्रसिद्ध । वधतिकलातिमजाणजोजी । धर्मथी वंछितसिद्ध ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ दुविधधर्म जिनवरकह्योजी । देशने सर्वविरत्त । धर्मशुक्ल दोयध्यानमांजी । होवेसदा निरत्त ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ अर्थप्रकाशे जिनवरूजी । सूत्ररचे गणधार । बिहूं सेवे वाचंयमीजी । द्वादसअंगविचार ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ नमोरे नमो सेत्रुंज गिरिरे ॥ एदेशी ॥

बीजदिवसमां जाणीयेरे । कल्याणक सुविशालरे । श्रावण

सुदिबीजेचव्यारे । सुमतिनाथदयालरे । नमोरेनमो जिनचंद्र-
नेरे ॥ १ ॥ माघमासनीउजलीरे । बीजदिवसमांजाणरे ।
अभिनंदनजनम्याप्रभूरे । त्रिहूंजगनामहिराणरे ॥ नमो० ॥२॥
एहिजतिथीवासपूज्यजीरे । पाम्योकेवलज्ञानरे । फागुणसुदि-
बीज जाणीयेजी । अरनाथ चवणसुजाणरे ॥ नमो० ॥ ३ ॥
समेतशिखरपरसिववर्यारे । शीतलजिनवरनाणरे । चेतवदि-
बीज सुंदरुरे । अविचलसुख मनआणरे ॥ नमो० ॥ ४ ॥
इमकल्याणक इणतिथीरे । कालअनंतेहोयरे । अनंतकल्याणक
जाणजोरे । एह आगमविधिजोयरे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ तपपूरण
हूंवां थकांरे । उजमणोसुविवेकरे । रत्नत्रयी आराधवारे ।
धनखरचो बहुछेकरे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ सीमंधरादि जिनवरारे
विहरमाणजिनवीसरे । मनमंदिरमांआवजोरे । कृपाचंद्र सूरी-
शरे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ इतिबीजनो वृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ आठमनो वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

दुहा ॥ वर्द्धमानजिनवरनमुं । समरिसारदमाय । अष्टमी
तपविधिवरणवुं । आगमयुतसंप्रदाय ॥ १ ॥ आठमतिथी
अराधवा । भाखेत्रिजगत्राण ॥ विधिसेतितपकीजिये । पामे
उत्तमनाण ॥ २ ॥

॥ ढाल १ ली शंभवजिनवरवीनती ॥ एदेशी ॥

आठमतप आराधिये । अष्टमीगतिदातारोरे ॥ प्रवचनमाता-
आठने । पालो निसदिनसारोरे ॥ आठम० ॥ १ ॥ अष्टसिद्धि-
कारक सदा । आठमतपउजमंतारे ॥ सामायक पोसहकरि ।
पर्वतिथीसेवंतारे ॥ आ० ॥ २ ॥ पर्वतिथीमां बंधायछे । प्रायें-

परभवआयुरे ॥ तिणकारणतिथीतपकरो । आगममांहि गवायुंरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ बृहदावश्यकवृत्तिमां । हरिभद्रसूरिबोलेरे॥ तिमचूर्णिलघुवृत्तिमां । योगशास्त्रमांखोलेरे ॥ ४ ॥ नवपदप्रकरणवृत्तिमां । दिनकृत्यदेवेंद्रसूरिरे ॥ विधिप्रपा पंचाशकवलि । इम अधिकारछेभूरिरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ सामायक पहिलाकह्यो । पाछल इरियानो पाठरे ॥ जाणेपण मानेनहिं । एहकर्मनो गाठरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ विधिथी सामायककरो । जिमपामो भवपारोरे ॥ अविधिथीकिरियाकरि । नविछूटे भवनो लारोरे ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ यतनी ॥

परवतिथीये पोषधकरिये । शुद्धआगमनेअनुसरिये । वली आठकर्मनेहरिये । सलूणा भावभलेआराधो । एतो आराधि सिवसुखसाधो । सलूणा आठमतिथी आराधो ॥ १ ॥ आठम दोय चउदसकहिये । अमावस पूनिमलहिये । एह छतिथीचारित्रवहिये ॥ स० ॥भा०॥ ॥२॥ वली कल्याणकतिथीजाणो । पजुषणमनमांआणो । इत्यादिकपर्वपिछाणो ॥ स० ॥ भा० ॥ ॥ ३ ॥ बीजेअंगे पांचमेअंगे । उपाशकदशासुखसंगे । आवश्यकटीकाउमंगे ॥ स० ॥ भा० ॥ ४ ॥ इत्यादिकआगमसाखे । परवतिथीये पोषधभाखे । विधियुतकरतां फलचाखे ॥ स० ॥ भा० ॥ ५ ॥ जे नित्यपोषधने ताणे । आगमविधि ते नविजाणे । हरिभद्र वचनपरमाणे ॥ स० ॥ भा० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ जइने कहेजो माराबालाजीरे ॥ एदेशी ॥

आठम परवतिथीकही । माराबालाजीरे । आराधो गुण

गेह । जगगुरुवंदिये । मारावालाजीरे । एहतिथी कल्याणक-
घणा । मारावालाजीरे, त्रिहुंकालनागिणोतेह । जगगुरु वं० ॥
मारावालाजीरे ॥ १ ॥ आचारंगमांभाखिया ॥ मा० ॥ वा० ॥
भावनाअध्ययनसार ॥ ज० ॥ मा० ॥ ठाणांगठाणेपांचमे ॥
मा० ॥ वा० ॥ कल्पसूत्र मनुहार ॥ ज० ॥ वं० ॥ २ ॥ आ-
गम प्रकरणचरित्रघणा ॥ मा० ॥ वा० ॥ एमांप्रकटपणेतूंजोय ॥
ज० ॥ वं० ॥ छकल्याणक वीरना ॥ मा० ॥ वा० ॥ आगम-
मांहेहोय ॥ ज० ॥ वं० ॥ ३ ॥ पजूसणकल्पेकह्यो ॥ मा० ॥
वा० ॥ पचासदिवसप्रमाण । तेह नवि मानेमानथी ॥ मा० ॥
वा० ॥ जिनआज्ञा सुखखाण ॥ ज० ॥ वं० ॥ ४ ॥ इमअनेक-
कल्पनाकरि ॥ मा० ॥ वा० ॥ मनमान्योमानेतेह ॥ ज० ॥
वं० ॥ तुजआगममुजमनवस्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ एहज भव-
भवहोय ॥ ज० ॥ वं० ॥ ५ ॥ विसंवादघणोपड्यो ॥ मा० ॥
वा० ॥ केहनेकहियेजाय ॥ ज० ॥ वं० ॥ अतिशयज्ञानीतणो-
पड्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥ विरहते केमखमाय ॥ ज० ॥ वं०
॥ ६ ॥ दुःखम कालमांकपनो ॥ मा० ॥ वा० ॥ दक्षिणभरत-
मझार ॥ ज० ॥ वं ॥ प्रभूनोसरणो मेग्रह्यो ॥ मा० ॥ वा० ॥
प्रभुछो प्राणआधार ॥ ज० ॥ वं० ॥ ७ ॥ तारकतारोतातजी ॥
मा० ॥ वा० ॥ हुंछुंसेवकतुज्झ ॥ ज० ॥ वं० ॥ अपराधिघणा-
तारिया ॥ मा० ॥ वा० ॥ केमविसारसोमुज ॥ ज० ॥ वं०
॥ ८ ॥ कलस श्रीवीरजिनवरभविकसुखकर मात त्रिशला-
नंदनो । मैंथुण्यो आगमभक्तिसंयुत दुरितकर्मनिकंदनो ।
शुभवरसछगणीसेचमोत्तर भाद्रवसुदिआठमसमें, कृपाचंद्रसूरि-

स्तवनकीधो अनुजवज्ञानप्रकाशमें ॥ ए ॥ इति अष्टमीवृद्ध स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ इग्यारसनो वृद्धस्तवनं लिख्यते ॥

समवसरणबेठा जगवंत । धरमप्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदाबेठीजुम्री । मिगशिरशुदि इग्यारसवम्री ॥ १ ॥ मल्लि-नाथनातीनकल्याण । जनमदीक्षाने केवलज्ञान ॥ अरदीक्षा-लीधी रूवम्री ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिने उपनुं केवलज्ञान । पांच-कल्याणकअतिपरधान ॥ एतिथीनी महिमाएवम्री ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांचजरत ऐरवतइमहीज । पांचकल्याणकहुवेतिम-हीज ॥ पचासनीसंख्यापरगम्री ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अना-गत गिणताएम । दोढसेकल्याणक थायेतेम ॥ कुणतिथीछे एतिथीजेवम्री ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनंतचोवीशी इणपरगिणो । लाजअनंत उपवासांतणो ॥ एतिथी सहुतिथी शिरराखम्री ॥ मि० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लिनाथ । एकदिवस संयम-व्रतसाथ, मौनतणीपरिव्रतइमपम्री ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठपुहरी पोसोलीजियें । चोविहारविधिशुं कीजियें ॥ पणपरमादन-कीजेंघम्री ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस इग्यारे कीजेंउपवास । जाव-जीवपण अधिकउल्हास ॥ ए तिथी मोक्षतणी पावम्री ॥ मि० ॥ ए ॥ ऊजमणुं कीजें श्रीकार । ज्ञाननाउपगरण इग्यारेइग्यार॥ करोकाउसग्ग गुरुपायेपम्री ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरेस्नात्रकरीजें-वली । पोथीपूजीजें मनरली ॥ मुगतिपुरी कीजेंढूकम्री ॥ मि० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारसमहोटुंपर्व । आराध्यांसुखलहियें सर्व॥ व्रतपच्चरकाणकरोआंखम्री ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेशलसोलइक्या-

सीसमें । कीधुंस्तवनसहूमनगमे ॥ समयसुंदर कहेकरोध्यावमी॥
मि० ॥ १३॥ इति एकादशीवृध्द स्तवनंसंपूर्णम् ॥

॥ अथ पंचमी वृध्दस्तवनं लिख्यते ॥

प्रणमुं श्रीगुरुपाय । निर्मलज्ञानउपाय ॥ पंचमीतपभणुंए ।
जन्मसफलगिणुंए ॥ १ ॥ चोवीसमोजिनचंद । केवलज्ञान-
दिणंद ॥ त्रिगडे गहगह्योए । भवियणने कह्योए ॥ २ ॥ ज्ञान-
वडो संसार । ज्ञानमुगतिदातार ॥ ज्ञानदीवोकह्योए साचो
सर्दह्योए ॥ ३ ॥ ज्ञानलोचनसुविलास । लोकालोकप्रकाश ॥
ज्ञानविना पशुए । नरजाणेकिशुंए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक-
जाण । भगवतीसूत्र प्रमाण॥ ज्ञानीसर्वतुए । किरियादेशतुए॥
॥ ५ ॥ ज्ञानीश्वासोश्वास । करमकरेजेनास ॥ नारकीनेसहीए।
कोडवरसकहीए ॥ ६ ॥ ज्ञानतणो अधिकार । बोल्यासूत्र-
मझार ॥ किरियाछेसहीए ॥ ७ ॥ पण पाछेंकहीए ॥ किरिया-
सहित जो ज्ञान । हुवे तोअति परधान ॥ सोनोने सूरोए ।
शंखदूधेंभर्योए ॥ ८ ॥ महानिशीथमझार । पंचमीअक्षरसार॥
भगवंतभाखीयोए गणधरसाखियोए ॥ ए ॥

॥ ढाल २ जी ॥ कालहरानी एदेशी ॥

पंचमीतपविधिसांभलो । जिमपामो भवपारोरे । श्रीअरि-
हंतइमउपदिशे । भवियणने हितकारोरे ॥ पंच० ॥ १ ॥
मिगसरमाहफागुणभला । जेठ आषाढवैशाखोरे ॥ इण षट-
मासेंलीजियें । शुभदिन सद्गुरुसाखोरे ॥ पंच० ॥ २ ॥ देव-
जुहारीदेहरें । गीतार्थगुरुवंदीरे ॥ पोथीपूजोज्ञाननी, सगति-
हुवेतोनंदीरे ॥ पंच० ॥ ३ ॥ बेकरजोडीभावशुं । गुरूमुखकरो

उपवासोरे ॥ पंचमीपडिक्कमणोकरो । पढोपंडितगुरुपासोरे॥४॥ जिणदिन पंचमीतपकरो । तिणदिन आरंभटालोरे ॥ पंचमी स्तवनथुईकहो । ब्रह्मचारिज पिणपालोरे ॥ ५ ॥ पंचमास लघुपंचमी । जावजीव उत्कृष्टीरे ॥ पांचवरसपंचमासनी । पंचमी करो शुभदृष्टिरे ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥

हिव भवियणरे पंचमीऊजमणोसुणो । घरसारूरे वारूधन-खरचोघणो ॥ एअवसररे आवंतांवलि दोहिलो । पुण्यजोगेरे धनपामंतांसोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धनपामंतां पण धर्मकाजकिहांवली । पंचमीदिन गुरुपास आवी कीजियें काउसग्गरली ॥ त्रणज्ञान दरसन चरणटीकीदेइ पुस्तकपूजियें। थापनापहिलीपूजकेशरसुगुरुसेवा कीजियें ॥१॥ढाल॥सिद्धांतनी रेपांचपरतवीटांगणा। पांचपूठारे मुखमल सूत्र प्रमुखतणा ॥ पांच-डोरारे लेखण पांचमजीसणा । वासकूंपारे कांबीवारू वरतणा॥ उल्लालो ॥ वरतणावारू वलीय कमली पांचझिलमिल अति-भली । स्थापनाचारिज पांचठवणी मुहपत्तीपरूपाटली ॥ पट-सूत्रपाटी पंचकोथल पंचनवकरवालियां । इणपरेंश्रावककरे पांच-मीऊजमणुंउजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलिदेहरेरे स्नात्रमहो-त्सवकीजियें ॥ घरसारूरे दान वलितिहांदीजियें ॥ प्रतिमाजी-नेरे आगलढोवणुंढोइयें । पूजानारेजेजउपगरणजोइयें॥उल्लालो॥ जोइयेंउपगरण देवपूजा काचकलश भृंगारए । आरतिमंगल थालदीवो धूपधाणुंसारए ॥ घनसार केशर अगर सूकरू अंगलूहणोदीसए । पंचपंचसघली वस्तुढोवो सगतिशुंपचवी-

शए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमीतारे साहम्मीसर्वजिमाडियें । रात्रिजोगेंरेगीतरसालगवाडियें ॥ इणकरणीरे करतां ज्ञानआराधियें । ज्ञानदरिसणरे उत्तम मारगसाधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियेंमारग एहकरणीज्ञानलहियें निरमलो । सुरलोकनें नरलोकमांहिज्ञानवंतते आगलो ॥ अनुक्रमेंकेवलज्ञानपामी सासतासुख जेलहे । जेकरे पंचमीतपअखंडित वीरजिनवरइमकहे ॥ ४ ॥ कलश ॥ इम पंचमीतपफलप्ररूपक वर्द्धमानजिनेसरो ॥ में थूण्यो श्रीअरिहंतभगवंत । अतुलबलअलवेसरो ॥ जयवंतश्रीजिनचंदसूरिज सकलचंदनमंसियो ॥ वाचनाचारिजसमयसुंदर भक्ति भावप्रशंसियो । वारि भक्तिभाव प्रशंसियो ॥ २४ ॥ इतिपंचमीवृद्धस्तवनं संपूर्णं ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टकं लिख्यते ॥

श्रीइंद्रभूतिं वसुभूतिपुत्रं । पृथ्वीभवं गौतमगोत्ररत्नं ॥ स्तुवंति देवासुरमानवेंद्राः । स गौतमो यछतु वांछितंमे ॥ १ ॥ श्रीवर्द्धमानात् त्रिपदीमवाप्य । मुहूर्त्तमात्रेण कृतानि येन ॥ अंगानि पूर्वाणि चतुर्दशापि । स गौतमो यछतु वांछितं मे ॥ २॥ श्रीवीरनाथेन पुराप्रणीतं । मंत्रं महानंदसुखाय यस्य ॥ ध्यायंत्यमी सूरिवराः समग्राः । स गौतमो यछतु वांछितं मे ॥ ३ ॥ यस्याभिधानं मुनयोपि सर्वे । गृण्हंति भिक्षाभ्रमणस्य काले ॥ मिष्टान्नपानांबरपूर्णकामाः । स गौतमो यछतु वांछित मे ॥ ४ ॥ अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या । ययौ जिनानां पदवंदनाय ॥ निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः । स गौतमो यछतु वांछितं मे ॥ ५ ॥ त्रिपंचसंख्याशततापसानां । तपःकृपानामपुनर्भवाय ॥

अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता । स गौतमो यछतु वांछितं मे ॥६॥ सदक्षणं जोजनमेव देयं । साधर्मिकं संघसपर्ययेव ॥ केवल्यवस्त्रं प्रददौ मुनीनां । सगौतमो यछतु वांछितं मे ॥ ७ ॥ शिवंगते जर्त्तरिवीरनाथे । युगप्रधानत्वमिहैव मत्वा ॥ पट्टाजिषेको- विदधे सुरेंद्रैः । स गौतमो यछतु वांछितं मे ॥८॥ श्रीगौतमस्या- ष्टकमादरेण प्रबोधकाले मुनिपुंगवा ये ॥ पठंति ते सूरिपदं सदै- वानंदं लजंते नितरां क्रमेण ॥ ए ॥ इतिश्रीगौतमस्याष्टकम् ॥

॥ ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिंतामणीयते ॐ ह्रीं धर णेंद्रवैरोट्या पद्मादेवीयुतायते ॥ १ ॥ शांतितुष्टि महापुष्टि, धृतिकीर्तिविधायिने, ॐ ह्रीं दुष्टव्यालवेत्तालसर्वाधिव्याधि- नाशने ॥२॥जयाजिताख्या विजयाख्या पराजितयान्विते, दिक्- पालैः ग्रहैर्यक्षै, विंद्यादेवीजिरन्विते ॥ ३ ॥ ॐ असि आउसाय, नमः त्रैलोक्यनाथतां, चतुषष्टि सुरेंद्रास्ते, जासंते छत्रचामरैः ॥ ४ ॥ श्रीसंखेश्वरमंरुन पार्श्वजिनप्रणत कल्पतरु कल्पः, चूरयविघ्नव्रातं, पूरय मे वांछितं नाथ ॥ ५ ॥ इति त्रयोविंश- तिजिनस्तोत्रम् ॥

॥ अथ पंचषष्टियंत्रगर्भित श्रीचतुर्विंशति जिनस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ आदौ नेमिजिनं स्तौमि । संजवं सुविधिंस्तथा ॥ धर्मनाथं महादेवं । शांतिं शांतिकरं सदा ॥ १॥ अनंतं सुव्रतं जक्त्या ने- मिनाथं जिनोत्तमं ॥ अजितं जितकंदर्प्पं । चंद्रं चंद्रसमप्रजं ॥ २ ॥ आदिनाथं महादेवं । सुपार्श्वं विमलं जिनं ॥ मल्लिनाथं गुणोपेतं धनुषां पंचविंशति ॥ ३ ॥ अरनाथं महावीरं । सुमतिं

चजगद्गुरुं ॥ श्रीपद्मप्रभनामानं । वासुपूज्यं सुरैर्नतं ॥ ४ ॥
शीतलं शीतलं लोके । श्रेयांसं श्रेयसे सदा ॥ कुंथुनाथं च
वामेयं । श्रीअभिनंदनं विभुं ॥ ५ ॥ जिनानां नामभिर्बद्धः
पंचषष्टिसमुद्भवः ॥ यंत्रोयं राजते यत्र । तत्र सौख्यं निरंतरं ॥६॥
यस्मिन् गृहे महाभक्त्या । यंत्रोयं पूज्यते बुधैः ॥ भूतप्रेतपि-
शाचादि । भयं तत्र नविद्यते ॥ ७ ॥ सकलगुणनिधानं यंत्रमेनं
विशुद्धं ॥ हृदयकमलकोशे धीमतां ध्येयरूपं । जय तिलकगुरोः
श्रीसूरिराजस्य शिष्यो, वदति सुखनिदानं मोक्षलक्ष्मीनिवासं
॥ ८ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनानां अष्टकं संपूर्णम् ॥

॥ अथ आत्मरक्षास्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ परमेष्ठिनमस्कारं । सारं नवपदात्मकं ॥ आत्मरक्षाकरं
वज्र । पंजराभं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐनमो अरिहंताणं ॥
शिरस्कं शिरसि स्थितं । ॐनमो सव्वसिद्धाणं । मुखे मुखपटंवरं
॥ २ ॥ ॐनमो आयरिआणं । अंगरक्षातिशायिनी ॥ ॐनमो
उवज्झायाणं । आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥ ३ ॥ ॐनमो लोएसव्व-
साहूणं । मोचके पादयोः शुभे ॥ एसोपंचनमुक्कारो शिलावज्र-
मही तले ॥ ४ ॥ सव्वपावप्पणासणो । वप्रोवज्रमयोवहि ॥
मंगलाणंचसव्वेसिं । खादिरंगारखातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं
ज्ञेयं । पढमंहवइमंगलं ॥ वप्रोपरिवज्रमयं पिधानं देहरक्षणे
॥ ६ ॥ महाप्रभावारक्षेयं । क्षुद्रोपद्रवनाशनी ॥ परमेष्ठि-
पदोद्भूता, कथितापूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां ।
परमेष्ठिपदैःसदा ॥ तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि
कदाचन ॥ ८ ॥ इति आत्मरक्षास्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ श्री थंभणापार्श्वनाथजीनो स्त० लि० ॥ ढाल ॥

प्रभु प्रणमुंरे पासजिनेसरथंभणो । गुणगाइवारे मुझमन-
ऊलट अतिघणो । ज्ञानिविणरे एहनी आदिनकोलहै । तोहि-
पिणरे गीतारथगुरु इमकहै । त्रूटक ॥ इमकहे शास्त्रतणे
प्रमाणे रामदशरथनंदनें । बांधवापाजे सीतकाजे समुद्रतट एकण-
वने । तिहांरह्या बांधव रामलछमणसाथिसेना अतिघणी । प्रासाद
एक उत्तम तोरण थापना जिनवरतणी । ढाल तिहांमूरतिरे मूल-
गुंभारेपासनी । मनवंछितरे आसापूरे आसनी रामराजारे दिन
प्रतिपूजासाचवे । करजोडिरे वे बांधव इमवीनवे ऊ०वीनवेस्वामी
तुझ प्रसादे जलधि जलथंभेकिमें । तोपाजबांधुं लंकसाधुं इमकही
प्रभुपायनामें । बहुपूज करतां ध्यान धरतां सातमासगया जिसे ।
नव दिवसअधिकाथया ऊपरिजलधिजलथंभ्यो तिसे १॥ ढाल॥

ए अतिशयरे अचरिजपेख्यो प्रभुतणो । तिणकारणरे नाम-
दीयो तसुथंभणो । जलऊपरिरे पाजकरीपत्थरतणी, गढलंकारे
साधेवा सीताभणी ॥ त्रूटक गढलंकसाधी सीतआणी तेण
वनआव्यावली । दिनआठअठाइमहोछवकीया मनपूगी रली ।
श्रीरामराजा शुद्धश्रावक विनीतानगरीवसे । वीशमाजिनवर
तणेंवारे इमथया गुरूउपदिसे ॥ २ ॥ ढाल ॥ इणअनुक्रमरे
केतलोकालगयोवही । ते प्रतिमारे तिणवनमें निश्चलरही ।
इणअवसररे इंद्रतणेंआएसकरी । सायरतटरे सोवनमेद्वारापुरी ।
त्रुटक द्वारिकानगरी कृष्णराजा अर्द्धभरततणोधणी । तिहांवसै
यादवकोडिछप्पन वहै आग्या जिणतणी । तिण काल तिणवन
तेह तीरथतेहनीमहिमासुणी । सारंगपाणी भावआणी आव्या-

तिहां यात्राभणी ॥ ४ ॥ ढाल २ जी ॥ आव्योतिहां नरहरि जिणहरमनउल्लास । मनमेंआणंदे वंदे थंभणपास । पेखेअतिनव-लीपूजाप्रभुजीनेंदेह । एकेणेंकीधी इममनथयो संदेह । संदेहथयो अटवीचिहुंपासे नहीं मानवसंचार । केणकरी विद्याधर सुर-वर पूजासतर प्रकार । इसोविमासी मंरूपअंतर रह्याजुं गुपतेठाम । मध्यरातपातालेआवीवासग विसहरसाम ॥५॥ तिहांआवी प्रणमें वैनाटिकआदेस । मिलिनागकुंमारी विरचेअदभुतवेस । शक्रस्तवपभणें जाणयाश्रावकएह । हरिप्रगट्यो ततखिण साहमीतणेससनेह ॥ ससनेहवासग कृष्णनरेसर बेठा बिंबवखाणे । ए श्रीजिणवरपासजिणेसरआदि न कोई जाणे । असीसहसवरससो मेपूज्या जेहुंतापायाले । धरण एक प्रासाद-कराव्यौ थाप्याएहजिनालै ॥ ६ ॥ सहुवातकहीनें वासगग-योपायाले । श्रीकृष्णनरेसरमनचिंते ततकालै ॥ जो एहवो तीरथ हुवेद्वारिकामझार । तोजाणुं नरभवसफलथयोअवतार । सफलजनमकरिवानेंकाजे तेह बिंब तिहांआणे । श्रीद्वारिका-हेममें जिणवरथाप्याप्रगट प्रमाणे । घणे कालपूजा तिहांपामी करमनिकाचितजाणी । श्रावकनेंसुपनांतरआवी देववदेइमवाणी ॥ ७ ॥ प्रभु प्रतिमा वाहणलेइ समुद्रमझारि । मुंके ज्योनगरी थास्ये अवरप्रकार । तिणसागर अंतर कालगयो बहुजाम । दक्खिण दिसिउत्तम कुंतीनगरीठाम । कुंतीनगरीजैनवसै जिहां श्रावकसागरदत्त । वाहणसातवहैव्यापारे पोते परघलवित्त । अन्यदिवससायरविचवहतां । जिहां छे थंभणपाश । ऊपरि आव्या थंभ्यावाहण ते सविथयाउदास ॥ ८ ॥ ढाल ३ जी ॥

मासदिवसवाणीथई अंबरसुरराय । प्रतिमाथंजणपासनी सायरजलमांय । सुरप्रगट्यो जिणसासणें ॥ सुरकहेवाणी एहप्रतिमा जावसुं प्रगटकरो । जई जैनकुंतीनगरीजिणहर मूलनायकएहधरो । तेबिंबकुंतीमांहिंथाप्यो कहैवहु श्रावकतिहां । ए सकलतीरथनाथ समरथ पुन्यजोगमिल्यो इहां ॥ ए ॥ इणिअवसर दसउरपुरे पालत्तइसूर । विद्यावल अंबर जमें अतिसयजरपूर । तीरथजायजिणहरनमें । ते नमें सेत्रुंजप्रमुखगिरिवर सदा पाखीपारणें, पालीयतांणें रह्यां थांणें नागारजुनजोगीपणें । ते धातुसोवनकाजधमतां मासछे रसकरे । करिकोप जैरववीर नाखे रूपपंखीनो धरे ॥ १० ॥ तिण पालत्तै सूरिनें जाण्यो एहमहंत । पूछे को सुरदाखवो अतिसयगुणवंत । कृपाकरी मुजजाखवो । गुरु तेह जाखेजेह, थंजे उपद्रव सुरनरतणों । तिण कह्यो कुंतीनें प्रसादें पासछे प्रजुथंजणों । कुणयक्ष वीरवेतालव्यंतर सहू तसु सेवाकरे । तेहनीदृष्टे साधविद्या जेमतुमवंछित सरे ॥ ११ ॥ विद्यापिणआकर्षणी । हुंती जोगीनेंपास । ते प्रतिमाआणीतिहां थापी निजआवास । सोवनरससीधो जिहां । रस तिहां सीधो सुजस लीधो नदी सेढीनें तटे । गुरुनें जणाव्यो तिणाकहाव्यो बिंबजंमाख्योघटे । इणकाल धरमसुथानथोभा हुसीमलेछाइणइहां । खाखरातले सेढिकातीरे । बिंबजंमाख्योतिहां ॥ १२ ॥ ढाल ४ थी ॥ मेघआगमसही नदीकलटिवही वेलुकाबिंबऊपरवलैए । तेणजुंइधणचरे खीर सुरहीझरे चीकणीजूमि खाखरतले ए । केतलादिनपछे सुगुरुखरतरगछे । श्रीअजयदेवसूरी सरूए । षटविगयपरिहरी उग्रतपआदरी ।

रगत्तपित्ती थयामुनिवरूए । तेरगत्तपित्तीगलतकाया चित्तमें-
चिंताकरे । अधरात सासणदेवीआवी कोकमा नवकरधरे । ए
सूत्रतूं सुलभाइसुपरे ताम गुरुजंपेइसो । जोथायसी मुभ नीरो-
गकाया तो सही उखेलसुं ॥ १३ ॥ तामदेवीकहै नदीय सेढी-
वहै । तैणतट वृक्षखाखरतलेए । तिहां तुह्मेजाइवो तवनकरिवो
नवो प्रगटथासी प्रभुथंभणोए । तेहनें स्नात्रजले रोगसवि
जायटले । इमकहीयगई सासणसुरीए । संघसगलोमिली तिहां
जाइमनरली । ताम धरणिंदध्यानें धरीए । तिहांकरी जयति-
हुअणबत्तीसीपासप्रगट्यातत्खिणें । तसु सनात्रनीरे सुख-
सरीरे धन्यधन्य सहुकोभणें ॥ तिहां थानथाप्यो सुजस-
व्याप्यो थयो परचोअतिघणो । तेहनेंनामें तेणगामें गामवास्यो-
थंभणो ॥ १४ ॥ थईयमहिमा घणी पाशथंभणतणी सुगुरुकाया
नवपल्लवीए । संघआवेघणा करेवधावणा महियलकीरतवि-
स्तरीए । सुपनजे देवता कोकभानवहुतासूत्रते सूत्रसिद्धांतनामें ।
वृत्ति नव अंगनी भेदनवभंगनी रची आचारज तेणगामें । ते तेण
गामें सहुयपामें आसकरजोआवए । बहुभावभत्ते एकचित्ते सेवतां
सुखपावए । एकदागुरु धरणिंदध्यानें प्रगटथई पदमावती । श्रीअ-
भयदेवसुरिंदआगलि । इम कहै सांभलयती ॥ १५ ॥ स्तवन जे तुह्म-
कस्यो मंत्रअतिशयभस्यो अंतितसु गाहाजे बेकहीए । तेहगुणीये
जिहां इंद्रआवे तिहां कष्ट विणतेह गुणविनहीए तेह भंडारवीका-
जसंभारवी । अवरइण तवन महिमाघणीए । समरतां संपदा रोग-
नावे कदा सदा आवश्यक धुरिभणीए । पडिक्कमणा नितभणेंधु-
रि एहविधिखरतरतणीए । इमकही सासणिदेवसामणि गई निज

थानकल्लणीए । केतले दिवसे देसगुजर सयलमलेछायण थयो ।
ल्लो गामजाणी बिंबआंणी । नयरश्रीखंल्लायते ठव्यो ॥ १६ ॥
खंल्लनयर सिरिपासजिणेसरू । दिनदिन दीपे अतीअलवेसरू ।
जात्रकरेवा मुफहुंतीरली । प्रत्नुमें जेव्यो आससहूफली । मुफआस
सफली थईयसांमी जाम जेव्याजगपती। सोज्नागसुंदर करोउन्नति
करुं एतीवीनती । अश्वसेन वामादेवीअंगजध्यानमनतोराधरुं ।
करिकृपा सामी सीसनामी सदा तुह्मसेवाकरुं ॥ १७ ॥ कलश ॥
इम स्तव्यो थंल्लणपाससामी नगरश्रीखंल्लाइते । जिम सुगुरुश्री
मुखसुणीवांणी सास्त्रआगमसंमते । ए आदिमूरति सकल
सूरति सेवतां सुखसंपए । मनज्ञावआणी लाज्नजाणी कुशल
लाज्नपयंपए ॥ १८ ॥ इतिश्रीथंल्लणपार्श्वनाथजीरो स्तवन
संपूर्णम् ॥ * ॥

॥ अथ अष्टभयनिवारणछंदलिख्यते ॥

॥ ॥ डुहा ॥ सरसवचनदे सरसती ॥ एहअरज अव-
धार ॥ प्रारथियापहकैनहीं ॥ उत्तमएआचार ॥ १ ॥ हितक-
रजे मोसुंहिवे ॥ दीजेवयणडुरस्स ॥ कवियणपिण शुणनेंकहे ॥
सखरो घणुंसरस्स ॥ २ ॥ गुणगिरुउ गौफी धणी, पारसनाथ-
प्रगट्ट ॥ मनसुध्धे मोटांतणां ॥ गुणगातां गहगट्ट ॥ ३ ॥ छंद
नाराच ॥ ॥ प्रसिद्धिवुद्धिसिद्धिनिद्धि रिद्धि वृद्धिपूरए ॥ कल-
त्तपुत्त कित्तिवित्ति वध्धतेसनूरये ॥ वियोगसोगरोगलोग विग्घ
सिग्घघायकं ॥ प्रगट्टदेव नित्तमेव सेवो पासनायकं ॥ ४ ॥
गुमांनमोरु हत्थजोरुदेवकोफि वग्गये ॥ अनूपऌूपचूंपधारिआइ-
पायलग्गये ॥ पहुबद्दु सुकित्तनित्त सव्वसोल्नलायकं ॥ प्र० ॥ ५ ॥

कुबोहलोह द्रोहकोहमोहमाणवज्जियं ॥ अनंतकांत शांतदांत रूपमैंण लज्जियं ॥ अशेष शुद्धतत्तजुत्तसोजयेअमायकं ॥प्र०॥६॥ विसालभालसुविसाल अद्धचंदलज्जियं ॥ रजहथीरिसाइ जाण-एथ आइरज्जियं । सुनैणकंद गंधकांतकाजे भोरा रायकं ॥प्र०॥७॥ कपूरपूर कस्सतूरकुंकमातुरंगए । अरग्गजाअग्गमें रहेगरक्क-अंगए । अछेहगेहदुत्तिदेह सब्बहीसुहायकं ॥ प्र० ॥ ८ ॥ मृदंगदोंदोंदों धप्पमप्प वजाये । नफेरभेरझल्लरी नीसाण मेघगज्जाए । तटक्कतांन थेई थेई लक्खसुक्खदायकं ॥ प्र० ॥ ९ ॥ दुहा ॥ करि १ केहरि २ दव ३ कुद्धाहि ४ राक्ष ५ समुद्दह ६ रोग ७ अतिबंधण ८ भय अठ टले । सांमनांमसंयोग ॥ १० ॥ छंदभुजंगी ॥ छुंरित्त छाकोफुकंतोफुकोला । लपक्कैविलग्गीय-लीमाललोला । वलेटे वलाकावली सुंडदोला, झरेनिज्झरां जेममदैकपोला ॥ ११ ॥ पहुचालतो जाणपाहामतोला । झल-क्कैललक्कावतो लालझोला । इसौ दूठपूठै पडंताअकोला । जपं-तांकरे नांचिनीमातचौला ॥ १२ ॥ इतिहस्तिभयनिवारणं ॥ महा सद्दसीहं अबीहं अदंडं, भरेफाल आफालतो पुछफुंडं । झिगै फाडडाचौ वमंवजमुंडं । महातिक्खनक्खं रखेरोखछंडं ॥ १३ ॥ फुरक्कावतो मुंछ फाडंततुंडं । ललक्कंतलोलाविकट्टं विहंडं । धणीपासचौनाम ध्यानंधरंडं । टलेश्याल ज्युं सींह होएअहंडं ॥ १४ ॥ इतिसिंघभयनिवारणं ॥ जलांजंगलांमै जटाजूटजाला । घणांझाडभजाडमै अग्गझाला । बहु मिग्गवग्गं पशुपंखिवाला । बलंताकमेडाचिडाजंतिजाला ॥ १५ ॥ धुंधै धूमलग्गो कीयानग्गकाला, झलोझाछरूंखै टह्या नांहिटाला ।

वरूसंकटे एणआयांविचाला । प्रभु नामनीरे वुफै तत्तकाला ॥ १६ ॥ इतिअग्निभयनिवारणं ॥ कलूकालरूपि महाविकरालं । फणाटोपरोपै महाकोप जालं । वलक्कैवलंतो चलंतोकरालं । जिणैंफूंकसूकै तरुम्मालरूालं ॥ १७ ॥ हलाहालसंलोलियं विक्खलालं । रहै लाललोचन्न दोजीहवालं । धरंताप्रभूनाम-रिदेविचालं । सही सावहोवै जिसीफुल्लमालं ॥ १८ ॥ इतिसर्प-भयनिवारणं ॥ भिरूभूपभूपे अधिकेअटक्के । खलां हारूतूटै खरूग्गां षटक्कै । परांहैवरां पारूनाखैपटक्कै । धुरां सिंधुरांकंधरा भूधटक्कै ॥ १९ ॥ परूप्राणसंधाणवांणैवटक्कै । डुक्कै केइ हाथाल-रोसेहटक्कै । झलाझालगोले हु नालैभटक्कै । तुटै तुंरुमुंरु प्रचं-रूातटक्कै ॥ २० ॥ ठगोहासलोहापरूंता ठिटक्कै । झुक्कैसूरझंझेड नांखैझटक्कै । प्रभुनामलेतांइ सही अटक्कै । कदे वालवांको नहोवैकटक्कै ॥ २१ ॥ इतियुद्धभयनिवारणं ॥ जतन्नैघणें कोईवैसेजिहांजे । अथग्गेजले आइकुवायवाजे । घटाटोप मेघा-घरूरूंतिगाजे । डुवक्कै तरंगा विरंगाडुवाजे ॥ २२ ॥ छिचापिच्च-लागी झरूीतालभाजे । अहोकोइराखैअठैअम्मकाजे । इसेसं-कटे जेजपे जैन राजे । सही पारपामें तिके सुखसाजे ॥ २३ ॥ इतिजलभय निवारणं ॥ गरूगुंबरू गोलकंहीयहोरूी । हरस्सं खसं वधसं गांठफोरूी । टलेगोरूथीकोढ अट्ठाररोरूी ॥ महाता-पसंतापआतंककोरूी ॥ २४ ॥ नहोवैकदे कायमें कांइखोरूी । सहुआधिव्याधि सही जाइछोरूी । जिनंदं नमैंमन्नमैं मान मोरूी । रहै सो सदासुखसंपत्तिजोरूी ॥ २५ ॥ इतिरोग भयनिवारणं ॥ अमुंठा वलेगा वलेमन्नखोटा । जियां चक्खुं चुंचीलुह्या गाल-

खोटा । वलेपाघवांकी लपेटालंगोटा । सहेव्यासह्यासवला हाथ-सोटा ॥ २६ ॥ दीयैकोरफादेह दोलादवोटा । वदैवोलवांका फरूंतफोटा । पव्याबंदिखांनैं महादुःखमोटा । प्रजुनामश्री वेग थायैविबूटा ॥ २७ ॥ इतिवंदिज्ञयनिवारणं ॥ नमंता जिणेसं सदामन्नरागै । सहीये महादुक्ज्ञयश्रज्ञागै । रली लोकलरकं लुली पायलागै । दिसोदिस्समांहै । जसोजस्सजागै-॥ २८ ॥ कलश ॥ परतिखजिनवरपास । श्रास उल्लासहश्र-प्पण । विविधजासगुणवाददासचा दालदकप्पण । चैणदैण जसुचरण । ईति श्रतिज्ञीतिनिवारण । लीललाठ लखगान विमलकीरत्ति वधारण । दिणपति जेम दीपंति डुति । विमल-चंदमुखळविकरण । दौलत्तिविजय हरखांदीयण । धरमसींह ध्यानहधरण ॥ २९ ॥ इति श्रष्टज्ञयनिवारणश्रीगौमीपार्श्वना-थजीकोछंद संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकीगगरनिसानि ॥

सरस्वतीमाता जगतविख्याता कवियणमातकहंदाहे, कास्मी-रांमंरूण डुखविहंरूण करवीणासोहंदाहे, सदगुरुगुणगाउं वंछितपाउं खरतरगच्छ सोहंदाहे, मंत्रि जिल्हागर बुधनो आगर सदगुरु तात कहंदाहे, १ माताजैतश्री रंज्ञाजिसफि तस कुखे गुरु उपजंदाहे, संवततेरेसेवरसेतीसे जन्म्या सुषहो वंदाहै, सेंतालेवरसे दीक्षाहरसे गुरुजिनचंद दियंदाहे, सितो होतरेपाटे श्रीसंघथाटे धोंधोंढोलघुरंदाहे, २ नियासिवरसे सखरेदिवसे सुरगपुरीपोचंदाहे, पुनमसोमवारे हरखश्रपारे मेला खूबमिलंदाहे, घसकेसररोलि ज्ञरीकचोलिकस्तुरीचरचं-

दाहे, लोवानसिलारसअंबरअगरधूपसुगंध धुकंदाहे, ३ गुरुच-
रणे आवे पूजा रचावे मनवंछितसुखपावंदाहे, गुलावचंमेलि
राइवेलि गुरुचरणेचाढंदाहे, नारेल पतासा खुरमाखासा सिर-
णीयां वाटंदाहे नरनारीआवे वहुगुणगावे वीणाताल वाजंदाहे
४ वाजे मृदंगाँ झुगलझंझा भेरी डुकरूघुरंदाहे, नाचेतिहां पातर
आवे जातर मुनिवरवहोतमिलंदाहे, सहुमनसापूरे नवलेनूरे
एकमनाध्यावंदाहे, मांगेसोपावे मनमेध्यावे आसातासपूरंदाहे५
पुरपट्टणगामे वहुते गामे थुंभझलाछाजंदाहे, देरावलदीपे डुस्म-
नछीपे जूनापिछकहंदाहे, मुनतानमरोटे सोहेकोटे गुरुविकाणे
छाजंदाहे, नागोरजोधांणे तिवरीथाणे सोजत सुखदियंदाहे,
६ जेसांण वीलारू सुखदेसारे मेरूतेमनमोहंदाहे, जालोरखंभा,
यत वरूविछायत सदगुरुनितसोहंदाहे, पाटणनेसुरत वहुजन-
पूजत नित महिमावाधंदाहे अहमदावादे श्रीसंघसाधे सदगुरु-
दरस दियंदाहे, ७ झुजनयरसाचोरे वहुतेजोरे उदेपुरे सोहंदाहे,
इरूरगढमंरूण डुखविहंरूणसवजनमनमोहंदाहे, इत्यादिक छामे
नवनवगामे देसपरदेस दिपंदाहे गुरुविषमीवाटे डुस्मनदाटे चोर-
धारू न लगंदाहे,८हस्तिमदमाता नाहरचीता सींघस्यालहोवंदाहे,
प्पासांजलपावे डुरितगमावे अपणा विरुदवहंदाहे, आपे निरध-
नियां वहुतलिछमियां मणिमाणक दियंदाहे, अपुत्यांपूतदिएघर-
सूतसद्गुरुदरसदियंदाहे, ए इम एकणजिहां कहुं गुणकेहां पार-
नकोपावंदाहे,संवतअढारेसे वरसपेतीसे जेठमासजाणंदाहे सात-
मउजवालीसोम सवारी दोलतजतीकहंदाहे, सदगुरुसुपसायां

एगुणगायां कोटमरोटवसंदाहे, नरनारीगावे वंछितगावे ऋद्धि-
सिद्धिनितवाधंदाहे, १० इति दादाजीगगरनिसानी संपूर्णम् ॥

॥ इग्यारसनो दोयढालनोस्तवन लि० ॥

॥ दुहा ॥ स्वस्तिश्रीमंगलकरण । हरणतापजिणचंद । वीर-
जिनेंददिनेंदसम । प्रणमुंधरिआनंद १ गौतमआदिगणधरा ।
श्रुतकेवलि सुविहाण । त्रिकरणयोगेवंदता । पामेकोडकल्याण
२ एकादशी तिथि वर्णवुं । शास्त्रतणै अनुसार । विधिपूर्वक
आराधतां । पामेभवनोपार ३ ढालपहली पणियारी नी ॥
नेमिजिनेसरउपदिशै, सुखकारिरेलोय सांभले कृष्णराजान
वालाहो द्वारिकानगरीसमवसस्या सु० रेवताचलउद्यान वा०
४ ॥ पर्वाराधन फलकह्यो सु० सांभलेपरषदा वार वा० पर्युष-
णचउमासाभला सु० नवपद ओलीसार वा० ५ ॥ पंचमी बीज
आठमकही ॥ सु० ॥ जिनकल्याणकजाण ॥ वा० ॥ एकादशी
इमजाणियै ॥ सु० ॥ पर्वाधिकमनआण ॥ वा० ॥ ६ ॥ मग-
सरसुदिएकादशी ॥ सु० ॥ पर्वमाहिश्रीकार ॥ वा० ॥ अरना-
थदीक्षाग्रही ॥ सु० ॥ पाम्याभवनोपार ॥ वा० ॥ ७ ॥ मल्लि-
जन्मसंजमलियो ॥ सु० ॥ पाम्योकेवलज्ञान ॥ वा० ॥ नमि-
नाथनेऊपनो ॥ सु० ॥ केवलनाण प्रधान ॥ वा० ॥ ८ ॥ पांचक-
ल्याणकअतिभला ॥ सु० ॥ थया इणभरतमझार ॥ वा० ॥
तिमहिज ऐरवतखेत्रमां ॥ सु० ॥ भाखेजगदाधार ॥ वा० ॥ ९ ॥
पांचभरत ऐरवतवलि ॥ सु० ॥ पांचकल्याणकजाण ॥ वा० ॥
दशखेत्रना इमजाणियै ॥ सु० ॥ पचाशकल्याणकआण ॥ वा०
॥ १० ॥ तीनकालगिणतांथकां ॥ सु० ॥ दोढसै कल्याणक

थाय ॥ वा० ॥ तिथीमांहि सिरोमणी ॥ सु० ॥ इग्यारससुखदाय ॥ वा० ॥ ११ ॥ अनंतकल्याणकऽणपरे ॥ सु० ॥ अनंतचोवीसीजोय ॥ वा० ॥ मौनकरीआराधिये ॥ सु० ॥ एहथी सिवसुखहोय वाला० ॥ १२ ॥ चोविहारउपवासथी ॥ सु० ॥ पोसहकरिनेसार ॥ वा० ॥ सुगुरुचरणसेविकरी ॥ सु० ॥ काउसग्गदिलधार ॥ वा० ॥ १३ ॥ मोनकरीमल्लिनाथजी ॥ सु० ॥ एकदिवस सुखकार ॥ वा० ॥ मौनप्रथा इणपरिथइ ॥ सु० ॥ लह्यो केवलश्रीकार ॥ वा० ॥ १४ ॥ (ढाल बीजी) माता त्रिशला फुलावे पुत्रपालणे ॥ ए देशी सुखकर देवनिरंजननेमजिनंद इमउपदिसै ॥ ए आंकणी ॥ भविजन भावधरिने सांभले श्रीजिनवाण । अमीरसवयणे श्रवणअंजलीभरपीवतां, एतोजाये भव भवनिर्मितकर्मनिवाण ॥ सुख० ॥ १५ ॥ भवियण अंगइग्यारेआराधवा तपविधि एकही, जेहथीपामे अनुपम महिमा अतुलअपार, वरसइग्यारेने मासएकादश तपकरो, संपूरणतपहुवा होवे मंगलकार ॥ सु० ॥ १६ ॥ भ० ॥ अंग अग्यारे लिखावे सुवरणअक्षरे पुस्तकपूठावणीनवकरवाली सार, कवली झिलमिल पाटीने वलि पाटली, वीटणामखमलरेसम वरतणा मनुहार ॥ सु० ॥ १७ ॥ भ० ॥ झोरालेखण झाबी वासकूंपावलि कोथली, वटवा मिजासणाने चंदरवा अधिकार, पूठीया चोपड रुमाल नानाभातिना, पाटा पाटलाने त्रिगडोरचै सुखकार ॥ सु० ॥ १८ ॥ भ० ॥ केसर सूखड खसकूचीने वाटकी, प्यालाने कलसा अंगलूहणादिल-ार, चामर छत्र त्रयने आभूषण रत्नेजड्या, रचियै, वासखेपा-

दिपूजा विविधिप्रकार ॥ सु० ॥ १ए॥ ज० ॥ देवपूजा तिमगु-रुपूजा विधिआदरो, करियै साहमीवछल धरियैजावविसाल, रात्रिजागोकरिजिनगुणगावैप्रीतसुं, अधिकोंधनखरचीने लहिये रंगरसाल ॥ सु० ॥२०॥ ज० ॥ इग्यारसनो तपसेवो जविजावसुं, सुव्रतसेठै पौषधथीचितलाय, चौरअग्नीना उपद्रवथी ते ऊगर्यो, एतिथी सेव्यांशिवमारगमांसुखेजवाय ॥ सु० ॥ २१ ॥ कलश ॥ इम नेमिजिनवर स्यामसुखकर सिवादेवीनंदनो । एकादशी-तप फलप्रकास्यो जविकजन आनंदनो, सर, नय निधि, जूवि-क्रमवरसैपोषवदिएकादशी, जिनकृपाचंद्रसूरिपजणैं सुगुरुसे-वोजह्रसी ॥ सु० ॥ २२ ॥ इति इग्यारसवृद्ध स्तवनम् ॥

॥ अथ नवपदवृद्धस्तवनं ॥

(दुहा) अरिहंतादिकपदतणो । ध्यानधरि मनमांहि, सिद्धचक्रगुणवरणवु, त्रिकरणधरिउछाहि ॥ १ ॥ राजग्रही नयरीजली । समवसर्यागणधार ॥ सिद्धचक्रगुणवरणव्या ते सुणजोअधिकार ॥ २ ॥ (ढाल पहली) जगजीवन जगवा-लहो ॥ एदेशी श्रीगौतमगणेसरु । पजणेजवि सुखकारलालरे । श्रेणिकपमुहासांजले । उत्तमधर्मविचार ला० श्री० ॥ ३ ॥ दुर्लजमानुष्यजवलही । सेवोश्रीजिनधर्म ला० दानादिकच-उजेदथी । आराधिलहोशर्म ला० श्री० ॥ ४ ॥ जावविना जे दानछे । सिवसुखतेहथी न थाय ला० सील ते निष्फललो-कमां, जावविनाकहिवाय ला० श्री० ॥ ५ ॥ जावविहूणोतप-सही । जववित्थारणहेतु ला० दानादिक जावेमिल्या । जव-सायरनासेतु ला० श्री० ॥ ६ ॥ जावमनो विषयिकह्यो, सालं-

वन मनआण ला० आलंबन वहु जातिना । नवपदमनमाआण ला० श्री० ॥७॥ अरिहंत सिद्ध आचारज । उवज्झाय साधुवखाण लालरे दर्शन ज्ञान चारित्रवलि । तप ए नवपदजाण ला० श्री० ॥८॥ढाल दूसरी ॥ जरतरीनी ॥ देशी ॥ नवपदध्यावो जविजना । त्रिकरण करिइकतारजी ॥ गौतमस्वामिउपदिसै, श्रेणिकनरपतिसारजी ॥ न०॥ए॥ अठारदोष दूरेटल्या । केवल ज्ञानप्रकाशजी ॥ देवदानवपति प्रणमता । प्रगटकरे तत्वखासजी न० ॥१०॥ एवा श्रीअरिहंतने । ध्यावोचतुरसुजाणजी ॥ जावसहित आराधतां । सिवसुखलहोमहिराण जी न० ॥ ११ ॥ पनरजेदप्रसिद्ध छे । कर्मरहितसुखदायजी ॥ सिद्धअनंतचतुष्कता । ध्यावोसिद्धलयलायजी न० ॥ १२ ॥ पंचाचारने पालता, परउपगारप्रधानजी ॥ शुद्धसिद्धांतवखाणता, आचारजश्रुतखानजी न० ॥१३॥ गणतृप्तिकरता जला । सूत्रअर्थनो दानजी । शिष्यादिकनेआपता, नमोउवझायसुजानजी ॥ १४ ॥ कर्मजूमिमांविचरता। रत्नत्रयनाधारजी ॥ सुमति गुपतिमुनिपालता । निकषायासुविचारजी न० ॥ १५ ॥ जिनप्रणीतजे सास्त्रमां । तत्वसद्दहणस्वरूपजी ॥ दरशनरयणप्रदीपने । धारोचितमांअनूपजी न० ॥ १६ ॥ जीवादिक पदार्थनो, वोधस्वरूपविचारजी ॥ विनयकरिसीखोसदा । नाणछे सर्वआधारजी न० ॥ १७ ॥ अशुजक्रियानोत्यागछै । सुजकिरिया अप्रमादजी ॥ उत्तरगुणनिरुक्थी । लहोचरणनो स्वादजी न० ॥ १८ ॥ सघनकरमतमहरणकुं । जानुसमोतप जाणजी ॥ कषायरहितबारजेदछै । तपदमनमांआणजी न० ॥ १ए ॥ (ढाल) ३ जी कपूरहुवे

श्रतिउजलोजी, ए देशी । एनवपदजिनधर्मनोजी, सारज्भूतक-हिवाय, सिवसुखनो कारकसहीजी, श्राराधोगुरुसहाय, ज्रवि-कजन सेवोजिनउपदेश, पज्रणे प्रथमगणेश ज्र० से० ॥ २० ॥ ए नवपदथी नीपजैजी, सिद्धचक्रयंत्रराज ॥ श्राराधीने सुखल-ह्योजी, जिमश्रीपालमहाराज ज्र० से० ॥ २१ ॥ तबपूछे मग-धेसरुजी, कुणश्रीपालनरेश, किमश्राराधिसुखपामीयोजी, करु, णाकरो गणेश ज्र० से० ॥ २२ ॥ गौतमस्वामिउपदिशेजी-निसुणो श्रेणिकराजान, चंपानगरीनोराजीयोजो, श्रीपालनामसु-जाण ज्र० से० ॥ २३ ॥ उंबररोगेपीमीयोजी, परणिराजकुमारि, उजयणीमाजूहारियाजी, रीषज्रेश्वरमनुहारि ज्र० से० ॥ २४ ॥ मुनिचंद्रगुरुउपदेशथीजी, श्राराध्यो सिद्धचक्र, रोगगयोबलिसु-खलह्योजी, संपदापामीजिमशक्र ज्र० से० ॥ २५ ॥ नव पदउलीश्रांबिलतणीजी, नवराणीनेसाथ, उज्जमणोपूरणहुवां-जी, करिखरच्यो घणोश्राथ ज्र० से० ॥ २६ ॥ नवपमिमादे-रासरुजी, नवजीरणउद्धार, पहिलोपदश्राराधियोजी, नवपू-जामनुहार ज्र० से० ॥ २७ ॥ इमनवपदविस्तारथीजी, पूजी-लह्योसुखसार, श्रायुपूरणकरिध्यानथीजी, नवमेस्वर्गश्रवतार ज्र० से० ॥ २८ ॥ इमश्रीपालनाज्रव थकीजी, नवमेज्रवसहुसार, निरुपमशिवसुखपामसेजी, कहेगौतमगणधार ज्र० से० ॥ २९ ॥ श्रेणिकसुणिहरखित थयोजी, प्रज्रुजीनावांद्यापाय । वीरजिने-सरइमज्रणेजी, सुणश्रेणिकनरराय ज्र० स० ॥ ३० ॥ एकएक पदश्राराधतांजी, केई पाम्याज्रवश्रंत, नवपदते निजश्रातमाजी, ध्याताध्येयलहंत ज्र० से० ॥ ३१ ॥ तीर्थंकरपदपामस्येजी,

तुंझणज्ञरतमझार, इमसांज्ञलिनृपआनंदियोजी, निज घरपो-
तोसुखकार ज्ञ० से० ॥ ३२ ॥ कलश ॥ इमवीर जिनवर ज्ञुव-
नदिनयर नवपदमहिमावरणव्यो, सुरतवंदर रहि चोमासो
सिद्धचक्रगुणगणस्तव्यो, संवत उंगणीसै पचोत्तर आश्विनशु-
दिसातमदिने, जिनकृपाचंद्रसूरिपज्ञणे वर्तोमंगल प्रतिदिने
॥ ३३ ॥ इतिनवपदवृद्धस्तवनम् ॥

॥ महावीरस्तवनं लिख्यते ॥

कर्मतणीकथनीरे कीहांजइनेकहुं ॥ ए देशी ॥ वीरजिने-
सरअलवेसरप्रज्ञुसांज्ञलो, सुनिजरधरिसेवकनी ए अरदासजो,
वालेसरविन केहनेकरीयेवीनती, इमजाणीनें आव्योतुमारी-
पासजो ॥ वी० ॥ १ ॥ कालअनादि रझ्यो हुं संसारमां,
ज्ञवज्ञवज्ञमतां दुःखसह्याअपारजो । वीतरागतमें तारकजाणो-
तातजी, तोपणवीतकवातकहुं निरधारजो ॥ वी० ॥ २ ॥
कालअनंतरहियो सूक्ष्मनिगोदमां, व्यवहारेतरराशी दोयकहं-
तजो, श्वांसोश्वासमांअधिकासतरेज्ञवकर्या, इमकरते नविपाम्यो
ज्ञवनोअंतजो ॥ वी० ॥ ३ ॥ काललब्धिपामीने परित्तपणों-
लह्यो, पृथिव्यादिकव्यवहारमांआव्योतेणजो । कर्मउदयथी-
फरिपमियोनिगोदमां, पुज्ञलपरियट्टअसंख्यरह्यो दुहेणजो
॥ वी० ॥ ४ ॥ व्यवहारराशिकहवाणों हुंतिहां, एजाणूं तुझ-
आगमथीजगतातजो, एकेंद्रियमां वसतांकालघणो गयो, तेह-
नीकेटलीकहुं तुमआगलवातजो ॥ वी० ॥ ५ ॥ विकलेंद्रियनां
ज्ञवसंख्याता मैं कीया, दुःखतणो नहीआवे कहतापारजो,
पंचेंद्रियतिर्यंचपणों लहिनें प्रज्ञो, जलथल खचरनाज्ञवकर्या

दुखकारजो ॥ वी० ॥ ६ ॥ शीततापनयनूखतृषासहीघणी, कूरकर्मकरी उपनोनरकमकार जो, छेदनत्नेदन ताडनतर्जनादिक सह्या, पर्माधर्म्यादि कृत कष्टअसारजो ॥ वी० ॥ ७ ॥ नरकथकी निकलीनेंतीर्यंच वलि थयो, अकामनिर्जराकरतां वहुली वारजो, देवगतिमां उपजी सुखलंपटथयो, तेथी सुकृतकीनों नहींलगारजो ॥ वी० ॥ ८ ॥ कर्मसंयोगे एकेंद्रियमेंउपनो, इमनवभ्रमण करंता अनंतावेसजो, नजतांक्रमथी मनुष्यपणोमेंपामियों, त्यांपण नलह्योधर्मतणोंलवलेशजो ॥ वी० ॥ ए ॥ इम नवनाटककरतांकालबहुगयो, पुन्यसंयोगेपाम्योप्रनु दीदारजो, स्वामीशासनलागोमुजनेंमीठडो, हिवप्रनु करुणाकरीमुजकरोनिस्तारजो ॥ वी० ॥ १० ॥ तुम सरिखासाहिबनी सेवामैंलही, हिवप्रनुमुजनेंजाणों सेवकखासजो, तुमगुणजाणुं एटलीसुनिजरकीजीये कृपाचंद्रप्रनुपूरो मनडेनी आसजो ॥ वी० ॥ ११ ॥ गुर्जरदेशेपानसरे प्रनु नेटिया, वरषउगणीसे उगणोत्तरे शुनदीसजो, मौनइग्यारस मनमोहनप्रनुजीमिल्या, आनंददायकजयकारीजगदीश जो ॥ वी० ॥ इति पदम् ॥

॥ अथ पंचमिकावृद्धस्तवनलिख्यते ॥

दुहा ॥ सिद्धारथकुलदिनमणि । त्रिसलादेवि सुजात ॥ वर्द्धमानजिनचंदकुं । नमनकरिपरनात ॥ १ ॥ गुरुदरियो नरियोगुणें । तरियोकिणविधिजाय ॥ बलिहारि गुरुदेवनी । मोमनरह्योलोनाय ॥ २ ॥ जिनवाणीपीयूषरस, पानकरो निशिदीश ॥ पांमोनाणसुहंकरु । नाखैजगनाईश ॥ ३ ॥ ढाल ॥ कपूरहुवे अतिउजलोजी ॥ ए देशी ॥ ज्ञानआराधो नविज-

नाजी । आणिलक्विअपार, पांचज्ञानप्रगटायवाजी ॥ पंचमीसेवोउदाररे, प्राणि जिनवाणिमनआण अनुपमसुखनीखाणरे ॥ प्रा० ॥ जिन० ॥ १ ॥ नाणवडो संसारमाजी, ज्ञानथीमुगतिथाय, ज्ञानदीपकसमजाणियेजी, सर्वलोक प्रगटायरे ॥ प्रा० ॥ जिन० ॥ २ ॥ दिव्यज्ञान लोचनकह्योजी, लोकालोकदेखाय, ज्ञानविनापशुसारिखोजी, जाणेनही नर कांयरे० ॥ प्रा० ॥जि० ॥ ३ ॥ ज्ञानआराधकसर्वथीजी ॥ किरियादेशविचार, भगवतिसूत्रमांभाखियोजी, आठमें शतकमझाररे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ४ ॥ अज्ञानीक्रोडवरसमांजी, तपकरि निर्जराजेह, ज्ञानिस्वासोस्वासमांजी, कर्मक्षयकरेतेहरे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ५ ॥ ज्ञानतणो अधिकारछेजी नंदिसूत्रमझार, क्रियासहितज्ञानसुंदरुंजी, मोक्षतणोदातारररे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ६ ॥ जिमसोनो सुगंधथीजी रत्न मुंदडीयेजाण, संखसोहे दूधेभर्योजी, तिमकिरियायुत नाणरे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ७ ॥ महानिसीथमाहैकह्योजी, पंचमीविधिविस्तार, वीरजिनंदेदाखियोजी, सूत्रेश्रीगणधाररे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥ ८ ॥ (ढाल बीजी) सखि आजअनोपमदीवालि ॥ ए देशी ॥ ज्ञानआराधीसंपदासाधी, निजगुणनो ए सुखकारी, सखिनाणसुहंकारगुणकारी ॥ ए ॥ पंचमीतपविधियुत भवि करकै, नाणनेसेवोइकतारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १० ॥ मगसर माह फागुण वैसाखे, जेठ आषाढने दिलधारी ॥ स० ॥ ना० ॥ ११ ॥ एषट्मासे विधियुतलीजै, शुभदिनगुरुमुखथीसारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १२ ॥ देववंदनदेहरासरकरिने, पोथीपूजीसुविचारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १३ ॥ गीतारथगुरुचर-

णनमीने, नंदिविधिकरिहितकारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १४ ॥ गुरुमुखउपवास भावे करीने पमिक्कमिटालो अतिचारि ॥ स० ॥ ना० ॥ १५ ॥ शास्त्रभणो श्रीसदगुरु पासै, पंचमीदिनआरंभटारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १६ ॥ पांचवरस पांचमासनेउत्कृष्ट, जावजीवकरेइकतारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १७ ॥ पांचमास लघुपंचमीकीजै, स्तवनथुइकहे ब्रह्मचारी ॥ स० ॥ ना० ॥ १८ ॥ (ढाल ३ जी) पहलो अंग सुहामणोरे ॥ ए देशी ॥ ज्ञाननमोगुण भविजनारे, नाणप्रकाशकजाणरे, सुगुणनर, पंचमीतपविधियुतकरीरे, लाल पामोअविचलनाणरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १९ ॥ दोयभेदे नाण जाणीयेरे, निश्चयने व्यवहाररे ॥सु०॥ त्रणअनुयोगव्यवहारमांरे ॥ ला० ॥ द्रव्यनिश्चयसुखकाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २० ॥ पांचज्ञाननाभेदछेरे, इकावनसुविशेषरे ॥ सु० ॥ भिन्नभिन्न ते दाखव्यारे ॥ ला० ॥ तेहकहुं लवलेशरे ॥ सु ॥ ज्ञा० ॥ २१ ॥ मतिज्ञानना जाणियेरे, अठावीशप्रकाररे, ॥सु०॥ श्रुतना चवदेनेवीशछेरे, अक्षरादिकसुविचाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २२ ॥ अवधि छ असंखभेदछेरे, मनपर्वयदुग जाणरे ॥ सु० ॥ लोकालोकप्रकाशकोरे ॥ ला० ॥ केवल मनमें आणरे ॥ सु ॥ ज्ञा० ॥ २३ ॥ तीतज्ञानप्रत्यक्षछेरे, देश सर्वसुजगीशरे ॥ सु० ॥ अवधि मनपर्य बलिरे ॥ ला० ॥ देशप्रत्यक्षकह्याईशरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २४ ॥ केवलसर्वप्रत्यक्षनेरे, ध्यावोपरमपवित्ररे सु० ॥ दोयपरोक्षपिछाणियेरे ॥ला०॥ मतिश्रुतभेदविचित्ररे ॥ सु ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥ च्यारज्ञान छप्पाकह्यारे श्रुतअनुयोगविचाररे सु० ॥ उद्देशादिकजाणियेरे, अनु-

योगद्वारमझाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २६ ॥ उपगारिश्रुतनाणथीरे, जाणेआजत्रिकालरे ॥ सु० ॥ परबोधक श्रुतसेवियेंरे, सद्गु, रुचरणनिहालरे ॥ सु ॥ ज्ञा० ॥ २७ ॥ वायणप्रछनापरावर्त्तनारे-अनुपेहादिलधाररे ॥ सु० ॥ धर्मकथाकहीकीजीयेरे ॥ ला० ॥ सज्झायपांच प्रकाररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २८ ॥ अंगइग्यार बारउपांगछेरे, दशपयन्ना नंदीशरे ॥ सु० ॥ छछेद चउमूल दिलधरोरे ॥ ला० ॥ अनुयोगद्वारपैतालीशरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २९ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ गरवेनी स्वामीशरीरसोसाइगयो ॥ ए देशी ॥

ज्ञानभजो भविप्राणीया, वंछितफलदातार, ज्ञानी दीपकसमकह्यो, सूत्रेश्रीगणधार ॥ ज्ञा० ॥ ३० ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवि, कल्पलता अनुकार, एहथी अधिकोजाणिये, महिमाअगमअपार ॥ ज्ञा० ॥ ३१ ॥ कालअनादिलगे भम्यो, मिथ्यामति भवमांय, सम्यगज्ञान प्रगटेयदा, भवमें न रहाय ॥ ज्ञा० ॥ ३२ ॥ समकितगुणप्रगटायवा, त्रणकरण करेजीव, समकित-ज्ञानएकणसमे, लहैसुखअतीव ॥ ज्ञा० ॥ ३३ ॥ देशविरति, पामें तदा, पल्यपहुत्तस्थितिजाय, संख्यातसागर गयां चरणधर-ज्ञानादिकचितलाय ॥ ज्ञा० ॥ ३४ ॥ घातिकरमनो क्षयकरी, केवलज्ञानप्रकाश, भव्यकमलप्रतिबोधता, विचरे भगवंतखास ॥ ज्ञा० ॥ ३५ ॥ ज्ञानचरणदोयभेदछै, मुक्तिकारणजाण, तपसंजमविहुंदाखिया, भावए मनमांआण ॥ ज्ञा० ॥ ३६ ॥ पांचमिआराधनकरी, ज्ञानभगतिकरो सार। तपपूरणथयां कीजिये। उजमणो सुविचार ॥ ज्ञा० ॥ ३७ ॥ पांचपांचज्ञानादिना। उपगरणकरोसार धनखरचो शुभभावथी। लहो पुन्यसंभार ॥ ज्ञा० ॥ ३८ ॥

देवोदानसुपात्रने । साहमी वछलसार ॥ जगतिकरोसाहमीतणी । रात्रिजागोउदार ॥ ज्ञा० ॥ ३ए ॥ वरदत्तनेगुणमंजरी । ज्ञान आराधिने सुख ॥ पामी अविचलपदलह्या । मेटीने जव-दुःख ॥ ज्ञा० ॥ ४० ॥ कलश ॥ संवत् उगणीसै पिचत्तर पोषवदि एकमजलै । सुरतबंदरजविकसुखकरसीतलजिनसुपसाउलै । श्रीवीरजिनवर पंचमितपविधिप्रकाश्यो शुजमणे । सुविहित परंपरगछखरतरजिनकृपाचंद्रसूरिजणै ॥ ४१ ॥ इतिपांचम वृद्धस्तवनम् ॥

॥ अथ दीवालीको स्तवन लिख्यते ॥

दुहा ॥ वर्द्धमानजिनचंदकुं । नमनकरीकरजोरू । कल्याण-कविधिवर्णवुं । मानमांआणिकोरू ॥ १ ॥ वीरजिणंद दिणंद-सम समवसर्यागुणखाण ॥ जव्यकमलप्रतिबोधता, त्रिजुव-नजनमहिराण ॥ २ ॥

॥ ढाल १ ॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीये ॥ ए देशी ॥

वर्द्धमानजिनराजजी । गुणगणअगमअपार ॥ चौवीशम जिनचंद । जगतसुहंकरु । सर्वजीवसुखकार ॥ व० ॥ ३ ॥ समकितपामीनेप्रजु । जवसत्तावीसकीधा । वीसस्थानक तप-सेवी जिननामबांधियो । स्वर्गतणा सुखलीधा ॥ व० ॥ ४ ॥ अषाढशुदिषष्ठिदिने । चविया स्वर्गथीसार । देवानंदाने उदरे उपन्या जगधणी । सहुजगमे हितकार ॥ व० ॥ ए ॥ चउदे-सुपनानिशिलह्यां । उपनो हरखअपार । दिवसवैयांसीरह्या माहणअवतारमां । कर्मतणे अनुसार ॥ व० ॥ ६ ॥ इंद्रआ-देशथी आश्विन वदित्रयोदशीदीश । हरणेगमेसीसंक्रमणकर्या

प्रभुजन्मकिथी । त्रिशलाकूखैजगीश ॥ व० ॥ ७ ॥ चउदसुपनत्रिशला जुवै । कल्याणकफलएह । वृद्धिपाम्या नरेशर सर्वप्रकारथी । जाग्रतथयोअतिस्नेह ॥ व० ॥ ८ ॥ चैत्रशुदितेरस समे । जन्मथयो सुप्रसिद्ध । दिगकुंवरी तिहां ततक्षिणसूतिकारजकरे । इंद्रआवे बहुरिद्ध ॥ व० ॥ ९ ॥ पंचरूपकरी प्रभुग्रही । मेरुशिखर लेजाय । चौसठ सुरपति आवि जनमोत्सवकरी । मातापासेठाय ॥ व० ॥ १० ॥ नंदीसरउछवकरी । देवगयानिजठाम । सर्वसंपदवधितेहथी प्रभुनोथापीयो । वर्धमानशुभनाम ॥ व० ॥ ११ ॥ सिद्धारथ राजाघरे । वरते मंगलमाल । इंद्राणि उछरंगरमाडे प्रभुजणी । करतिरंगरसाल ॥ व० ॥ १२ ॥ आमलकी क्रीडाकरे । देवपरिक्षाकाज हारिगयो देववालक प्रभु नामपामीयो । महावीर माहाराज ॥ व० ॥ १३ ॥ जोवनवयजिनराजजी । परण्यारमणि मनुहार संसारिकसुखजाणि कृत्रिमजगनाथजी । कृपाचंद्र सुखकार ॥ व० ॥ १४ ॥

॥ ढाल २ ॥

तीसवरस घरमारह्या ॥ मनमोहनजी ॥ दीधो वरसीदानरे । जगसोहनजी । मातपिता स्वर्गेगया ॥ मन० ॥ प्रतिज्ञा पूरण जानरे ॥ जग० ॥ १५ ॥ च्यारनिकायना देवमलि ॥ मन० ॥ दीख्याउछवकीधरे ॥ जग० ॥ मिगसरवदिदशमीदिन ॥ मन० ॥ सुखकरसंजमलीधरे ॥ जग० ॥ १६ ॥ मनपर्यव ज्ञानऊपनो ॥ मन० ॥ चउनाणी भगवंतरे ॥ जग० ॥ एकाकी प्रभु विचरता ॥ मन० ॥ करुणानिधिबलवंतरे ॥ जग० ॥ १७ ॥ परिषहरिपुने जीतता ॥ मन० ॥ पराक्रमे

धरुवीररे ॥ जग० ॥ तपकरता अतिआकरो ॥ मन० ॥ पाम्यो-नवजलतीररे ॥ जग० ॥ १८ ॥ बारबरस छद्मस्थरह्या ॥ मन० ॥ ऊपर सार्ध छमासरे ॥ जग० ॥ वैशाखसुदिदशमीये ॥ मन० ॥ उपनो केवलखासरे ॥ जग० ॥ १९ ॥ लोकालोकनेजाणता ॥ मन० ॥ पावापुरि जिनराजरे ॥ जग० ॥ संघचतुर्विध थापिने ॥ मन० ॥ सीधासगलाकाजरे ॥ जग० ॥ २० ॥ सम-वसरणमांविराजता ॥ मन० ॥ परउपगारिमहंतरे ॥ जग० ॥ देशना देता भव्यने ॥ मन० ॥ प्रासकरे सुखसंतरे ॥ जग० ॥ २१ ॥ गौतमादिगणधरा ॥ मन० ॥ इग्यारह मनुहाररे ॥ जग० ॥ चउदसहस मुनिवरहुवा ॥ मन० ॥ श्रमणीछतीस-हजाररे ॥ जग० ॥ २२ ॥ एकलाखगुणसठसहस ॥ मन० ॥ श्रावकनो परिवाररे ॥ जग० ॥ त्रणलाख अढारहजार ॥ मन० ॥ श्राविका सुविचार रे ॥ जग० ॥ २३ ॥ इत्यादिकपरिवारथी ॥ मन० ॥ परवरिया गुणसाररे ॥ जग० ॥ अंतिमचोमासो रह्या ॥ मन० ॥ पावापुरी मझाररे ॥ जग० ॥ २४ ॥ सोलपहर लगदेशना ॥ मन० ॥ दीधीपरउपगाररे ॥ जग० ॥ पुन्य पालरा-जातणा ॥ मन० ॥ प्रश्ननो उत्तरसाररे ॥ जग० ॥ २५ ॥ पंचमआरेना भावकह्या ॥ मन० ॥ सवजीवने हितकाररे ॥ जग० ॥ पुन्यपा-पना फलतणा ॥ मन० ॥ अध्ययन पचावनसाररे ॥ जग० ॥ २६ ॥ छत्रीशवलि उत्तर कह्या ॥ मन० ॥ मरुदेवीअधिकाररे ॥ जग० ॥ बहोतर वरसनो आवुखो ॥ मन० ॥ पूरणकरिहितकाररे ॥ जग० ॥ २७ ॥ कातिवदिअमावसै ॥ मन० ॥ मुगतिसिधाया वीररे ॥ जग० ॥ सादिअनंतस्थिति लही ॥ मन० ॥ तोड्या कर्मजंजीररे ॥

॥ जग० ॥ २८ ॥ कासीकोसलनाराजवी ॥ मन० ॥ पोसह-
कर्यो सुखकाररे ॥ जग० ॥ नावउद्योतगयां थकां ॥ मन० ॥
रत्नमुंक्या सुविचाररे ॥ जग० ॥ २ए ॥ देव देवी आव्याघणा
॥ मन० ॥ प्रनुनीनक्तिविशेषरे ॥ जग० ॥ दीवालीथइलोकमा
॥ मन० ॥ लह्योगौतमज्ञान अशेष रे ॥ जग० ॥ ३० ॥ वीजने
नाइजमाम्यीयो ॥ मन० ॥ नगनीये नाइवीजरे ॥ जग० ॥
उछकरीपोषहकरे ॥ मन० ॥ गुणनातीनलहीजरे ॥ जग०
॥ ३१ ॥ उकल्याणक वीरना० ॥ मन० ॥ गायानक्तिविशालरे
॥ जग० ॥ जिन कृपाचंद्रसूरिनणै ॥ मन० ॥ वर्तो मंगलमा-
लरे ॥ जग० ॥ ३२ ॥ इति दीवालीको स्तवन संपूर्ण ॥

॥ श्रुतअतहितनलोसंघसकलआधारनमुं त्रिनुवनतिलो श्रुत०
अरथेंश्रीवीर जिनेंद्र आख्यो । सूत्रेश्रीगणधरगुरुनाष्यो । तछु-
नयथीजें मुनिवरराख्यो श्रु० ॥ १ ॥ जेहथी जगनावसकल-
जाणे । नयएकांतमुनिजननविताणे । निश्चयव्यवहारतेमन-
आणे श्रु० ॥२॥ जिहांअंग उपांगछेअतिरूमा, उछेदपयन्नानहि
कूमा, मूलसूत्रनंदीअनुयोगचूमा श्रु०॥३॥जिहांनिर्युक्तिसूत्रेसंगी,
वलिनाष्यचूरणी टीकाचंगी, पंचमअंगेकहीपंचांगी श्रु० ॥ ४॥
जिहांसाधुश्रावक मारगलहियै, संवेगपखीवलिसरदहियै, ए
नणविनजवमारग कहियै श्रु० ॥५॥ जेहनीअनुपेहानितकरियै,
उपचैरदूषणपरिहरियै, आराध्या निजअनुनववरियै, श्रु० ॥६॥
जिनआगमना जे गुणगावै, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावै, तेहमाक-
ःयाण सदा पावै श्रु० ॥ ७॥ इतिज्ञानस्त०

॥ रागठुमरी ॥

॥ मेरे रेमनमानीज्ञानजरी मे० ॥ परउपगारीसुगुरुवताइ,, पांचुंजेदेंकरी, मतिश्रुतअवधिअवरमनपर्यव, केवलबोधवरी मे० ॥१॥ तपकरिअग्नि मूसदंसनकी, कर्मेंधनलकरी, सक्रियसंजमकरतांसुमिल, सिद्धिरसानधरी मे० ॥ २ ॥ पूरणपुन्य मिलीमोहिसजनी, सकलानंददरी, बालकहै अबविसरत नांही, पलछिनएकघरी मे० ॥ ३ ॥ इतिपदम्

थां० परवारीहोजिनजी, श्रीधुलेवागढपत्ति, रिषजसोहावणाहोराज, एआकभी देशमेवाफमे सोजताहोराज, प्यां० आदिकरण आदिनाथ, जेव्याजलेजावसुंहोराज, ज० ॥ १ ॥ थां० श्री० परचा जगमे परगमा हो राज, थां० आवेसंघअपार, सरस दरसणलहे होराज, स० ॥२॥ थां० श्री० स्यामवरणशुजसुंदरुहोराज, था० अद्भूतप्रजुदीदार, देख्यांवांछितफले हो राज दे० ॥३॥ थां० श्री० आसहतीघणादिवसनीहोराज थां० तेसफलीथइआज, पूरवसंचितफटयाहो राज, पू० ॥ ४ ॥ थां० श्री० जवजवचरणारी चाकरीहोराज, थां० मुजनेहितसुखकंद, सदाप्रजुदी, जीयेहोराज, स० ॥५॥ थां० श्री० मालवदेशथी आवीयाहोराज, थां० विषमउह्लंघीवाट, आजदरसणलह्योहोराज, आ० ॥ ६ ॥ थां० श्री० उगणी सेअसीसमेहोराज, थां० फागुणशुदिहितकार, सदासंपत्तिकरुहोराज, स० ॥७॥ थां० श्री० अव्याबाधसुहंकरुहोराज, थां० अनुजवअमृतपान, सदामुझदीजीयेहोराज, स० थां० श्री० ॥८॥ साहिबनीसुनिजरउतांहोराज, थां० सहजफलेसहुकाज, कृतारथकीजीयेहोराज, कृ० ॥ ए॥ थां० श्री०

आजमनोरथसहुफल्याहोराज, थां० प्रभुदरसणमनरंग, सदा-
जयजयकरुहोराज स०॥१०॥थां० श्री रिसहेसरजगजयोहोराज
थां० श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि, प्रभुमुक्रमनवस्याहोराज, प्र० ॥११॥
थां० श्री० इति ॥

॥ कृपानिधिवीनतीअवधारोरे, एदेशी ॥

श्रीरिषभजिनेसरस्वामीरे, त्रिभुवनजनमनविसरामीरे, जग-
तारण अंतरेजामी भविकजन श्रीजिनवरआराधोरे, एतोआरा-
धि शिवफलसाधो, भवि० ॥ १ ॥ मनमोहनदिनकरसोहेरे,
देख्याभव्यकमलप्रतिबोहेरे, जिमचंदचकोरनिशिमोहे, भ०॥२॥
गढधूलेवाजिनपतिवंदोरे, प्रभुदरसणकरिचिरनंदोरे, एतोनि-
जगुणसुरतरुकंदो, भ० श्री० ॥३॥ गढलंकामें प्रभुवसियारे, राव-
णनृपमनमेंउलसियारे, सहुथयासेवानारसिया, भ० ४ ॥ उज्ज-
यणीमे, प्रभुहोवेरे, श्रीपालनी व्याधिखोवेरे, सुखसंपदाकरि-
जनजोवे, भ० ५॥ वागरूदेशवमोदगांममांहिरे, जिहांवसियाज-
गतनासांहिरे, प्रभुभावभगतिमनलांहि, भ० ६ ॥ तिहांश्रीधू-
लेवेआवेरे, घणाजात्रीनामनभावेरे, गौरीमिलमंगलगावे, भ०
७ ॥ परचापरतिखजगगाजेरे, अतिसयगुणअंबरगाजेरे, प्रभु-
दीगाभवभयभाजे, भवि० ८॥ देशमेवाडदेख्योनगीनोरे, करेड़ा-
परसनाथमनलीनोरे, देलवाडदरशणकीनो, भ० ९॥ सांतीस-
रअद्भुतमूर्तीरे, उदयापुरजिनालयस्फूर्तीरे पद्मनाभसेवासुख-
पूर्ती, भवि० १०॥ वनेडेआदीसरराजेरे, इमचैत्यअनेकविराजेरे,
राजनगरमांअधिकदीवाजे, भ० ११ ॥ उगणीसेअसीवरसेरे,

फागुणशुदिआठमफरसेरे, जिनकृपाचंद्रसूरिमनहरसे, भवि० १२
इति स्तवनसंपूरणम् ॥

॥ ९ ढालका ॥

॥ अथ श्रीसम्मेतशिखरजीको रास लिख्यते ॥

वांदीवीसजिनेसरू, रचस्युं रासविशाल, तीरथशिखरसमेतनी, महिमाबडीविशाल ॥ १ ॥ मोटोतीरथ महियले प्रगट्योशिखरसमेत, कोडाकोडीमुनिवरु, सिद्धिगयेइणखेत ॥२॥ तीरथसिखरसमेतए, फरस्यां पापपुलाय, भविजनभेटो भावसुं, ज्युंसुखसंपदथाय ॥ ३ ॥ महिमासिखरसमेतनी, कहिनसकेकविकोय, गुणअनंतभगवंतना, तिमएतीरथहोय ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ॥ चौपईनी ॥

गिरवरशिखरसमोनहींकोय, एहनी महिमा सबजगहोय, वीस जिनेसरमुगतेगया, मुनिजनध्यानधरीनेरह्या ॥ १ ॥ प्रथमअयोध्यानगरीभली, तिहांजितशत्रुनरेसरबली, विजयाराणीनें सुतजाण, अजितकुमरसहुगुणनीखाण ॥ २ ॥ जसुइंद्रादिक सेवाकरे, इंद्राणीअतिउछवधरे, तीर्थंकरनीपदवीलही, अंतरअरिजिणसाध्यासही ॥ ३ ॥ अनुक्रमइमभोगवतांभोग, पुण्यप्रसादमिल्योसहुजोग, अवसरदें संवछरीदान, संजमलीनो आपसुंजान, ॥ ४ ॥ कर्मखपावीपाम्योज्ञान, केवलदर्शनलह्योप्रधान, विचरेपुहवीमंडलमांहि, भव्यजीवप्रतिबोधनतांहि ॥ ५ ॥ सिंहसेनादिक गणधरभया, पंचाणवेसंख्या सहुथया, एकलाख मुनिवरपरिवर्या, श्रावक श्रावकणी बहुकर्या, ॥ ६ ॥ तीनलाख वलितीसहजार, साधवीयांजाणो सुविचार, श्रावक-

सहस अठाणुंसही, दोयलाखसंख्या गहगही, ॥ ७ ॥ पांचलाख पेंतालीसहजार, श्रावकणीसंख्या सुविचार, बहुत्तरलाख पूरवनोआय, कंचनवरणसरीरसुहाय ॥ ८ ॥ साढाच्यारसे धनुषसरीर, मानलह्यो प्रभुगुणगंभीर, गजलांछन प्रभुजीनो जांण अमृतसमजसुमीठीवाण ॥ ए ॥ अनुक्रमप्रभुजी शिखरसमेत, गिरिवरपर आव्यानिजहेत, सहस मुनीसरनेंपरिवार, मासखमण अणसणकरसार ॥ १० ॥ चैत्रीसुदिपांचमनें दिनें, मुक्तिगएप्रभु तीरथइणें, भूचरखेचरकिन्नरसुरी, इंद्रादिक सहुउछवकरी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथमोटोमही, अठाइमहोछवकियोसही, ए तीरथनीजात्राकरे, ते भवियणअक्षयसुखलहे ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीसंभवजिनराजजी, गएइहांनिर्वाण, शिखरसमेतसुहामणो, प्रगट्योतीरथजाण ॥ १ ॥

॥ सुगुणसनेहीसाजन श्रीसीमंधरस्वाम ए चाल ॥

॥ ढाल २ ॥

सावत्थीनगरीभरी, धनसंपदसहुथोक, जितारिनृपराजकरे, सुखियासबलोक, सेनाराणीमीठीवाणीगुणनीखाण, जेहनेंसुतश्रीसंभवजनम्यासकलसुजाण ॥ १ ॥ कंचनवरणसरीरमनोहर प्रभुनोजाण, लंछनअश्वतणोसोहे प्रभुनोपरधान, साठलाखपूरवनो प्रभुनोआयुप्रमाण, धनुषच्यारसेउंचपणे प्रभुदेहवखाण ॥ २ ॥ एकसोदोयसंख्यायें प्रभुनेंगणधरहोय, दोयलाख मुनिजेहनेंगुणवंताजगजोय, तीनलाखश्रमणीवली ऊपरसहस-

छत्तीस, जूमंरूलविचरे प्रभुश्रीसंभवजगदीस ॥ ३ ॥ तीन-लाखवलिसहसत्रयाणुंश्रावकलोक, षटूलखसहसछत्तीस श्राव-कणीसंख्याथोक, त्रिमुखयक्षअरु दुरितादेवीसानिधकार, वि चरंतां प्रभुसकलसंघमें जयजयकार ॥ ४ ॥ सहसश्रमणपरिवारे प्रभुजीशिखरसमेत, एकमास संलेखणकीनीनिजपदहेत, इण-गिरिऊपरपायो प्रभुजीपदनिरबाण, तीरथमहिमामहियलमोटी थइयसुजाण ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

अभिनंदनजिनवंदिये, पायोपदनिरवाण, शिखरसमेतसुहा-मणो, भेटोतीर्थसुजांण ॥ १ ॥

॥ ढाल ३ ॥ सहसश्रमणसुं शुकसंजमधरो ए चाल ॥

नगरीअजोध्या सुरपुरीसमभली, संबरराजासोहै मनरली, सिद्धार्था राणीतसुनंदए, अभिनंदनजिनप्रगट्याचंदए, उजालो, चंदएसोवनवरणसोहै धनुषसाढीतीनसै, सुंदरशरीरप्रमाण द्युतिकरकपिलंछनतेनितवसे, पूर्वलाखपचासआयुगणधरइकसो सोलए, तीनलाखमुनिछलाख आर्यासहसत्रिंशतसोलए ॥ १ ॥ चाल ॥ सहसअठ्यासी दोलख श्राद्धनी, संख्या चौलख-सत्तावीसनी, श्रावकएयांरी संख्या जाणए, नायकयक्षकालि-कागाणए ज० गाणएशिखरसमेत ऊपरमासएक संलेखणा, इकसहससाधूपरवयाप्रभु मुक्तिपहुचेपेखणा, इमही अयोध्यामे-घनरवरदेवी मातसुमंगला, श्रीसुमतिजिनवरभएनंदन सदा-होतसुमंगला, ॥ २ ॥ चाल ॥ सोवनवर्ण धनुषतनुतीनसें, लंछनक्रौंचसोहे सुभगेहसे, पूरबलाखपच्यासीआउए, इकसौ-

गणधरगुणगणभाजए, (भ०) भावएमुनित्रणलाखसोहे सहस वीसप्रमाणए, पणलक्षत्रीसहजारसाध्वी श्रावकदोयलक्षजाणए, संख्या इक्यासीसहसऊपर श्राविकाइमश्रानीये, पणलाखसोले-सहस तुंबरुमहाकालीमांनीये, श्रीशिखरऊपर सातसंख्या सहस साधुसुरंगए, करमासकीसंलेखणा प्रभुमुक्तिपुहताचंगए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इमकोसंबीनगरीतातए, धरनृपतातसुसीमामातए, पदमप्रभु तसुअंगजनाथए,लंछनकमलतणोशुभहाथए,(भ०)हा-थएधनुषप्रमाणपूरा अढाईसेतनुकहो, तीनलाखपूरवथितकहावै एकसोगणधरलहो, लखतीनतीसहजारसाधू वीससहसलख-च्यारए, साधवी दोयलखसहसछिहंतरश्रावकसंख्यासारए ॥४॥ चाल ॥ पांचलाखबलिपांचहजारए, श्रावकणयांरीसंख्यासारए, कुसुमदेवस्यामादेवीकही, लालवरणतनुसोहै प्रभुसही, (भ०) सोहएशिखरसमेतऊपर आठसेत्रिणमुनिवरा, करमास संलेखन प्रभुनी सेवकरे सुरवरा श्रीपदमप्रभुजी मुक्तिपहुतागिरिशिखरम-हिमाभई, तसुचरणपंकजचालवंदे हृदय आनंदगहगही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

श्रीसुपासजिणंदना, पदपंकजआराम, भविजनभ्रमरसुसे-वतां, पामेंवंछितकाम ॥ १ ॥

॥ श्रीसीमंधरसाहिबा एचाल ढाल ४ ॥

नगरवणारसीसोभता, राजातातप्रतिष्टलालरे, देवीपृथ्वी-मातजी, स्वस्तिकलंछनसिष्टलालरे, ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्वजिनं-दजी, वीसपूरवलखआयु ला० धनुषदोयसैदेहनो, कंचनवरण-सुहाय ला ॥२॥श्री० ॥ पंचाणवेगणधरकह्या, साधू त्रिणलाखहो-

यला० च्यारलाखतीसऊपरे,सहससाधवियांजोयला०॥३॥श्री०॥
सहससत्तावनलक्षनी, श्रावकसंख्याथायला० च्यारलाखवली-
त्रैणवे, सहसश्रावकणीजायलालरे, ४ श्री० ॥ मातंगयक्षसांता-
सुरी, पांचसेमुनिपरिवारला०, करिअणसणमुगतैगया, नामलि-
यांनिस्तारलालरे, श्रीसु० ॥ ५ ॥ नगरचंद्रपुरइणपरे, राजाता-
तमहसेनला०, देवीमातालक्ष्मणा, सुतचंद्राप्रभुवेशला०, ६,
श्रीचंद्राप्रभुवंदिये ।चंद्रवरणतनुदेहला०। लंछनचंद्रतणोभलो।
धनुषदोढसैदेहला० ॥ ७ ॥श्री०॥ भविककमलप्रतिबोधता। सेवे-
सुरनरयक्षला०। दसलाखपूरबआउखो । तेणवेगणधरदक्षला०
॥ ८ ॥ श्रीचं० ॥ दोयलखसहसपचाणवे । मुनिश्रमणीतीन-
लक्षला० । असीसहससंख्याकही । श्रावकवलिदोयलक्षला०
॥ ९ ॥ लाखपचासऊपरवली । श्राविकाचउलक्षधारला० ।
सहसइकाणवेऊपरे । प्रभुजीनोपरिवारला० ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥
विजयदेवभृकुटीसुरी । सहससाधुपरिवारला० । संलेखनइक-
मासनी । पुहतामुक्तिमझारला० ॥ ११ ॥ श्रीचं० ॥

॥ दोहा ॥

जयश्रीसुविधिजिनेसरू । जगपतिदीनदयाल । समेतशिख-
रमुगतेगया । भविजनकेप्रतिपाल ॥

॥ ढाल ९ ॥

श्रीविमलाचलसिरतिलोएचाल ॥ नयरिकाकंदीनरपति ।
एमपितासुग्रीव । देवीरामामातसुत । भएसुविधिशुभजीव ॥१॥
रजतवरणसमतनुसत। धनुषएकपरिमाण । दोयलाखपूरबकह्यो।
प्रभुनोआयुसुजाण ॥ २ ॥ अठ्यासीसंख्याभये । गणधरपरम-

प्रधान । लखदोमुनिविंशतिसहस । इकलखश्रमणीजाण ॥ ३ ॥ दोयलक्षश्रावककह्या । अरुगुणतीसहजार । एकत्तरचौलख-सहस । श्रावकणीसुविचार ॥ ४ ॥ सुरीसुतारासुरअजित । श्रीसंघसांनिधकार । सहससाधुपरिवारसुं । आएशिखरसुवि-चार ॥ ५ ॥ माससंलेखणकरप्रभु । मुक्तिगएइहगोर । तीरथ-महिमामहियले, प्रगटीच्यारुंकोर ॥ ६ ॥ इमहीजशीतलनाथनो । हिवसुणज्योअधिकार । भद्दिलपुरदढरथपिता । मातनंदासु-खकार ॥ ७ ॥ लंछनशुभश्रीवछनो । श्रीशीतलजिनचंद । कंच-नवरण नेऊधनुष । मानसरीरअमंद ॥ ८ ॥ एकलाखपूरवकह्यो । प्रभुनोआयुप्रमाण । इक्यासी गणधरकह्या । मुनिइकलाखसु-जाण ॥ ९ ॥ एकलाखचालीससहस । श्रमणीसंख्याठोर । सहसतयांसीदोयलख । श्रावकसंख्याजोर ॥ १० ॥ सहसअ-ठावनलक्षचौ । श्रावकणीसुविचार । देवीअशोकाब्रह्मयक्ष । सहुसंघसांनिधकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेतसहस्रएक । साधूनें-परिवार । मुक्तिगएप्रभुमासकी । संलेखनकरसार ॥ १२ ॥

॥ ढाल ६ ॥ धनधनसंप्रतिसाचौराजाएहनी ॥

सिंहपुरीनगरी तिहांराजा।विष्णुनरेसरतातजी। कंचनवरणश्रे-यांसप्रभुजी । उपज्याविष्णुसुमातजी ॥१॥ नमोरेनमो-श्रीत्रिभुव-नराजा । खरूगिलंछनप्रभुपायजी । धनुषअसीदेहमान-चोरासी । लाखवरस नोआयुजी॥न० २॥ गणधरबहुत्तरसहसचौरासी मुनि-श्रमणीतीनलक्षजी । तीनसहसबलिसहसगुणयासी श्रावकपुणदो-यलक्षजी । न० ३ अरूताभीससहसबलिचौलख । श्राविकाजाणो-सारजी, जक्षअमरसुरीमांनवीजाणो, श्रीसंघसांनिधकारजी ॥४॥

न० ॥ सहसमुनीसरनेपरिवारे, प्रभुजीसिखरसमेतजी, मास-संलेखनकरप्रभुपहुता, मुक्तिमहिलसुखहेतजी ॥ ५ ॥ न० ॥ हिवकंपिलपुरतातनृपति, श्रीकृतवर्मसुमातजी, स्यामादेवीअंगजजपना, विमलनाथजगतातजी ॥ ६ ॥ न० ॥ सूकरलंछनसोवनकाया, साठधनुषदेहीमानजी, साठलाखवछरनोआयु, शिष्यसतावनजानजी, ॥ ७ ॥ न० ॥ साठसहसमुनिअरूसयइकलख, श्रमणीश्रावकजांणजी आठसहसदोयलक्षश्राविका, चौलक्षसंख्याआंणजी ॥ ० ॥ न० ॥ षण्मुखसुरवरविदितादेवी, प्रभुजीसिखरसमेतजी, षट्हजारसाधुपरिवारे, मुक्तिगएसुखहेतजी ॥ ए ॥ न० ॥ नगरीनामअयोध्यानरवर, सिंहसेनजगसारजी, सुजसामाततिणेंसुतजायो, प्रभुजीअनंतकुमारजी ॥ न० ॥ १० ॥ लंछनश्येनसोवनसमकाया, धनुषपचासप्रमाणजी, तीसलाखवछरनोआयु, गणधरपचवीसआंणजी ॥ ११ ॥ न० ॥ छासठसहसमुनीसरसोहे, बासठश्रमणीहजारजी, छहजारलाखदोयश्रावक, श्रावकणीइमधारजी ॥ १२ ॥ न० ॥ च्यारलाखबलिचवदहजारए, अंकुशादेवीहोयजी, पातालयक्षश्रीसंघकेसानिध, कारीनितप्रतिजोयजी ॥ १३ ॥ न० ॥ आठसैमुनिवरनेंपरिवारे, शिखरसमेतप्रधानजी, माससंलेखनकरगिरिऊपर, पुहतापदनिर्वाणजी ॥ १४ ॥ न० ॥

॥ दुहा ॥

ऐसेंधर्मजिणेंसरू पुहतापदनिर्वाण, शिखरसमेतगिरिंदपर नमोनमो जगजांण ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ ॥ जगतगुरू त्रिशलानंदनजी ए चाल ॥

रत्नपुरीनगरीधणीजी, भानुरायसुजांण, राणीसुव्रतामातनेंजी, धर्मनाथगुणखाण ॥१॥ जगपतिधर्मजिनेसरसार, धनुषपैंतालीसतनुकह्योजी, वज्रलंछनसुखकार ॥ २ ॥ ज० ॥ चोतीसगणधरमुनिकह्याजी, चोसठसहसप्रमाण, श्रमणीबासठसहसस्युंजी, श्रावकदोयलक्षमान ॥ ३ ॥ जग० ॥ च्यारसहसवलिउपरांजी, चौलाखएकहजार, श्रावकणीसंख्याकहीजी, दसलक्षआयुविचार ॥ ४ ॥ ज० ॥ किंनरसुरयक्षासुरीजी, एकसहसपरिवार, समेतशिखरमुगतेंगयाजी, बांदूबारहजार ॥ ५ ॥ ज० ॥ हथणापुरविश्वसेननाजी, अचिरामातउदार, शान्तिजिनेसरजनमियाजी, त्रिभुवनजयजयकार ॥ ६ ॥ जगतपति शान्तिजिनेसरसार॥मृगलांछनसोवनसमोजी, देहीधनुषचालीस, आयुवरषइकलाखनोजी, छत्तीसगणधरसीस ॥ ७ ॥ ज० ॥ बासठसहसमुनिठसैजी, इकसठश्रमणीहजार, दोयलाखश्रावककह्याजी, ऊपरनेऊहजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहसत्रयांणुंश्राविकाजी, तीनलाखपरिवार, गरुडयक्षदेवीसुरीजी, श्रीसंघसांनिधकार ॥ ए ॥ ज० ॥ नवसैमुनिपरिवारस्युंजी, आयाशिखरसमेत, मासखमणकरमुक्तिमेंजी, पुहतानिजपदहेत ॥ १० ॥ ज० ऐसेंहथिणापुरभलोजी, राज़ासूरसुतात, कुंथुनाथजिनजनमियाजी, कंचनतनुश्रीमात ॥ ११ ॥ जगपतिकुंथुजिनेसरसार, छागलंछनपैंतालीसनोजी, धनुषदेहनोमान, सहसपचाणवेवरषनोजी, आयुप्रभुनोजाण ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैंतीसगणधरदीपताजी, साठसहसमुनिजाण, छसैसाठसहसवलिजी, श्रमणी-

संख्यामान ॥ १३ ॥ ज० ॥ सहसगुणियासीलक्षनीजी, श्रावक संख्याहोय, सहसइक्यासीतीनलाखनीजी, श्राविकासंख्याजोय ॥ १४ ॥ ज० ॥ सातसैसाधुपरिवस्याजी, देवीबलागंधर्व, कुंथुनाथमुगतेंगयाजी, माससंलेखणसर्व ॥ १५ ॥ ज० ॥

॥ दुहा ॥

श्रीअरनाथजिनंदनो, कहस्युंअबअधिकार, श्रोतासुणज्योप्रेमधर, थास्यैलाजअपार ॥ १ ॥

॥ देशीविछियानी ॥ ढाल ८ ॥

हांरेलालाश्रीजिनकुशलसूरीसरूएचाल ॥ हांरेलालाश्रीअरनाथजिनेसरू । जिहांनगरीअयोध्याचंदरेलाला । तातसुदर्शनमातजी । नंदादेवीनानंदरेलाला ॥ २ ॥ श्रीअर० ॥ लंछननंद्यावर्त्तनो । वीसधनुदेहीनोमानरेला० । कंचनवरणसुहामणो । आयुसहसचोरासीप्रमाणरेला० ॥ ३ ॥ श्रीअ० ॥ इकलाख श्रावकजपरे । वलीसंख्याअधिकीजाणरेला० । सहसबहुत्तरतीननी । लक्षश्राविकासंख्याआणरेला० ॥ ४ ॥ श्रीअ० ॥ देवदेवीसानिधकरे । इकसहसमुनिपरिवाररेला० । मुक्तिगयाइणगिरिप्रभु । करमाससंलेखनसाररेला० ॥ ५ ॥ श्रीअ० ॥ मिथिलानगरीप्रभावती । मातपिताश्रीकुंभरायरेला० । लंछनकलसपचीसनो । वपुधनुषसोवनसमकायरेला० ॥ ६ ॥ श्रीमल्लिनाथजिनेसरू । सहसपचावनवर्षनी । थितिगणधरअठावीसरेला० । भविककमलप्रतिबोधता, जगनायकश्रीजगदीसरेला० ॥ ७ ॥ श्रीम० ॥ चालीससहसमुनीसरू । श्रमणीपचावनसहसरेला० । सहसत्रयासीलक्षनी । श्रावकनीसंख्या-

साररेला० ॥ ८ ॥ श्रीम० ॥ श्राविकासित्तरसहसनो । लक्षतीनसंख्यासुविचाररेला० । सहसमुनिपरिवारसुं । गएमुक्तिसंलेखणधाररेला० । श्रीम० ॥ए॥ राजग्रहीराजापिता । सुग्रीवपद्मावती मातरेला० । स्यामवरणतनुशोन्नतो । जेकह्णपलंननविख्यातरेला० ॥ १० ॥ श्रीमुनिसुव्रतस्वामिजी ॥ धनुषवीसदेहीतणो । आयुवच्छरतीसहजाररेला० । अष्टादशगणधरथया । तीससहसमुनीसरसाररेला० ॥ ११ ॥ श्रीमु० ॥ श्रमणीसहसपचीसनी । संख्यावहुत्तरहजाररेला० । इकलक्षऊपरे श्राविका । तीनलक्षपचासहजाररेला० ॥ १२ ॥ श्रीमु० ॥ वरुणयक्षदेवी न्नली नरदत्तासांनिधकाररेला० । सहसमुनिपरिवारसें । गएमुक्तिमहलसुखकाररेला० ॥ १३ ॥ श्रीमु० ॥ विजयपितावप्रामातजी । सोवनसमश्रीनमिनाथरेला० । नीलकमललंछनकह्योवपुधनुषपनरआयुसाथरेला० ॥ १४ ॥ श्रीनमिनाथजिनेसरू । दसहजारवरसतणो । गणधरसत्तरपरमाणरेला० । वीसएकताली ससहसक्रम, साधुसाधवी संख्याजानरेला० ॥ १५ ॥ श्रीन० ॥ इकलखसित्तरसहसनी, तीनलक्षसहसवलिहोयरेला० ॥ श्रावकसंख्याश्राविका, । अनुक्रमकरि संख्याजोयरेला० ॥ १६ ॥ श्रीन० ॥ विरचरंता नूमंडले, आयासिखरसमेतरेला० न्रृकुटीयक्ष गंधारीसुरी, इकसहसमुनिपरिवाररेला० ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दोहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगतिविख्यात । शिखरसिरोमणि सहसपरण, जगजीवनजगतात ॥ १ ॥

॥ ढाल ९ ॥ आदरजीवक्षमागुण आदरएहनी ॥

जयजयपरमपुरुष पुरुषोत्तम, पारसपारसनाथजी, सांवरियासाहिब जगनायक, नामअनेकविख्यातजी ॥ जय० ॥ २ ॥ जयजयशिखरसमेतसिरोमणि, श्रीसांवरियापासजी, ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरेवंछितआसजी ॥ जय० ॥ ३ ॥ कासीदेसवणारसीनगरी, श्रीअश्वसेननरिंदजी, वामामाता जगविख्याता तेहनासुतसुखकंदजी ॥ जय० ॥ ४ ॥ पन्नगलंछननीलवरणछवि, देहिशुभनवहाथजी, आयुएकसोवरसप्रमाणे, गणधरदशप्रभुसाथजी ॥ जय० ॥ ५ ॥ सोलसहसमुनिवरअरुश्रमणी, कही अडतीसहजारजी भूमंडलविचरेभविजनकुं । बोधबीजदातारजी ॥ जय० ॥ ६ ॥ चोसठसहसलाखइक श्रावक, गुणचालीसहजारजी, तीनलाखश्रावकणीसंख्या, पार्श्वयक्षसुरसारजी ॥ ज० ॥ ७ ॥ बीसजिनेसरमुगते पोहता, महिमाथइयअपारजी, तिणएतीरथप्रगट्योजगमें, मुगतितणो दातारजी ॥ ज० ॥ ८ ॥ छहरीपाले जेनरभावें भेटें सिखरगिरींदजी, ते नर मनवांछितफलपामे, एसुरतरुनोकंदजी, ज० ॥ ९ ॥ बहुविधसंघतणीकरेभक्ति, संघपतिनामधरायजी, सफलकरेसंपदानिजपामी, जेहनोसुजससवायजी ॥ १० ॥ ज० ॥ परभवसुरनरसंपदापामें, जात्राकरेगहगाटजी, साधरमीवत्सलमुनिभक्ति, पूजाछद्यमठाठजी जय० ॥ ११ ॥ टुंकटुंकपरचरणप्रभुना, पूजोभविजनभावजी, ध्यानधरोजिनवरनो मनमें, आनंदअधिकउछावजी ॥ ज० ॥ १२ ॥ रासरच्योश्रीसिखरगिरिनो, सुणतांनवनिधिथायजी, तिणएभविजन

नावधरिनें, सुणज्योमनथिरलायजी ॥ जय० ॥ १३ ॥ खरतरगछपतिमहिमाधारी, कीर्त्तिजगविख्यातजी, जयश्रीजिनसौभाग्यसूरीश्वर, अमृतवचनसुगातजी ॥ ज० ॥ १४ ॥ तासुपसायेरासरच्योए, अमृतसमुद्रनेसीसजी, बालचंद्रनिजमतिअनुसारे, सोधोविबुधजगीशजी ज० ॥ १५ ॥ संवतउगणीसैसतलोतरे, (१९०७) सुदिवैशाखसुढालजी, राशअजीमगंजमांहिकीनो, भणतामंगलमालजी ॥ जय० ॥ १६ ॥

॥ इति श्री सिखरजीको राश संपूर्णम् । सर्वगाथा २०१ ॥

॥ अथ मुनिमालिका ॥

ऋषभप्रमुखजिणपाययुगपणमुं, शिवसुखदायकमनहउल्लास, पुंडरीकश्रीगौतमआदिक, गणधरगुरुमनकमलविकास ॥ १ ॥ प्रहसमेसूधासाधुनमुंनित, भावेश्रमणसुगुरुभगवंत, नामग्रहणकरिपापपखालूं । परमानंदसुमतिविकसंत ॥ २ ॥ भरतमहामुनिप्रथमचक्कीसर, बाहूबलीउपसमभंडार, सूरयसादिकआठमुनीसर, पाम्याविमलाचलभवपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रिषभवंसजेअनुक्रमहुवा, मुनिवरकोडीलाखअसंख, श्रीसेत्रुंजेशिवपुरसीधा, कलमलकालकमुकीसंक ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगरप्रमुखनिरुपमनवचक्रवर्त्ति, साधुमहाबलसंयमसींह, अचलादिकबलदेवअष्टमुनि, रामरिषीसरनवमअबीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्धिपमुहछहसुंदर, श्रीमल्लिनाथपूरवभवमित्र, पहुतापरमयतीसर शिवपुर, पालीश्रीजिनआणपवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ वंदुंविष्णुकुमारलबधिनिधि, खंदगसूरिनासीससयपंच, कार्त्तिकसेठसुसाधुकीर्त्तिधर, श्रमणसुकोसलव्रतनिरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥

श्रीयडुवंसअक्षोन्नसुसागर, प्रमुखआठअणगारप्रधान, श्रीरह-नेमिनेमिजिनबंधव, निरमलगुणगणरयणनिधान ॥ ८ ॥ प्र० ॥ जालीमयालीनेंजवयाली, पुरससेणवारिसेणप्रजुन्न, संबअनें-अनिरुद्धरिषीसर, सत्यनेमिद्दढनेमिसुधन्न ॥ ए ॥ प्र० ॥ कुम-रअनीकजसादिकषट्मुनि, गुणगिरुवोश्रीगजसुकमाल, ढंढण-रिषीश्रीथावच्चासुत, सहससाधुसंजमसुकृपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥ (रागधन्याश्री) सहसश्रमणसुंसुकसंयमधरो, पंचसयांसुंसेल-गमुनिवरो, सिद्धथयाश्रीपुंमरगिरिवरो, करुणाकरप्रणमुंसंपद-करो ॥ जल्ला० ॥ संपदकरोशमदमरिखीसरसाधुसारणासोहए, अंतरप्रकासैतिमिरनासै,नविकजनमनमोहए, प्रत्येकबुद्धप्रबुद्ध-नारदमुनिप्रमुखपैंतालए, दमदंतमहारिषीकुंजवारै साधुनमुंत्रिहुं कालए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंगरिषन्नदत्तरतनत्रयमुणी, समरुं-देवानंदासाहुणी, पांचेपांमवप्रणमुंमुनिपती, केशीपएशीबोधक-जिनमती, ज० जिनमतीकालकपुत्रमेहलथिवरआनंदर-क्खियो ॥ अणगारकासबधर्मन्नाष्यो, साधिशिवपुरसक्खिउं, कालासवेसीपुत्रआतमअरथसाधकजपसमी, श्रीपुंमरीकमहा-मुनीसरप्रणमीयेसुन्नसंयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंडुवलकलचीरी-केवली, श्रीऐमत्तोमुनिवरमनरली, श्रीकरकंडुडुमहनमिनग्गया, निज २ देसे नरवरश्रीजुवा ॥ ज० ॥ श्रीजुवाएवृषन्नादिदेखी-थयाबमवझरागीया, संयमसिरिन्नजिमोहनिद्रातजीयजोगैजा-गीया, प्रत्येकबुद्धाच्यारसिद्धासिद्धथयाएकणसमें, सुप्रसन्नचंद-मुनिंदनिरममप्रेमप्रणमुंप्रहसमें ॥ १३ ॥ चाल ॥ खंतेखुड्डकुमार-सुध्याईये, लोहच्चामुनिचरणेलयलाइयै, कालजदाईप्रमुखमहा-

मुणी, संजमशुद्धजयंतिसाहुणी॥ उ०॥ साहुणी जाणीजग वखाणी- परमपदसुखपामीया, श्रीश्रमणनंदसुनंदसुंदरअचलआतमरा- मीया, श्रीसुप्रतिष्टयतीसुव्रतसाधुसुव्रतसेहरो, चारित्ररिषि- गुणवंतगोनंदगरुआगरिमासागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरीसि- वरायरिषीसरवंदीयै, दशारणनंदनमुंडुखछंदीयै, अर्जुनमाली- सुखसंजमधरो, सुदृढप्रहारीशिवरमणीवरो॥ उ०॥ शिवरमणीव- रोश्रीकुरगडूक्षमावंतप्रसिद्धउं, वलिच्यारउग्रविहारतपसीसहित सुविहितसिद्धउं ॥ कोडिन्नदिन्नअनेंसेवालीपनरशतकतिमोत्तरा, गोतमप्रबोधितसिद्धिपुहतानमुंचरणकरणाधरा ॥ १५॥ चाल ॥ गिरुआश्रीगुणसागरगाईयें, पृथवीचंद्रप्रणम्यासुखपाईयें, खंद- कुमारसदाअभिनंदीयें, नमिहअरहमित्रमनआणंदीयै ॥ उ० ॥ आणंदीयैमेतार्यमुनिवरजगतिसुंसमरीकरी, ऋषिइलापुत्रचिला- पुत्रमृगापुत्रहीयैधरी, श्रीइंद्रनामनिग्रंथनिर्ममधर्मरुचिधर्मागरो, तेतलीपुत्रसुबुद्धिबोधितसुजितशत्रुमुनीसरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ करजगि २ जसतणो, श्रमणसुंदशाणशीलसुहावणो, श्रीअभयसुतआर्द्रकुमारए, चित्तचतुरनरचित्तचमकारए॥उ०॥ चमकारसारसुजातरिषीवरदेवसांनिधजशधणी, गांगेयगिरुवो- गुणेगाजैसुजिनपालितहितधणी, श्रीधर्मघोषसुसीसधर्मरुचिसा- धुश्रीजिनदेवए, श्रीकपिलरिषिहरिकेशवलिमुनिनितनमुंनिरले- वए ॥ १७ ॥ चाल ॥ जतिजयघोषविजयघोषजुउं, सेवुंश्रुतधर- श्रीदेवलसुउं, श्रीइखुकारनृपतिकमलावती, राणीभृगुसुतप्रो- हितसुजसमती ॥ उ० ॥ सुजसमतीजेहनीजशाभार्यापुत्रदोयव- खाणीये, एछहुंदेईचारुचारित्रमुगतिपुहताजाणीये, क्षत्रियमु-

निसरसाधुसंजमधर्मरुचिसुमहाव्रति, निर्ग्रंथनाथअनाथवंदुं-समुद्रपालसुसंयती ॥ १७ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्रनमुंकेवलकह्यो, विधिसुंशीतलशिवकमलामिह्यो, धन २ धन्नोसुरगिरिधीरए, वीरप्रशंश्यौतपगुणवीरए ॥ ७० ॥ श्रीवीरदिखितश्रीसुबाहु-भद्रनंदकुमारए, आदिकदसेरिषिचरियजेहनासुखविपाकउदा-रए, श्रीचंद्ररुद्रसुशीसखंदगखिमानिधिकहीयेइणकलै, कुरुदत्त सुततीसगसरोरुहरिषिनम्यांआस्याफलै ॥ १ए ॥ चाल ॥ अंग-प्रमुखरिषिच्यारेआदरी, विधिसुंसंजमसिद्धिवधूवरी, अनय-कुमारमुनिअनयंकरो, हल्लविहल्लसुआतमहितकरो ॥ ७० ॥ हितकरोदयाधरमेघमुनिवरनंदीषेणआराधीयै, सुनक्षत्रनेसर्वा-नुनूतीशमरशिवसुखसाधीयै, श्रीसिंहसाधुअनेंउदायनचरमरा-जरिखीसरो, श्रीशालनद्रसुधन्नमुनिवरसमरतांमंगलकरो ॥२०॥ रागधन्यासरी ॥ वद्रवैरागीवरनमुं, जुगवरजंबूसामि, प्रनवसि-य्यंनवपरगमौ, सुजशयसोनद्रस्वामि ॥ २१ ॥ महामुनीसर-नितनमुंजी, नामेंघरनवनिद्ध, वाधैरिद्धसमृद्ध ॥ २२ ॥ म० ॥ जगसंनूतिविजयजयौ, नद्रबाहुकृतनद्र, जगजोगीसरजागतो, मुनिवरश्रीथूलनद्र ॥ २३ ॥ महा० ॥ नद्रबाहुस्वामीतणा, च्यारशिष्यमुनिराय, शीतपरिसहजिणेसह्या, सार्या २ आतम-काज ॥ २४ ॥ महा० ॥ अजमहागिरिजांणियै, अजसुहस्थि-विशाल, संप्रतिनृपपडिबोहियो, श्रीऐवंतीसुकमाल ॥२५॥म०॥ आरिजसांमिप्रसंसीयो, अजसुनद्रमुनीस, अजमंगुमहिमा-निलो, सींहगिरीसमुणीस ॥ २६ ॥ म० ॥ धनगिरिथिवरमहा-मुनी श्रीवयरस्वामीमुनिराय, अरहदिएणमुनिअपहस्यो, नद्र

गुप्तनिरमाय ॥ २७ ॥ म० ॥ वयरसेनविद्यावरू, श्रीरक्षितगुरुदक्ष, पूसमित्रगुणगहगहै, प्रभुदुरवलिकापक्ष ॥ २८ ॥ म० ॥ विंऊसाधुसुविधइभस्यो, श्रीथंभिलसुमहिक्ष, सूत्रअरथरतनेंभस्यो, क्षमाश्रमणदेवक्षि ॥ २९ ॥ म० ॥ पंचमकालचरममुनी, श्रीदुपसैसूरिदयाल, शुद्धक्रियाखरतरसही, जिनआग्याप्रतिपाल ॥ ३० ॥ म० ॥ इमपन्नरकर्मभूमीजिके, हुवाहोस्यैअनंत, वर्त्तमानश्रीसाधुजी, रतनत्रईगुणवंत ॥ ३१ ॥ म० ॥ ब्राह्मीसुंदरीरायिमई, साहुणीचंदनबाल, आदिकशीलवतीसती, त्रिकरणसुद्धत्रिकाल ॥ ३२ ॥ म० ॥ संवतसोलछत्तीसए, श्रीविमलनाथसुरसाल, दिक्षाकल्याणकदिने, गुंथीश्रीमुनिमाल ॥ ॥ ३३ ॥ म० ॥ रिणीपुरैरलीयामणो, श्रीशीतलजिणचंद, सूरिविजैराजेसदा, संघअधिकआणंद ॥ ३४ ॥ म० ॥ श्रीमतिभद्रसुगुरूतणें, सुपसायैसुखकार, चारितसंघवखाणीयै, सदा २ जयकार ॥ ३५ ॥ म० ॥ मनोहरश्रीमुनिमालिका गुणगणपरमलपूर, कंठठवइभत्तमजिके, पामैंसुखभरपूर ॥ ३६ ॥ म० ॥ महामुनीसरगावतां,सुरतरुसफलसमान, अष्टमहासिद्धिघरफलै, सदासदाकल्याण ॥ ३७ ॥ इतिमुनिमालिकासंपूर्णम् ॥

॥ अथ पापआलोयणास्तवनलिख्यते ॥

बेकरजोमीवीनवूंजी, सुणिस्वामिसुविदीत, कूरूकपटमूंकीकरीजी, वातकहुंआपबीत ॥ १ ॥ कृपानाथमुझवीनतीअवधार, तुंसमरथत्रिभुवनधणीजी, मुझनेंदुत्तरतार ॥ कृ० ॥ २ ॥ भवसायरभमतांथकांजी, दीठादुःखअनन्त, भागसंयोगेभेटीयोजी, भयभंजनभगवंत ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जेदुःखभांजेआप-

णोजी-तेहनेंकहीयेदुःख, परदुःखभंजणतूंसुणयोजी, सेवकनें-द्योसुख ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयणलीधांपखेजी, जीवरुलैसंसार, रूपीलक्ष्मणामहासतीजी, एहसुणयोअधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकालेदोहिलोजी, सूधोगुरुसंयोग, परमारथपीछेनहिंजी, गरूरप्रवाहीलोक ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिणतुझआगलिआपणाजी, पापआलोउंआज, मायबापआगलिबोलतांजी, बालककेहीलाज ॥ कृ० ॥७॥ जिनधर्मजिनधर्मसहूकहेजी, थापेआपणीवात, सामाचारीजूईजूईजी, संसयपड्योमिथ्यात ॥ कृ० ॥ ८ ॥ जाणअजाणपणेंकरीजी, बोल्याउत्सूत्रबोल, रतनेकागउडावतांजी, हाय्योजन्मनिटोल० ॥ कृ० ॥ ९ ॥ भगवंतभाष्योतेकिहांजी, किहांमुझकरणीएह, गजपाखरखरकिमसहेजी, सबलविमासणतेह ॥ कृ० ॥ १० ॥ आपपरूपुं आकरोजी, जाणेलोकमहंत, पिणनकरुं परमादीयोजी, मासाहसदृष्टान्त ॥ कृ०॥११॥ कालअनन्तेमैंलह्याजी, तीनरतनश्रीकार, पिणपरमादेपाडियाजी, किहांजईकरुंपुकार ॥ कृ० ॥ १२ ॥ जाणुंउत्कृष्टीकरुंजी, उद्यतकरुंरेविहार, धीरजजीवधरैनहीजी, पोतेबहुसंसार ॥ कृ० ॥ १३ ॥ सहजपड्योमुजआकरोजी, नगमेरुनीवात, परनिंदाकरताथकांजी, जायैदिननेरात ॥ कृ० ॥ १४ ॥ किरियाकरतांदोहिलीजी, आलसआणेजीव, धर्मपखेधंधेपड्योजी, नरकेकरसैरीव ॥ कृ० ॥ १५ ॥ अणहुंतागुणकोकहेजी, तोहरखुंनिशिदीश, कोहितसीखभलिकहेजी, तोमनआणुंरीश ॥ कृ० ॥ १६ ॥ वादभणीविद्याभणीजी, पररंजनउपदेश, मनसंवेगधय्योनहीजी, किमसंसारतरेश ॥ कृ०॥१७॥

सूत्रसिद्धांतवखाणतांजी, सुणतांकर्मविपाक, खिणएकमनमांहि ऊपजैजी, मुझमरकटवैराग ॥ कृ० ॥ १८ ॥ त्रिविधत्रिविध- करीऊचरुंजी, भगवंततूह्महजूर, वारवारभांजुंवलिजी, छूट- कवारोदूर ॥ कृ० ॥ १९ ॥ आपकाजसुखराचतांजी, कीधा- आरंभकोड़, जयणानकरीजीवनीजी, देवदयापरछोड़ ॥ कृ० ॥ ॥ २० ॥ वचनदोषव्यापककह्याजी, दाख्याअनरथदंड़, कूड़- कपटबहुकेलवीजी, व्रतकीधाशतखंड ॥ कृ० ॥ २१ ॥ अण- दीधोलीजैतिणोजी, तोहिअदत्तादान, तेदूषणलागाघणाजी, गिणतानावेज्ञान ॥ कृ० ॥ २२ ॥ चंचलजीवरहैनहींजी, राचै- रमणीरूप, कामविटंबनसिकहुंजी, तेतुंजाणेंस्वरूप ॥ कृ० ॥ ॥ २३ ॥ मायाममतामेंपड्योजी, कीधोअधिकोलोभ, परिग्र- हमेल्योकारमोजी, नचढिसंयमसोभ ॥ कृ० ॥ २४ ॥ लागा- मुजनेलालचेजी, रात्रिभोजनदोष, मैंमनमुंक्योमांहरोजी, न- धर्योधर्मसंतोष ॥ कृ० ॥ २५ ॥ इणभवपरभवदूहव्याजी, जीवचोरासीलाख, तेमुजमिछामिदुक्कडंजी, भगवंततोरीसाख ॥ कृ० ॥ २६ ॥ कर्मादानपनरैकह्याजी, प्रगटअढारेपाप, जेमें- कीधातेसहुजी, वगशवगशमाइवाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुजआ- धारछेएतलोजी, सरदहणाछेशुद्ध, जिनधर्ममीठोजगतमेंजी, जिमसाकरनेदूध ॥ कृ० ॥ २८ ॥ रिषभदेवतूंराजियोजी, सेत्रुं- जगिरिसिणगार, पापआलोयाआपणाजी, करप्रभुमोरीसार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्मएहजिनधर्मनोजी, पापआलोयाजाय, मन- सुंमिछामिदुक्कडंजी, देतादूरपुलाय ॥ कृ० ॥ ३० ॥ तुंगतितुं- मतितुंधणीजी, तुंसाहिबतुंदेव, आणधरुंसिरताहरीजी, भव-

नवताहरिसेव ॥ कृ० ॥ ३१ ॥ कलश इमचढीयसेत्रुंजचरण-नेव्यानालिनंदनजिनतणा, करजोमिआदिजिणंद, आगेपाप-आलोयाआपणा, श्रीपूज्यजिनचंदसूरिसद्गुरुप्रथमशिष्यसुजश-घणें, गणिसकलचंदसुसीसवाचक, समयसुंदरगणिनणै ॥ ३२ ॥ इतिआलोयणस्तवनं ॥

॥ अथ आलोयणवृद्धस्तवनंलिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ सकलसिद्धिदायकसदा, चौवीशेजिनराय, सद्गुरु-सामिनीसरसती, प्रेमेंप्रणमुंपाय ॥ १ ॥ त्रिजुवनपतित्रिशला-तणो, नंदनगुणगंजीर, शासननायकजगजयो, वर्द्धमानवम-वीर ॥ २ ॥ एकदिनवीरजिणंदनें, चरणेकरीपरिणाम, नविक-जीवनाहितनणी, पूछेगौतमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगतिमारगआरा-धिये, कहोकिणिपरिअरिहंत, सुधासरसतववचनरस, नाखें-श्रीनगवंत ॥४॥ अतिचार १ आलोइवे, व्रतधरीयेगुरुशाखि२ जीवखमावोसयलजे, योनिचोरासीलाख ३ ॥ ५ ॥ विधिसुं-वलिवोसरावियें, पापस्थानकअढार ४, च्यारशरणनितअनु-सरे ५, निंदोदुरितआचार ६ ॥ ६ ॥ शुनकरणीअनुमोदिये ७, नावनलोमनआण ८, अणशणअवसरआदरी ए, नवपदजपो-सुजाण १०, ॥ ७ ॥ शुनगतिआराधनतणा, एछैदशअधिकार, चित्तआणीनेंआदरो, जिमपामोनवपार ॥ ८ ॥

॥ ढाल १ ॥

॥ एछिंडीकिहांराखी ॥ इसचालमे ॥

ज्ञानदरिशणचारित्रतपवीरज, ए पांचेआचार, एहतणाइह-नवपरनवना, आलोइयेअतीचाररे ॥ १ ॥ प्राणीज्ञाननणो-

गुणखाणी, वीरवदेंइमवाणीरे ॥ प्रा० ॥ गुरुउंलवीयेनहीगुरु-विनयें, कालेंधरीवहुमान, सूत्रअर्थतडुन्नयकरीसूधा, नणीये-वहीउपधानरे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञानोपगरणपाटीपोथी, ठवणी-नोकरवाली, एहतणीकीधीआशातना, ज्ञानन्नक्तिनसंन्नालीरे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिकविपरीतपणाथी, ज्ञानविराध्युंजेह, आन्नवपरन्नववलियन्नवोन्नव, मिछामिडुक्कमतेहरे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ समकितल्योशुद्धजाणी, जिनवचनें शंकानविकीजें, नविपरम-तअन्निलाष, साधुतणीनिंदापरिहरजो, फलसंदेहनराखिरे, ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ समकित० ॥ मूढपणुंछंमोपरशंसा, गुणवंतनेंआद-रीयें, साहमीनेंधर्मेंकरीथिरता, नगतिप्रन्नावनाकरीयैरे, प्रा० ॥ ॥ ६ ॥ सम० ॥ संघचैत्यप्रासादतणोजे, अवर्णवादमनलेख्यो, ड्व्यदेवकोजेहविणास्यो, विणसंताउवेख्योरे, ॥ प्रा० ॥ सम० ॥ ॥ ७ ॥ इत्यादिकविपरीतपणाथी, समकितखंड्युंजेह, आन्नव० ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ चारित्रल्योचितआणी पांचसुमतित्रिणगुपतिवि-राधी, आठेप्रवचनमाय, साधुतणेंधरमेंप्रमादें, अशुद्धवचन-मनकायरे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ चारि० ॥ श्रावकनेंधर्मेंसामायक, पोसहमांमनवाली, जेजयणापूर्वकजेआठे, प्रवचनमायनपालीरे, ॥ प्रा० ॥ १० ॥ चारि० ॥ इत्यादिविपरीतपणाथी, चारित्र-खंड्युंजेह, आन्नव० ॥ मिछामि० ॥ ११ ॥ चारि० ॥ बारे-न्नेदेंतपनविकीधो, छतेंयोगेंनिजशकतें, धर्मेंमनवचकायावीरज, नविफोरविउंन्नगतेरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ चारि० ॥ तपवीरज-आचारें इणपरें, विविधविराध्याजेह, आन्नव० ॥ मिछा० ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ चारि० ॥ वलियविशेषें चारित्रकेरा, अतिचार-

आलोइये, वीरजिणेसरवयणसुणीनें, पापमयलसविधोइयरे ॥
॥ प्रा० ॥ १४ ॥

॥ ढाल २ ॥

पृथ्वीपाणीतेऊ, वाउवनस्पती, एपांचेथावरकह्याए, करी-करसणआरंभ, खेत्रजेखेमीया, कूवातलावखणावीयाए ॥ १ ॥ घरआरंभअनेक, टांकांभोइंरा, मेमीमालचिणावियाए, लिंपणगुंपणकाज, एणिपरेपरंपरें, पृथ्वीकायविराधीयाए ॥ २ ॥ धोयणनाहणपाणी, फीलणअपकाय, छोतिधोतिकरिदूहव्याए; भाठीकरकुंभार, लोहसोवनगरा, भामभुंजालिहालागराए॥३॥ तापणसेकणकाजें, वस्त्रनिखारण, रंगणरांधणरसवतीए, इणिपरें-कर्मादान, परिपरेंकेलवी, तेऊवाऊविराधीयाए ॥ ४ ॥ वाभी-वनआराम, वावीवनस्पती, पानफूलफलचूंटीयाए, पौंहँकपा-पमशाक, सेक्यांसूकव्यां, छेद्यांभूंघाआथीयांए, ॥ ५ ॥ अलसी, नेंएरंम, घाणीघालीनें, घाणातिलादिकपीलीयाए, घालीकोलु-मांहिं, पीलीशेलमी, कंदमूलफलवेचीयाए ॥६॥ एमएकेंद्रीजीव, हण्या हणावीया, हणतांजे अनुमोदीयाए, आभवपरभवजेह वलीय० ॥ तेमुफमि० ॥ ७ ॥ क्रमीसरमीयाकीमी, गा-मरगंमोला, इअलपूराअलशीयाए, वालाजलोकचूमेल, विच-लितरस, वलीअथांणांप्रमुखनांए ॥ ८ ॥ इमवेइंद्रीजीव, जेमें-दूहव्याए, तेमु० ॥ उदेहीजूंलीख, मांकममकोमा, चांचमकी-मीकुंथुआए ॥ ९ ॥ गद्दहीयाधीमेल, कांनखजूरमा, गींमोला-धनेरीयाए, इमतेइंद्रीजीव, जेमेंदूहव्यांएतेमुफ० ॥ १० ॥ माखीमछरमांस, मसापतंगीया, कंशारीकोलियावमाए, ढींकण-

वीछूतीरु, जमराजमरीय, कौतावंगखरुमांकरुीए॥ ११॥इमचौरिंद्रीजीव, जेमे०॥ तेमुफ०जलमांनांखीजाल०॥ जलचरदूहव्या, वनमांमृगसंतापीयाए ॥ १२ ॥ पीड्यापंखीजीव, पारुीपासमां, पोपटघाल्यापांजरेंए, इमपंचेंद्रीजीव, जेमे० ॥ तेमुफ० ॥१३॥

॥ ढाल ३ ॥

॥ प्राणीवाणीहितकारीजी ॥ एचाल ॥

क्रोधलोजजयहासथीजी, बोल्यावचनअसत्य, कूरुकरीधनपारकाजी, लीधांजेहअदत्तरे ॥ १ ॥ जिनजीमिछामिछुक्करुआज, तुह्मसाखेंमहाराजरे, जिनजी, देईसारूंकाजरे ॥ जि० ॥ ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देवमनुजतिर्यंचनाजी, मैथुनसेव्यांजेह, विषयरस लंपटपणेंजी, घणुंविटंव्योदेहरे ॥ जि० ॥ २ ॥ ॥ मि० ॥ परिग्रहनीममताकरीजी, जवजवमेलीआथ, जेजिहांनीतेतिहांरहीजी, कोइनआवीसाथरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणीजोजनजेकर्यांजी, कीधाजह्अजह् ॥ रसनारसनीलालचेंजी, पापकर्यांप्रत्यक्षरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रतलेईविसारीयांजी, वलीजाग्यापच्चखाण, कपटहेतुकिरियाकरीजी, कीधाआपवखाणरे ॥ ५ ॥ जि० ॥ मि० ॥ त्रणढालआठेदुहेजी, आलोयाअतिचार, सिवगतिआराधनतणोजी, एपहिलोअधिकाररे ॥ जि० ॥ मि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४ ॥ साहेलडीरेदेशी ॥

पंचमहाव्रतआदरो अथवाल्योव्रतवारतो, यथाशक्तिव्रतआदरी, सा० ॥ पालोनिरतिचारतो ॥ १ ॥ व्रतलीधांसंजारीये ॥ सा० ॥ हियरुधरीयविचारतो, शिवगतिआराधन-

तणो ॥ सा० ॥ एबीजोअधिकारतो ॥ २ ॥ जीवसवेखमावियें, ॥ सा० ॥ योनिचोरासीलाखतो, मनशुद्धेंकरीखामणा ॥सा०॥ कोइशुंरोषनराखतो ॥ ३ ॥ सर्वमित्रकरीचिंतवो ॥ सा० ॥ कोइनजाणोशत्रुतो, रागद्वेषएमपरिहरों ॥ सा० ॥ कीजेजन्मपवित्रतो ॥ ४ ॥ साहम्मीसंघखमावियें ॥ सा० ॥ जेउपनीअप्रीतितो, सज्जनकुटुंबकरीखामणा ॥ सा० ॥ एजिनशासनरीतितो ॥ ५ ॥ खमियेंनेखमावियें ॥सा०॥ एहजधर्मनोसारतो, शिवगतिआराधनतणो ॥ सा० ॥ एत्रीजोअधिकारतो ॥ ६ ॥ मृषावादहिंसाचोरी ॥ सा० ॥ धनमूर्छामेहुन्नतो, क्रोधमानमायातृष्णा, ॥ सा० ॥ प्रेमद्वेषपैशुन्यतो ॥ ७ ॥ निंदाकलहनकीजीयें ॥ सा० ॥ कूडांनदीजेआलतो, रतिअरतिमिथ्यातजो ॥ सा० ॥ मायामोहजंजालतो ॥ ८ ॥ त्रिविधत्रिविधवोसिरावियें ॥ सा० ॥ पापस्थानअढारतो, शिवगतिसाधनतणो ॥ सा० ॥ एचोथोअधिकारतो ॥ ९ ॥

॥ ढाल ५ ॥

॥ हवेनिसुणोइहांआवियाए ॥ एदेशी ॥

जनमजरामरणेंकरीए, एसंसारअसारतो, कस्यांकर्मसहुअनुभवेए, कोइनराखणहारतो ॥ १ ॥ शरणएकअरिहंतनुंए, शरणसिद्धभगवंततो, शरणधर्मश्रीजैननोए, साधुशरणगुणवंततो ॥ २ ॥ अवरमोहसविपरहरीए, चारशरणचित्तधारतो, शिवगतिआराधनतणोए, ए पांचमोअधिकारतो ॥ ३ ॥ आभवपरभवजेकस्यांए, पापकर्मकेईलाखतो, आतमसाखेंतेनिंदीयेए, पडिकमियेगुरुसाखतो ॥४॥ मिथ्यामतिवर्त्तावियांए, जेभाख्या-

उत्सूत्रतो, कुमतिकदाग्रहनेवशेए, वलीथाप्योउत्सूत्रतो ॥५॥ घड्यांघमाव्यांजेघणांए, घरटीहलहथीयारतो, नवनवमेली-मूकीयांए, करताजीवसंहारतो ॥ ६ ॥ पापकरीनेपोषियाए, जनमजनमपरिवारतो, जनमान्तरपहोतापछीए, कोइनकीधी-सारतो ॥ ७ ॥ आनवपरनवजेकर्यांए, एमअधिकरणअने-कतो, त्रिविधत्रिविधवोसिराविर्येए, आणिहृदयविवेकतो ॥ ८ ॥ दुष्कृतनिंदाएमकरीए, पापकर्यांपरिहार, शिवगतिआराधन-तणोए, एछठोअधिकारतो ॥ ए ॥

॥ ढाल ६ ॥

॥ आदरतुंजोइनेंआपणीएदेशी ॥

धन्यधन्यतेदिनमाहरो, जिहांकीधोधर्म, दानशीयलतपआ-चरी, टाल्यांदुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शत्रुंजयादिकतीर्थनी, जे-कीधीयात्र, युगतेंजिनवरपूजीया, वलीपोख्यांपात्र ॥ ध०॥ २ ॥ पुस्तकज्ञानलखावियां, जिणहरजिणचैत्य, संघचतुर्विधसाचव्या, एसातेखेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणासुपरेंकर्यां, अनुकंपा-दान ॥ साधुसूरिउवझायनें, दीधांबहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारजअनुमोदिये, एमवारंवार, शिवगतिआराधनतणो, एसातमोअधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ नावनलोमनआणीयें, चित्त-आणीठाम, समतानावेंनावीयें, ए आतमराम ॥ ६ ॥ ध० ॥ सुखदुःखकारणजीवनें, कोइअवरनहोय, कर्मआपजेआचर्यां, नोगवियेंसोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समताविणजेअनुसरे, प्राणी-पुण्यनांकाम, छारऊपरलीपणुं, फांखरचित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥

नाव नलीपरें नावीय, एधर्मनोसार, शिवगतिआराधनतणो, एआठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ए ॥

॥ ढाल ७ ॥

॥ रेवतगिरिउपरे ॥ एदेशी ॥

हवेअवसरजाणी, करीयेंसंलेषणसार, अणसणआदरीयें, पचरकीचारआहार, लघुतासविमूकी, छांमीममतासंगए आतमखेले, समताज्ञानतरंग ॥ १ ॥ गतिचारेंकीधा, आहारअनंतनिःशंक, पणतृप्तिनपाम्यो, जीवलालचीयोरंक, दुलहोएवलीवली, अणसणनोपरिणाम ॥ एथीपामीजे, सिवपदसुरपदठाम ॥ २ ॥ धनधन्नाशालिनद्द, खंधोमेघकुमार, अणसणआराधी, पाम्यानवनोपार, शिवमंदिरजाशे, करीएकअवतार, आराधनकेरो, ए नवमोअधिकार ॥ ३ ॥ दशमेअधिकार, महामंत्रनवकार, मनथीनविमूको, शिवसुखफलसहकार, ए जपतांजाये, दुर्गतिदोषविकार, सुपरेंएसमरो, चउदेपूरवनोसार ॥ ४ ॥ जन्मांतरेजातां, जोपामेनवकार, तो पातकगाली, पामेसुरअवतार, एनवपदसरिखो, मंत्रनकोसंसार, इहनवनेपरनवे, सुखसंपत्तिदातार ॥ ५ ॥ जुओनीलनेनीलरी राजाराणीथाय, नवपदमहिमाथी, राजसिंहमहाराय, राणीरतनवतीबेहु, पाम्याछेसुरनोग, एकनवथीलेशे, सिद्धिवधूसंयोग, ॥ ६ ॥ श्रीमतीनेएवली, मंत्रफट्योततकाल, फणिधरफीटीने प्रगटथइफूलमाल, शिवकुमरेयोगी, सोवनपुरिसोकीध, एम एणेमंत्रे, काजघणानासिद्ध ॥ ७ ॥ एदशअधिकारे, वीरजिणेसरनाख्यो, आराधनकेरो, विधिजेणेचित्तमांराख्यो, तेणेपाप-

पखाली, भवभयदूरेंनाख्यो, जिनविनयकरंतां, सुमतिअमृत-
रसचाख्यो ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ नमोभविभावशुं ए ॥ एदेशी ॥

सिद्धारथरायकुलतिलोए, त्रिशलामातमल्हारतो, अवनी-
तलेतुमेअवतर्याए, करवाअमउपगार ॥ १ ॥ जयोजिनवीर-
जीए, एआंकणी ॥ मेंअपराधकर्याघणाए, कहेतांनलहुंपारतो,
तुमचरणेआव्या भणीए, जोतारेतोतार ॥ २ ॥ जयो० ॥
आशकरीने आवीयोए, तुमचरणेमाहाराजतो, आव्यानेउवेख-
शोए, तोकिमरहसेलाज ॥ ३ ॥ ज० ॥ कर्मअलुजणआकराए,
जन्ममरणजंजालतो, हुंछुंएहथीउभग्योए, छोडावोदेवदयाल
॥ ४ ॥ ज० ॥ आजमनोरथमुजफल्याए, नाठादुःखदंदोलतो,
तुठोजिनचोवीसमोए, प्रगट्यापुण्यकल्लोल, ॥ ५ ॥ ज० ॥
भवभवविनयएतुमारडोए, भावभक्तितुमपायतो, देवदयाकरी-
दीजियेएबोधबीजसुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति आराधना ॥

॥ द० राग प्रभाति ॥

स्वामीरिसहेसरु दीठोंमेंसुरतरु सुनिजरकरी प्रभुसुजस
लीजैस्वामी० ॥१॥ आतमगुण तुमतणो प्रगटसोहामणो सादि
अनंतस्थिति सुखलहीजै स्वामी० ॥२॥ ध्येयनाध्यानथी ध्याता-
निजगुणलहे भावउल्लासथी कर्मछीजै स्वा० ॥ ३ ॥ साध्यसाध
कदशा अनुभवीआतमा बाध्य बाधक पणोदूरकीजै स्वा०
॥४॥ एकप्रदेशमां अनंतसुखतेंलह्यो तेहनोअंश प्रभुमोयदीजै
स्वा० ॥ ५ ॥ त्रणजगतनाथतूं सेवकांसुखकरु अवरदूजोनही-

कोयदीसै स्वा० ॥ ६ ॥ वीनतीमानजौ सुजसमुजआपजो, जिनकृपाचंद्रसूरि जयबरीजै स्वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

दरसणकीयो आजआदीसरको दर० धूलेवागढमेंआपविराजो, नाभिरायनंदननीको दर० ॥ १ ॥ द्रव्यभावविधदरशणजाणो, भावविनादरसणफीको दर० ॥ २ ॥ दरसण करि भविनिजगुणपावे, वीतरागपदजिनवरको दरस० ॥ ३ ॥ जिनवरदरसणनिमित्तलहिने, उपादानआतमहीको दर० ॥४॥ कारणताग्रही कार्यअनूपम, सिद्धपणो निरुपमटीको द० ॥ ५ ॥ ज्ञानगुलालप्रेमपिचकारी, क्षमाअवीरखेले हिलमिलको द० ॥ ६ ॥ ऐसीहोरी भविजनखेले, सूरिकृपाचंद्र सुखवरको द० ॥ ७ ॥ इति० ॥

॥ कृपानिधिवीनतिअवधारो रे एदेशी ॥

श्रीरिषभजिनेसरस्वामीरे,त्रिभुवनजनमनविसरामीरे,जगतारण अंतरजामी, भविकजनश्रीजिनवर आराधोरे एतो आराधि शिवफलसाधो भवि० ॥ १ ॥ मनमोहनदिनकरसोहेरे, देख्याभव्यकमलप्रतिवोहेरे, जिमचंद चकोरनिशिमोहे भ० ॥ २ ॥ गढधूलेवाजिनपति वंदोरे, प्रभुदरसणकरिचिरनंदोरे, एतोनिज गुणसुरतरुकंदो भ० ॥३॥ गढलंकामे प्रभुवसियारे, रावणनृपमनमेउलसियारे, सहुथयासेवानारसिया भ० ॥ ४ ॥ उज्जयणीमें प्रभुहोवेरे, श्रीपालनीव्याधिखोवेरे, सुखसंपदाकरिजनजोवे भ० ॥ ५ ॥ वागडदेशबडोदगांममांहिरे जिहांवसियाजगतनासांहिरे, प्रभुभावभगतिमनलांहि भ० ॥ ६ ॥ तिहांथी धूलेवेआवेरे, घणाजात्रीनामनभावेरे, गौरीमिलमंगलगावे भ०

॥ ७ ॥ परचापरतिखजगगाजेरे, अतिसयगुणअंबरगाजेरे, प्रनुदीठान्नवन्नय न्नाजे न्न० ॥ ८ ॥ देशमेवाडदेख्योनगीनोरे, करेमा पारसनाथमनलीनोरे, देलवाडेदरसणकीनो न्न० ॥ ए ॥ आदीसरअद्भुतमूर्तिरे, उदयापुरजिनालयस्फूर्त्तिरे, पद्मनान्नसेव्यासुखपूर्त्ति न्न० ॥ १० ॥ वनेडेआदीसरराजेरे, इम चेत्यअनेकविराजेरे, राजनगरमांअधिकदीवाजे न्न० ॥ ११ ॥ उगणीसे असीवरसेरे, फागुणशुदि आठम फरसेरे, जिनकृपाचंदसूरिमनहरसे न्न० ॥ १२ ॥ इति० ॥

॥ मोरादेमइया आदिकरणतेराजइया एदेशी ॥

श्रीसंन्नवजिनराया न्नणजगनाथकहवाया श्रीसंन्न० नगरी अयोध्याजन्मलियो है, जितारिकुलनन्नचंदा, सेनामातसुजात सोवनद्युति, अश्वलंछनसोहाया संन्न० ॥ १ ॥ फागुणसुदिआठमअवतरिया, मगसरशुदिचवदशजाया, मगसर पूनिमदीक्षाधारी, कातिवदि पांचमनाणपाया संन्नव० ॥ २ ॥ चैत्रशुक्लपंचमीनिर्वाण, सवजीवनेंसुखदाया, साठलाखपूरवनोआयु, धनुषच्यारसै काया संन्न० ॥ ३ ॥ महागोपमहामाहण प्रन्नुजी, न्नवअटवी सत्थवाह, न्नवजलधिनिर्यामकतुमही, एओपमामनन्नाया संन्न० ॥४॥ गणधरदोयअधिकशतजाणो, सिवरमणीकोराया जिनकृपाचंद्रसूरि सुखखाणी, सेवामे मनलाया- संन्न० ॥ ५ ॥ इति ॥

थांपरवारीहोजिनजी श्रीधुलेवागढपतिरिषन्नसोहावणाहोराज रिष० ए आंकणी देशमेवाडमेसोन्नताहोराज थां० आदिकरणआदिनाथ न्नेटथा न्नले न्नावसुंहोराज न्ने० थां०

श्री० ॥१॥ परचा जगमेपरगह्याहोराज थां० आवेसंघआपार स रसदरसणलहेहोराज सर० थां० श्री० ॥ २ ॥ स्यामवरण शुभसुंदरुहोराज थां०अद्भुतप्रभुदीदार देख्यावांछितफलेहोराज देख्या० थां० श्री० ॥३॥ आसहती घणादिवसनीहोराजथां० तेसफलीथइआज, पूरवसंचितफल्याहोराज पूरव० थां०श्री० ॥ ४॥ भवभवचरणारी चाकरीहोराज थां० मुजनेहितसुखकंद सदा प्रभुदीजीयेहो राज सदा० थां०श्री० ॥५॥ मालवदेशथी आवीयाहोराज थां० विषमउल्लंघीवाट आजदरसणलह्योहोराज आ० थां० श्री० ॥ ६ ॥ उगणीसेअसीसमेहोराज थां० फागणशुदि: हितकार, सदासंपतिकरुहोरा सदा० थां० श्री० ॥ ७ ॥ अव्यावाधसुहंकरु होराज थां० अनुभवअमृतपान, सदा मुझदीजीयेहोराज सदा० थां० श्री० ॥ ८ ॥ साहिबनीसुनिज-रछताहोराज थां० सहजफलेसहुकाज कृतारथकीजिये होराज कृता० थां० श्रीधु० ॥ ए ॥ आजमनोरथ सहु फल्या होराज थां० प्रभुदरसणमनरंग सदाजयजयकरुहोराज सदा० थां० श्री० ॥ १० ॥ श्रीरिसहेसरजगजयोहोराज थां० श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि प्रभुमुजमनवस्याहोराज प्रभु० था० श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥

वारीजाउंरेसांवरियातोपरवारणारे तो० एदेशी सुणो-सुणोजी जिनवरजीह्मांनेतारजोजी एआंकणी अश्वसेननरेसर-नंदन, वामादेवीकेसुतवंदन, नीलवरणछविमोहनिकंदन, कर्मरि-पुवारजोजी सु० ॥१॥ परम पुरुस परमेसर कहिये, परमात्मा-परमगुरुलहिये, परपुद्गलसंगदूरेगमिये, सुगुणसुधार जोजी सु० ॥ २ ॥ कालअनादिपरपरणतिमे, नानादुखसह्याच्यारगतिमें

अवप्रभुदरसणपायोरतिमें, अनुभवसंभारजोजी सु० ॥ ३ ॥ देशमेवाडमेतीरथहोवे, करेडापारसनाथ प्रभुसोहे, प्रभुदरसण भविजनमनमोहे, सुखसंपतिकारजोजी सु० ॥ ४ ॥ उगणीसे शुभअसीवरसे, मेरुतेरसदरसणसरसे, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिफरसे-आवागमननिवारजोजी सु० ॥ ५ ॥ इतिसंपू० ॥

श्री अजितनाथजगनाथ भविजनकाजसुधारन वाले जित-शत्रुराजाकेनंद विजयामातामनआनंद वैशाखशुदितेरसजिन-चंद मातुउदरअवतरणे वाले श्रीअ० ॥ १ ॥ माघशुदिआठम-जनुजाण सुरपतिसेवासारेमनआण, इंद्राणीकेप्राणसमान, सव-जनतारणवाले श्रीअ० ॥२॥ माहशुदिनवमीसंयमलीनो, भव्य-मनोरथकीनो पोषशुक्लइग्यारसभीनो केवलज्ञानपानेवाले श्री-अजि०॥३॥ चेतशुदितीजनिर्वाण, सुखअनंतपायोपरधान, सा-दिअनंत स्थिति महिराण, भव्यमनोरथपूरणवाले श्रीअजि०॥४॥ गजलंछनप्रभुनोपहिचान बहुतरलाखपूरवआयुजाण साढा-च्यारशतधनुषप्रमाण देहमानधराणेवाले श्री० ॥ ५ ॥ सोव-नवरण सरीरसोहंत पंचाणुगणधरमहंत चउविहसंघसेवासारंत कृपाचंदसूरिजयकरणेवाले श्रीअजि० ॥ ६ ॥ इति

शांतिजिनंदनेसेवोरेमनवा शांतिजिनंदनेसेवो मनवांछित-फललेवोरेमनवा शांतिजि० एआंकणि नयरहस्थिणापुरदक्षिण भरते, विश्वसेनमहाराजा, अचिराराणीगुणमणीखाणी, बाजेज-गजसवाजारे म० शां० ॥ १ ॥ सर्वारथसिद्धथीचवियास्वामी, मातुउदरअवतरिया, भाद्रववदिसातम भरणीये, सहुजनकार-जसरीयारे म०शां० ॥ २ ॥ रयणीयेसुखसेजेसूति चउदेसुपना-

देखे, सुकुलीनीततखिणजागृतथई, जनमकृतारथलेखेरे म० शां०
॥ ३ ॥ जेठवदीतेरस प्रनुजनम्या, त्रीभुवनमेउद्योत, स्नात्र
महोत्सवमेरुशिखरपर, इंद्रकरे सुश्रोतरे म० शां० ॥ ४ ॥ राजा
घरमंगलजयकारी, पुत्रजनमउछरंग, गर्भमांहि प्रनुमारिनिवारी,
तिण शांतिनामसुखसंगरे म० शां० ॥ ५ ॥ कुमरपणेंपचवीस
सहस, वरसवस्यासुखवास, मंमलीकचक्रीपदपाली, एटलावर-
ससहुखासरे म० शां० ॥ ६ ॥ जेठवदिचउदसशुन्नवारे संजम
प्रनुजीलीनो, एकसहसराजापरिवारे, चोथो ज्ञानमनन्नीनोरे
म० शां० ॥ ७ ॥ करमशत्रुनेजीपवाकारण विचरेपरमदयाल,
पोषसुदिनवमीनंदीवृक्षतले, केवलपाम्योरसालरे म० शां०
॥ ८ ॥ समवसरणमे चउमुखजिनवर, देशनादेंमनुहार, संघ
चतुरविधथापीजगतगुरु, कीनोजगतउपगाररे म० शां० ॥ ९ ॥
मृगलंछनविराजितप्रनुजी, गरुमयक्षसेवासारे, शासनसुरीनिर्वाणी
अनुपम, वांछितदेनिरधाररे म० शां० ॥ १० ॥ लाखवरसप्रनु
आयुसपाली, समेतशिखर शिववरिया श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवी,
निजगुणनिरमलकरियारे म० शां० ॥ ११ ॥ इति०

सुनोशीवपुरस्वामी अंतरजामी सारोअमारोकाज अ० सोलम
जिन अचिराजीकेनंदा, विश्वसेननरराज, सुद्धस्वरूपधारकसुख-
कारक, तीनन्नुवनसिरताजरे सुनो० ॥ १ ॥ जनमसमय प्रनुमारि-
निवारी, शांतिनामसुखसाज, जगतजीवजीवनसुखकारण, प्रगटेग-
रिबनिवाजरे सु० ॥ २ ॥ महागोपमहामाहणजगपति, नीरया
मकजिनराज, नवअटविसत्थवाहसुहंकर, प्रनुदरसणलह्यो

आजरे सु०॥ ३ ॥ मांडवगढपतिशांतिजिनेसर, श्रीसुपार्श्वमहाराज, उगणीसैगुणयासीमेरु तेरसदिनसुसमाजरे ॥ ४ ॥ सु० नावनले प्रभु नेटियारे, इंदोरसंघकेसाज, जिनकृपाचंद्रसूरिसदा प्रभु सेवाथी शिवराजरे ॥ ५ ॥ सु० इति०

अट्टाइनो छढालियो ।

वीरजिणिंददिणंदसम । प्रणमुं धरिने नेह । पर्युषणविधिवर्णवुं । सांनलो नविजन तेह ॥ १ ॥ त्रणचोमासी अतिनली । उंली वे कहेवाय । पर्युषण बहीनली । अढाई सुखदाय ॥ २॥ इन्द्रादिक सुरवरमिली । दीपनंदीसरजाय । द्रव्यनाव पूजा करै । तन मनथी लयलाय ॥ ३ ॥ ढाल पहिली गरबो। सुणो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनीततजी चितधारिये । ए देशी । सुणसाहेली ? पर्वपजुसण पुण्ये आव्या जाणिये, सखि ? वीरजिनेसरसासन है, जयवंतो जगमां नासन है । त्रणजगमां एज सुखासन है, सुणसा० ॥ ४ ॥ सखि ? पर्वपजुसणआव्याहै, नविजनने मनमां नाव्याहै, सहुसंघने अधिकसुहाव्याहै, सुणसा० ॥ ५ ॥ सखि० ? इंद्रादिकदेवमलीसंगे नंदीसरजावै मनरंगे, प्रभुनक्तिकरै अतिउमंगे सुणसा० ॥ ६ ॥ नंदीसरआठमो दीपजाणो, वलयाकारमनमां आणो, बावनदेरासरजिननाणो, सुणसा० ॥ ७ ॥ अंजनगिरीच्यारे जिहांराजे, चोरासीसहस ऊंचा छाजे, अंजनवरणा ते विराजे, सुणसा० ॥ ८ ॥ च्यार दिशि तेहने सोहे, वावच्यारेंदधिमुखहोहे, दधिवर्णा नविनां मनमोहे, सुणसा० ॥ ९ ॥ विदिशिमां रतिकर कहिये, दोय दोय संख्या लहिये, लालवरणनविसरदहिये,

सुणसा० ॥ १० ॥ एकदिशि तेरहजाणो, चिहुं दिसिनां बावनमाणो, जिनचैत्यजुहारे सुरराणो, सुणसा० ॥ ११ ॥ पर्युषण पर्व आव्यां जाणी, जिनवरनीभक्तिमनआणी, करेश्रावक अतिउल्लटआणी, सुणसा० ॥ १२ ॥ जिमनंदीसर सुरपतिसेवै, तिम श्रावक सुविधि लेवै, कृपाचन्द्रसूरिनिजगुणहेवै सुणसा० ॥ १३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ ज्ञानादिकगुण संपदारे ए देशी ॥

आस्रबपांचनिवारजोरे, पर्वपजूसणजान, कषायशत्रुदल वारजोरे, धारज्यो जिनवरध्यान सुज्ञानी धारज्योरे, धारज्योपरवप्रधान ॥ १४ ॥ प्रथमअहिंसकपणोधरोरे, जीवरक्षाकरो सार, अमारीपरूहवजरूायनेरे, सासनसोभवधार, सु० धा० ॥ १५ ॥ मृषावाद बोलो नहीरे, अदत्तनोकरोत्याग, मैथुनविरति आदरोरे, जिनधरमैंदृढराग सु० धा० ॥ १६ ॥ परिग्रहपरिमाणकीजियेरे, तृष्णासेतुसमान, एपांचेआस्रवतजोरे, यथाशक्तिसुखखान, सु० धा० ॥ १७ ॥ कषायच्यारनिवारिनेरे, क्षमाप्रमुखदिलधार, अंतररिपुनेजीतवारे, पर्वसेवोनिरधार, सु० धा० ॥ १८ ॥ सामायक पोसहकरोरे, दानादिकद्योसार, पर्युषण पुण्येआवियारे, आराधोसुखकार, सु० धा० ॥ १९ ॥ अभयदानअरिदमनोरे, सुणो कथानकसार, सूरिकृपाचन्द्रसेवतांरे, पामे भवनो, पार सु० धा० ॥ २० ॥

॥ ढाल तीजी ॥

॥ कपुरहुवेअति ऊजलोरे ए देशी ॥

परव पजुसण सेवियेरे, शुचिकर मनपरिणाम, देवगुरुआ-

राधिनेरे, साधो धर्मनाकाम, चतुरनर, पर्वपजूसणजाण, अनुपमसुखनी खाण चतुर० पर्व० ॥ २१ ॥ द्रव्यभावपूजाकरोरे, श्रीजिनभक्ति उदार, प्रभुपदपंकजभेटियैरे, त्रिकरणकरि एकतार, चतुर० ॥२२॥ द्रव्यपूजाजिनराजनीरे, करतांपरित्त-संसार, सामग्री अछते करोरे, जिनदरसनदिलधार, चतुर० ॥ २३ ॥ प्रभुदरसण पातकहरेरे, वन्दतांवांछितथाय, पूजतां-लच्छीसंपजेरे, कल्पवृक्षकहेवाय, चतुर० ॥२४॥ जिनदरसणम-हिमाकहीरे, आर्द्रकुमारनेजाण, सूरिकृपाचन्द्र सेवियेरे आख्यानकमनआण, चतुर० ॥ २५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ प्रभुपासनोमुखडोजोवा ए देशी ॥

आर्द्रदेशमांहेनगीनो, आरदनगरसोहै सुखसीनो, आर्द्रक-राजानेराणी, आर्द्रकुमर गुणखाणी, सुणो भविकजनप्राणी, जिनदरसण महिमावखाणी ॥ २६ ॥ मगधदेशराजगृह छाजै, जिहांश्रेणिकराजाबिराजे, अभयकुमारमंत्रीश, च्यारबुद्धि-तणो है ईश, सुणो० ॥ २७ ॥ आर्द्रकश्रेणिकनेप्रीत, परंपराये विदीत, मंत्री तिहांआवैजावै, आर्द्रकुमारभेटणोपठावे, सुणो० ॥ २८ ॥ अभयकुमारबुद्धिप्रकाशै, जिनप्रतिमाभेजेउल्लासे, जिनमुद्राअद्भुतजोवे, जातिस्मरणआर्द्रनेहोवे, सुणो० ॥२९॥ कुमर वाहणमांबेसी, आर्यदेशआव्योमनहर्षी, दीक्षालीधीम-नचंगे, थया प्रत्येकवुद्धउमंगे, सुणो० ॥ ३० ॥ खड्गधारासम-व्रतपाले, अतिचारपंकपखाले, श्रीमतिनेपूर्वभवसंगे, रह्या चोवीसवर्षकसंगे, सुणो० ॥ ३१ ॥ पश्चात्ताप करीनेव्रतलीनो,

शुद्धधर्मैं दृढमनकीनो, राजग्रहसाह्मांजावै, बिचबौद्धादिकने हठावे, सुणो० ॥३२॥ बिचगोशालेने हरावी, हस्तीतापस समजावी, श्रेणिकने अभयकुमार, वन्दनआव्यादिलधार, सुणो० ॥ ३३ ॥ श्रीवीरनाचरणसेवीने, मुनिजन्मकृतारथकीन, जिनकृपाचन्द्रसूरिसैवे, भवियणजगमां जसलेवे सुण०॥३४

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मनडोमोह्योरेमनमोहनजी ए देशी ॥

पर्वपजूसणआवियाभविप्राणीजी, एतो आराधोगुणखाण, पर्वआराधोरे भ० ॥ ३५ ॥ छठअठमादितपकरो, भ० पक्ष मासखमणसुखकार, पर्व० भ० ॥ ३६ ॥ अमारिपरूहवजभाविने, भवि० सर्वजीव प्रतिपाल, पर्व० भ० ॥ ३७ ॥ सूर्ययशाराजापरे, भ० सेवो तप दृढचितलाय पर्व० भ० ॥ ३८ ॥ अयोध्यानगरीनोराजियो भ० भरतपुत्र त्रिखंडप्रतिपाल, प० भ० ॥ ३९ ॥ इंद्र प्रशंस्यो तिणसमे, भ० उर्वशीरंभाइहांआत, प० भ० ॥ ४० ॥ विद्याधर कुमरीबनीभ० परणीराजायेचित्तचाह, पर्व० भ० ॥ ४१ ॥ भोगविलासभलीपरे, भ० कालवीत्योनविजाणंत, प० भ० ॥४२॥ पडहसांभलीवीनव्यो, भ० राजानैकारणतेह, प० भ० ॥ ४३ ॥ पर्वाराधनफलकह्यो, भ० चूकाव्योनविचूक्योएह, प० भ० ॥ ४४ ॥ तपनाहिंलोप्योभावथीभ० सूर्ययशामहाराज, प० भ० ॥ ४५ ॥ प्रतिज्ञा चूकीउरवसी भ० इंद्रआव्योसुखसाज, प० भ० ॥ ४६ ॥ मुकुटादिकभूषणदेई, भ० स्तवनाकरीमनोहार, प० भ० ॥४७॥ इंद्र गयो स्वर्गेतदा भ० वर्त्योजयजयकार, प० भ० ॥ ४८ ॥

आरीसा—जवनमेंजपनो, ज० केवलज्ञानउदार, प० ज० ॥ ४ए ॥ जव्यकमलप्रतिबोधिने, ज० पाम्योशिवसुखसार, प० ज० ॥ ५० ॥ पर्वपजूसणवर्णव्यो, ज० जिनकृपाचंडसूरीश, प० ज० ॥ ५१ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ कलश धनाश्री देशी ॥

गायोगायोरेजविपर्वपजूसणगायो, तीर्थोमांशत्रुंजयमहिमा, नवकारमंत्र सवायो, दानमांप्राणिदयादिलधारो, पर्वमाहिकहवायोरे ज० प०॥५२॥ लौकिक लोकोत्तर बहु जेदे, पर्वघणाचित्तलायो, सहुमांचिन्तामणिसमजाणो, एहमांमनठहरायोरे ज० प० ॥ ५३ ॥ शुज ओगणीसेढहोत्तरवरसे, श्रावणसुदि मनजायो, पारसनाथ निर्वाणनेंदिवसे, पर्वमहातमगायोरे ज० प० ॥ ५४ ॥ खरतरगछ जिनआणाधारक, जिनकृपाचन्द्रसूरिरायो, सुरतबन्दररहिचोमासो, एअधिकारबनायोरे ज० प० ॥ ५५ ॥ अगाहि स्तवनम् सं०

श्रीमहावीर स्वामीना कल्याणकनुं स्तवन ॥

सिद्धारथकुलदिनमणि, त्रिशलामातसुजात । महावीरगुण वर्णवुं, त्रिजुवनमें विख्यात ॥ १ ॥ कल्याणक वर्णनकरुं, शास्त्रतणेअनुसार सावधानथई सांजलो, श्रोताजनसुखकार ॥२॥ इणअवसर्पिणीकालमां, तीर्थंकरचोवीस, जव्यकमलप्रतिबोधता, विचर्याजगना ईश ॥ ३ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ संभवजिनवरवीनती ए देशी ॥

जंबुद्वीपनाभरतमां, माहणकुंमगामजाणोरे । रिषभदत्त ब्राह्मण वसे, कोमालगोत्र कहवाणोरे ॥ ४ ॥ सुणो भविक जिनचरित्रने, सुणतांपापपुलायरे, निजगुणनिर्मलकारणे, एहिज प्रथम उपायरे सु० ॥ ५ ॥ रिद्धिवंतजगपरगमो, देवानंदातसुभजारे, जालंधरगोत्र धारणी, सुकृतकरवासजारे ॥ ६ ॥

प्राणतथीचविनेप्रभु, आषाढसुदिछठदिवसेरे, माताउयरेअवतर्या, सुहणा लाधा रभसेरे सु० ॥ ७ ॥ जाग्रतथई सुहणाग्रहे, सेजथीऊठीआवैरे, प्रीतमपासैविनयकरी, चवदेसुहणासुनावैरे सु० ॥ ८ ॥ माहाण सुणी हरषित थयो, अरथकहेशुभचित्तैरे, पुत्ररत्नहोस्येसही, पामशोबहुविधवित्तेरे, सु० ॥ ९ ॥ निसुणीअति प्रमुदितथई, देवानंदासुकुलिनीरे, सूरिकृपाचन्द्रइमवदे, सहजस्वभावमां भीनीरे, सु० ॥ १० ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ जिमजिमएगिरिभेटीयेरे ए देशी ॥

पहिलेदेवलोकनोधणीरे, शक्र नाम सुरराज, सनेही, अवधिज्ञानथीजाणीनेरे, चोवीसमजिनराज, स० ॥ ११ ॥

भावधरीनेभविजनारे, निसुणोएअधिकार स० देखेअवधिदर्शनेरे, आनंदपाम्यो अपार, स० ॥ १२ ॥ उठ्योसुरपतिवेगथीरे, सात आठपगसाहमोजाय, स० नमनकरेत्रिकरणकरीरे, शुद्धभावचित्तलाय स० भा० ॥ १३ ॥ नमोत्थुणंकहीवांदिनेरे, बैठोसिंहासणआय, स० सुरपतिनेमनऊपनोरे, विकल्पएह

कहिवाय स० ज्ञा०॥१४॥ तीनकालमेंनहिहुवेरे, एहवोएहवनाव स० अंतादिककुलमांहिनैरे, तित्थयरादिनआव स० ज्ञा०॥१५॥ नीचगोत्रना उदयथीरे, एहवन्योअधिकार स० उग्रादिक कुलमां सहीरे, संक्रमावुं जिनसार,स० ज्ञा०॥१६॥ इमचिन्तवी-सुरेश्वरुरे, हरिणेगमेषीबुलाय, स० दशअछेरासुणायनेरे, आज्ञादे सुखदाय, स० ज्ञा० ॥ १७ ॥ हरिणेगमेसीइहांआई नेरे, लेईप्रभुनेहितकार, स० सिद्धारथ राजाघरेरे, त्रिशलाकूखैअवतार, स० ज्ञा० ॥ १८ ॥ आसोजवदि त्रयोदशीरे, उत्तराफाल्गुनीजाण, स० तयासीमेंदीन नाथजीरे, संक्रमाव्याहित आण, स० ॥ १९ ॥ कल्याणक बीजो स्तव्योरे, कल्पसूत्रमनधार, स० जिनकृपाचन्द्रसूरिशास्त्रमांरे, एहकह्योअधिकार, स० ज्ञा० ॥ २० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ हारेमारे ठाम धरमना० ए देशी ॥

हांरे मारे क्षत्रियकुंड नगर नगीनो जाणजो, राजारे तिहां सिद्धारथक्षत्रियवसेरे, लो० हां० त्रिशलाराणी गुणमणिखाणीएहजो, रयणीये सुखसेजमां सूतीतिणसमेरे, लो० ॥ २१ ॥ हां० चवदे सुहणा देखीजागीतामजो, राजानेंजइ पूछै निपुणाअर्थनेरे लो० हां० राजाताजा थया इणवयणै जोरजो, निजबुद्धिअनुसारे भाषे शुभअर्थनेरे, लो० ॥ २२ ॥ हां० जिण दिन आव्याकूखेजगनानाथजो, तेदिनथीघणी वृद्धिथई राजाघरेरे, लो० हां० निश्चलथईने रहिया जगतदयालजो, माता ऊपरअनुकंपा प्रभुमनधरैरे लो० ॥ २३ ॥ हां०

हां० त्रिशलाराणी मनअकुलाणी त्यारजो, शोकातुरथई मूर्छितथावे तेहवेरे, लो० हां० ज्ञानथीजाण्यो मातातणो विकल्पजो, प्रभुजी चाल्या एकदेशथीजेहवेरे, लो० ॥ २४ ॥ हां० हर्षितथइने राणीकहे सुहेणजो, पारसनाथप्रसादे मुजवंछितफल्यारे, लो० हां० गर्भमांही प्रभुप्रतिज्ञा कीधी सारजो, मावित्र जीवतां दीक्षानविलेवीमयारे, लो० ॥ २५ ॥ हां० संपूरणथइ गर्भस्थितिसुखकारजो चैत्र सुदीतेरसने जन्म्यानाथजीरे, लो० हां० त्रणजगमांहि वरत्यामंगलमालजो, श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिशिवपुरसाथजीरे लो० ॥ २६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ दशमे देशावगासीकारे ए देशी ॥

जन्मसमय जिनराजनेरे, दिशि कुमरी आवंत, सूतिकरमकरैभावथीरे, इन्द्रासन चालंत, सुणोभवियणजणारे, सुणतांअधिक आनंद, सु० ॥ २७ ॥ अवधि प्रयुंजे सुरपतिरे, जिन जन्मोत्सवजाण, आवेऋद्धिविस्तारीनेरे, भाव अधिकदिलआण, सु० ॥ २८ ॥ सिद्धारथघर आवीनेरे, जिनजननी प्रणमंत, पांचारूपकरी प्रभुग्रहीरे इन्द्रमेरुपोहचंत, सु० ॥ २९ ॥ चोसठसुरपति तिहांमल्यारे, स्नात्रकरणने काज, तीर्थोदक कलशा भरीरे, नवरावेजिनराज, सु० ॥ ३० ॥ अष्टप्रकारीपूजाकरीरे मातापासेलाय, रत्नवृष्टिकरीसुरपतिरे, द्वीप नंदीसरजाय, सु० ॥ ३१ ॥ राजाघर ओछव घणोरे, प्रभुजन्म्यासुखकार, वृद्धिथई नाम थापियोरे, वर्धमानहितकार, सु० ॥ ३२ ॥ कुमरपणेप्रभुगुणनिधीरे, चारअतिशय सुखदाय, आमलकी क्रीडा-

समेरे, महावीरनाम थाय, सु० ॥ ३३ ॥ नेसालेजइआवियारे, परण्याराजकुमारी, मातपिता स्वर्गेगयारे, दीक्षाथीदिलधारी, सु० ॥ ३४ ॥ लोकान्तिक सुरवचनथीरे, देवेवरसीदान, मागसरवदी दशमीदिनेरे, ज्ञातवनषंरुउद्यान, सु० ॥ ३५ ॥ चोसठइन्द्रउत्सवकरेरे, दीक्षालेवेजिनराज, सूरिकृपाचन्द्र सेवियेरे, तुर्यकल्याण सुखसाज सु० ॥ ३६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ अजितजिणंदसुं प्रीतडी ए देशी ॥

प्रभुजीसंजमलेइने, बहुभागीहो विचर्याजगनाथके, परिसहसहताइकमने, क्षमाधारीहो सहुजीवनेसाथके, प्र० ॥ ३७ ॥ बारेवरसछम्मासवलि, एकपक्षनोहो छदमस्थनोकालके, रहीनेप्रभु केवललह्यो वैशाखनी हो दशमीउजवालके, प्र० ॥ ३८॥ वैशाखसुदी अगियारसे, पावापुरी हो आव्या सुरसाथके, समवसरणसुरवररच्यो, तिहां वेठाहोत्रणजगनानाथके, प्र० ॥ ३९ ॥ इन्द्रभूत्यादिकगणधरु, एकादशाहो थाप्या गुणगेहके, संघचतुर्विध जगजयो, जिनवाणी हो वूठोअमीरसमेहके, प्र० ॥ ४० ॥ चौत्रीसअतिशयशोभता, भूमंडलहो विचरे जगभाणके, भव्यकमलप्रतिबोधता, शिवंकर हो सहु जीवना त्राणके, प्र० ॥ ४१ ॥ तीस गृहिकेवलिपणे, बेतालीस हो श्रमणपर्यायके, बहुतरवरसनोआउखो, पालीनेहो पावापुरीआयके प्रभु० ॥ ४२ ॥ कातिवदिअमावसे, स्वातिनक्षत्रहो चन्द्रनोसंयोगके, पाछलीरात्रेशिववर्या, सादिअनंतहो लह्योसुखनो भोगके प्र० ॥ ४३ ॥ इनविधप्रभुना वरण्व्या,

कल्याणक हो षट,अतिहि उदारके, श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि- न्दणे, मुजहोज्यो हो आगमनो आधारके, प्र० ॥ ४४ ॥ कल- श सुन्नद्रव्यमुनिनिधिचन्द्रवरसे न्नाद्रव शुदि एकमसमे, श्रीवी- रजिनवरन्नविकसुखकर, कल्याणक शुन्नसंगमे, शीतलजिनेसर चन्द्रप्रन्नुवर सुरतबन्दरसुखवरु, जिनकृपाचन्द्रसुरीन्द्रसेवो धर्ममंगलहितकरु ॥ ४५ ॥ इति छक० सं० ॥

॥ श्रीमहावीरस्वामीना सत्तावीसभवनुं स्तवन ॥

स्वस्तिश्री संपदकरण, हरणताप दुःखदंद, प्रणमिपासजिणं- दने, जिनगुण गाउं अमंद, ॥ १ ॥ वीरजिणंद दिणंदसम, शासनके सिरदार, अलियविघन दूरेहरे, नमिये वारंवार ॥२॥ गौतमस्वामीआदिने, त्रिकरण करुं प्रणाम, लब्धिसिद्धिदायक सदा, सारेवांछित काम ॥ ३ ॥ सुयदेवीसुपसायले, वरणुंवि- विध प्रकार; वर्धमान जिनचंदना, न्नव सत्तावीस सार ॥ ४ ॥ ढाल पहेली—जगजीवनजगवालहो ए देशी । वीरजिनेश्वर वंदिये, शासनपति सुखकार, लालरे, माहणकुंम नाम नय- रमां, ऋषन्नदत्त गुणसार, लालरे, वीर० ॥ ५ ॥ माहणको- मालगोत्रनो, देवानंदा सुजाण, लालरे, पत्नी शीलगुणेकरी, शोन्नितगुणमहिराण, लालरे, वीर० ॥ ६ ॥ आषाढसुदि छट्ठी दिने, चविया स्वर्गथी ईश, ला० उत्तराफाल्गुनी तिणसमे, उपनाकूखे जगीश, ला० वी० ॥ ७ ॥ चवदेस्वप्न देखीया, देवानंदासुप्रधान, ला० जाग्रतथईपतिने कह्यां, अर्थग्रहेसु- जान, ला० वी० ॥ ८ ॥ ऋषन्नदत्त ब्राह्मणन्नणे, सुतहोस्ये गुणखाण, ला० सर्वकला ग्रहशे मुदा, सूरवीरमनआण ला०

वी० ॥ ए ॥ चउवीसमजिनऊपना, नवसत्तावीसकीध, ला० तेवरणुंसंखेपथी सुणतांकारजसिद्ध, ला० वी० ॥ १० ॥ जंबूद्वीपमांजाणीये, पश्चिम विदेहमझार, ला० प्रतिष्ठानपुरमावसे, नयसारनामउदार ला० वी० ॥ ११ ॥ कणवारियो गामलेई, काष्टलेवा वनजाय, ला० साधुकेई तिहां आविया, वांदि लाव्यो निजठाय ला० वी० ॥ १२ ॥ असनादिकपडिलाभने, धर्मसुणयो चित्तलाय, ला० समकितपामिने मुदा, मार्गे मुनिपोहचाय, ला० वी० ॥ १३ ॥ कालअनादि भमतांथकां, भवसंख्या न लहंत, ला० समकितथी भवजाणिये, तेह कहुं विरतंत, ला० वी० ॥ १४ ॥ पहलोभव नयसारनो, पहले देवलोक जाय, ला० जिनकृपाचन्द्रसूरि कहे, बीजो भव कहिवाय, ला० वी० ॥ १५ ॥

॥ ढाल बीजी॥–श्रीयुगमंधरजीनेकहेजो ए देशी ॥

सांभलो भविजन मनरंगे, वीरप्रभुना भव उमंगे, सां० जंबुद्वीपमां है छाजे, भरतक्षेत्र दक्षिण राजे, नगरीअयोध्यादीवाजे, सां० ॥ १६ ॥ रिषभदेव राजा सोहे, भरतादिक शतसुत होवे, लोकस्थिति जगजनबोहे, सां० ॥ १७ ॥ भरतने विनीतानो राजदेवे, पुत्रनामांकित देश होवे, आदीसरदीक्षालेवे, सां० ॥ १८ ॥ सहसवरस संजमपाली, केवलपाम्यो करमटाली, समवसरणस्थिति नीहाली, सां० ॥ १ए ॥ भरतगया वन्दनकाज, मरुदेवीपाम्यो शिवराज, चउविह संघ थाप्यो शुभकाज, सां० ॥ २० ॥ भरतनो पूत्र मरीचिजाणो, त्रीजोभवए कहेवाणो दीक्षानोआव्यो टाणो, सां० ॥ २१ ॥

संजमथी चूक्यो तेणे, त्रिदंमीवेसे एणे, समवसरणबाहिर देणे, सां० ॥ २२ ॥ नरत पूछे प्रनुनेवारु, केटला थासे जगतारु, अवसरपिणिमां सुखाकारु सां० ॥ २३ ॥ तीर्थंकर चोबीसहोवे, बारचक्री पमुहाजोवे, नविजननां संशयखोवे, ॥ २४ ॥ समवसरण जिनजीव कोई, प्रनुजी कहे मरीचि होई, नरत आव्यो वंदनसोई, सां० ॥ २५ ॥ मरीचिने वन्दना करीने, वासुदेव चक्री सरीने, तीर्थंकर थासे नवतरीने, सां० ॥ २६ ॥ तीनकाल जिनवरगमिये, सरीखाथी तुजने नमिये, नरत कही निजघरगमिये, सां० ॥ २७ ॥ चक्रीपिता माहरो आजे, पितामह जिनपति गाजे, वासुदेवअधिको राजे, सां० ॥ २८ ॥ माहरोकुल अधिकोसोहे, गोत्रमद कर्यो मनमोहे, नीचगोत्र बांध्यो होहे, सां० ॥ २९ ॥ पंचमदेवलोके जावै, चोथो नव ए कहवावै, जिनकृपाचन्दसूरिगावै, सा० ३० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ स्वामी शरीर सोसाई गयो ए देशी ॥

पांचमेनवब्राह्मणकुले, तापसथईने स्वाम, देवनव पामी करी, ब्राह्मणनवथयो आम, ॥ ३१ ॥ कर्मतणीगतिजाणीये, कीधाकर्म प्रमाण, ब ब्राह्मण ब देवना, सोलेसर्व ए जाण ॥ ३२ ॥ बहुसंसार भ्रमणकर्यो, राजगृहनगरमझार, चित्रनंदी राजा तिहां, प्रियंगुराणी मनुहार, क० ॥ ३३ ॥ विशाखनूति युवराजने, धारणी कूखे सूजाण, विश्वनूतिनामकपना, सतरमेंनवमन आण, क० ॥ ३४ ॥ राजकुमरने कारणे, दीक्षामें चित्तलाय, नियाण करिने अढारमें, देवनवमां जाय, क० ॥ ३५ ॥ तिहांथी चवि पोतनपुरे, प्रजापतिराजन, मृगावतीकूखे उपनो,

सातस्वप्न प्रमाण, क० ॥३६॥ त्रिपिष्ट नाम कुंवर थयो, जगणी सम जव एह, त्रणखंरूनो राज्य जोगवी, सातमी नरके तेह क० ॥ ३७ ॥ इकवीसमें जव सिंहथयो, बावीसमें नरके जाय, नाना जवकरी तेवीसमें, चक्रीपदनेपाय, क० ॥३८॥ देव जव चोवीसमें, पचीसमेंनंदनराय, दीक्षालेई सेवन करी, वीस थानक सुखदाय, क० ॥ ३९ ॥ तीर्थंकर नामबांधिने, देवलोक दशमें मांहि, बवीसमें जव जपना, कृपाचन्द्रसूरि सांहिं क० ॥ ४० ॥

॥ ढाल चोथी यतनी ॥

देवलोकथी चविनेस्वामी, देवानंदाने मनरामी, जपना सहुने हितकामी, सलूणा, वीर जिनेसरगावो, एतोमणिमोतियरुवधावो, सलूणा, वीर० ॥ ४१ ॥ सुखसेजे सुपना देखे अनुक्रमथी तेसुविशेषे, निजजन्मगणे तब लेखे, स० वी० ॥ ४२ ॥ निज प्रीतमपासेजावे, फलपूछीने हरखावे, पाछी निज सेजमें आवे, स० वी० ॥ ४३ ॥ देवानंदाहरख जराणी, धर्मजागरिका गुणखाणी, करे सखियो सहित जलसाणी, स० वी० ॥ ४४ ॥ तिणसमे सौधर्मइंद, अवधिथी जोवेजिणंद, शक्रस्तवकरेसुखकंद, स० वी० ॥ ४५ ॥ इम वांदी सिंहासण वेसे, चिंतवतां संशयपेसे, जिनजक्तिकरी शुखलेसे, स० वी० ॥ ४६ ॥ हरणेगमेसीने बोलावे, दश अछेरा समजावे, शुज गर्जसंहरण करावे स० वी० ॥ ४७ ॥ हरिणेगमेषी वैक्रियकरीने, तिरछे लोकमां आव्यो सरीने, अशुज पुजल सब हरीने, स० वी० ॥ ४८ ॥ आश्विन वदि तेरसराते, जत्तराफाल्गुनी चन्द्रविख्याते, संक्रमाव्या देवनिजहाथे, स० वी० ॥ ४९ ॥

क्षत्रियकूंड नगर नगीनो, सिद्धार्थ राजासुखभीनो, त्रिसला-राणीमनलीनो, स० वी० ॥ ५० ॥ त्रिसला माता मनरंगे, चवदे स्वपना चितचंगे, देखे मनधरीय उमंगे, स० वी० ॥ ५१ ॥ सिंह हाथी वृषभ लछी माल, चंद्र सूर्य ध्वज कलस विलास, सर समुद्र विमान रसाल स० वी० ॥ ५२ ॥ रत्न-राशी अग्निशिखाहोवै, चवदे स्वप्न माता जोवे, देखीनेजाग्र-तहोवै, स० वी० ॥ ५३ ॥ अर्थ पूछे त्रिशला राणी, सुतरत्न-होस्ये गुणखाणी, जिनकृपाचन्द्रसूरिवखाणी, स० वी ॥ ५४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ साहिब शिव वसीया ए देशी ॥

सिद्धारथ राजाघरेरे, आव्याजगनानाथ, प्रभुमुजमनवसिया, मनवसीयामुजदिलवस्यारे, शिवपुरकेरासाथ, प्र० ॥ ५५ ॥ बीजो कल्याणक थयोरे, दिवस बयासी बाद, प्र० त्रिशला उदरेआवियारे, शास्त्रघणासंवाद, प्र० ॥ ५६ ॥ आचारांग ठाणांगमांरे कल्पसूत्रमांपाठ, प्र० जो नहीमानेमोहथीरे, एह कर्मनोगाठ, प्र० ॥ ५७ ॥ गर्भमें प्रभु निश्चलरह्यारे, माता शोक-करंत, प्र० एकप्रदेशे चालतारे, माता घणीहरखंत, प्र० ॥५८॥ मातापिताजीतां थकांरे, नलेवुं संजमभार, प्र० अभिग्रह लेइने, प्रभुरे, वृद्धिपाम्याजयकार, प्र० ॥ ५९ ॥ चैत्रसुदिते-रसदिनेरे, जन्म्याजगतदयाल, प्र० जिनकृपाचन्द्रसूरिभणेरे, वर्त्योजयजयकार प्र० ॥ ६० ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ माने संसार सेरी वीसरीरेलोल ए देशी ॥

म्हारे जगतसुहंकर नाथजीरे, लोय, दिशिकुमरीआवेतत-

खेवजो, जन्मोत्सवकरे सुरपतिरेलोय, मातापासे लावेसुहेणजो म्हां० ॥ ६१ ॥ वृद्धिथईतिणकारणेरेलोय, वर्द्धमान नामदीयो-तेणजो, अनुक्रमे दीक्षाआदरीरे लोय, चारित्र पाल्यो शिव लेणजो, म्हां० ॥ ६२ ॥ वैशाखसुदि दशमी दिनेरेलोय, लह्यो केवलज्ञानदिणिन्दजो, लोकालोकने जाणतारे लोय, विचरेजग-नाथ जिनंदजो, म्हां ॥६३॥ इन्द्रभूत्यादि गणधरूरे लो० थयाए-कादशगुणखाणजो चउविहसंघसुंपरिवर्यारेलोय, भविकमलना बोधकजाणजो, म्हां० ॥ ६४ ॥ कार्तिकवदि अमावसेरेलोय, प्रभुपास्यासुगति सुखकारजो, कल्याणक छगे थयोरेलोय, जिनकृपाचन्द्रसूरि जयकारजो म्हां० ॥ ६५ ॥ कलश । शुभ-वरसरस ६, मुनि ७, निधि ९, चन्द्रे १ (१९७६) श्रावणसुदि-तेरसदिने, सुखकर जिनेसरना वखाण्या गुणगण आणंदित मने, खरतरगणेसर भविक हितकर सुरतबन्दरे गाइयो, जिन-कृपाचन्द्रसूरि थुण्यो हरखे भविकजनमनभावियो ॥ ६६ ॥ इति सत्तावीसभवनो ढढालियो समाप्त ॥

॥ ऋषभदेव स्वामीना तेर भवनुं स्तवन ॥

आदिजिणिन्द दिणेन्दसम, भविककमल विकसात । प्रणमुं पदपंकजसदा, सहुजगमें विख्यात ॥ १ ॥ समकित पामिने प्रभु, भव तेरे जेकीध, ते सुणजो भवि इकमना, मन-वांछित फल लीध ॥ २ ॥ धन्नो १, मिथुन २, सुर ३, मह, ब्बल ४, ललितांग ५, वज्रजङ्घजाण ६, जुगल ७, सोहम ८, वैद ९, अच्युत १०, चक्री ११, सवठ १२, जिनभाण-

१३, ॥ ३ ॥ नाममात्र ए ज्ञवकह्या, विस्तारथी कहुंएम । सुण-
तांसमकितसंपजे, मनमाधरिने प्रेम ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली चोपाईनी ॥

जंबुद्वीपखेत्रपहिचान, महाविदेह पश्चिम प्रतिष्ठान, नगरे
प्रियंकरराजान, धन्नो सार्थपति अज्ञिधान, ॥ ५ ॥ वसंतपुर-
जावानेकाज, उद्घोषण करे दिनसाज, सहुनो निर्वाह होस्ये
सही, आवोसाथ मनमांगहगही ॥ ६ ॥ धर्मघोष सूरि तिहां-
आवै, पंचसया मुनिवर सुहावै, सार्थपतीने धर्मलाज्ञ देइ,
वसंतपुरजावा अनुमति लेइ ॥ ७ ॥ सथवारोचाल्यो तिण-
समे, मार्ग थोरो थोरो कापे गमे, अटवीमांआव्या तिण
काल, तेटलेप्रकट्योवर्षाकाल ॥ ८ ॥ हरिततृण प्रकट्या त्यांघ-
णा, पंकाकुल मारगज्ञूतणा, नदीयां पर्वतथी उतरीने, मार्ग
रोक्या नहिजाय तरीने ॥ ए ॥ सार्थपति पटवासके मांहि,
सथवारो थाप्यो तिण ठाहि, पर्वतनी गुफा फासु जाण,
आचारज रह्या गुणमणिखाण ॥ १० ॥ वंदी वचने गुरुसंज्ञाल,
घृतनो दानदेइ सुविसाल, समकितपाम्योरंगरसाल, वसंतपुर
पहोंच्या ततकाल ॥ ११ ॥ सार्थपति समकित अनुसरी,
तिहांथी चवि जुगलदेहधरी, त्रीजेज्ञव सौधर्मेजाय, तिहांथी
चविमहाविदेहै आय ॥ १२ ॥ पश्चिमगंधलावतीयै होय, सतबल
नर पति तिहांजोय, चन्द्रकान्ताराणीमनरळी, महाबल पुत्र थयो
सुखकली॥ १३ ॥ चोथो ज्ञव ए कहुं चितलाय, महाबल विसयी
घणो कहवाय, उदयअस्त पणजाणें नहीं, सुखमां मग्न सदाते-
रही ॥ १४ ॥ इकदिननाटक निरखेराय, सुबुद्धिमंत्रीगाथासं-

भराय, प्रतिबोधपामी संजमलियो, अणसण करी निजकारजकियो ॥ १५ ॥ ईशान देवलोके पंचमभवे, ललितांगदेवथयो त्यांहवे, स्वयंप्रभा देवीत्यां जाण, धर्मिणी पूरवभव प्रमाण ॥ १६ ॥ छठेभवपूर्वविदेहमझार, लोहार्गलनयरे सुखकार, सुवर्णजंघनृप लक्ष्मीवती, राणी पुत्रवज्रजंघसती ॥ १७ ॥ चक्रीपुत्री स्वयंप्रभाजीव, श्रीमतिनामे पुत्री सदीव, वज्रजंघ परण्यो स्वयंवरे, पुत्र प्रयोगे तिहां बिहुंमरे ॥ १८ ॥ सातमेजुगलिकउत्तरकुरु, आठमे सौधर्मे सुरवरु, नवमें भवविदेहमझार, जीवानंद वैद्य सुखकार ॥ १९ ॥ श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि भणें, श्रोताजननिसुणो इकमने, पांचमित्र तिहां बीजामल्या, सुखथीसहुना वांछित फल्या ॥ २० ॥

ढाल बीजी ।

सुण बहिनी पियुडो परदेशी—ए देशी.

एकदिनवैद्यना घरमांबैठा, क्रीडाकरे सुखमांपेठारे, कोढीसाधु आव्योवरिठा, वैद्यने निंदे हिठारे ॥ २१ ॥ सुणो भविषण सुगुणा जिनवाणी, शास्त्रमां एह गवाणीरे, साकरथी पण मीठी जाणी, अनुभव रसनी खाणी रे ॥ २२ ॥ वैद्यकहेदोयऔषधजोवे, तोही चिकित्साहोवैरे, अढीलाखसोनैयालइने, सेठनेहाटे जइनेरे, सु० ॥ २३ ॥ गोशीर्षचन्दनने रत्नकंबल, लेइनेमुनिपासपहुंतारे, लक्षपाकतैलनाप्रयोगे, मुनिनेकीधी सातारे सु० ॥ २४ ॥ सोवनवरण सरीर मुनीनो, करीने निजघर आयारे, सातक्षेत्रमां धनखरचीने, दीक्षाथी मन लायारे सु० ॥ २५ ॥ निरतिचार चारित्र पालीने, बारमें देवलोक

उपनारे, विदेहपुंमरीकणी वज्रसेन, धारिणीदेखे चवदसुपनारे सु० ॥ २६ ॥ वैद्यजीव चक्रीइग्यारमें, वज्रनाजथयोराणोरे, बाहुसुबाहू पीठ महापीठ, पांचमो नृपपुत्र जाणो रे सु० ॥ २७ ॥ चक्रवर्त्तीतीर्थंकरपासे, दीक्षा लेवे मित्रसंगेरे, वीसस्थानक आराध्योजावे, जिनकृपाचन्द्रसूरि रंगेरे ॥ २८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

मनडो अष्टापद मोह्यो माहरोजी ए देशी.

संजमपाली उयेजणाजी, सर्वार्थसिद्धे जायजी, बारमोजवएजाणीयेजी, तेत्रीस सागरनोआयजी ॥ २९ ॥ सुणो जविजिनचरित्रनेजी, सुणतां पापपलायजी, जिनचरित्र वखाणतांजी, जवजवसुकृतथायजी सु० ॥ ३० ॥ जंबुद्वीपमां दक्षिणेजी, जरतक्षेत्र मनुहारजी, मध्यखंरू इक्ष्वाकु जूमिकाजी, कुलगर सातसुखकारजी, सु० ॥ ३१ ॥ नाजि कुलगर सातमोजी, मरुदेवाजसुनारजी, आषाढवदिचोथउपनाजी, मरुदेवाउदरमांसारजी ॥ ३२ ॥ उत्तराषाढाचउ जाणीयेजी, कल्याणक सुखकारजी, चवदेसुपनादेखियाजी, नाजि राजा अरथ विचारजी, सु० ॥ ३३ ॥ चैत्र वदी आठम दिनेजी, जन्मया जगत दयालजी, सुरगिरे स्नात्रमहोत्सवेजी, करी लाया सुरपति वालजी ॥ ३४ ॥ नाम दीधो ऋषजेसरूजी, सुरपतिकरे विधि जोरजी, क्रमथी राज्यपाम्यो मुदाजी, लोकस्थिति सुखसोरजी सु० ॥ ३५ ॥ नगरी अयोध्या वसायनेजी, इन्द्रे आपी तेणजी, राज्य करे प्रजु तिणसमेंजी, कृपाचन्द्रसूरि सुखलेणजी सु० ॥ ३६ ॥

॥ ढाल चोथी—श्रीसंभव जिनराजजीरे ए देशी ॥

आदीसर जिनवरतणोरे, चरित्र कहुं चितलाय, सुणो रंग रसीया, कला वहुतर शीखवीरे भरतादिकने सहाय सु० ॥३७॥ सुणो सुणोरे भविक चितलाय, जिनपतिना गुणगाय, सु० ब्राह्मी प्रमुख पुत्री भणीरे, कलासीखवीसर्व सु० भरतने राज्य-भोलायनेंरे, दीक्षालीधी अगर्व, सु० ॥ ३८ ॥ चैत्रवदीअष्टमी दिनेरे, कल्याणक त्रीजोजाण, वारमासीनो पारणोरे, श्रेयांस कराव्यो सुजाण सु० ॥ ३९ ॥ अखात्रीज तेथी थईरे, लोक-मांहि सुखखान सु० सहसवरस संजम पालीनेरे, सकटमुख-उद्यान सु० ॥ ४० ॥ घाति कर्मनो क्षय करीरे, केवल पाम्यो ईश सु० चउविहसंघ थापीकरीरे, विचर्या जगमां जगीश सु० ॥ ४१ ॥ फागणवदिएकादशीरे, चोथो कल्याणक जाण सु० शत्रुंजयशिखर समवसर्यारे, गणधरचोरासीमान सु० ॥ ४२ ॥ पूर्वनवाणु जगनाथजीरे, समवसर्या इण गाम सु० भूमंडल प्रभु विचरतारे, सार्यावांछित काम सु० ॥४३॥ माघ-वदितेरसदिनेरे, अष्टापद सुखकार सु० दशसहसमुनि परिव-र्यारे, मोक्षगया दिलधार सु० ॥ ४४ ॥ कल्याणकए पांचमोरे, गावो मंगल काज सु० जिनकृपाचन्द्र सूरि भणेरे, पाम्यो शिवपुर राज सु० ॥ ४५ ॥ कलश ॥ संवत उगणीसे छिहुत्तर भाद्रव वदि तृतीया दिने, सुरत बंदर रही चोमासो जिनगुण-गाया शुभमने, शीतलवाडी गुणप्रवाडी सुपसायै शीतलजिनै, जिनकृपाचन्द्रसूरि दाखे वर्त्तो मंगल प्रतिदिने ॥ ४६ ॥

॥ इति ऋषभ देवस्वामीना तेर भवनुं स्तवन ।

। अथ श्री महावीर स्वामीनो पाळणो ।

सहियर वीरप्रभुनो जन्मोत्सव गावुं रंगसुं, एतोगातां भवभव-केरापातकजाय, जगगुरु जिनवर जन्म जाणी इंद्र आवे तिहां, प्रणमी माता नंदनलेइ हरखाय स० वी० ॥ १ ॥ जगगुरु मेरुशिखरपर स्नात्रकरे सुरपति मलि, गावे इन्द्राणीमिल प्रभु गुणग्रामरसाल, वाजित्रवाजै नाटिकहोवे नानाभातिना, देव-देवीमिल स्तुतिकरै सुविशाल स० ॥ २ ॥ ज० स्नात्रकरीने माता पासे लाविया, पालणेमें पधराव्या हरखी जगनानाथ, त्रिशला माता आनंद भरी हुलरावती, सुतगुणगाती निसदिनसहि-यरसाथ, स० ॥ ३ ॥ प्रभुजी पालणियेमें रमतां सुर सेवाकरे, इन्द्राणीमिल मोतियनचोक पुराय, ज० सुरकुमरी अतिरंगे नाटकनाचती, छुंछना लेती ठम ठम पग ठमकाय स० ॥ ४ ॥ ज० जगजीवन जगपालक प्रभु जीवो सदा, एतो क्रोडदिवाली रहसो दीन दयाल, मारा प्राणजीवन प्रभु प्यारा तमने वीनवुं, नंदन वसजो मारा मनडामां चितलाय, स० ॥ ५ ॥ ज० माता त्रिशलाराणी नंदननो मुखजोवती, करती चुंबन वारणा निज हियडेमांलगाय, नंदन तारा गुणथी हुं जगमां मोटीथई, माहरे तुंहिज त्राता ताहरो सरणलेवाय स० ॥ ६ ॥ नंदन मोसालेथी सुंखडीलेइ आवसे, तेतो तुज मुख जोई थासे परम पवित्र, एतो चेडो राजा मनमां आनंदधारतो, तुज नानडीया मामी मलसे मित्र, स० ॥ ७ ॥ नंदन तुजगुण गाऊं रंगे रमाडुं हेजथी, तुंतो इन्द्राणीने वाहलो घणो सनाथ, नंदन ताहरापितातो सहु जगमां परसिद्धथया, जेनो नाम सिद्धारथ थयो तुज थी

सार्थ स० ॥८॥ नंदन जगजन तारसो वारसो कर्मसंतापनें, शिवरमणीने परणसो हाथो हाथ, नंदन चोवीसमजिनवर शिवसुखकर छो तुमे, नंदन समवसरणमां वेससोपरषदासाथ स० ॥ ए ॥ नंदन चोसठ इन्द्र मलि तुम सेवा सारसे, नंदन प्रातिहारज आठ थसे अधिकार, नंदन चउविह संघ थापीने विचरसो भूतले, तुमसेवाथासे भविजनने सुखकार स० ॥ १० ॥ मातात्रिसला इम गुण गावै रंगसु, जेभवि वीरप्रभुनो पालणो गावे रसाल, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि प्रणमें जिन चोविसमो, गातांसंघने निशदिन वर्त्ते मंगलमाल सु० ॥ ११ ॥ कलश ॥ त्रण जगत सुखकर महिमसुंदर तीर्थंकरचोविसमो, तास गुण वर हर्ष निरन्तर गावो भवि भव नहि भमो, शुभगछखरतर मुनिपुरंदर कृपाचन्द्रसूरीश्वरु, रसरिषि अंक चंद्र (१९७६) वर्षे नगर सूरत गुणवरु, ॥ १२ ॥

॥ इति चोविसमा जिननो पालणो संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपजुसणपर्वनी थुइ लिख्यते ॥

वीरजिनेसर, जगअलवेसर राजग्रही समोसरियाजी । पर्वपजुसण इण परिभाखे । चउविह संघ परिवरियाजी, आषाढ चोमासाथी पचासदिननी संख्याजाणोजी । संवछरी पडिकमणो करिने आतमनिजघरआणोजी ॥१॥ दोय राता दोय धोला जिनपति । दोय काला दोय नीलाजी, लांछनवरणप्रमाण सुसोभित । सोले जिनवरपीलाजी । सतरे भेदीपूजाकरीने चैत्यपरवाडीकरिजेजी । परव पजुसण पूरवपुन्ये । पाम्या लाभ जाणीजेजी ॥ २ ॥ कल्पसूत्र निजघरपधरावी । रात्रि जागो तिहां कीजेजी । वरघोडो

सजि संघ मलीने । सद्गुरुने आणी दीजेजी । नव इग्यारे तेरे वायण । सुणिने दुरगति वारोजी । पूजा प्रभावना सद्गुरुभक्ति करिने जन्म सुधारोजी ॥ ३ ॥ साहमीवछल करियें भावे । वारंवार उजमंताजी । केइ शीयल तप संयम पाले ! भाव अधिक उलसंताजी । आठ दिवस पजुसणसेवो । जिमसेवे सुरइं-दाजी । सुयदेवीसुपसायेभाखे जिनकृपाचन्द्र सूरींदाजी ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीपजुसणपर्वनी थुइ संपूर्ण ॥

पर्युषण स्तवन ।

पर्वपजूसण पुन्ये पामीयारे । आराधो सुमभावे सुजाणरे ॥ जिनशासनमां पर्व वखाणियेरे लोकोत्तरगुणखाणरे । पर्व० ॥१॥ अठाइ महोछव करे नंदीसरेरे । सहु इन्द्रादिक मनुहाररे । तिमभवि भावभलेथी इहां करोरे । जिनपूजन सुखकाररे । पर्व० ॥ २ ॥ पहिलेदिन उपवास भलिपरेरे । सांभलो आर्द्रकुमार चरित्ररे । रात्री जागो करो पुस्तक तणोरे । ज्ञानभक्ति करो पवित्ररे । पर्व० ॥ ३ ॥ दूजेदिन सहुसंघमिली भलोरे । वाजित्र हय गय रथ परिवाररे ॥ पुस्तक उछवकरी गुरु पासमांरे । आणीआपो सुखकाररे ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ त्रीजेदिन सहु पुस्तक पूजिनेरे, सांभलो कल्पसूत्र 'जिन' वाणरे ॥ आश्रव पांच निवरो भविजनारे । पालो जिनवर केरी आणरे । पर्व० ॥ ५ ॥ चोथेदिन चतुर चित्तमां धरोरे । जिन भक्ति त्रिविध प्रकाररे । पूजा परभावना करी सासनतणीरे । सोभा वधारो सुविचाररे । पर्व० ॥ ६ ॥ पांचमे दिवस महोत्सव जन्मनोरे । वरते धवल मंगलसुप्रसिद्धरे । पालणो वीर प्रभुनो गाइनेरे । जिनवरभक्ति

करी जस लीधरे । पर्व० ॥ ७ ॥ वीरचरित्र सुणो छठे दिनेरे । मध्याने पारस नेमि वखाणरे ॥ आंतरा काल सांजली जावसुंरे । पछानुपूर्वी करी सुजाणरे । पर्व० ॥ ८ ॥ दिनसातमें आदि चरित्र वखाणतारे । निसुणो थविर तणो चरित्ररे । आठमे दिन समाचारी साधु तणीरे । सांजलो जवि कल्पसूत्ररे । पर्व० ॥ ए ॥ चैत्यप्रवाम्री संघ मिली करोरे । वूठो सुकृत केरो मेहरे ॥ संवछरी पमिक्कमणासें खमावियेरे । छठ अठम करो गुण गेहरे । पर्व० ॥ १० ॥ अमारी पलावी जीव यतना जणीरे । सासन-उन्नति करो सुविनीतरे ॥ इण परे पर्व आराधो जवि जनारे । कृपाचन्द्र शासननी ए रीतरे । पर्व० ॥ ११ ॥

॥ इति पर्युषण स्तवनानि समाप्तानि ॥

। रोहिणीतप स्तवनं ।

॥ ढाल पहेली ॥

वर्द्धमानजिनवर नमी, सुयदेवी सुपसाय । रोहिणी तप विधीवर्णवुं, शास्त्रथकी चितलाय, ॥ १ ॥ कल्याणक ओली जली, पंचम्यादि तपजाण । इम बहुविध तपवर्णव्यो, तिम रोहिणी मन आण ॥ २ ॥ हांरे मारा गामधर्मना साढा पच-वीसदेशजो ॥ ऐदेशी ॥ हांरेह्मारे जंबूद्वीपमां जरतक्षेत्रम-नुहारजो, अंगदेशनगीनो सोहे अतिजलोरेलोय ॥ हां० ॥ चंपा नामें सुंदर नवली नयरीजो, वासुपुज्यनन्दन जगवन्दन नृपति-लोरे लोय ॥ ३ ॥ हां० ॥ मघवाराजा जगतदिवाजा तत्थजो, कमला राणी सीयल सुहाणी रायने रे लो ॥ हां० ॥ सुखजो-

गवतां पुन्यतणे परन्नावजो, आठ पुत्र थया राणीमनमां न्नाय-
नेरे लो० ॥ ४ ॥ हां० ॥ तेउने ऊपर रोहणी नामे पुत्रीजो,
मातपिता ने वाहली घणी ते ऊपनी रे लो० ॥ हां ॥ चंद्रक-
लाजिम पुत्री वधे सुहेणजो, पांचधाय करिपालतां योवनवय-
नीपनीरे लो० ॥ ५ ॥ हां० ॥ सुरकुंवरी सम देखी राजा पुत्रीजो,
वरचिन्तामनपेठीरायनेतिणसमेरेलो० ॥ हां० ॥ स्वयम्बराम-
एरूपमांड्यो पुहवीनाथ जो, देशदेशना न्नूपति तेड्या सुख समेरे
लोय ॥ ६ ॥ हां० वीतसोकराजानो नन्दन नाम जो, सोन्नागी
गुणरागी कन्याये वर्योरे लो० हां० पूरवन्नवनापुन्यथी थयो वि-
वाहजो, बहुली सम्पदा पामी कुंवर कारज सर्योरे लो० ॥ ७ ॥
हां० ॥ रङ्गरली थइ सहुपहोता निज गाम जो, चित्रसेनने
राज्यदेइ संजम लीयोरे लो० ॥ हां० ॥ बीत सोक नो नन्दन
पामी राज्य जो, रोहिणी राणी साथे सुख सम्पदपीयोरे लो०
॥ ८ ॥ हां० रोहिणीराणीने आठपुत्र चार पुत्री जो, पूरव
न्नवना सम्बन्धथी आवी अवतर्या रे लो० ॥ हां० ॥ आठमापु-
त्रनो नामदियो लोकपालजो, खोले मां लइ रायराणी गोखे वर्यारे
लो० ॥ ए ॥ हां० क्रीमाकरें दम्पति नाना प्रकार जो, तिण समे
एक नारी ने दीठी रोवतीरे लो० हां० दीनथइ सिरपीटे नाना
विलापजो, देखी ने अचरज पामी रोहिणी सतीरे लो० ॥ १० ॥
हां० राजाने कहे राणी नाटक जोरजो, एहवो तो मै कदिय
नदीठो नाथजीरे लो०, हां० कहोनी मुऊने नाटकनो स्वामी
नाम जो; जिन कृपाचंद्र सूरि एहने सुकृत साथजीरे लो० ॥ ११ ॥

॥ ढाल दुसरी ॥

देशी यतनी–

तब राजाकहे सुणराणी, मदमांहीघणी अराणी, ए पुत्रमरे गअराणी, रोवेछे नेत्र अराणी, सलूणी बोलविचारीबोलो एतो सहु जगने सम तोलो, सलूणी बो० ॥ १२ ॥ जब वीते तब जो कीजै, इमकहीने राजाखीजे, खोलेथी हाथमांलीजे, लेइ कुंवरने नीचो नाखीजे सलूणी बो० ॥ १३ ॥ तब रोहिणी हसती बोले बालक किम नीचे होले, राजा मनमां कुख मोले, रोवे अति चिन्ता ठोले, ॥ सलूणीबो० ॥ १४ ॥ पमतो सुत सासणदेवे, सुकोमल हाथे लेवे, सिंहासन ऊपर सेवे, नाटक करि लुंछना लेवे, सलूणी बो० ॥ १५ ॥ ए अचरिज सहुजन निरखे, राजाराणीमनहरखे, विस्मयलहि नरपति सरखे; सुत पूरवपुण्यने परखे, सलूणी बो० ॥ १६ ॥ राजा इण परि विचारे, कोई ज्ञानि गुरुपाउधारे, तो एहसंदेहनिवारे, जिन कृपाच-न्द्रसूरि सुखसारे, ॥ १७ ॥

॥ ढाल तीजी ॥

। रंग रसीया रंग रसवन्यो मनमोहनजी ए देशी ।

इकदिन ज्ञानि पधारिया, सुणो सुगुणाजी, वासुपूज्य स्वामीना अणगार, गछपतिआव्यारे सुणो सुगुणाजी, रूपकुंअ-स्वर्णकूंअजी, सु० चउनाणीकरे उपगार, गछ० ॥ १८ ॥ राजा-दिक वंदन गया, सु० देसनादीधी उदार, ग० करजोमी राजा भणे, सु० रोहिणीनो अधिकार, ग०सु० ॥ १९ ॥ मुजमनअ-चरज अतिघणो सु० कृपाकरी कहो सुविचार गछ० सु० पूरव-

जव मुनिवर कह्यो, सु० तेहसुणयो दिलधार, गछ० सु ॥ २० ॥ जंबुद्वीपना जरतमांसु० सिद्धपुरनगरकहवाय, ग० सु० पुहवी- पाल राजा तिहां सु० सिधमती राणी सुहाय, ग० सु० ॥ २१ ॥ इकदिन क्रीमा कारणे, सु० चन्द्रजद्यान में जाय, ग० सु० क्रीमा करता पधारिया, सु० गुणसागर मुनि महाराय, ग० सु० ॥ २२ ॥ मुनिने बांदी राजा कहे, सु० राणी मुनिनेदेवोदान, ग० सु० विषयनी अन्तराय मानती, सु० करुवीतुंबी देइ कीधो हेरान, ग० सु० ॥ २३ ॥ कालधर्म पाम्यो मुनिवरु सु० राणीने काढी राय ॥ ग० सु० ॥ सातमे दिन कोढ ऊपनो, मरी बठी नरकते जाय, ग० सु० ॥ २४ ॥ नरकतीर्यंचना जवकर्या ॥ सु० ॥ इम काल अनन्तो जाण ग० सु० ॥ श्रीजिनकृपा- चन्द्रसूरि जणे ॥ सु० ॥ तुमे न करो पाप सुजाण, ॥ ग० सु०२५॥

॥ ढाल चोथी ॥

जिम २ गिरिवर जेटियैरे तिम २ पाप पुलाय सलुणा ॥ एदेशी ॥ ते राणीजव चक्रमारे, दुःख सह्या अनन्त, सलुणा तारापुरमाहे वसेरे, धनमित्रसेठमहन्त, ॥ स० ॥ २६ ॥ कर्म तणी गति जाणजोरे, कर्म करो नाहिं कोय, स० धनवती कूखे ऊपनीरे, दुगंधा नामहोय, स० ॥ २७ ॥ एक वणिकना पुत्रनेरे, परणावी सुरसाल, ॥ स० ॥ पतिसंयोगे ऊछलीरे दुर्गंधता तत्काल, स० ॥ २८ ॥ त्रास पामीतेहनो धणीरे, परदेशे गयो नाश ॥ स० ॥ ज्ञानि ने पूछे पितारे, दुर्गंधानो त्रास० ॥ २९ ॥ ज्ञानि पूर्वजवकहेरे, प्रतिकारपूछेखास, स० ॥ गुरु कहे रोहिणी तप करोरे, सातवरस सातमास, स० ॥ ३० ॥ रोहिणीनक्षत्रने

दिनेरे, चोविहारउपवास, स० ॥ अठपोहरी पोषध करोरे, वासुपूज्य पूजो खास, स० ॥ ३१ ॥ इम रोहिणी तप आदरीरे, सेविविधि युत सार, स० ए ताहरी राणी थइरे, रोहिणी नामे नार, स० ॥ ३२ ॥ पूर्वभव रोहिणी तणोरे, हरखित थया सुणि तेह, स० ॥ जिनकृपाचन्द्रसूरि सेवजोरे, धर्म धरि ससनेह, स० ॥ ३३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

जइने कहजो म्हारा वालाजी रे ए देशी ।

राजा कहे मुनिराजने मारा वालाजीरे, रोहिणीतप विधि-सार, गुणनिधिवंदिये, मा० तब मुनिवर तपविधिकहे, मा० चित्रसेनने रोहिणी नार, बिहुं तप विधि सुणे, मा० ॥ ३४ ॥ चन्द्र रोहिणी दिन तपकरो, मा० वारमा जिनवर सेव, करिये भावसुं, मा० गुणनो करो गुरुमुख सुणी, मा० पांचसक्रस्तव देव, त्रिहुं काल वांदिये, मा० ॥ ३५ ॥ देवजुहारो देहरे, मा० प्रभुआगल वृक्षअशोक, करिये भावशुं मा० नैवद्य नाना भांतिना, मा० प्रभुसन्मुख ढोवे थोक, चढते भावशुं, मा० ॥३६॥ केशर चन्दन मृग मदा, मा० पूजो प्रभु उछरङ्ग, नाना भांतशुं, मा० आठमङ्गल प्रभु आगलै, मा० रचियें तन्दुल उजलचङ्ग, दुरित निवारणो ॥ मा० ॥ ३७ ॥ पुस्तकपूजो भावशुं, मा० साधुसेवा करो सार, भवसागरतरो, मा० देवो दान सुपात्र ने, मा० साहमीवत्सल अधिकार, करे मन रंगशुं ॥ मा० ॥ ३८ ॥ उजवणो कीजै भलो, मा० ज्ञानादिउपगरणकरे सार, नाना भांतिना, मा० सत्तावीससंख्याकही मा० अथवा शक्ति तणे

अनुसार, धनखरचे घणो मा० ॥ ३९ ॥ ब्रह्मचर्य पालो मुदा मा० उत्सव विविधप्रकार, करिये उमङ्गसुं मा० शासण सोउन्नवधारिने मा० रथयात्रा सुखकार, चउविधसंघ मिली मा० ॥ ४० ॥ इणपरे रोहिणी विधि कही मा० राजा राणी तीर्थंकर पास, विधिसुं तपग्रहे मा० श्री जिन कृपाचन्द्रसूरि जणे मा० नव नव धर्म सेवो नवि खास, सर्वसुख संपजै मा० ॥ ४१ ॥

॥ ढाल छठी ॥

राग धन्यासरि

रोहिणी तप सेविने राजादिक, उजवणो कियो नावै, वासुपुज्य स्वामीने पासै, दीक्षार्थी चित्तलावैरे, नवि नावधरिने सेवो एतोसेविसिवसुख लेवो रे, नवि० ॥ ४२ ॥ चीत्रसेनराय रोहिणीराणी, दीक्षालीधिगुणखाणी, आठेपुत्रे संजमलीनो, वरवासिवपटराणीरे नवि० ॥ ४३ ॥ संजम सेवीने राजादिक, आतम तत्वनिहाली, तप तपिने कर्म क्षय कीनो, दुध्धर अणसण पालीरे नवि० ॥ ४४ ॥ केवलीथइने राजादिक सहु, सिद्धि वधूकरझाली, सादिअनंतस्थिति सुख पायो, वरती जगमें खुसालीरे ॥ नवि० ॥ ४५ ॥ मनमोहन महिमानो आगर, में थुणियो सिवगामी, उगणीसे इठन्तरवरसे, वीरजन्म अन्निरामीरे ॥ नवि० ॥ ४६ ॥ आदीसर जिनवर सुपसायै, झाबुवा नगरे अधिकारी, श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि सेवो, जिनशाशन जयकारीरे नवि० ॥ ४७ ॥

॥ इति रोहिणीस्तवन छढालियो ॥

॥ ॐ ॥

अथ पूर्णिमा बृहत्स्तवनम् ॥

॥ दोहा ॥

स्वस्तिश्रीसुखसंपदा,कारणजिनवरदेव, आदीश्वरअरिहंतजी, सारेसुरनरसेव ॥ १ ॥ पूनिमतिथिआराधवा, तपकरियेसुविशेष । बारेमासपूनिमतणो, चरित्रकहुं लवलेश ॥ २ ॥

॥ ढाल १ ॥

॥ जिमजिम गिरवर भेटियेरे–एदेशि ॥

श्रीजिनधर्मसुहंकरोरे, आराधोगुणखांण 'सनेही, पूनिमपर्व-मोटो कह्योरे, मास बारेमनआंण स० ॥ ३ ॥ "जिमजिम पर्व आराधियेरे, तिमतिम लहिये सुक्ख स० । जिनशासन जगमें जयोरे, मेटे भवभवदुक्ख स० ॥ ४ ॥" श्रावणमासमें जांणियेरे, 'वदितीज श्रेयांशनिर्वाण स० । अनंतनाथ सातम चव्यारे, आठम नमि जन्मजांण स० ॥५॥ कुंथुनाथनवमीचव्यारे, 'शुदिदूजसुमति एह स० । पांचमनेमी जनमियारे, छठदीक्षाथीनेह स० ॥ ६ ॥ आठमपासजी सिवलह्योरे, पूनिमसुव्रतचव्या ईश, स० । उपवासकरि आराधियेरे, कल्याणकसुजगीश स० ॥ ७ ॥

इति श्रावण मास

भाद्रव'वदिसातमचव्यारे, सान्तिनाथ जगनाथ स० । एहिजतिथि चंद्रप्रभूरे, काल्यो सिववधुहाथ स० ॥ ८ ॥ सुपार्श्व आठम चव्यारे, 'सुविधि नवमशुदि जाण स० । मुक्ति महिलमें विराजियारे, पर्युषण सुप्रमांण, स० ॥ ए ॥

इति भाद्रव मास

'असोजवदि तेरस थयोरे, गर्भापहार (वीरनो बीजो) कल्याण स० । नेमीज्ञान अमावसेरे, 'पूनिम नमिचव्या जाण स० ॥ १० ॥

इति अस्विन मास

कार्तिकवदि पांचम समेरे, संभव पांम्यो नाण स० । पद्मप्रभु बारसजनमियारे, नेमि चव्या जगभाण स० ॥ ११ ॥ तेरस पद्म दिक्षाग्रहीरे, वीर दरस (अमावश) निर्वाण स० । 'सुविधी सुदितीज अर द्वादशी रे, केवलनांण सुखखांण स० ॥ १२ ॥ पर्युषण ओली भली रे, ज्ञान पंचमिपर्वजांण, स० । "जिनकृपाचंद्रसूरिसदारे, पर्वसेवोगुणखांण स० ॥ १३ ॥

इति कार्तिक मास

॥ ढाल २ ॥

"आज आपे चालो सहियां–सिद्धाचलगिरिजइयेरे" ए देशि ॥ मिगसर'वदिपंचमि सुविधि जनु, छठेदीक्षालीनी । दशम वीर संजम एकादशी, पद्म मुक्तिगति कीनीरे ॥ १४ ॥ "सुनो सुगुणा जिनशासन सुंदर, पर्व घणा जयकारी" । 'सुदि दसमी अरनाथजी जाया, पाम्या सिवसुखभारीरे सु० ॥ १५ ॥ इग्यारस अरनाथनी दीक्षा, मल्लीजन्म व्रत लीनो । केवल मल्ली नमी सुहंकर, पांमी जगत जस कीनोरे सु० ॥ १६ ॥ चवदश संभव जन्म लियो हैं, पूनिम दीक्षाधारी । पूनिमतिथि सेवीने भविजन, लहो सदा सुखसारीरे सु० ॥ १७ ॥

इति मार्गशीर्ष मास

'पोषदशमि पार्श्व प्रभु जन्म्या, इग्यारस संजम लीधो ।
चंद्रजन्म बारसनेदिवसे, तेरस व्रतमनकीधोरे सु० ॥ १८ ॥
चवदश शीतलज्ञानग्रह्योहे, 'सुदि छठ विमलनाण पायो ।
नवमी सांति नाण सुखदाई, इग्यारस अजित नाण आयोरे
सु० ॥ १९ ॥ अभिनंदन चवदशदिनसुंदर, केवलज्ञानकहाई ।
धर्मजिनेश्वरपोषीपूनिम, केवललह्यो वरदाई रे सु० ॥ २० ॥

इति पोष मास

'छठ पद्मप्रभु चवनकल्याणक, बारस शीतलजन्मजांण ।
शीतलनाथनी द्वादशि दीक्षा, तेरस रिषभनिर्वाणरे सु० ॥२१॥
अमावश श्रेयांश केवल पायो, सुदि बीज अभिनंदन जाया ।
वासुपुज्य नाण धर्म विमल जिन, तीज जनमकहवायारे सु०
॥ २२ ॥ चोथ विमल जिन संजम धारी, आठम अजित जन्म-
लीनो । नवमी दीक्षा अजित अभिनंदन, द्वादशि संजमलीनो रे
सु० ॥ २३ ॥ त्रयोदशि धर्म जिन दीक्षा, माघ मास में जाणो ।
'श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवो परमारथ पहिचाणोरे सु० ॥ २४ ॥

इति माघ मास

॥ ढाल ३ ॥

"यात्रीडा यात्रा नवाणुं कारियेरे"–एदेशि ॥

सुज्ञानी ! कल्याणक तप करियेरे, एतो करिये तो भवजल-
तरियै सु० । टेर । बारे पूनिमपर्व वखाणोरे, कल्याणकतपम-
नआंणोरे । फागुन मासमांहेंतुमेजाणोसुज्ञानी ! कल्याणकतप
करियेरे ॥ २५ ॥ 'वदिछठ सुपार्श्व ज्ञानपायोरे, सातमनिर्वाण-
कहायोरे, सातम चंद्र ज्ञान सुहायो, सुज्ञानी ! कल्याणक तप

करियेरे ॥ २६ ॥ नवमी सुविधि चव्या नगीनोरे, एकादशी, रिषनज्ञानन्नीनोरे, श्रेयांश बारस जन्म लीनो, सुज्ञानी ! कल्याणकतपकरियेरे ॥ २७ ॥ मुनिसुव्रतनाण बलिहारीरे,श्रेयांशतेरशदीक्षाधारीरे, वासुपूज्यचउदसजन्मसारीसुज्ञानी क० ॥२८॥ श्रमावस संजम लीजेरे, 'अरनाथ चव्यासुदिबीजेरे, मल्लि जिनचोथ लहीजे, सुज्ञानी क० ॥ २९ ॥ आठम संनव चव्या सुविहांणरे, मल्लि बारस निर्वाणरे, मुनिसुव्रत दीक्षा जांण, सुज्ञानी क० ॥ ३० ॥ फागुन चौमासो सेवोरे, नाव होली करि फल लेवोरे, वासुपूज्य ज्ञानफलबेवो सुज्ञानी क० ॥ ३१ ॥

इति फाल्गुन मास

'वदि चोथ पार्श्व चव्या नांणरे, पंचमि चंद्र चवन मन आणरे, आठम रिषनजनम चरणजांण, सुज्ञानी क० ॥ ३२ ॥ 'तीज धवल कुंथनाथ नाणरे, अजितनाथ पंचमि निर्वाणरे, संनव अनंत सिवपुर गाण, सुज्ञानी क० ॥ ३३ ॥ सुमति नवम निर्वाणलहीजेरे, इग्यारस ज्ञान कहिजैरे, तेरसवीरजन्म ग्रहीजे, सुज्ञानी क० ॥ ३४ ॥ चैत्री पद्मप्रनु ज्ञान मासेरे, अष्टापद ओली नासेरे, कृपाचंद सूरि सुविलासे, सुज्ञानी क० ॥ ३५ ॥

इति चैत्र मास

॥ ढाल ४ ॥

"विमलगिरि यात्रा नवाणुं करिये"—एदेशी ॥

नविजन ! पूनीमपर्व्वने सेवो, सेवी शिवसुख लेवोरे न० । टेर । वैशाखवदि पडिवा कुंथु सिव, दूज शीतल निर्वाण पांचम कुंथु संजमलीनो, छठ शीतलचवनजांण रे न० पू० ॥३६॥

नमि दशमी शिवमंदिर पाम्यो, अनंत तेरस जन्म जाणो । चवदश चरण ज्ञान कुंथु जन्म्या" 'सुदि चोथ चतुर्थ (अभिनंदन) चवाणो रे भ० पू० ॥ ३७ ॥ धर्मच्यवन सातमअभिनंदन,-आठम शिवपुरराणो, सुमतिजन्म नवमीदिनदीक्षा, वीर दसमी दिन नाणो रे भ० पू० ॥ ३८ ॥ वारस विमल च्यवन अजित जिन, तेरस संजम प्रमाणो, ।

इति वैशाष मास

जेठ वदी छठ श्रेयांश चविया, आठम सुव्रत जन्म कहाणोरे भ० पू० ॥ ३९ ॥ नवमी दिन निर्वाणसुव्रतनो, तेरससांतीजन्म कहिये,एहिजदिन निर्वाण एप्रभुनो, चवदस संजम ग्रहिये रे भ० पू० ॥ ४० ॥'सुदि पंचमि धर्म शिवसुखलहियो, नवमी वासुपूज्य चविया । सुपार्श्व वारस दिन जनम्या, तेरस संजम ठवियारे भ० पू० ॥ ४१ ॥

इति जेठ मास

आषाढवदि चोथ रिषभ चविया, विमल सातम निर्वाण । नमिदीक्षा नवमीदिनलीधी, अनुपमसुखनीखाणरे भ०पू० ॥४२॥ 'वर्धमान सुदिछठ च्यवनशुचि, नेमि आठम शिववरिया । चवदस वासुपूज्य शिवपायो, सुखसंपतिनादरिया,रे भ०पू०॥४३॥

इति अषाढ मास

बारे मास कल्याणकप्रभुना, वरणव्या सास्त्रप्रमाण । बारेपूनिम पर्ववखाण्या, सेवोभविकसुखखाणरेभ० पू० ॥४४॥ चैत्रीदिन उपवास करीजे, पूजा विविध प्रकार । दश वीश तीश चालीश पचाश, तिलक करे सुखकार रे भ० पू० ॥ ४५ ॥ इम-

हिज फूल फलादिक ढोवे, प्रनु आगे सुविशाल । देववंदन पमिकमणोगुणनो, करिलदेसुख रसालरे ज० पू० ॥ ५६ ॥ ओली-दोय ने तीनचौमासा, पर्युषण सुखकार । दीवाली नाणपंचमी जाणो, मोनइग्यारशदिलधाररे ज० पू० ॥ ५७ ॥ पोषदसमी मेरू-तेरस वली; आखातीज अधिकारी । चैत्रीकार्तिकी, पर्वइत्यादिक-सेवो सदा सुखकारी रे ज० पू० ॥ ५८ ॥

॥ कलश ॥

संवत्‌उगणीसेइगंतर—अक्षयत्रितीया दिनजले, फाबुवा-नगरे स्तवनकीधो· आदिजिनसुपसाउले, श्रीगछखरतर गुणपुरं-दर जिनवरआणानोरसी, श्रीजिनकृपाचंदसूरिसेवो धर्ममनमें उल्लसी ॥ ५९ ॥

इति पूर्णिमा बृहत्स्तवनम् ॥

जयकरि जिनराज पुरसादाणीरे ॥ वामासुत वरदाय निरमल नाणीरे ॥१॥ पांचकमलप्रनुअंग, निरुपमनिरख्यारे ॥ तीनकमल मुजसंग, आतमहरख्यारे ॥२॥ वदनमहोदयदेख, चंद लजाणुंरे ॥ गगनजमें निसदीस, इमभनआणुंरे ॥ ३ ॥ सुरमणिज्युं सुखकार, नयणविराजेरे ॥ हृदयकमल सुविलास, थालज्युंगाजेरे ॥ ४ ॥ प्रनुकरचरण विलोक, पंकजहार्योरे ॥ ततखिण निजसंवास जलमें धार्योरे ॥५॥ इमसरवंगउदार, श्रीजिनरायारे ॥ साचेपुन्यसंयोग साहिवपायारे ॥६॥ प्रनुगुण अनुनवनीर, सांगसुरंगेरे ॥ टाह्यो पातिकपंक, आतमसंगेरे ॥७॥ वरस अढार चोतीस, वदिवैशा-खेरे ॥ मनुहर पांचमदीस सहुसंघसाखेरे ॥८॥ नगरमहेवामांहि, पासजुहार्यारे ॥ श्रीजिनचंदमुणिंद, वंछितसार्यारे ॥९॥ इति ॥

अपनेघरवेठा लीलकरो ,निजपुत्रकलत्रसैंप्रेमधरो ॥ देशदेशांतरकांइंसोलो,नितनामजपोश्रीनाकोमो ॥१॥ मनवंछितसगलि आसफले, सिरऊपर चामरछत्रढले ॥ आगलचाले फिलमिलघोरो, नित नामजपो श्रीनाकोमो ॥ २ ॥ भूतप्रेत वैतालवली, डायणने सायण जेहटली ॥ छलछिद्रनलागेकाइंजोमो नित० ॥ ३ ॥ एकांतरतावसीओदाहु, औषधविनजायअथयोमाहु; नविदूखे माथोपगगोमो नित० ॥ ४ ॥ कंठमाल अनेगुम्मरू सवला, वलिऊपसमेरोगटलेसवला, पीमानकरे फुन गल फोमो नित० ॥ ५ ॥ नपमे दुर्भिक्षदुकाल कदा, सुवृष्टिहोय सुकालसदा, ततखिणअशुभकरम तोमो नित० ॥ ६ ॥ जागंतो तीरथपासपहु, जिहांजात्रीआवेजगतसहु मुजने भव दुःखथकी छोमो नित० ॥ ७ ॥ श्रीपार्श्वप्रभुमहेवानगरे, मेंभेट्या जिनवरहरषभरे ॥ समयसुंदरकहै गुणजोमो नित० ॥८॥ इतिपदम् ॥

॥ जगतमें नवपद जयकारी ॥ एचाल ॥

नाकोमापारस प्रभुधारी । आवे दरसणकों नरनारी । आंकमी महेवानगरमाहै छाजे । चिंतामणी तीरथपतिराजे । स्यामछविसुंदर विराजै । दरससे सहु दुखमाभाजे । उमावणी अश्वसेन केलामला । वामादेवीकेनंद । प्रभावतीके कंत प्रभुजी । मुखमो पूनिमचंद । दरस आज सरस कीयो भारी । आवे० ॥१॥ जनमवाणारसीमें जाणो । धन्यते दिवस कहवाणो । कमठमद दूर करणटाणो । विषधरने कस्यो नागराणो । ज० संयमपाली निरमलो । कर्मनिर्जराहेतु । केवललही संघथापीयो । कांइ भवसागरनोसेतु । भयेप्रभु निरुपम सुखधारी आवे० ॥ २ ॥ राण-

पुरे रिसहेसरवंदे । घाणेराव महावीरचंदे । नारदपुरि सिद्धा-
चलनंदे । गिरनारगिरि नेमिजिणंदे । ज० नाडोलमे पद्मप्रज्ञु ।
वरकाणे श्रीपास । पंचतीर्थीयात्राकरी कांइ । सफलहुइ सहु
आस । केसरीयाखीमेलअधीकारी । आवे० ॥ ३ ॥ कोरटे रिषज्ञ
वीरवंदे । आहोर गोमीचा आनंदे। जालोरगढजेट्या जिनचंदे ।
महावीर सेवासुखकंदे । ज० इमअनेक ग्रामनगरमें । जेटे
श्रीजिनराज । विषम उल्लंघी वाटने । जले पारसनाथसुखकाज ।
दरसण कस्यो मनउल्लरंगसारी । आवे० ॥ ४ ॥ सोलमासांति
जिनराज । नेमीसर जेटे महाराज। सूरिजिन कीर्तिरतनआज ।
दरसण लह्यो श्रमणसंघसाज । उगणीसै इक्यासीये । आठम
फागुणशुदिदीश । जिनकृपाचंदसूरि जावसुं जले । जेट्याजग-
नाईश सदा होवे संघमें जयकारी । आवे० ॥ ५ ॥ इतिपदम् ॥

श्रीचिंतामणिपासजी दरसणपायो आज प्रज्ञुजी । मनविस-
रामी साहिबा, सेवाथी शिवराज प्र० श्रीचिं० ॥१॥ आतमगुण
प्रगटायवा, निमित्तकारण जिनसेव प्र० उपादान आतमसही, पु-
ष्टालंबन देव प्र० श्रीचिं० ॥ २ ॥ कारण कार्य पणोलहै, करतातणै
शुज्ञयोग प्र०।तिममुज आतमनिस्तरे,लहिजिनवरसंयोग प्र० श्री०
॥३॥ अव्याबाध अनंतनो,पाम्योनिजगुणजोग । प्र० ज्ञानादिकजे
संपदा,तेहनोनलहोवियोग प्र० श्री०॥४॥ सादिअनंत स्थितिवरी,
अरूपीअरिहंत । प्र० अगुरुलघु अक्षयपणो निरंजनसुखसंत प्र०
श्री०॥५॥ इमअनंतगुणनोधणी, ज्ञेयअनंतनोजाण । प्र० समयांतर
उपयोगमां, वरतोछो सुणखाण प्र० श्री०॥६॥ तुं परमेश्वर वालहो,
परमपुरुष परमाण । प्र० परमातम पदतेंलह्यो, प्रज्ञुछो जीवनप्राण

प्र० श्री० ॥ ७ ॥ सांतिसुधारसचंदलो, सांतिकरण सुखकार ॥ प्र० सोलमजिनवर सेवना, पामीलहै भवपार ॥ प्र० श्री० ॥ ८ ॥ अरिष्ट निवारण नाथजी, बावीसम जिनराज ॥ प्र० प्रबलपुण्य संयोगथी, दरसण लह्यो संघसाज प्र० श्री० ॥ ए ॥ नगरमहेवा सुखकरु, नाकोमा जगदीश ॥ प्र० भव्यकमल प्रतिबोधवा, दिनकर शोभलहीस प्र० श्री० ॥ १० ॥ उगणीसै इक्यासीये, आठम वदि-चैत्रमास ॥ प्र० जिनकृपाचंद सूरितणी, सफलफली मनआस प्र० श्रीचिं० ॥ ११ ॥ इतिपदम् ॥

देशीपणिहारी ॥ श्रीचिंतामणिपासजी माराप्रभुजी होराज ॥ लोड्वपुरराजान बालाठो अश्वसेन अंगजमुदा मा० वामामात सुजान वा० श्रीचिंता० ॥१॥ आतम गुणनाभूपठो मा० निजसत्ता रखवाल ॥ वा० सादिअनंत स्थितिवरी मा० भव्यतणा प्रतिपाल वा० श्री० ॥२॥ रिषभ अजित संभवनमुं मा० समवसरण सुख-दाय ॥ वा० चत्तारिअठदश दोयनमुं मा० सहसफणा जिनराय वा० श्री० ॥३॥ जेसाणगढमें दीपता मा० महावीर भगवान वा०॥ आदीसर अरिहंतजी मा० चंदाप्रभु गुणखाण वा० श्री० ॥४॥ देरासर त्रणभुवननो मा० चोमुख प्रतिमासार ॥ वा० अष्टापद सांतिनाथजी मा० दूजीभूमी सुखकार वा० श्री० ॥५॥ संभवजि-नपतिसुखकरु मा० शीतलजिनवरईश ॥ वा० सीमंधरादि तीर्थं-करा मा० विहरमानजिनवीस वा० श्री० ॥६॥ तेवीसमा प्रभुजग-धणी मा० चिंतामणिमहाराज ॥ वा० बावन देहरिदीपति मा० देरा-सरसुखकाज वा० श्री० ॥७॥ अद्भुत देहरा सोभता मा० इंद्रभवन अनुकार ॥ वा० विंबअनुपम निरखिया मा० ठ हजार अधिकार

बा० श्री० ॥८॥ हरखघणै प्रभुभेटिया मा० वाहरुमेर संघसाथ ॥ बा० चउविहसंघपरिवारसुं मा० यात्राकरि सुखसाथ बा० श्री० ॥ ए ॥ उगणीसे बयासीये मा० माघवदि दिलधार ॥ बा० कृपाचंद सूरिभावसुं मा० भेट्यो प्रभुदीदार बा० श्री० ॥ १० ॥

॥ इतिपदम् ॥

अथ श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

जात्रीडा भाइआबूजीनी जात्राकरेजोएदेशी

यात्रिडा भाइ श्रीसिद्धाचल भेटो, चिरसंचित दुकृतमेटोरे, यात्रीडा भाइश्रीसिद्धाचल भेटो ॥ एआंकडी एमहिमावंतविराजे, निरखंता पातिकभाजैरेया० ॥ १ ॥ श्रीवीरजिनेश्वर भाखै, शत्रुंजयनी महिमा दाखैरेया० ॥२॥ पुंडरीक गणधारी, इहांसीधाकर्म गणवारीरेया० ॥३॥ पांडवप्रमुखजे सीधा, एगिरि फरसी सुखलीधारेया० ॥४॥ श्रीऋषभजिनेश्वरवंदो, चितधरी अधिक आनंदोरेया० ॥ ५ ॥ रायणतल पगलावारु, प्रभुवंदीवंछितसारुरेया० ॥ ६ ॥ पुंडरीक अतिदीपे, निरखंतां पातिकजीपैरेया० ॥ ७ ॥ चोमुख जिनवरसोहे, देखंता भविमनमोहेरेया० ॥ ८ ॥ अद्भुत बिंबविराजै, भेटैभविसिवसुखकाजैरेया० ॥ ए ॥ पाजैचढतां भावे, गुणगातां वंछितपावैरेया० ॥ १० ॥ शेत्रुंजयनदीअतिरुडी, एहनी महिमा नही कूडीरेया० ॥ ११ ॥ उलकाफोलचेलणातलाइ, सिद्धवड सिद्धसिलावरदाइरेया० ॥ १२ ॥ एगिरिवरपूजैभावैं, ते नरकनिगोद न जावैरेया० ॥ १३ ॥ दरसणरी आसघणेरी, ते सफली सुकृतसेरीरेया० ॥१४॥ अनुभव अमृतपीजै, कृपाचंद सदामुजदीजैरेया० ॥ १५ ॥ इतिपदम् ॥

॥ अथनेमिनाथजीको स्तवन ॥

आजअनंद वहाररे प्रभुबेठे मगनमे ॥ एदेशी ॥ नेमिजिनंद दयालरे । सेवोस्यामसलुणा, सेवोस्या० आ० ॥ समुद्रविजयनंदन जगवंदन, सिवादेवी मातमल्हाररे ॥ सेवोस्यामसलुणा० ॥१॥ अपराजित अनुत्तरथी चविया । मातुउदर मझाररे ॥ सेवोस्याम० ॥ २ ॥ कातिवदि वारस प्रभुउपना । चित्रानक्षत्र शुभवाररे ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ चउदे स्वपनादेखेराणी । तीर्थंकर सूचनाररे ॥ सेवोस्याम० ॥ ४ ॥ सावणशुदि पंचमी जिनजनम्या । त्रिभुवनमें सुखकाररे ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ मेरुसिखरपरजन्म महोत्सव । इंद्रकरे अधिकाररे सेवो० ॥ ६ ॥ समुद्रविजय राजाघरउछव, वरत्यो जयजयकाररे ॥ सेवोस्याम० ॥ ७ ॥ शुदिछठिविभुवनये व्रतधारी, ब्रह्मचारि सुविचाररे ॥ सेवो० ॥८॥ सोरिपुरमे जन्मभयोहै, द्वारिकासंजमसाररे ॥ सेवोस्याम० ॥९॥ गिरनार गिरिके सहसा वनमे, चोथोनाण दिलधाररे ॥ सेवोस्याम० ॥ १० ॥ पांचसुमतिधर तीनगुप्तिवर ॥ विचरेप्रभु मनुहाररे ॥ सेवोस्याम० ॥ ११ ॥ दुक्करतपकरि कर्मशत्रुहणि, घातिकर्मखयकाररे ॥ सेवो० ॥ १२ ॥ रेवतगिरि विचरंता आया । शुक्लध्यान ध्यानाररे ॥ सेवोस्याम० ॥ १३ ॥ आसोजनी अमावस दिवसे । केवल ज्ञानश्रीकाररे ॥ सेवो० ॥ १४ ॥ समवसरणमे चोमुखप्रभुजी, देशनादेवे सुखसाररे ॥ सेवो० ॥ १५ ॥ चउविह धर्मप्रकासे जगगुरु । संघथाप्यो सुरसाररे ॥ सेवो० ॥ १६ ॥ अढार सहससाधुनी संपदा, श्रमणी चालीसहजाररे ॥ सेवो० ॥ १७ ॥ एकलाख गुणत्तरसहस, श्रावक

समकितधाररे सेवो० ॥ १८ ॥ तीनलाख बत्तीशहजार । श्राव-कणी सुविचाररे ॥ सेवो० ॥ १९ ॥ सहसबरस प्रभुआयुपाली, मुक्तिबधु भरताररे ॥ सेवो० ॥ २० ॥ रथनेमीराजिमतिबेउं । मोक्षगया निरधाररे ॥ सेवो० ॥ २१ ॥ पांचसैंछत्तीस मुनिवर साथें, सादिअनंत स्थितिकाररे ॥ सेवो० ॥ २२ ॥ आषाढशुदि आठमने दिवसे । सिद्धि सौधमझाररे ॥ सेवो० ॥ २३ ॥ गोमुख यक्षवांछितपूरे । अंबिकाकरे सुखसाररे ॥ सेवो० ॥ २४ ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसुरि सेवो, तीरथ जयजयकाररे ॥ सेवो० ॥२५॥

॥ इतिपदम् ॥

॥ अथ श्रीभद्रेश्वर महावीरजी स्तवन प्रारंभ ॥

वीरजिनेसरसांभलोरे लाल सेवकनी अरदास सुखकारीरे, तारकविरुद सुहामणोरे लाल सुणिआयो तुमपास उपगारीरे ॥ वीर० ॥ १ ॥ साहिबसुनिजर कीजियेरे लाल, मुजपर गरिब निवाज ॥ सुख० ॥ मनमोहन महिमा निलोरे लाल ॥ तुमसेवा सुखकाज ॥ उ० वी० ॥ २ ॥ काल अनादि लगे भम्योरे लाल, भवअटवी विषमअगाध ॥ सुख० क्रोधादिक स्वापदजिहांरे ॥ला॥ प्रतिप्राणिने दें वाध ॥ उ० ॥ वी० ॥ ३ ॥ इंद्रियविषय कंटकति-हांरे ॥ ला० दुर्धरशालसमान ॥ सु० चउगइ मारग चालतारे ला० मोहकरे हैरान उ० वीर० ॥ ४ ॥ काल आहेडी केडे पड्योरे ॥ ला० छलताके निशदीश सुख० ए आपदथी उध्धरोरे लाल, तुममोटा जगदीश ॥ उ० ॥ वीर० ॥ ५ ॥ भद्रेसर भलेभावसुरे लाल ॥ भेट्या श्रीभगवंत ॥ सुख० तेवीसमजिन सुखकरुरे लाल ॥ महिमावंत महंत ॥ उ० ॥ वीर० ॥ ६ ॥ बावनदेहरी

मांदीपतारे लाल ॥ मनोहर श्रीजिनराज ॥ सुख० अदभुतदीठो देहरोरे लाल ॥ मानुंनवीनरच्यो आज ॥ ज ॥ वीर० ॥ ७ ॥ दंडकलस सोहे सदारे लाल ॥ धजापताका लहकंत सुख० मांरुणीजोतां एहनीरे लाल ॥ भवि मनमांहरखंत ॥ ज ॥ वीर० ॥ ८ ॥ पुरवपुन्यथी पामीयोरे लाल ॥ अनुपम जिनमुखचंद सु० कछमंरुन श्रीजगधणीरे लाल ॥ वंदेनित कृपाचंद ॥ ज० ॥ वीर० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजीनुं स्तवनप्रारंभः ॥

राग देसी—जीवनम्हारातेवीसमाजिणचंद ॥ वामानंदनभे-ट्यारे साहिवाम्हारा भावसुंरे म्हाराराजजीवन० ॥ १ ॥ अश्वसेन-कुलचंद, पापकरमसहुमेट्यारे सा० अनादिनारे म्हा० ॥२॥ जी० मूरतमोहनवेल, नीलवरणतनुछाजैरे ॥ सा० सोहामणीरे म्हा० ॥ ३ ॥ जी० मुखछविअगमअपार, पूनमनिसिजिमराजैरे ॥ सा० रजनीकरूरे म्हा० ॥ ४ ॥ जी० नयनअमीरसरेल, कामणगारा प्यारारे सा० म्हारा, मनहरूरे म्हा० ॥ ५ ॥ जी० भालवि-सालरसाल, अष्टमीससिसुखकारारे ॥ सा० भव्यचकोरनैर म्हा० ॥ ६ ॥ जी० चिंतामणिप्रभुपास, लोद्रवपुरमेंविराजैरे सा० सुखकरूरे, म्हा० ॥ ७ ॥ जी० सहसफणामहाराज, दरिसणवां-छितकाजैरे, सा० दुःखहरूरे म्हा० ॥ ८ ॥ जी० संघमिल्यो-वहुथाट, हेजैघणेगहगाटेरे सा० हरखसुंरे म्हा० ॥ ए ॥ जी० अष्टदिवसउछरंग, रथयात्रावहुरंगेरे सा० उमंगसुंरे म्हा० ॥ १० ॥ जी० दीठोतुम्हदीदार, हिवप्रभुमुजनैतारोरे सा० हितधरीरे ॥ ११ ॥ जी० तुमसमअवरनदेव, दीठोनहीसुखकारोरे सा०

जगतमांरे म्हा० ॥ १२ ॥ जी० तुमपदपंकजसेव, ज्ञवज्ञवमुजनेमिलज्योरे सा० सुहंकरूरे म्हा० ॥ १३ ॥ जी० एहीजसुणीअरदास, वांछितपूरणकरज्योरे सा० कृपाकरीरे म्हा० ॥ ॥ १४ ॥ इति पदम् ॥

॥ श्रीचंद्रप्रभुजीनुं स्तवन ॥

श्रीचंद्रप्रज्ञुसहिबा, सिववासीसुरनामीरे ॥ अरजकरूकरजोमीने, निसुणोत्रिज्ञुवनस्वामीरे. श्री० ॥ १ ॥ कालअनादिलगेसही, साधारणतरूपामीरे ॥ पृथव्यादिकमांहेलह्यो, संख्यातीतडुःखधामीरे ॥श्री० ॥ २ ॥ कालसंख्यातेबितिचज, पंचेंद्रिपणोपामीरे ॥ नानागतिनाडुःखसह्या, तेजाणोसिवगामीरे. श्री० ॥ ३ ॥ ज्ञवोदधितापनिवारवा, मेंसुण्योतुंहीजकामीरे ॥ तिणतुजचरणकमलतणी, सेवाअविचलधामीरे. श्री० ॥ ४ ॥ तुंत्रातासंसारनो, तुंहीजदीनउद्धारीरे ॥ मुजवल्लज्ञतुंमुजधणी, ओरनकोसंसारीरे. श्री० ॥ ५ ॥ ज्ञायकज्ञेयानंतनो, लोकालोकप्रकासीरे ॥ सुखघनमंदिरतेंलह्यो, तुंहितगोसिववासीरे. श्री० ॥ ६ ॥ उगणीसेपैतालीसमें, वरधापुरेहितकारीरे ॥ फागणसुदितृतीयादिने, प्रतिष्ठासुजसवधारीरे. श्री० ॥ ७ ॥ युक्तिअमृतगुरूराजनी, युक्तिप्रवरसुविचारीरे ॥ कृपाचंद्रप्रज्ञुकीजिये, संघसकलसुखकारीरे. श्री० ॥ ८ ॥ इतिपदम् ॥

॥ अथ श्रीआवुजीस्तवन प्रारंभः ॥

श्रीआदिजिनेश्वरज्ञेटीया, आबुगिरिसिणगारहोमरुदेवीनानंदन ॥ तुमदरसणमुजमनवस्यो, जिनमनचंदचकोरहो ॥ म० तु० ॥ जिमदेखीजलधारने, मोरकरेझंकारहो ॥ म० तु० ॥ १ ॥ कुमु-

दनीरजनीकरलही, कमलनीजेमदिनंद, हो ॥म०॥ सायरजिम-वधेचंद्रथी, तिममुजमनआनंदहो ॥ म० तु० ॥२॥ नेमीसरजिन-राजजी, सांतिसुधारसचंद, पारसजिनपतिसुखकरु, वंद्याकुश-लमुनींदहो ॥ म० तु० ॥ ३ ॥ अचलगढैअतिदीपता, सुवरण-मयजिनदेवहो ॥ म० ॥ चउगइसंकटचूरवा, सुरनरकरेजससे-वहो ॥ म० तु० ॥ ४ ॥ भवोदधिभ्रमणनीवातभी, केहनेकहि-यैजायहो ॥ म० ॥ रागादिकरिपुगणभणी, दूरकरोजिनरायहो ॥ म० तु० ॥ ५ ॥ आसहतीघणादिवसनी, सफसथइतेआजहो ॥ म० ॥ जनमकृतारथमाहरो, सीधावांछितकाजहो ॥ म० तु० ॥६॥ तुंपरमेश्वरवालहो, जीवनप्राणआधारहो ॥ म० ॥ भवभव-चरणनीचाकरी, मुजनेदेज्योहितकारहो ॥ म० तु० ॥ ७ ॥ छगणीसैअठावनसमें, सुदिफागणरविवारहो ॥ म० ॥ सात-मदिनेयात्राकरी, कृपाचंदसुखकारहो ॥ म० तु० ॥८॥ इतिपदम् ॥

आजआनन्दघनउमह्योरे, वुठोअमृतधार, मीठोमिसरीथी-घणोरेवाला, मिलीयापासकुमार, आजभलैभेट्याहो, जग-नायकलायकश्रीरेचिंतामणीपास ॥ आज० ॥ १ ॥ मोतीयमेऊ-ड़मांभीयोरे, घरआईवहगंग, हिवमोहेजेगहगयो, मांरेआज-हुवोउछरंग ॥ आज० ॥ २ ॥ पूरबभवजेसंचियोरे, सुकृत-तणोभंमार,आजउदेआयोभलो, मैंतोदीठेप्रभूदीदार ॥ आज० ॥ ३ ॥ संतसुधामयसांभलीरे, सूरतअजबअनूप, तिणथी-मनड़ोमाहरोरेस्वांमि, मोहिरह्योधरचूप ॥ आज० ॥ ४ ॥ मोयोमानसरोवरेरे, बांधीनवलीप्रीत, छिलरीयेढूकेनहीं-स्वामि, हंसाआहीजरीत ॥ आज० ॥ ५ ॥ देखीमुद्रातादरीरे,

स्वांमीमिलगईतारोतार । दीठांहीहिवनहीरुचेरे देवअवरसविकार ॥ आज० ॥ ६ ॥ जेहवोछेहितमाहरोरे, प्रभुजीसुंसपराण । तिमजेप्रभूतुमराखसोतो, थासेकोमीकल्याण ॥ आज० ॥ ७ ॥ सगलोमिलवोसोहिलोरे, राजरमणधनरंग । पिणविनस्वारथनहीमिलेमाने, साहिबजीरोसंग ॥ आज० ॥८॥ संवतअठारेसतोतरेरे, पोसदशमीशुभदीस, विनयघणेप्रभुवीनवेरे, श्रीजिनलाभसूरीस ॥ आज० ॥ इतीपदम् ॥

॥ राग सोरठ ॥

दीठभोयणीगाममझारा, एतोमल्लीजिनंदमनुहारा ॥ दी० ॥ मुक्ताफलसमद्युतिप्रभुजीकी, मुरतिमोहनगारारे ॥ दी० ॥ १ ॥ चरणकमलकंचनकछपसम, मानुजगदाधारा, जानुअनोपमजिननानिरखी, मोहराजगयोहारारे ॥ दी० ॥ २ ॥ करसरोरुहअद्भुतजाणी, पङ्कजजलधिमझारा, कटीसुरंगीजिननीप्रेखी, केसरीअरन्यविहारारे ॥ दी० ॥ ३ ॥ प्रभुवक्षस्थलधीरजथीलजि, मेरुअचलाधारा, जिनगंभीरताजाणीचर्मोदधि, लोकांतकीनविहारारे ॥ दी० ॥ ४ ॥ निरलांछनप्रभुमुखजोइने, शशधरनित्यविहारा, नासिकादीपशिखासमजाणी, दीपकचंचलकारारे ॥ दी० ॥ ५ ॥ नयणअमीरसपूरणप्रभुना, कुरंगअटवीआधारा, भालविसालअनोपमराजें, अष्टमीशशीसमकारारे ॥ दी० ॥ ६ ॥ देशविदेसकाजात्रीआवें, भेटेप्रभुदीदारा, विविधोत्सवपूजाकरेप्रभुजीनी, भावधरीसुविचारारे ॥ दी० ॥ ७ ॥ घणादिवसथीआशाधरीने, आयोजगदाधारा, कृपाचंद्रनिजसेवकजाणी, सुनिजरकरोसुखकारारे ॥ दी० ॥ ८ ॥ सुभठगणी-

सेगुणत्तरवरसें, वैसाखसुदिसुविचारा, आठमदिनप्रजुपदकज-जेट्या, आनंदअधिकअपारारे ॥ दी० ॥ ए ॥ इतिपदम् ॥

॥ देसीतमाकुरी ॥

जीवनमारातेवीसमाजिणचंद, वामानंदनजेट्यारे, साहिवा-म्हांराजावसुंरेम्हांराराज ॥ जी० अश्वसेनकुलचंद, पापकरम-सहुमेट्यारे ॥ साहि० अनादिनारे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जी० मुरति-मोहनवेल, नीलवरणतनुछाजेरे सा० सोहामणीरे म्हां० जी० मुखछविअगमअपार, पूनिमनिशिजिमराजेरे सा० रजनीकरुरे म्हा० ॥ २ ॥ जी० नयनअमीरसरेल, कांमणगाराप्यारारे सा० मनहरुरे म्हां० जी० जालविसालरसाल, अष्टमीशशिसुखका-रारे सा० जव्यचकोरनेरे म्हां० ॥ ३ ॥ जी० चिंतामणिप्रजू-पास, लोड्रवपुरमेंविराजेरे सा० सुखकरुंरे म्हां० जी० सहस-फणाम्हाराज, दरसणवंछितकाजैरे सा० फुखहरुरे म्हा० ॥ ४ ॥ जी० संघमिट्योवहुथाट, हेजैघणेगहगाटेरे सा० हरखसुंरे म्हा० जी० अष्टदिवसउछरंग, रथयात्रावहुरंगेरे सा० उमंग-सुरे म्हां० ॥ ५ ॥ जी० दीठेतुमदीदार, हिवप्रजुमुजनेतारोरे सा० हितधरीरे म्हां० जी० तुमसमअवरनदेव, दीठेनहीसुख-कारोरे सा० जगतमेंरे म्हां० ॥ ६ ॥ जी० तुमपदपंकजसेव, जवजवमुजनेमिलज्योरे, सा० सुहंकरुरे म्हा० जी० एहीज-सुणिअरदास, वंछितपूरणकरज्योरे सा० कृपाकरीरे म्हा० ॥७॥ इतिपदम् ॥

॥ देसीजिल्लानी ॥

जगगुरुश्रीसंखेसरमंमनपासजिनंदाहो सुखकारीमहाराज-

भवभयवारणशिवसुखतरुनोकंदाहो. दयाल ॥ ज० श्रीअस्व-
सेननरेश्वरकुलनभचंदाहो. सु० वामामातसुजातजगतआनं-
दाहो. ॥ द० ॥ १ ॥ सुंदरनीलवरणछवीअद्भुतछाजेहो. सुख०
देहप्रमांणअनोपमनवकरराजेहो. द० ज० रूपअधिकतुम-
देखीरतिपतिलाजैहो. सु० सहुसुरनरमिलसेवेवांछितकाजेहो.
द० ॥ २ ॥ ज० प्रभावतीनाप्राणेसरप्रभु प्याराहो. सु० मोह-
भूपनीलीलाअकीतुमन्याराहो. द० ज० कमठमहासठमानविरा-
रणहाराहो. सु० तारणनागनागेंद्रवणावणहाराहो. द० ॥ ३ ॥
जग० जोवनवयमेंदिक्षालिनीसुविचारीहो. सु० मेघमालीउप-
सर्गकरीगयोहारीहो. द० ज० केवलपांमीजगतजीवउपगारीहो.
सु० संघचतुर्विधथापीवर्यासिवनारीहो. द० ॥ ४ ॥ ज० तुम-
मोटात्रिभुवननानाथकहावोहो. सु० दीठांभविनेंदिलमांअधिक-
सोहावोहो. द० ज० तारणतरणतुमेंएवमोविरुदधरावोहो. सु०
तोमुजतारतांवारहवें नविलावोहो. द० ॥ ५ ॥ ज० देवलबहु-
लाजगमेंदेवतादीठाहो. सु० मुजमनमेंमांतेनविलागामीठाहो.
द० ज० सरागीपणोपामीअयातेधीठाहो. सु० वीतरागप्रभुमुद्रा-
दीठीवहीठाहो. ज० ॥ ६ ॥ कालअनादिथीपरपरणतिमा
रमियोहो. सु० पुद्गलसंगेच्यारगतिमांभमीयोहो. द० ज० हिव-
प्रभूमुरतिजोतांपातिकगमीयोहो. सु० प्रभुजीप्रसादेंमोहराजउ-
पसमीयोहो. द० ॥ ७ ॥ सांतिसुधामयनवलोजिनदीदारहो.
सु० निरख्योआजआनंदभरीसुखकारहो. द० ज० पुण्यप्रबल-
थयोअधिकदिवसश्रीकारहो. सु० जगतवत्सलभलैभेव्याप्रभु-
मनुहारहो. द० ॥ ८ ॥ ज० वढियारदेसमें श्रीसंखेश्वर-

स्वांमीहो. सु० सुगुरुपसायेहिवप्रभुसेवापांमीहो. द० जगणो-त्तरेजगणीसै वेसाषनामीहो. सु० कृपाचंद्रविभुपदकजमनविस-रांमीहो. द० ज० ॥ ए ॥ इतिपदम् ॥

भवीयांभावधरिनेभेटोभगवाननेरे, प्रभुजीतारेसारेवंछित देव, रसीयाधर्मजीनेसरगुणगावोरंगसुंरे, एनीसुरनरपतिकरेसेव भ० ॥ १ ॥ पनरमजिनवरसेवियें, धर्मधुरंधरस्वाम, धर्मनाथ-जिनराजजी, पुरेवंछितकाम, गोमीपारसनाथप्रणमोसोहामणारे एतोबीजीमूरतीबिंबविशेष भ० ॥ २ ॥ नेमजिनेसरवालहो, ब्रह्मचारीसिरदार, श्यामवरणछविसुंदरु, भविजननेसुखकार, प्रभूनोपरचोचिहुंदिसपरगमोरे, वलिवारमावासुपुज्यजांण भ० ॥ ३ ॥ शांतिजीनेसरसोलमां, शांतितणाकरनार, नेमनाथच-वरीभली, संभवचोमुखच्यार, एतोदेरासरदीठादोयसोहामणारे, दीपेबावनदेहरीविसाल भ० ॥४॥ बारमजिनवरसेवियें, वासुपु-ज्यमाहाराज, बीजोदेहरोशांतिनाथनो, मानुनवीनरच्योआज, आदीसरनोदीठोअदूभुतदेहरोरे, वलिचंद्राप्रभुचेत्यनवीन भ० ॥ ५ ॥ अजितजिनंदजुहारियें, अलियविघनसहुजाय, मुनि-सुव्रतजिनवीसमा, दादादेहरीकहाय, बंमेमाहिप्रथमजिनभे-टियारे, एतोचेत्रप्रवामीमनउछरंग भ० ॥६॥ समवसरणमेंशोभता, चोमुखश्रीजिनचन्द, भविजननामनमोहता, सेवेसुरनरइंद, जामनगरमेंउछवरंगवधामणारे, हरखेमिलनेनरनारीगुणगाय, भ० ॥ ७ ॥ भगवतीभावेसांभली, उपधानवह्योचितचंग कस्तुर परमुखभविकजना, पहिरिमालमनरंग, देशविदेसनाआवेबहुजा-तरीरे, वरत्योकृपाचंद आनंदजयजयकार भ० ॥८॥ इतिपदम् ॥

॥ भरथरीनीदेसीः ॥

धर्मजनेसरजगधणी, त्रिभुवनपतिमनुहारजी, नव्यहृदय-कजदिनमणी, सुव्रतामातमल्हारजी ॥ धर्म० ॥ १ ॥ जानु-कुलनजचंद्रमा, सुरतरुसमजिनराजजी, करुणाकरसहुजीवना, सारेवंछितकाजजी ॥ धर्म० ॥ २ ॥ जवअटवीजमतांथका, मिलियोनहीकोईसाथजी, अनंतकालसंसारमां, तेथीरऊऱ्योनाथ-जी ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ हिवमुजनेप्रजुजीमल्या पूरवपुन्यप्रमाणजी, मननामनोरथसहुफल्या, साहिबचतुरसुजांणजी ॥ धर्म० ॥ ४ ॥ जगवतिअंगजविकजना, निसुण्योजावविसालजी, उपधान-तपपूरणथयो, पहरिमालरसालजी ॥ धर्म० ॥ ५ ॥ समवसर-णरचनारची, जविमनहरखअपारजी, जामनगरजुगतेवण्यो, उछवविविधप्रकारजी ॥ धर्म० ॥ ६ ॥ उगणीसेसऊसठसमे, माघमाससुविचारजी, सुदिपांचमजिनसेवना, कृपाचंद्रसुखका-रजी, ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ इतिस्तवनं ॥

राधासोचकरेमनमेरे एदेशीश्रीसिद्धाचलजेटोरे, जविकाअ-शुजकरमसहुजेटोरे श्री० आं० पूरवनिवाणुं श्रीआदीश्वर, इण गिरिवरपरआयारे, पुंडरीकपमुहाचैत्रीदिन, सिद्धिबधूलयला-यारे श्री० ॥ १ ॥ कातीपूनिमपरवकहीजे, द्राविडवारिखिल्ल-सीधारे, इमअनेकएतीरथफरसी, मुगतितणासुखलीधारे श्री० ॥ २ ॥ तीनजवनमेंतीरथबहुला, यात्राफलक्रमजाणोरे, नगर-ग्रामादिच्चैत्यजुहाख्यां एफलमनमांआणोरे, श्री० ॥ ३ ॥ जिन-कल्याणकजूमीफरस्यां, दशगुणोफलतुमेपामोरे, जंबुवृक्षनो-चैत्यवंदिने, शतगुणोफलसुखकामोरे श्री० ॥ ४ ॥ धातकी-

खंमेपुस्करद्वीपे, रुचकअंजनगिरिकहियैरे, जिनवंदनन्हवणादि-करतां, सहसगुणोफललहियैरे श्री० ॥ ५ ॥ अष्टमनंदीसरना-जिनालय, कुंरूलनाचैत्यवंदोरे, क्रमथीदशगुणोफलपांमीजै, मानुषोत्तरचिरनंदोरे श्री० ॥ ६ ॥ वैज्ञारगिरिपरवीरजिनेसर, समेतसिखरजिनवीशरे, वैताढ्यनेवलिमेरुसिखरना, सास्वता-चैत्यजगीशरे श्री० ॥ ७ ॥ गिरनारमंरूननेमिजिनेसर, अष्टा-पदचोवीशरे, कोटिगुणोफलपट्नोक्रमथी वंदोविसवावीशरे, श्री० ॥ ८ ॥ एहथीशत्रुंजयगिरिज्ञेट्यां, अनंतगुणोफलजाणोरे, एकारणथीज्नवियणज्नावे, यात्राकरणमनआणोरे, श्री० ॥ ए ॥ व्हरीपालीजेनरज्नेटे, तेएशुज्नफलपावैरे, कुमतिकदाग्रहदूर-निवारी, निजआतमघरआवैरे श्री० ॥ १० ॥ जगणीसैपांसठ-फागुणशुदि, वीजदिवसप्रज्नुवंदेरे, नाथावजपालसंघसहितशुज्न, कृपाचंदचिरनंदेरे श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीसकलतीर्थफलक्रम-स्तवनम् ॥

॥ पोसह स्तवन ॥

॥ दोहा ॥

जेशलमेरनगरज्नलो, जिहाँ श्रीपार्श्वजिनन्द, प्रहऊठीने प्रण-मतां, आपे परमानन्द ॥ १ ॥ तासु चरण प्रणमीकरी, पौषध विधिविस्तार । पज्नणिस श्रावक हितज्नणी आगमने अनुसार ॥ २ ॥ पौषध पौषध सहूकरे, पौषध करे सहुकोय । पण पौष-धविधि सांज्नलो, जिम निस्तारो होय ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

प्रज्नु प्रणमुंरे पार्श्वजिनेश्वर स्थम्ज्नणो एदेशी पहिलेदिनरे,

सांझ समयउपकरणसहु । पमीलेहीरे, रूमीपरे राखे बहु । पाछलिरातेरे, साधुसमीप आवीकरी । राइप्राइश्चित्तरे, प्रथम-करे मनसंवरी । उच्चालो सम्वरि श्रावककरे पौषधअष्टप्रहरि गुरुमुखे, ऊचरे दंमकतीनबेला सामायिक पण तिणरुखे । पछे करे प्रतिक्रमणो आंतरणी साधुवन्दे तिहांकिणे । कर्मज्रूमी अघावयं मङ्गलीक कुलकज्रणे ॥ ४ ॥ प्रतिलेखनारे अंग-उंही सगलीकरे । उपास्त्रयरे, पुंजीकाजोउद्धरे । ईरीयावहीरे, स्थापनाआगे पमीक्कमे, करे स्वाध्यायरे, साधु सहुने पायनमे ॥ ॥ चाल ॥ पायनमे सगलासाधुकेरा, सुणै सुगुरुवखाणए, ध्या-नकरे अथवागुणेप्रकरणकहै अर्थसुजाणए । पूणपहरपमिलेहण-करिने मातरोपमिलेहए, जलघमालौटा वाटकापमिलेहवा वलितेहए ॥ ५ ॥ गुरुसाथेरे चैत्यप्रवामी करेखरी, देववन्देरे शक्रस्तवपांचेकरी । उपाश्रयरे आवी ईरियापमीक्कमे, आग-मणोरे आलोहीनीचानमे ॥ चाल ॥ नीचानमे बैसणे बैसे मि-छामिछुक्कम देहिने । तिविहार होतोपाणियारे मुहपत्तिपमि-लेहिने, नवकार गुणतां पाठ ज्रणतां प्रहरतीजे दिनरहै । पमि-क्कमी इरीयावही पहली, बली, बेउ प्रतिलेखना करे ॥ ६ ॥ धर्मशालारे पूजी इरियापमिकमे, थे पालोरे स्थापना पमीलेहे समे, मुहपत्तिरे पमीलेही उज्रोथइ, करे गुरुमुखरे, पच्चख्काण मनगहगइ ॥ चाल ॥ गहगही आठे देइ खमासण वस्त्र सगलां आपणां । पमिलेहवा मात्रा तिणपरी चरवले पूजणतणां । देहनीचिन्ताकाजजातो करे ज्रगवन आवस्सही । मारगे इरीया समती सोधे आवतो कहे नीस्सिही ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ बेकर जोमि विनवुंजीसुण स्वामी सुजनदीस ए देशी । हिव जवियण तुमे सांजलोजी, गुरुने नमावो शीस । सामायिक पौषध तणांजी, दूषण टाळो बत्रीश ॥ चाल ॥ बत्रीशदूषणवार तनुना मार वेसे पालठी १।अतिअथिरआशन २। दृष्टिचंचल ३ करे काया एकठी ४ । करे कामसावद्य ५ । लेठगींगण ६ । आलस ७ करकका मोमए ८ । खणेखाज ए । वीसामणकरावे १० । ठंघकरे ११ । मलठोमए १२ ।

॥ ढाल ॥ वचन तणां दूषण दशोजी,जाणो इणप्रकार । कुवचनवोले १ लोकनेजी, दे दूषण सहसात् कार २॥ चाल ॥ सहसात कूक कलंकदे ३ वलि आपठंदे वोलए ४ । संक्षेपसुत्र करे आलावो ५ कलहकरें नीटोलए ६ ठपहासकरिने ७ करे विकथा मांमी ८ न राखे पदसंपदा ए । आवो वेगो ठगो एहवि कहे जाषा सर्वदा १० ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ दश दूषण हिवमनतणाजी, सांजलजो मनएक । न्यून अधिक न लहे क्रियाजी, मनमे नही विवेक १ ॥ चाल ॥ सुविवेक जसु २ धन लाज ३ वांछे करे पौषध वीहतो ४ । पौषध करीने करे नियाणो पुत्र प्रमुखने ईहतो ५ अजीमान ६ रीसे करे पौषध ७ धरे फल संदेहए ८ । वली विनयट विवेक ए (जगति) लगार न करे १० मन दूषण दशएहए ॥ १० ॥

॥ढाल॥ काया वचन मन तणाजी,दूषण एह बत्रीस । टाले दूषण तेहनाजी, पौषध विश्वावीस॥चाल॥ विश्वावीश बोले नहि वलि ठघाळे मुख आपणे । कुटाग्रहीसुबातनकरे पांच दूषण परिहरे। ठपवास करीने दिवस पौषध कीधो नहीं तो निशि

करे। इक पक्ष ठोके नही उतराध्ययन अक्षर अनुसरै ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ चउपरवी पौषध कह्योजी, सुत्रसिद्धांतविचार। हरिभद्रसूरि विवरो कह्योजी, बावीससहस्रीसार ॥ चाल ॥ बावीससहस्रीसारबोले दिवसप्रति करवो नही। पौषध अतिथी संविभाग वलि पर्व दीवसकरवासही। उद्दिष्टशब्द तणो अर्थं शैलंगाचारिज करै। पौषध पर्युषण पर्व कल्याणक तिथी पणिए आदरे ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥ उपधाने पौषध कह्योजी, सुत्र महानिशीथप्रमाण। तिविहार चउविहार जीमणोजी। एकविगय घृतजाण ॥चाल॥ घ्रत जाण आचरणापरंपरापूर्वाचार्ये एकही। भगवंतभाष्योसत्य तेहिज खेंचाताण करवी नही। तिविहार पौषध चार प्रहरी अष्ट प्रहरी सीमाकरी। तीनगछतणी आचरणा अविधी बे पिण आदरी ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ कपूर हुवे अतिउजलोरे–एदेशी ॥

सांजसमय स्थंडिला करेरे। वार वारमाहिवार। ईरीयावहीइम पडीक्कमेरे। जयतिहुअण करे सार ॥ १४ ॥ संवेगीश्रावकसाचो पौषध एह, एतो भगवंत भाष्यो तेह। त्रिकरण शुद्धकरो तुमेरे। जिम पामोभवछेह सं० ॥१५॥ आंकणी। अर्धबिंबरवि आथमेरे। सूत्र कहो सुविचार ॥ स्तवन करे तिणहीज समयरे, तारादीसेदोचार ॥ १६ ॥ सं० कालवेला इम पडीक्कमेरे। लांबी क्षमासणदेइ, शुद्धक्रियानी खपकरेरे। मनसंवेग धरेइ ॥ १७ ॥ सं० जिनदत्तकुशल काउस्सग्ग करेरे। प्रतिक्रमणाने छेह। प्रतिक्रमण पुरो थयोरे। खरतरनी विधि

एह ॥ १८ ॥ सं० मधुरस्वरे राते करेरे । प्रहरसीमसझाय । गीतगावे वैरागनारे । पातक दूर पलाय ॥ संवे० ॥ १ए ॥

॥ ढाल ४ ॥ मारगदेशकमोक्षनोरे–एह ॥

बहुपडिपुन्नापोरसीरे । वान्दे देवउल्लास, संथारागाथा जणेरे । खामे जीवनीरासोरे ॥ २० ॥ ते नरनारीया । सफल करे अवतारोरे । निशीपौषध करे । जावे जावना वारो रे ॥२१॥ ते० पाप अढारे परीहरेरे । चित्तधरे सरणाचार । जात्र संथारो संथरेरे । ध्यानधरे सुविचारोरे ॥ २२ ॥ ते० धर्मजागरीयाजागतोरे । करे मनोरथएह । संयमलेइजिनदिनेरे । धन्य दिवसमुज तेहोरे ॥ २३ ॥ ते० संखश्रावक पौषधकस्योरे। वीरवखाण्योरे तेह । तिणपरि तुमे पौषधकरोरे । जिमपामोसिवगेहोरे ॥ २४ ॥ ते० वीतजयपाटणनो धणीरे, नामे उदायन राय । तिण राते पौषधकीयोरे । वीरवन्दन चितलायोरे ॥ २५ ॥ ते० तुंगीयानगरी तणारे, श्रावक शुद्ध अनेक । जिणविधि ते पौषध कियोरे । तिम करजोसुविवेकरे ॥ २६ ॥ ते० वलि श्रावक पौषधकियोरे । आनन्दने काममेव । वलिदृष्टान्त सुवाहुनोरे । मनधरज्योनितमेवोरे ॥ २७ ॥ ते० ॥

॥ढाल ५ मी॥ महामुनीश्वर नितनमुंजी एराह पाछलिराते ऊठीनेहो,श्रावक होय सावधान,राईप्रायश्चित्त काउसग्गकरेहो, देववन्दे सुविधान ॥ २८ ॥ संवेगी श्रावकहो पौषधनी विधिएह, मिलती सूत्रसिद्धान्तनेहो, मति मनकरज्यो सन्देह ॥२ए॥ सं० उच्चस्वर बोले नही हो, दोष कह्या जगवन्त । वलि सा-

मायिक लेइनेहो, प्रतिक्रमण करे तंत ॥ ३० ॥ सं० प्रतिलेखन क्रिया करे हो, सगली पूरवरीत, सहुसझायकिया पडे हो, सुगुरु वन्दे धरिप्रीत ॥ ३१ ॥ सं० पहिली पौषधपारिने हो, सामायिक पणपार, प्रतिलाने अणगारनेहो, अतिथिसंविभागविचार ॥ ३२ ॥ सं० विधिसेति पौषधकरेहो, बहुफलदायकहोय । अविधिसंघाते कीजतांहो, काजसरे नही कोय ॥ ३३ ॥ सं० पिणविधिनी खपकीजता हो, अविधि हुवे जे कांय, मिछामिदुक्कड दीजतांहो, बुटक बारो थाय ॥ ३४ ॥ सं० पौषध औषध कर्मनोहो, टाले दुर्गति दुःख, अशुनकर्म सहु क्षयकरेहो, आपे शास्वतासुख ॥ ३५ ॥ सं० उत्कृष्ट पौषधतणीहो, यह विहि कही विस्तार, जेशलमेरी संघनेहो, आग्रहकरी सुविचार ॥ ३६ ॥ सं० सौलेसेसिडसठ समय हो, नगर मरोट मझार, मृगसिर सुदि एकमदिनेहो, शुनदिन सुरगुरुवार ॥ ३७ ॥ सं० श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वरहो, श्रीजिनसिंहसूरीश, सकचन्दसुपसायलेहो, समयसुन्दरनणे शीस ॥ ३८ ॥ सं० ॥ इति स्तवनम्.

॥ द्वितीया स्तवनम् ॥

चान्दलियाका ॥ चान्दलिया सन्देसो जिनवरने कहेरे । इतरो कामकरे अ विशालरे । बारे पर्खदा जिनवर उंलगेरे । श्रीसीमन्धर जग आधाररे ॥१॥ चां० सोवनवर्ण शरीर सोहाम णोरे । मोहन मूर्ति महिमावन्तरे । जगमें सुशयघणो सहुकोज पेरे । नेटिस ते दिन धन्य नगवन्तरे ॥२॥ चां० साहिब दुःख अनन्ता म्हे सह्यारे । हूं नमियो गमिउं बुं नव आलरे । शरणश

खिजो निज सेवकारे । तो बिना कोई न दीनदयालरे ॥३॥ चां०
इतरा दिवस लग जूलोथकोरे । सेव्यो तो होसी सुरकइयकरे ।
ते अपराध क्षमीजो माहरारे । मोटा तो बगसे खूनअनेकरे ॥
॥ ४ ॥ चां० ॥ हिवेइकतारी किधी एहवीरे । तोविण अवरु
नमवा सूंसरे । सुरतरुफल ओलीने तुछनारे । खावानी केम
आवे हुंसरे ॥ ५ ॥ चां० इसको तो नेह घणोहि जालवोरे ।
जावे आवे ने करवा प्रीतरे । समविखमी पणनगणें वाटडीरे ।
नवला स्नेही नवलीरीतरे ॥ ६ ॥ चां० मनडो चंचल युक्ततनु
आलसेरे । कर्म कठिन सबलि अन्तरायरे । पापकीया कई
भव पाछलारे । मनमैलुं किम मेलु थायरे ॥ ७ ॥ चां० वाले-
श्वर सांभलमुझ विनतीरे । म्हारे तो तुहीज सजानसयनरे ।
हियडा भीतर तु सजान वसेरे । ध्यान धरुं स्मरुं दिनरेणरे
॥ ८ ॥ चां० कोइ कहे मन तन माहरोरे । कोई कहै जीवन
प्राणरे । म्हारे तो तो बिन को नहीरे । जिनजी भावेजाण
मजाणरे ॥ ९ ॥ चां० नयणे निरखिस मूर्ति तहारीरे । ते
दिन सफल गणीसमहारायरे । सनमुख करसुं प्रभुमुख वात-
डीरे । ओलीपरनिजमनची लाजरे ॥ १० ॥ चां० देवोंन
दिधि मुझपाखडीरे । भडी मिलु जिणजी तुझ आयरे । मनरा
मनोरथ मनमे रह्यारे । किण आगल कहु चितलायरे ॥ ११ ॥
चां० तारे तो मुक्त पाखे सहीरे । पण म्हारेतो तुझबिन
नही सरन्तरे । जलधर सारो मोरा वायरारे । मेहबिन मोर-
किम रहन्तरे ॥ १२ ॥ चां० चान्दो गगन सरोवर प्राहुणोरे ।
दूरथकी करे विकाशरे । जेहजीणोकेमनमेंवसेरे । तेह सदाहि

तेने पासरे ॥ १३ ॥ चां० दूरथकी जानजोवन्दनारे । मोरी प्रहउगमते सूररे । महिरकरीजो सेवकउपरेरे । मुऊने राखि-जोराज हजुररे ॥ १४ ॥ चां० कैइप्रपंच हो साहबसुं करेरे । कहतां न आवे मनमें काणरे । श्रीसीमन्धर तुम जाणो सहीरे । श्रीसोहम गणि जिनहर्ष सुजाणरे ॥ १५ ॥ चां० ॥ इति सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ अइमत्तामुनिनी सज्झाय ॥

॥ श्रीअइमत्ता मुनिवरजूके । करणीकीबलिहारीवे । षट वर्षनके संजमलीनो । वीरवचनचित्तधारीवे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजयनृपतिश्रीदेवीनंदन । पोलासपुरअवतारीवे । अंगइग्या-रपढे गुणआगर । त्रिविधत्रिविधअविकारीवे ॥ श्री० ॥ २ ॥ तपगुणरयणसंवत्सरआदिक । करकें कायउद्धारीवे । प्रजुआ-देशें विपुलाचलगिरि करीअणसण अतिजारीवे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केवलपायमुक्तिगये मुनिवर । कर्मकलंकनिवारीवे । अढारअ-ऊतालेतहिंगिरिऊपर । कीनीथापनासारीवे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वाचक अमृतधर्मसुगुरुके । सुपसायेंसुविचारीवे । शिष्यक्षमा-कल्याणहरखधर ॥ गुणगावे अतिजयकारीवे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति श्रीअइमत्तामुनिनीसज्झाय ॥

॥ अथ करकंडूप्रथमप्रत्येकबुद्धनीसज्झाय ॥

॥ चंपानगरी अतिजली । हुंवारीलाल । दधिवाहनजूपा-लर । हुंवारीलाल । पद्मावतीकूखें ऊपनो ॥ हुं० ॥ कर्मैकीधो चंमालरे ॥ हुं० ॥ १ ॥ करकंडूने करुं वंदणा ॥ हुं० ॥ पहिलो प्रत्येकबुद्धरे ॥ हुं० ॥ गिरुवानागुणगावतां ॥ हुं० ॥ सम-

कितथायेबुध्धरे ॥ हुं० क० ॥ २ ॥ लाधीवांशनीलाकमी ॥ हुं० ॥ थयोकंचनपुररायरे ॥ हुं० ॥ वापसुं संग्राममांमीयो हुं० साधवीलीयो समजायरे ॥ हुं० क० ॥ ३ ॥ वृषनरूपदेखीकरी ॥ हुं० ॥ प्रतिबोधपाम्यो नरेशरे ॥ हुं० ॥ उमत्त-संजमआदस्यो ॥ हु० ॥ देवतादीधोवेषरे ॥ हुं० क० ॥ ४ ॥ कर्मखपाय मुक्तिगया ॥ हुं० ॥ करकंडूरिषिरायरे ॥ हुं० ॥ समयसुंदरकहे साधुने ॥ हुं० ॥ प्रणम्यां पातिकजायरे ॥ हुं क० ॥ ५ ॥ इति प्रथमप्रत्येकबुध्धनी ॥ स० ॥

॥ अथ भरतचक्रवर्त्तीभावमुनिनी सझाय ॥

॥ नरतजी मनहीमें वैरागी । मनहीमेंवैरागी । भरतजी मन० । सहसबत्तीसमुगटबध्धराजा । सेवाकरे वमन्नागी । चौसठसहस अंतेवरिजाके । तोही न हुवा अनुरागी । नरतजी मनहीमें वैरागी ॥ १ ॥ लाखचोरासी तुरंगमजाके । ठन्नुंकोमहैपागी । लाख चोराशी गजरथसोहै । सुरताधरमसुं लागी ॥ नरत० ॥ २ ॥ च्यारक्रोम मण अन्नजकपमे । लूंण दशलाख मणलागे । तीनकोमगोकुलनितदूजे । एककोमी हलसागी ॥ नर० ॥ ३ ॥ सहसबत्तीसदेसवमन्नागी । नए सरवकेत्यागी । ठन्नुंकोम गांमके अधिपति । तोही न हुवा अनुरागी ॥ नर० ॥ ४ ॥ नवनिध रतन चउगमावाजें । मन चिंतासवन्नागी । कनककीरतमुनिवरवंदतहै । दीजो मुगति में मांगी ॥ नर० ॥ ५ ॥ इति नरतजीकास्वाध्याय ॥

॥ अथ शीतासतीनी सझाय ॥

॥ जलजलतीमिलतीघणीरे । जालोजालअपाररे । सुजाण-

शीता । जाणें केसूफूलियारे लाल राताखैरअंगाररे ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ धीजकरे सीतासतीरे लाल सीलतणें परिमाणरे ॥सु०॥ लखमणरामखुशीथयारे लाल । निरखे राणोराणरे ॥ सु० ॥ धी० २ ॥ स्नानकरी निरमलजलेंरे लाल । पावकपासें आयरे ॥ सु० ॥ ऊभीजाणें सुरांगनारे लाल । अनुपमरूपदिखायरे ॥ सु० धी० ॥ ३ ॥ नरनारी मिलीयाघणारे लाल । ऊभाकरे हायहायरे ॥सु०॥ भस्महुसीइणआगमेंरे लाल । रामकरेअन्यायरे ॥ सु० धी० ॥ ४ ॥ राघवविनवांछ्योहुवेरेलाल । सुपनेंही मनकोयरे ॥ सु० ॥ तोमुझ अगनिप्रजालज्योरे लाल । नहींतो पाणीहोयरे ॥ सु० धी० ॥ ५ ॥ इमकहिपैठी आगमेंरे लाल । तुरतथयो अगनिनीररे ॥ सु० ॥ जाणें द्रहजलसुं भर्योरे लाल । झीलेधरमसुधीररे ॥ सु० धी० ॥६॥ देवकुशमवरषाकरेरे लाल । एहसतीसिरदाररे ॥ सु० ॥ शीताधीजेऊतरीरे लाल । साखभरे संसाररे ॥ सु० धी० ॥ ७ ॥ रलियायतसहुकोथयारे लाल । सगलेथयाऊछरंगरे ॥ सु० ॥ लखमणरामखुशीथयारे लाल । शीताशीलसुरंगरे ॥ सु० धी० ॥८॥ जगमांहें जसजेहनोरे लाल । अविचलशीलकहायरे ॥ सु० ॥ कहे जिनहरष सतीतणारे लाल । नितप्रणमी जे पायरे ॥ सु० धी० ॥ ९ ॥ इति शीतासतीसझायसंपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेससज्झायलिख्यते ॥

दमका नांहिभरोसा सांई । करले चलनेंकासामान । तन पिंजरसें निकशजाइगा । छिनमेंपंछी प्राण ॥ द० ॥ १ ॥ लख चौरासी जोनीमें भटक्यो । ऊपनों गरभाधान । सवानवमास

वश्योअंधकूपमें । मनुष्यरूपसनमान ॥ द० ॥ २ ॥ उत्तम कुलमें जनमलियोहै । सुखमें खाणअरुपाण । त्रीरूपज्यां तेरे कोइनसाथी । साथीदानअरुध्यान ॥ द० ॥ ३ ॥ आशात्रि- शनाविकथानिद्रा कुमतारूपनिधान । दिनदिनवधे पापकी- संगत । यामें क्रोधअरुमान ॥ द० ॥ ४ ॥ चलतेफिरते सोवत जागत । करतखाणअरुपाण । छिनछिनआयुघटतहैतेरे । होतदेहकीहाण ॥ द० ॥ ५ ॥ माल मुलक अरु सुखसंपतमें । होयरह्या गुलतान, देखतदेखत विनसजायगा । मतकर मान- गुमान ॥ द० ॥ ६ ॥ झूठासब यह जगतपसारा । नारीविषकी खान । मायाममताआदिके वैरी । इनसे कहापहचान ॥ द० ॥ ७ ॥ पाचूंचोरमूंसें घरतेरो । इनकीखोटीवाण । आठ- वैरी तेरे संगफिरतुहै । मोहवशासुलतान ॥ द० ॥ ८ ॥ कोइ रहणेंपावे नहींजगमें । यह तुं निहच्चैजान । अज हुं छांडि समझिकुटलाई । मूरखतरअज्ञान ॥ द० ॥ ए ॥ त्राईबंध अरु सजनसंबंधी । राखे तेरामान । अंतसमें कोईकामनआवे । किसपेमानगुमान ॥ द० ॥१०॥ जपतपशीलपालो सुत्रसंगत । देवसुपात्रेदान । सुविहितसाधुचरणचितध्यावो । प्रत्नुत्रज तज अभिमान ॥ द० ॥ ११ ॥ इति उपदेस सज्झाय संपूर्णम् ॥

जं जं विहिणा लिहिअं । तं तं परिणमइ सयललोयस्स । इह जाणेवि ण धीरा । विहुरेवि न कायरा हुंति ॥ १ ॥

॥ अथ बाहूबलजीनी सष्झाय लिख्यते ॥

ईडर आंबा आंबलीरे ॥ ए चाल ॥

बाहूवलि चारित्रलीयोरे । साचोधरिवैराग । त्ररतेसरइमवीन-

चेरे । वारवारपायलागं । हरषभरमुफसुं बोलज्योरे । थानें बाबा-जीरीआण थानें रीषभदेवजीरीआण । थेतो मकरो खेंचाताण । थेतो माहरे जीवनप्राण ॥ हरष० ॥ मुफसुंबो० । आंकणी ॥ १ ॥ हुंतो भाईताहरोरे । जेमेंकीधोदोस । तोपिण खमज्योभाईफारे । गरुवानकरे रोस ॥ ह० ॥ २ ॥ आवो बांहदेईमिलांरे । जोवो आंखउघारू । बोलो मीठाबोलफारे । पूरो मननोलारू ॥ ह० ॥ ३ ॥ खीलोनाखुं तोभनेंरे । जिणकुलजाईवेढ । नायो आयुध सालमेरे । ज्युं बांभणघरढेढ ॥ ह० ॥ ४ ॥ भाभीनाउलंभ-फारे । किम संभलाये कान । जातां पांववहेनहींरे । तुफनें-मुंकी रान ॥ ह० ॥ ५ ॥ तूंजीत्यो हूं हारीयोरे । देवभरेछे साख । तुफसरिखो जगकोनहींरें । मुफसरिखाछे लाख ॥ ह० ॥ ६ ॥ माथे सूरजआवीयोरे । पसीनोसारोगात । वैसोभोजन जीमियेंरे । खारकदाखनिवात ॥ ह० ॥ ७ ॥ निन्नांणूं एकणम-तेरे । मुफनें लोभीजाण । ते सहूमुफनेपरिहस्योरे । ज्युं बर-साले छाण ॥ ह० ॥ ८ ॥ तूं म्हाहरे जीवन आतमारे । तुंहीज मांहरेबांह । दिससूनीभाईविनारे । आवोनेंघरजांह ॥ ह० ॥ ९ ॥ बोलघणाईबोलियारे । भरतेसर महाराज । हाथीना-दांत जे नीकल्यारे । तेपाछानवीजाय ॥ ह० ॥ १० ॥ अभि-मानी सिरसेहरोरे । बाहूबलीरिषिराय । सीधाकरमखपायनेंरे । विमलकीरति गुणगाय ॥ ह० ॥ ११ ॥ इति श्रीबाहूबलिजी सिफाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ सचित्तअचित्तनीसज्झाय ॥

॥ ढाल चौपईनी ॥ प्रवचनअमरीसमरीसदा । गुरुपद

पंकजप्रणमीमुदा । वस्तुतणाकहूंकालप्रमांण । सचित्त अचित्त-विधिलहै जिममाण ॥ १ ॥ बिहुंऋतुमिलीचौमासा मांन । षट-ऋतुमिलीनें वरिसप्रमांण । वर्षाशीतउष्ण त्रिण काल । त्रिहूं-चौमासें वरसरसाल ॥ २ ॥ श्रावणभाद्रवआसू मास । काती इमवरसालावास । मागसिरपोसमाहनेंफाग । ए च्यारे सीया-लालाग ॥ ३ ॥ चैत्रवैशाखनें ज्येष्टआसाढ । उष्णकाल ए च्यारअगाढ । वर्षा शरद शिशिर हेमंत । वसंत ग्रीष्मषटऋतु-इमतंत ॥ ४ ॥ रांध्युंविदलरहैचउयाम । उदन आठपुहुरअ-भिराम । प्रहरसोल दधि कांजी ठाठ । पछेरहेतो जीवनि-वास ॥ ५ ॥ पापफलोड्या वटकप्रमांण । च्यारपहुर तिम पोलीमांन । पनरदिवस वर्षापकवान । त्रीसदिवससीयाला-मांन ॥ ६ ॥ वीसदिवस उन्हालेरहे । पछे अन्नकुथाये जिन-कहै । मातरप्रमुख नीवी पकवान । चलित रसे तसकालप्र-माण ॥ ७ ॥ धांनधोवण एकप्रहरप्रमाण दोयघडीजरवांणी-जाण । फलधोवण एक प्रहरप्रमाण । त्रिफलाजल छघ-डीनुंमांन ॥ ८ ॥ त्रिणवारे ऊकलिउंजेह । सुद्धउष्णजल कहियेतेह । प्रहरतीन चउ पंचप्रमाण । वर्षाशीतउन्हालेजांण ॥ ९ ॥ श्रावणभाद्रवके दिनपंच । मिश्रलोट अणचालितसंच । मिगसरपोसे त्रिणदिनजांण । आसूकाती चउदिनमांन ॥१०॥ माहफागुणेंकह्यो पण याम । चैत्रवैशाख चउप्रमाण । जेठआ-साढ प्रहर त्रिणजोय । तिणउपरांत सचित्ततेहोय ॥ ११ ॥ गोहूं शालि पडू धांन कपास । जव त्रिणवरसें अचित्तहोय-तास । विदल सर्व तिलतूंवरदाल । पांचवरसे होइ अचित्तवि-

शाल ॥ १२ ॥ अलसी कोद्रव कांगनें ज्वार । सातेवरसें अचित्तविचार । शीततापवर्षादिकजोय । सचित्तजोनि अचित्ततेहोय ॥ १३ ॥ हरडे पींपर मिरच बिदाम । खारक द्राख एला अनिराम । जोयणशात जलवटमांवहे । साठिजोयणथलमांहें रहे ॥ १४ ॥ सचित्तवस्तुप्रवहणनीजेह । थाइं अचित्त प्रवचनकहेएह । धूमअगनि परीयापणेंकरी । अचित्त योनितस थायेखरी ॥ १५ ॥ बारपहूररहे फगलीराब । सोलपहुर राईतां अजाब । कढाहविगयपरि सेक्योधांन । पहिरचौवीस गोमूत्रनुंमांन ॥ १६ ॥ अतिखारुं घृत कालातिल । पलटाई वर्णादिकरील । काचो दूध रहे बहुवार । एह अन्नककहेमुनिसार ॥ १७ ॥ ढुंढणीयादिक विदलनीदाल । सेक्या धांनपरें तसकाल । च्यारपहुर सीरोलापसी । विदल परतेप्रवचनवसी ॥ १८ ॥ प्रथमदिवसप्रारंभी गिणयो । कालप्रमाणसविकेहनोभण्यो, चलितरस जेहनो जिहांथाय । तिहां ते वस्तुअन्नककहिवाय ॥ १९ ॥ धवलो सेंधव कह्यो अचित्त । श्राद्धविधे अरथरांप्रतीत । ए कालादिकजहरांजेथाय । तेहअचित्त थापना न थाय ॥ २० ॥ गीतारथनेंवयणेंजोय । आचीरणअनाचीरणहोय, आई धांनअंकुरनीकले । तबतेवस्तु अन्नकमां भिले ॥ २१ ॥ गेरू मणसिल लवणहरियाल । आवेजलवट मांहिरसाल । तेह अचित्त होइ प्रवचनसाखि । पिण लेवानी नहींतसुभाखि ॥ २२ ॥ इमबोल्यो जवलेशविचार । विस्तारप्रवचनसारोद्धार । धीरविमलपंडितसुपसाय, कवि नयविमलकहेंसझाय ॥२३॥ इतिसचित्तअचित्तवस्तु स्वरूपसझाय ॥

॥ अथ काउसग्गना १९ दोसनीसज्झाय ॥

सकलदेवसमरीअरिहंत, प्रणमीसदगुरुगुणेमहंत । उग-णीसदोषकाउसग्गतणा । बोलुं श्रुतअनुसारेसुण्या ॥ १ ॥ घोटकदोष कह्यो वलिएह । वांकोपगराखे वलि जेह । लता-दोष बीजो हवेसुणो । कीलहलावेजेअतिघणो ॥ २ ॥ उर्गी-गणलेई जेरहे । थंभदोष ते तीजोकहे । मालदोषचोथोकह्यो-एह । मस्तकअटकावी रहेजेह ॥ ३ ॥ पगअंगूठामेलीरहे । उद्धिदोष ते पंचमकहे । बेऊंपगभेलाकरेजेह । नउलदोष छठोकह्योएह ॥ ४ ॥ गुह्यठामि राखे निजहाथ । शबरीदोष कह्यो जगनाथ । मुखचलनाकरे अतिघणी । खलितदोष अठ-मतेसुणी ॥ ५ ॥ घूघटताणीनें जेरहे । बहुदोष ते नवमोलहे, लम्बथकतूं पहिरे पहिरणूं । दशमेदोष लंबोत्तरभणूं ॥ ६ ॥ हृदयस्थल आछादितरहे । ते थणदोष इग्यारमो लहे । वस्त्रांसु ढांक्यो सवि देह । संयतिदोष बारसमोएह ॥ ७ ॥ भांमण-चालो करे अतिघणुं । भमुहदोस तेरसमोभणुं । अंगुलीह-लावे संख्याकाज । चवदमोदोष कह्यो जिनराज ॥ ८ ॥ नेत्र-तणा चाला जेकरे । वायसदोष पनरमोधरे । पहिस्या वस्त्र संकोकीरहे । कपित्थदोष सोलसमोसहे ॥ ९ ॥ मस्तकधूणावे अतिघणुं । ते सिरकंपसतरमोभणुं । मदिरानीपरि जे बकबके । वारुणी दोपअढारमोचके ॥ १० ॥ मूकदोषकह्यो उगणीसमो । तेहकरी काउसग्गमतगमो । त्रिणदोष ए माहिलाटले । सोल-दोषसाधवीनेंमिले ॥ ११ ॥ लंबुत्तरथणनेंसंयती । दोषएह बोल्याजगपती । बहूदोष चौथो जबमिले । च्यारदोषश्रावि-

कानेंटले ॥ १२ ॥ काउसग्गथी समतासुखथाय । कठिनकर्मनी कोमिपुलाय । काउसग्गकरतां सवि सुखहोई । काउसगसम तपनकह्योकोय ॥ १३ ॥ दोषरहित काउसग्गकीजीये । जिमसहिजे शिवफललीजीये । पंमितधीरविमलनोसीस । कविनयविमलकहै निशिदीश ॥ १४ ॥ इति काउसग्गना १ए दोषनी सजाय संपूर्णम् ॥

॥ श्री नारकीनी सात ढाल ॥

॥ दोहा ॥ त्रिसलानंदनप्रणमीये । शासननायकवीर । सिद्धारथनृपकुलतीलो । बलवंतसाहसधीर ॥ १ ॥ चरण अंगुठेचांपीयो । जेणे मेरुगिरींद । सवीसुरसंशयऊपनो । जाणयात्रिजुवनचंद ॥ २ ॥ बाललीला सुखजोगवी । पछे लीये संयमजार । केवलज्ञानपामीकरी । करे जविनेउपकार ॥ ३ ॥ समवसरणबेसीकरी । गौतमआगलवीर । नरकतणां दुःखवर्णवे । सांजलेवीरवजीर ॥ ४ ॥ विविधप्रकारनीवेदना । सहतां नारकीजीव । सांजलतांहीयोथरथरे, जाषे शासनवीर ॥ ५ ॥

॥ प्रथम ढाल ॥ देशी त्रीपदीनी ॥

पहेलीनरके जाणरे, सागरएकनुं । आयुजाषे वीरजीए ॥ १ ॥ बीजीनरके जोयरे । सागरत्रणनुं । आउएटलुं जाणीयेए ॥ २ ॥ सागरसातनुआयुरे । त्रीजीएकह्युं । केवलीवचन ते सर्दह्योए ॥ ३ ॥ चोथी दससागरजाणरे । गुणवंतसांजलो । एवचनश्रीवीरनाए ॥ ४ ॥ गणधरजाषेतासरे । पांचमी नरकनो । सत्तरसागर आउषोए ॥ ५ ॥ उठीनरके गुणवंतरे ।

सागरबावीशनो । इणीपरे गुरुमुखसांभल्योए ॥ ६ ॥ सातमीये जाणोसंतरे । सागरतेतीसनो । आयुवीरजी प्ररूपताए ॥ ७ ॥ एसातेनरकेआयुरे । जाणोशास्त्रथी । नरक वेदनाअतिआकरी ए ॥ ८ ॥ कहेमुक्तिवीरजीएंदरे । कीमसमेवेदना । धर्मे मुक्ति जसलहेए ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥ रत्नप्रभापहिलीकहि । सकरप्रभा तुं जाण । वालुकप्रभा त्रीजीसुणी । सांभलो चतुरसुजाण ॥ १ ॥ चोथी पंकप्रभासुणो । धुमप्रभा पांचमीजेह । तमप्रभा छठीकही । तमःतमा सातमीतेह ॥ २ ॥

॥ द्वितीय ढाल ॥ मनकुंमारुं मोकलुंमारावालाजीरे । कालअनंतीवेदना गुणवंताजीरे । घणुंशुंभाषुंएह, सुगुणनरसांभलो गुणवंताजीरे । शोरबकोरनारकीकरे ॥ गु० ॥ केवलीजाणेतेह ॥ सु० गु० ॥ १ ॥ पंदरभेदनादेवता ॥ गु० ॥ वेदनाउपजावेप्रचंड ॥ सु० गु० ॥ खंडोखंड तेप्राणना ॥ गु० ॥ ऊपरमुग्दरदंड ॥ सु० गु० ॥ २ ॥ एहवाशब्दकुण सांभले ॥ गु० ॥ एकसांभले श्रीजिनराज ॥ सु० गु० ॥ पापकरीने प्राणीयो ॥ गु० ॥ जइवेसे नारकीपाज ॥ सु० गु० ॥ ३ ॥ कर्कशभाषाबोलता ॥ गु० ॥ वर्णकुवर्ण तुं जाण ॥ सु० ॥ मांहोमांहेसांभले ॥ गु० ॥ सहेभली दुःखनीखाण ॥ सु० गु० ॥ ४ ॥ शीतलजोनीयेउपजे ॥ गु० ॥ रहेतां तेणजगाम ॥ सु० ॥ गु० ॥ रुधिरमांसचामडां ॥ गु० ॥ छे तस घोरअंधार ॥ सु० गु० ॥ ५ ॥ कीचभडाणकीकरे ॥ गु० ॥ घणानरकमांदुःख ॥ सु० गु० ॥ मननीवात मनमांरहे ॥ गु० ॥ परवश-

नारक न सुख ॥ सु० गु० ॥ ६ ॥ दीवसनवि सूजेतेहने ॥ गु० ॥ परमाधामी ऊपाजेह ॥ सु० गु० ॥ नासीने जायकीहां ॥ गु० ॥ एवोथानकनहिजेह ॥ सु० गु० ॥ ७ ॥ सांजलीहैमो कमकमे ॥ गु० ॥ एहवा नारकीडुःख ॥ सु० गु० ॥ जीवजंत-मारेप्राणीयो ॥ गु० ॥ किमलहेमुक्ति सुख ॥ सु० गु० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥ दसप्रकारनीवेदना । सहेता नारकीजीव । अन्यो अन्ये जुजतां । सहतांडुःखसदीव ॥ १ ॥ अशुनबंधन अशुन गति । अशुन संस्थान जेहुंरू । नेदनछेदन अशुनवर्ण । सहेतां डुःखप्रचंरू ॥ २ ॥ अशुनगंधने जाणवो । अशुनरस वली नेद । माठोफरस वलीकह्यो । माठोअगुरुलघुवेद ॥ ३ ॥ माठोशब्द वलीलह्यो । वेदना दसे प्रकार । त्रैलोक्यदीपकथी-जाणजो । नाषीसूत्रमझार ॥ ४ ॥

॥ तृतीय ढाल ॥ मनडोअडेररह्योअभिमाने ॥

साते नरकमां जाणे वेदना । श्रीवीरवखाणेरे मारा नरक तणांरे । डुःखसुणजो एअांकणी । नहिसूरज नहिचंद्र । नहि-पाणीपवनप्रचंरूरे ॥ मारा० ॥ १ ॥ माहाघोरअंधकार । थानकपणनहिसाररे ॥ मारा० ॥ बिहामणीनूमि जाणो । तस-फरसखंरूाधाररे ॥ मारा० ॥ २ ॥ साते नरके जाणो । तस वेदनाकहिनविजावेरे ॥ मारा० ॥ माहाक्रोध धरीने तिहां । हथीआरधरीनेआवेरे ॥ मारा० ॥ ३ ॥ कातरणी जेसीकरे-देह । एमचरणकरतांतेहरे ॥ मारा० ॥ माहारौरवशब्दने जाणो । केवलीजाणेतेहरे ॥ मारा० ॥ ४ ॥ परमाधामीपचा-वेरे । वली कंधेमस्तकेअंगेरे ॥ मारा० ॥ देहने छणमांसरोमे ।

वली तेहनीपूंठेदोरूरे ॥ मारा० ॥ ५ ॥ वैतरणीनदीमां लई-आवे । वली पाणीमांजबकावेरे ॥ मारा० ॥ ए कर्मतणांवि-पाक मांहेमांहे मलीजावेरे ॥ मारा० ॥ ६ ॥ करे कुहाडाराखे। वली वचन विहामनाभाखि ॥ मारा० ॥ छेदनभेदनकरतां । वली पापनीराशे वधतारे ॥ मारा० ॥ ७ ॥ समलीने रूपे-आवे । वली वायसरूपसुहावेरे ॥ मारा० ॥ वाघसीहनारूप जेकरतां । थइ चीतारूपेताकुकेरे ॥ मारा० ॥ ८ ॥ इमअनेक हिंसारीजीव । इम परमाधामीरूपरे ॥ मारा० ॥ वीरभाषे पन्नरेभेदे । करेमुक्ति धर्मथीसुख वेदेरे ॥ मारा० ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥ इम दसप्रकारनीवेदना । कहिनरके जिनराय । शीतउषणनी वेदना । केवलीसे कहि न जाय ॥ १ ॥ भुख तृषातसें वेदना । परज वेदनाअत्यंत । परवशताज्वरतापणुं । दाघज्वरपामेअनंत ॥२॥ भय शोक तेहने घणो । इम ते नारकी जाम । वीरजिन इणीपरेभासता । सुणतां गौयमस्वाम ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ सुणसाहेबजी परमातमपुजानुं फल मुजआपो—एदेशी ॥

हो सुणगौतमजी । वीरपयंपे नरकतणां दुःखनिवारता, परनारी-तणी जे संगकरता । वली पापथकीप्राणीनवी डरता । जमरायनी-संकानविधरता सुणश्रोताजी । नरक तणांदुःखसांभलतां हइडुं-कमकमे॥१॥गुणवंताजी । वीरतणीवाणी सांभलतां धर्म खजानो तेभरे। ए आंकणी लोहतणीपुतलीतपावेछे । अतिअग्निमयकरा-वेछे । तस आलिंगनतेहकरावे छे सुण० गु॥२॥ पांचसेजोजन उंचाउछालेछे । तेहने ते भूंसपछाडेछे । फरीतेहनीवाहे ते

बालेछे ॥ सुण० गु० ॥ ३ ॥ श्वान ते रूपे करफे छे । काली नारकी अंगने मरफेछे । वली तेहनीपूठे दोफेछे ॥ सुण० गु० ॥ ४ ॥ मृगलाजेमपासमांपाफेछे । कलीरी करवतेंकरी फाफेछे । इम उंचापकफी नमाफेछे ॥ सुण० गु० ॥ ५ ॥ वली तस शूली- आरोपेछे । वली काननाक तसकापे छे । वीरुआतस तेहना- विपाकेछे ॥ सुण० गु० ॥ ६ ॥ वली तातातेलमांघालेछे । नासफमां तेहनेवाले छे वली खालउतारी जालेछे ॥ सुण० गु० ॥ ७ ॥ अनन्निष्टआहारकरावेछे । इम नारकीदुःखनेपा- वेछे । बहुशब्द करतांकालगुमावे छे॥ सुण० गु० ॥ ८ ॥ वली तनुमांखारमीवालेछे । परमाधामी दुःखदेखावेछे । प्रन्नु वीरवाणी शीतलथावे छे ॥ सुण० गु० ॥ ए ॥

॥ दोहा ॥ नुमिछे तीहां आकरी । वन जे शीतलजाण । आवीबेसे तरुछांहफी । पफतांनाजेप्राण ॥ १ ॥ वीरुआ विषय विलासतस । सुखथोफो दुःखबहुजाण । नरकतणां दुःखसां- नलो । नाषे वीरवर्धमान ॥ २ ॥

॥ ढाल पांचमी मनेसंभवजिनसुंप्रीत ए देशी ॥

कुंनीमां करतापाक । देहतेजाणोरे । तेलघाणीमांतेह घाले जमराणोरे॥ १ ॥ महेरनआवेतास । गलग्रही जावेरे । रसकढे तसतंतुथी । वली नसवालेरे ॥ २ ॥ नावा जायतेह । मन नयन्नांतरे । परमाधामीतेह । फालेकांतरे ॥ ३ ॥ सूलीपरोवे- जेह दांतमां लेवेरे । वली मारीकरे शतखंफ, घणु दुःखदेवेरे ॥ ४ ॥ फीरीफीरीलागेपाय । वेदनासहेतांरे । एमकालअनंतो- त्याह । सहे दुःख मरतांरे ॥ ५ ॥ हवे तो सहीआं नजाय ।

नारकीदुःखकारे । कोइ न पूछेसार । नारकीसुखकारे ॥ ६ ॥ नहिशरणुं तीहांकोइ । असरणमरतारे । परमाधामीजेह, बहु दुःखदेतारे ॥ ७ ॥ सांजली परहरेदेह । थायेप्राणीरे । कहे मुक्ति महाराज कहे प्रजुनाणीरे ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥ पापकरम कीधाघणा । बहुजीवसंहार । पीका न जाणेपरतणी । जीवकोवकोगमार ॥ १ ॥ अलीकवचतमुख जाषीआ । पारकाचोर्यामाल । सेवीपरनारीनिःशंकपणे । आरंजकीधाअपार ॥ २ ॥ बहुपरिग्रहमेलव्यो । निशीजोजनअंधार । बहुजीवविणास्यातिहांकणे । अजक्ष अथाणुंनहिपार ॥ ३ ॥ कठोलमांढासनेमेलवी । जम्यो आहारनिःशंक । लालजोगे बहुजीवका । उपजे तेनदीसंत ॥ ४ ॥ अलगीथाए नारतस । आजक ढेटनिवार । ठाणांगे प्रगटपाठए । जाणोतुमेनिरधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल छट्ठी विसारिमी ए देशी ॥

मातपितागुरुउंलव्या गुणरागीरे । किधा क्रोधअपार । सुणोतुमेरागीरे । मानमायालोजथी ॥ गु० ॥ बुद्धिनहि रहीकांइ ॥ सुणो० ॥ १ ॥ नरकतणां जेबारणां ॥ गुण० ॥ पापेउघाड्या तेह ॥ सुणो० ॥ इम परमाधामीनीवेदना ॥ गु० ॥ शूलीकूटी वज्र ॥ सु० ॥ २ ॥ उदीरी उदीरी देहने ॥ गु० ॥ पढेपडाकेतेह ॥ सु० ॥ तरसवसेंकरी तेहने ॥ गु० ॥ उकाली कथीर तेपाय ॥ सु० ॥ ३ ॥ मुखमां नाखे तेहने ॥ गु० ॥ वदन वली जाय ॥ सु० ॥ बहु कीकापरूदेहमां ॥ गु० ॥ वली आव्याकरे शतखंरू, सु० ॥ ४ ॥ निशीजोजनतस बारणुं ॥

गु० ॥ जाणे पापअखंरू, ॥ सु० ॥ उनोने वलीआकरो ॥ ॥ गु० ॥ नीरआणेप्रचंरू ॥ सुण० ॥ ५ ॥ तेघाले निज आंखमां । श्रवणमा जरेकथीर ॥ सु० ॥ महाकालबीहामता ॥ गु० ॥ महाबीजत्सचित्तधार ॥ ६ ॥ दीनदयामणांजाणवां ॥ गु० ॥ नरकनाजीवअतीव, ॥ सु० ॥ वीरजीणंद इम देशना ॥ गु० ॥ सुणो ते मुक्ति सदीव ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥ नरकतणां डुःखसांजली । कंपेतासशरीर । तव गोयम ते इमकहे । सांजल गुणगंजीर ॥ १ ॥ प्रजुचरणे शीर नामीने । पूछे गौतमस्वामि । अंतरजामीमाहरो । सरसकहो सिरनामी ॥२॥ ए वेदना में बहु सही । वसीयो कालअनंत । कोइकपुन्यकल्लोलथी । मुजमील्याजगवंत ॥ ३ ॥ पंच माहाव्रत जे धरे । पाले पंचाचार । पांचसुमति जे आदरे । ते लेशेजवनोपार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥ आसणरा योगी ए देशी ॥

इणीपरे बहुवेदना अहिआसी । हवेआव्यो चरणेनिवासीरे । वीरजी गुणवंता । वसतां नरकमांहेंजिनराज । गयो कालअनंत माहाराजरे ॥ वी० ॥ १ ॥ ज्ञानीविनाकुणजाणेप्राणी । कहेतांनावेपाररे । सुद्धसंयमरागी । दश दृष्टांते दोहीलो जाख्यो नरजव पुन्यसंयोगेरे ॥ वी० ॥ २ ॥ शुद्धसंयमनो खप करशे । टाली विषयविकाररे ॥ सु० ॥ पंचे इंद्रियने वशकरसोजो । तो शिवरमणीनेवरशोरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ निद्रा विकथा दूरनिवारो । श्रीजिनधर्मचित्तधारोरे ॥ सु० ॥ समकितरत्नहियेमेधारो । नरकतणां डुःखवारोरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ जांजे सर्वे

मिथ्याधर्म । एवो जिनशासनधर्मरे ॥ सु० ॥ श्रीचिंतामणीचरणपसाये । संकट विकट तेजायरे ॥सु०॥५॥ भुजपुरसहेर गुरूनी महिरे ॥ कर्यो चोमासउल्लासरे ॥ सु० ॥ संवतउगणीस सतोतरेवरसे । पोसतणीसुदृदसमिरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ अंचलगछेपूज्यपटोधर । श्रीपुण्यसिंधुसूरिरायारे ॥ सु० ॥ संघनी साखे मिछामिडुक्कड । होज्यो अधिक सवायारे ॥ सु० ॥ ७ ॥ जोकोइभणशे श्रवणेसांभलशे । तसघरमंगल मालरे ॥ सु० ॥ नरकतणांदुःख वीरेभाख्यां । वीरवचन रसचाख्यारे ॥ सु० ॥ ८ ॥ कहे मुक्ति कमला तमवरजो । सर्दहजो वीरजीवाणीरे ॥ सु० ॥ मिथ्यात्वप्रमादतजोसवीभाइ जिनआणा चितलाइरे ॥ सु० ॥ ए ॥ इति० ॥

॥ अथ सिद्धपदवर्णन सज्झाय ॥

॥ श्रीगौतमस्वामी पूछाकरे, विनयकरि शीसनमाय प्रभुजी, अविचल थानकमें सुण्यो, कृपाकरी मोयवताय प्र० सिवपुरनगरसोहामणुं १ आठकर्मअलगाकरी, साख्याआतमकाज प्र० छूटा संसारनादुःखथकी, रहवाशेतिहांठाम प्र० शि० २ वीरकहेउर्ध्वलोकमां, सिद्धशिलातणो ठाम हो गोतम स्वर्गपुरिनेऊ परे, तेहनावारे नामहो गो० शि० ३ लाखपिस्तालीस जोयणा, लावीपोली जाणहो गो० आठजोजनजाडीविचै, छेहे मांखीपांखमाणहो गो० शि० ४ उज्वलहार मोतितणा, गोदुध संख प्रमाणहो गो० तेथकीउजलीअतिघणी, उलटी छत्रसंठाणहो गो० सि० ५ अर्जुनस्वर्ण समदीपती, घठारीमठारीजाणहो गो० फटकरतनथकीनिरमली, सुआली अत्यंत-

चखाणहो गो० शि० ६ सिद्धसिला उल्लंघीगया, अधररह्या सिद्ध राजहो गो० अलोकसुजाइअड्या, साध्याआतमकाजहो गो० शि० ७ जनमनही मरणनही, नहिजरानहि रोगहो गो० वैरीनहीं मित्रोनही, नहीसंजोगवियोगहो गो० शि० ८ भूखनहीं तिरखानहीं, हरखनहीं नहीसोकहो गो० करमनहीं-कायानहीं, विषयरस नहींयोगहो गो० शि० ९ शब्दरूपर-सगंधनही फरसनहीं नहींवेदहो गो० ॥ बोलेनही चाले-नही, मोनपणुं नहीखेदहो गो० शि० १० गामनगरएको-नहीं, वसतीनही उजाड़हो गो० ॥ कालतिहांवरतेनहीं, नहीं रातदिवस तिथिवारहो गो० शि० ११ राजानहीं परजानहीं, नहीठाकुर नहींदासहो गो० ॥ मुक्तिमें गुरुचेलोनहीं, नहींलघु वड़ाइवासहो गो० शि० १२ अनंतसुखमें झीलरह्या, अरूपी-ज्योतप्रकाशहो गो० ॥ सहुकोइने सुखसारिखा, सगलाने अविचलराजहो गो० शि० १३ अनंतासिद्ध मुगतेगया, वली-अनंताजायहो गो० ॥ अवरजग्या रुंधेनहीं, जोतमांजोत-समायहो गो० शि० १४ केवलज्ञानेसहितछै, केवलदर्शन खासहो गो० ॥ क्षायकसमकितदीपता, कदयनहोवै उदासहो गो० शि० १५ सिद्धस्वरूपजेउलखे, आणीमनवैरागहो गो० ॥ शिवरमणीवेगेवली, नयकहे सुखअथागहो गो० शि० १६

॥ इति सिद्धिपदवर्णन सझाय संपूर्ण ॥

॥ प्रथम आचारांगसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीलानी ॥

पहिलोअंगसुहामणोरे, अनुपमआचारंगरे ॥ सुगुणनर ॥

वीरजिनंदेन्नाषियोरेलाल, उववाईजासउवंगरे ॥ सु० ॥ १ ॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जाउं वारंवाररे ॥ सु० ॥ विनयें गोचरीआदरेरेलाल, जिहांसाधुतणोआचाररे ॥ सु० ब० ॥ २ ॥ सुयखंधदोयछै जेहनारे, प्रवरअध्ययनपचवीसरे ॥ सु० ॥ उद्दे-शादिकजाणियेरे लाल, पिच्यासीसुजगीसरे ॥ सु० ब० ॥ ३ ॥ हेतुजुगतकर सोन्नतारे पदअढारहजाररे ॥ सु० ॥ अक्षरपदने-छेहरू रे लाल, संख्याताश्रीकाररे ॥ सु० ब० ॥ ४ ॥ गमाअनंता जेहमांरे, वलिअनंतपर्यायरे ॥ सु० ॥ त्रसपरित्तो छै इहांरे लाल, थावरअनंतकहायरे ॥ सु० ब० ॥ ५ ॥ निबद्धनिकाचि-तसासतारे, जिनप्रणीतएन्नावरे ॥ सु० ॥ सुणतांआतमउल्लसेरे, लाल, प्रगटेसहजस्वन्नावरे ॥ सु० ॥ ब० ॥ ६ ॥ सुगुणश्रावक वारूश्राविकारे, अंगेधरियउल्लास रे ॥ सु० ॥ विधिपूर्वकतुमे-सांन्नलोरे लाल, गीतारथगुरु पासरे ॥ सु० ब० ॥ ७ ॥ एसिद्धां-तमहिमानिलोरे, ऊतारे न्नवपाररे ॥ सु० ॥ विनयचंद्रकहे-माहरेरे लाल, एहिज अंगआधाररे ॥ सु० ब० ॥ ८ ॥ इति-आचारांग स० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्रसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजोरेअंग तुमेसांन्नलो, मनोहर श्रीसु-यगडांग ॥ मोरासाजन ॥ त्रणसेतेसठपाखंडीतणो, मतखंड्यो धररंग ॥ मो० ॥ १ ॥ मीठीरेलागे वाणीजिनतणी, जागेजेह-थीरेग्यान ॥ मो० ॥ एवाणीमनन्नणीमाहरै, मानु सुधारसमान ॥ मो० ॥ मी० ॥ २ ॥ रायपसेणी उपांग छे जेहनो, एतो सूत्र-गंन्नीर ॥ मो० ॥ बहूश्रुतअरथजाणे सहू, क्षीरनीर धनुतीर

॥ मो० मी० ॥ ३ ॥ एहनारे सुयखंधदोयछै, वलि अध्ययन-तेवीस ॥ मो० ॥ उद्देसासमुद्देसा जिहांभला, संख्यायेरेतेत्रीस ॥ मो० मीठी ॥ ४ ॥ नय निक्षेपप्रमाणभख्या, पदछत्तीसहजार ॥ मो० ॥ संख्याता अक्षरपदमांहे, कुणलहे तेहनोरेपार ॥ मो० मी० ॥५॥ गमाअनंता पर्यायवली, भेदअनंतजिणमांहि ॥ मो० ॥ गुणअनंत त्रसपरित्तकह्या, थावरअनंतजेमांहि ॥ मो० मी० ॥ ६ ॥ निबद्धनिकाचित्त जे सासयकह्या, जिनपणत्तारे भाव ॥ मो० ॥ भाषीरे सुंदर एह प्ररूपणा, चरणकरणनोरे जाव ॥ मो० मीठी० ॥ ७ ॥ करियेभगतजुगतएसूत्रनी, निश्चैलहियेरे मुक्ति ॥ मो० ॥ विनयचंद्रकहे प्रगटेएहथी, आतमगुणनीरे शक्ति ॥ मो० मी० ॥ ८ ॥ इतिसूयगडांग सज्झाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ठाणांगसूत्रसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठटके कंकणलियोरी ॥ एचाल ॥ त्रीजो अंगभलोकह्योरे जिनजी, नामे श्रीठाणांग ॥ मोरोमनमगन थयो ॥ हारे देखी २ भाव, हांरे जीवाजीवस्वभाव ॥ मो० ॥ सबलजुगतकरीछाजतोरे जि०, जीवाभिगमउपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एहअंगमुझ मनवस्योरे जिनजी, जिमकोकिल दलअंब ॥ मो० ॥ गुहिरभावकरि जागतोरेजि०, आज तो एहआलंब ॥ मो० ॥ २ ॥ कूटशैलसिखरीशिलारे जि०, काननमेंबलिकुंड ॥ मो० ॥ गहर-आगरद्रहनदीरे जि०, जेहमेंअछेरेउदंड ॥ मो० ॥ ३ ॥ दसठा-णाअति दीपतारे जि०, गुणपर्यायप्रयोग ॥ मो० ॥ परित्तजेहनी वाचनारे जि०, संख्याताअनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्टसिलोक-निजुत्तसुं रे जि०, संग्रहणीपडिचित्त ॥ मो० ॥ एसहु संख्यातां-

जिहांरे जि०, सुणतांजलसेचित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुयखंधइक राजतोरे जि०, दशअध्ययनउदार ॥ मो० ॥ उद्देशादिकवीसछैरे जि०, पद बहुत्तरहजार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागीजिनशासनतणारे जि०, सुणे सिद्धांतवखाण ॥ मो० ॥ विनयचंद्रकहैते हुवेरे जि०, परमारथराजाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ठा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्रसझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ थारामहिलांऊपर मेहफरोखेवीजली ॥ एचाल । चोथो समवायांग सुणो श्रोतागुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणाउपांगकरी सोभावणी, हो लाल करी सो० ॥ अरधमागधीभाषा साखासुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित भाव कुसुम परिमलव्यापी घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव समासथी, हो लाल जी०, लहीयैएहथि भाव विरोधकांइनथी, हो लाल वि० ॥ भांगातीन स्वसमयादिकनाजाणीये, हो लाल यादि०, लोकअलोक ने लोकालोकवखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥ एकथकीछै सतसमवायपरूपणा, हो लाल सम०, कोडाकोडि प्रमाणकजीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविहगणीपिकटतणीसंख्या कही, हो लाल त०, सासताअरथअनंतकि छै एहनासही, हो लाल छै० ॥ ३ ॥ सुयखंध अध्ययन उद्देसादिके भला, हो लाल उ०, संख्यायें एकएकप्रत्येके गुणनिला, हो० प्रत्ये० ॥ पद एकलाखचौमालसहसतेउत्तरा, हो० स०, पदनेंअग्रउदग्र संख्याताअक्षरा, हो० सं० ॥ ४ ॥ भाष्यचूर्णिनिर्युक्ती करीसोहेसदा, हो० करी०, सुणतांभेदगंभीर त्रिपत न होयकदा, हो० त्रि० ॥ जेहनमावै-

अंगकि अन्तरगतिहसी, हो० अन्त०, जलवरसंतेजोर कुण न हुवेखुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्योधरमसनेह जिणंदसुंमाहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्रजाएयोखरो हो० सू० ॥ जिममालतीलहे भृंग करीर नविरहे, हो० क०, ईश्वरशिरसुरगंग तजी परिनविवहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन निग्रंथतणो जुगतेवरूो, हो० त०, साकरसेलरूीद्राखथकीपिणमीठरूो, हो० थ० ॥ स्युं कहियेबहुवातविनयचंद्र इमकहै, हो, वि० एहनासुणने भाव श्रोताअतिगहगहै, श्रो० ॥ ७ ॥ इति समवायांग० स० सं०

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सज्झायलिख्यते ॥

॥ ढाल पंथीरूानी ॥ पंचमअंगे भगवतीजाणियेरे जिहां जिनवरनावचनअथाहरे ॥ हिमवंतपरवतसेती नीकल्यारे, मानु परतिखगंगप्रवाहरे ॥ पं० ॥ १ ॥ सूरपन्नत्तीनामे परगरूोरे, जेहनोछै उद्दामउवांग रे ॥ सूत्रतणीरचना दरियाजिसीरे, मांहिलाअरथ ते सजलतरंगरे ॥ पं० ॥ २ ॥ इहांतो सुयखंध एकअतिभलोरे, एकसोएकअध्ययन उदाररे ॥ दशहजारउद्देसा जेहनारे, जिहांकिण प्रश्न छत्तीसहजार रे ॥ पं० ॥ पदतो दोयलाख अरथे भस्यारे, ऊपरसहसअठ्यासीजाणरे ॥ लोकालोकस्वरूपनीवर्णनारे, विवाहपन्नत्तीअधिकप्रमाणरे ॥ पं० ॥ ४ ॥ करियेपूजा अने परभावनारे, धरिये सद्गुरुऊपररागरे ॥ सुणिये सूत्रभगवतीरागसूंरे, तोहोय भवसागरनोत्याग रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ कीजै गौतमनामे द्रव्यचढाइयैरे, सम्यक्ज्ञान उदयहोय जेमरे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणीरे, भगति युगतिमनआणीप्रेमरे ॥ पं० ॥ ६ ॥ इणविधसुं एसूत्र आराधतांरे, इणभव सीकेवंछितका-

जरे ॥ परम्नवविनयचंद्रकहे तेलहेरे, मोहनमुगतिपुरीनोराजरे ॥ पंच० ॥ ७ ॥ इति श्रीन्नगवतीसूत्रसज्झाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सज्झायलिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलखलागाराजाजीरेंमालिये ॥ ए देशी ॥ छठो-अंग ते ज्ञातासूत्रवखाणियैजी, जेहनाछै अरथअनेक उदं-रुहो ॥ म्हारा सुणज्योधरिनेह सिद्धांतनीवातमीजी ॥ श्रवणे सुणतां गाढोरसऊपजेजी, मधुरतातर्जितजिममधुखंरु हो ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जंबुद्दीवपन्नत्तीउपांगछै जेहनोजी, इण मांहे जिनपूजानी-विधिजोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिकसुणि परम शांतिरसअनुन्नवेजी, चर्चिकसुणिकरै समसोरहो ॥ म्हा० ॥ २ ॥ नगरउद्यानचैत्यव-नखंरुसोहामणाजी, समवसरण राजाना मातनेतातहो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारजधर्मकथा तिहां दाखवीजी, इहलोकपरलोकऋद्धि-विशेषसुहातहो ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ न्नोगपरित्यागप्रव्रज्यापर्षदाजी, सूत्र परिग्रह वारू तपउपधानहो ॥ म्हा० ॥ संलेहणपच्चरकाण पादपोपगमनताजी,स्वर्गगमन शुन्नकुलउतपत्तानहो ॥ म्हा०॥४॥ बोधिलान्नवलितंतते अंतकृत्यकहीजी, धर्मकथानादोयछै सुयखं-धहो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना उगणीसअध्ययन ते आजछैजी, बीजाना दसवर्गमहाअनुबंधहो ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ऊंठकोमितिहां सकलकथानकन्नाषियाजी, न्नाष्या वलि उगणीसउद्देसहो ॥ म्हा० ॥ संख्याताहजार न्नला पदएहनाजी, एहथकीजायै कुमतिकलेशहो ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ विनयकरे जे गुरुनोबहुपरैजी, तेहने श्रुत सुणतां बहुफलहोयहो ॥ म्हा० ॥ ते रसियामनवसिया

विनयचंद्रनेजी, सोमांहेमिलै जोया एककैदोयहो ॥ म्हा० ॥ ७ ॥
इति ज्ञाताधर्मकथांग स० ॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्रसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विछियानी ॥ हिवैसातमोअंग ते सांजलो, उपासगदशा नामेचंगरे ॥ श्रमणोपासकनीवर्णना, जसुचंदपन्नत्तीउपांग रे ॥ १ ॥ मनलागो मोरोसूत्रथी, एतो जव वैरागतरंगरे ॥ रसराताज्ञाता गुणलहै, परमारथसुविहित संगरे ॥ म० ॥ २ ॥ इणअंगे सुयखंधएकछै, अध्ययन उद्देसविचाररे ॥ दस २ संख्यायेंदाखव्या, पदपिण संख्यात हजाररे ॥ म० ॥ ३ ॥ आनंदादिकश्रावकतणो, सुणतां अधिकाररसालरे ॥ रसलागेजागेमोहनी, श्रोताजनने ततकालरे ॥ म० ॥ ४ ॥ श्रोताआगलतो वांचतां, गीतारथपामेरीझरे ॥ जे अर्द्धदग्धसमझैनही, तेहसुंतो करवी धीजरे ॥ म० ॥ ५ ॥ दसश्रावक तो इहांजाषिया, पिण सूत्र जण्योनहीकोयरे ॥ ते माटे शुद्धश्रावकजणी, एकअरथनीधारणाहोयरे ॥ म० ॥ ६ ॥ साचोहोयतेप्ररूपियै, निस्संकपणें सुजगीसरे ॥ कविविनयचंद्रकहै स्युंथयो, जो कुमतीकरस्यैरीसरे ॥ म० ॥ ७ ॥ इति उपाशकदशांगसज्झायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांगसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीरवखाणीराणी चेलणाजी ॥ ए देशी ॥ आठमोअंग अंतगडदशाजी, सुणीकरो कानपवित्र ॥ अंतगडकेवली जे थयाजी, तेहना रे इहां अछेचरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्मकठिनदलचूरतांजी, पूरताजगतनीआस ॥ जिनवरदेव इहां जासताजी, सासताअर्थसुविलास ॥ आठ० ॥ २ ॥ सकल-

निक्षेपनयभंगथीजी, अंगनाभावअभंग ॥ सहिजसुखरंगनी-तहिपकाजी, कहिपकाजासउवांग ॥ आ० ॥ ३ ॥ एकसुयखंध इण अंगनोजी, वर्गछै आठअभिराम ॥ आठउद्देसाछे वलीजी, संख्यातासहसपदठाम ॥ आ० ॥ ४ ॥ आठमाअंगनापाठमेंजी, एहवोअछेरेमीठास ॥ सरसअनुभवरसरूपजैंजी, संपजैपुण्यनी-रास ॥ आ० ॥ ५ ॥ विषयलंपटनरजेहुवेजी, निरविषयी-सुण्यांथाय, जिमसाहाविषविषधरतणोजी, नागमंत्रेसुण्याजाय॥ आ० ॥ ६ ॥ अमृतवचनमुखवरसतीजी, सरस्वतीकरोरे-पसाय ॥ जिमविनयचंद्र इण सूत्रनाजी, तुरतलहैअभिप्राय ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअंतगडदशासूत्र स० ॥

॥ अथ ९ ॥ अणुत्तरोवाई अंग सज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदलविंदलीलै ॥ ए चाल ॥ नवमोअंगअणु-त्तरोवाई, एहनीरुची मुझनेआईहो ॥ श्रावकसूत्रसुणो ॥ सूत्रसूणो हितआणी, एतो वीतरागनीवाणीहो ॥ श्रा० ॥ १ ॥ जसुकल्पावतंसिकानामै, सोहे उपांगप्रकामेहो ॥ श्रा० ॥ एतो आगमनेअनुकूला, मानु मेरुसिखरनीचूलाहो ॥ श्रा० ॥ २ ॥ एतो सूत्रनोनामसुणीजै, तिम २ अंतरगतिभीजैहो ॥ श्रा० ॥ प्रगटैनवलसनेहा, एहथीउलसेमोरीदेहाहो ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ अणुत्तरसुरपदपाया, तेहनागुण इणमेंगायाहो ॥ श्रा०॥ नगरादिकभावबखाण्या, तेतौ छैअंगेअण्याहो ॥ श्रा० ॥४॥ इहांएकसुयखंधवारू, त्रणवर्गवलीमनुहारूरे ॥ श्रा० ॥ उद्देसा-त्रिणेंसनूरा, संख्यातसहसपदपूराहो ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ सूत्र-सुणावूं अमेतेहनें, साचीश्रद्धाहुय जेहनेहो ॥ श्रा० ॥ श्रोता-

श्रीप्रीतलगावूं, निंदकने मुंहनलगाउंहो ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ जे सुणतांकरैबकोर, तेतोमाणसनहीपिणढोरहो ॥ श्रा० ॥ कवि विनयचंद्रकहेसाचो, श्रुतरंगे सहुकोराचोहो ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सज्झायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रष्णव्याकरणसज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आधाआमपधारोपूज ॥ एदेसी ॥ दशमो अंग-सुरंगसुहावै, प्रष्णव्याकरणइननामें, सूत्रकल्पतरुसेवे तेतो, चिदानंदफलपामे ॥ आवो २ गुणनाजाणतुमनेसूत्रसुणाउं॥ पुष्पकलीज्यूं परिमलमहकै, गुरुपरागनेरागै ॥ तिम उपांग-पुष्पिकाएहनो, जोरजुगतिकरिजागै ॥ आवो० ॥ १ ॥ अंगु-ष्टादिकजहांप्रकास्या, प्रष्णादिकअतिरूडा ॥ ते है अष्टोत्तर-सतएतो, सूत्रमध्यमणिचूडा ॥ आ० ॥ ३ ॥ आश्रवद्वारपांच-इहांआण्या, पांचेसंबरद्वारा ॥ महामंत्रवाणीमांलहियै, लबधि-नेदसुखकारा ॥ आ० ॥ ४ ॥ सुयखंधएकहै दसमेअंगे; पण-यालीसअज्झयणा ॥ पणयालीसउद्देसवलिपद, सहससंख्या-तनीरयणा ॥ आ० ॥ ५ ॥ जेनरसूत्रसुणैनहीकानै, केवल-पोषेकाया ॥ मायामांहिरहैलपटाणा, तेनरइमहिजआया ॥ आ० ॥ ६ ॥ सूत्रमांहितो मारगदोयहै, निश्चयनयव्यवहारा ॥ विनयचंद्रकहै ते आदरियै, तजमनमदनविकारा ॥ आवो० ॥ ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ विपाकसूत्र सज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल करुखानी ॥ सुणोरे विपाकश्रुत अंगइग्यारमो, वजोविकश्रावृश्राजेअनेरी ॥ ललितउपांगजसुप्रवर पुप्फचू-

लिका, मूलिका पापआतंककेरी ॥ सु० ॥ १ ॥ अशुभ किंपाक सम दुकृतफलभोगवी, नरकमें गरकथयाजेहप्राणी ॥ सुकृतफलभोगवीस्वर्गमांजेगया, तासवक्तव्यताइहांआणी ॥ सु० ॥ २ ॥ दोयश्रुतखंधने वीशअध्ययनवलि, वीसउद्देस इहां जिनप्रयुंजे ॥ सहससंख्यातपद कुंदमचकुंदजिम, बहुल-परिमलभ्रमरचित्तगुंजे ॥ सु० ॥ ३ ॥ सरसचंपकलता सुरभि-सहुनेरुचै, अन्य उपगारनीबुद्धिमाटै ॥ सूत्रउपगार तेहथी सबलजाणियै, जेहथीपुरुषसुखअचलखाटै ॥ सु० ॥ ४ ॥ बंधने मोक्षना बेउं कारणअछै, दुकृतने सुकृत जोवोविचारी ॥ दुकृतनेपरिहरी सुकृतनेआदरी, जिनवचनधारियै गुणसंभारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ मकररे मकरनिंद्या निगुणपारकी, नारकी तणीगति कांइबांधै ॥ नारकी प्रकृतितज सहजसंतोषभज, लागश्रुतसांभलीधरमधंधै ॥ सु० ॥ ६ ॥ सुखने दुःखविपाक-फलदाखव्या, अंगइग्यारमें वीतरागे ॥ चिरजयो वीरशासन जिहां सूत्रथी, कविविनयचंद्रगुणज्योतिजागे ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंगइग्यारे मेंश्रुण्या, सहेलीए ॥ आजथयारंगरोलकि ॥ स० ॥ नंदीसूत्रमांहि एहनो, स० ॥ भाष्यो सर्वनिचोलकि ॥ १ ॥ सहेलीए आजवधामणा ॥ आंकणी ॥ पसरीअंगइग्यारनी, स० ॥ मुझमनमंरूपवेलकि ॥ सींचूते हरखेकरी, स० ॥ अनुभवरसनीरेलकि ॥२॥ हेजधरी जेसांभलै, स० ॥ कुणबूढा कुणबालकि ॥ तोते फललहेफूटरा, स० ॥ स्वादेंअतिहिरसालकि ॥ स० ॥ ३ ॥ हरखअपारधरी-

हियै, स० ॥ अहम्मदावादमझारकि ॥ न्यासकरीए अंगनी-स० ॥ वरत्या जय २ कारकि ॥ स० ॥ ४ ॥ संवतसतरपच १ वनें, स० ॥ वर्षारितुनन्नमासकि ॥ दसमीदिनसुदिपक्षमां, स० ॥ पूरणथई मनआसकि ॥ स० ॥ ५ ॥ श्रीजिनधर्मसूरी-पाटवी, स० ॥ श्रीजिनचंद्रसूरीसकि ॥ खरतरगछनाराजिया, स० ॥ तसुराजै सुजगीसकि ॥ ६ ॥ पाठकहरखनिधानजी ज्ञानतिलकसुपसायकि ॥ विनयचंद्रकहे मेंकरी, स० ॥ अंगइग्यारसज्झायकि ॥ स० ॥ ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सज्झाय ॥

॥ ढंढणारिषीनी सज्झाय ॥

॥ ढंढणरिषिजीनेवंदना हूंवारी, उत्कृष्टोअणगाररे हुवारी-लाल, अभिग्रहलीधोएहवो हुं० ॥ लेस्युंशुद्धआहाररे ॥ हु० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रतिऊठेगोचरी हुं० ॥ न मिलै शुद्ध-आहाररे ॥ हुंवा० मूलनलै असूझतो हु० ॥ पंजरकीधो-गातरे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरिपूछै श्रीनेमीने हूं०, मुनिवर-सहसअढाररे ॥ हुं वा० ॥ उत्कृष्टोकुणएहमें हुं० ॥ मुझनेंकहो विचाररे ॥ हुंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढणअधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुखनेमजिनंदरे हुंवा० ॥ कृष्णउमाह्योवांदवा हुं० ॥ धन-जादवकुलचंदरे हुंवा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर-मिल्या हुं०, बांद्याकृष्णनरेसरे हुंवा० ॥ किणहीमिथ्यात्वी-देखने हुं०, आएयोभावविसेसरे हुं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुझघर-आवोसाधुजी हुं०, ल्योमोदकछै शुद्धरे हुं० ॥ मुनिवरविह-रीनेपांगुरया हुं०, आयाप्रभुजीनेपासरे हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥

मुझलब्धै मोदकमिट्या हुं०, कहोनेतुम्हेकिरपालरे हुं० ॥ लब्धिनही वन्नताहरी हुं०, श्रीपतिलबधिनिहालरे हुं० ॥ ७ ॥ ढं० ॥ एलेवो जुगतोनहीं हुं०, च्याट्या परठनकाजरे हुं० ॥ इंटनिवाहेजायने हुं० चूरे करमसमाजरे हुं० ॥ ८ ॥ ढं० ॥ आंणीचढतीभावना हुं०, पांम्योकेवलनाणरे हुं० ॥ ढंढणऋषि मुगतेगया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाणरे हुं० ॥ ए ॥ ढं० ॥ इतिढंढणऋषिसज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नाऋषी सज्झाय ॥

श्रीजिनवाणीरेधन्ना, अमियसमाणी मोरानंदन, मनमोतो मानीरे नंदनताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहिवैरागीरे धन्ना, धरमनोरागी मोरानंदन माहरोतो मनमोरे किमपरचावसुं ॥ २ ॥ दसदिसीदीसेरे धन्ना, तोविनसूनी मोरानंदन, अनुमतिदेतांरे जीववहेनही ॥ ३ ॥ बत्तीसैनारीहो धन्ना, अतहिपियारी मो० ॥ वाणीतो बोलेरे मधुरसुहामणी ॥ ४ ॥ बालकतो कामणीरे धन्ना, वयपिणतरुणी मो० ॥ गजगतिचालेरे चालसुहावणी ॥ ५ ॥ एघरमंदिरहो धन्ना, एसुखसज्या मो० ॥ कोमबत्तीसे धननोतूंधणी ॥ ६ ॥ एधनमांणोरे धन्ना, वयपिण जांणो मो० ॥ भोगविलेज्योरे भोगसुहामणो ॥ ७ ॥ व्रतअतिदोहिलोरे धन्ना, नहियसुहेलो मो० ॥ सुगमनहीछेरे साधुकहावणो ॥ ८ ॥ घर २ भिक्षाहो धन्ना, गुरुतणीशिक्षा मो० ॥ कहणीरे रहणीनहीछेसारखी ॥ ए ॥ इकवारे सुणीयेहो धन्ना, आगमभणीये मो० ॥ जिनवरजांणेहो दुक्करजोगछै ॥ १० ॥ वनवासैरहणो हो धन्ना, परीसहसहणो मो० ॥ कोमलकेसारे

सोचकरावणो ॥ ११ ॥ साचोतें जाख्योहे अम्मा, झूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ कुकरमारग जननीदाखियो ॥ १२ ॥ सुखअभिलाषीहे अम्मा, फूठनआखी मोरी अम्मा ॥ कायरमारगजननीदाखियो ॥ १३ ॥ एजगस्वारथीहे अम्मा नही-परमारथि मोरी अम्मा, वीरवखाण्योपरखदासहुसुण्यो ॥१४॥ मेंइमजाण्योहें अम्मा, वीरवखाण्यो मोरी अम्मा, एधनजोबन आयुथिरनही ॥ १५ ॥ अनुमतिदीजेहे अम्मा, ढीलनकीजै मोरी अम्मा, जोखिणजावेसो फिरआवेनही ॥ १६ ॥ अनुमतिआपी हो अम्मा, जीवसुखपायो मोरी अम्मा, संजमलीधोरे मनमांगहगही ॥ १७ ॥ छठ २ पारणोहे अम्मा, विगयनिबारणो मोरी अम्मा, वीरवखाण्योसुरनरआगलै ॥१८॥ सुखसंजमपाले हे अम्मा, दूषणटाले मोरी अम्मा, अंगइग्यारे अरथरूमाजणै ॥ १ए ॥ संजमपाल्यो हे अम्मा, अढारपखवाके मोरी अम्मा, माससंथारे सरबारथसिद्धलह्यो ॥ २० ॥ इति धन्नाऋषि सज्झाय संपूर्णं ॥

॥ अथ कर्मसज्झाय लिख्यते ॥

देवदाणवतीर्थंकरगणधर, हरिहरनरवरसबला ॥ करमप्रमाणे सुखदुखपाया, सबलहुआमहानिबलारे प्राणी, कर्मसमोनहिकोई ॥ १ ॥ आदीसरजीनेकरमअटाख्या, वरसदिवस रह्याभूखा ॥ वीरनेबारेवरसदुखदीठ, ऊपनाब्राह्मणीकूखैरे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठसहससुतमाख्या एकणदिन, जोधजुवाननरजैसा ॥ सगरहुओमहापूत्रनोदुखियो, कर्म्मतणाफलएसारे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीससहसदेसांरो साहिब,

चक्रीसनतकुमार ॥ सातरोगसरीरमेऊपना, कर्म्मेंकीयो तनु-
गाररे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म्मेंहवालकियाहरिचंदने, वेची सुता-
राराणी ॥ वारेवरसलग माथेआएयो, नीचतणे घरपाणीरे ॥
प्रा० ॥ क० ॥ ५ ॥ दधिवाहनराजारीवेटी, चावीचंदनवाला ॥
चौपदज्यूंचहुटामेंवेची, करमतणाएचालारे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥
संभूमनांमे आठमोचक्री, कर्म्मेंसायरनाख्यो ॥ सोलेसहसजक्ष-
ऊन्नादेखे, पिण किणहीनहिराख्योरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥
ब्रह्मदत्तनामे वारमोचक्री, कर्मेंकीधोआंधो ॥ इमजाणीने अहो
भविप्राणी, कर्म्मकोइ मतवांधोरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥
छपन्नकोमजादवरो साहिव, कृष्णमहावलजांणी ॥ अटवी
मांहिमूंउएकलमो, विल २ तोविनपाणीरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥
पांमवपांच महाझूझारा, हारीद्रोपदानारी ॥ वारे वरसलग-
वनरमवमिया, भमिया जेमभिख्यारीरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥
वीसभुजा दसमस्तकहूंता, लखमणरावणमार्यो ॥ एकलमै
जगसहुनरजीत्या, तेपिण कर्म्मसुंहार्योरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥
लखमणराम महावलवंता, अरुसतवंतीसीता ॥ कर्म्मप्रमाणे
सुखदुखपांम्या, वीतकवहुतसवीतारे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥
समकितधारीश्रेणिकराजा, बेटे वांध्यो मुसकै ॥ धरमीनरने
कर्मधकाया ॥ करमसुंजोरनकिसकारे ॥ प्रा० क० ॥ १३ ॥
सतियसिरोमणीद्रौपदिकहियै, जिनसम अवरनकोई ॥ पांच-
पुरुषनीहुइ तेनारी, पूरवकर्म्मकमाईरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥
आभानगरीनो जेस्वामी, साचो राजाचंद ॥ माइकीधो पंखी-
ककमो, कर्म्मेंनाख्यो तेफंदरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईश्वर-

देवने पारवतीनारी, करतापुरुषकहावै ॥ अहनिसमहिलमसांणमेवासो, भिक्षाभोजनखावेरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहसकिरणसूरजपरतापी, रातदिवसरहे अटतो, सोलकलाससीधर जगचावो, दिन २ जायेघटतोरे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इमअनेक खंड्यानरकरमें, भांज्या ते पिणसाजा ॥ ऋद्धिहरषकरजोमीनेविनवै, नमो २ कर्म्ममहाराजारे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इतिकर्म्मसझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ सातविसनकीसज्झाय लिख्यते ॥

सातविसननारे संगमतकरो, सुणतेहनोसुविचार विवेकी ॥ सातनरकनारे भाइसातेई, आपैदुखअपार विवेकी ॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथमजूवानेरे विसनपड्यांथकां, पांमवपांचप्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजापिण इणविसने पड्यो, खोइसहूराजरिद्ध वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरेमांसभक्षण अवगुणघणा, करै परजीवसंहार विवेकी ॥ महासतकनीनारीरेवती, नरकगइनिरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजेमदिरापांनविसनतजी, चितधरीवलिचाह वि० ॥ द्वीपायणरिषि दूहव्योजादवे, द्वारकानो, थयोदाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथेविसने वेस्याघरवसैलोकमेंनरहेलाज वि० ॥ कयवन्नादिकनोगयोकायदो, कुविसनेरे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पापआहेमे कुविसनसाचवैप्राणीहणियेप्रहार वि० ॥ मारीमृगली श्रेणिकनृपगयो, पहलीनरकमझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छठेचोरीने विसनेकरी, जीवलहेदुखजोर वि० ॥ मुंजदेवराजायेंमारियो, चावोढुंमकचोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीसंगत कुविसनसातमें,

हाणिकुजसवहुहोय वि० ॥ राणोरावण सीताअपहरी, नास-लंकानोरे जोय वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ इमजांणीने जव्यतुमे-आदरो, सीखसुगुरुनीरेसार वि० ॥ इणजवपरजवआनंद-अतिघणा, कहेध्रमसीसुखकार ॥ वि० ॥ सा० ॥ ए ॥ इति-सातविसनकीसज्कायसंपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणासतीनीसज्झाय लिख्यते ॥

वीरवांदीवलतांथकांजी, चेलणादीठोरेनिग्रंथ ॥ रातिवन-मांहि काउसग्गरह्योजी, साधतो मुगतिनोपंथ ॥ १ ॥ वीर-वखाणीराणीचेलणाजी, सतियसिरोमणिजांण ॥ चेमाराजानी-सातेसुताजी, श्रेणिकसीयलपरिमांण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीतठं-ठारसवलोपमेजी, चेलणाप्रीतमसाथ ॥ चारत्रियो चितमे-वस्योजी ॥ सौवमिवहिररह्योहाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ ऊवकजागी-कहेचेलणाजी, किमकरतोहुस्यैतेह ॥ कुसतीमनमाहि ए कुण-वस्योजी ॥ श्रेणिकपड्योरेसंदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउरपरो जालज्योजी, श्रेणिकदियोरेआदेस ॥ जगवंतसांसो जांजियो-जी, चमकियोचित्तनरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीरवांदीवलतांथकां-जी, पैसतां नगरमकार ॥ धुंआनोघोरदेखीकरीजी, जाजारे अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनोवचनपालीकरीजी, व्रत-लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदरकहे चेलणाजी, पामियो जवतणोपार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति चेलणामहासतीसज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ वैराग्य सज्झाय ॥

॥ जूलोमनजमरा कांइजमै, जमियोदिवसतेरात ॥ मायारो

लोजीप्रांणियो, जमियोपरिमलजात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुंजकाचो कायाकारमी, जेहनाकरोरे जतन्न ॥ विणसतां वारलागेनही, निरमलराखोरेमन्न ॥ २ ॥ जू० ॥ केहनाछोरू केहनावाछरू, केहना मायनैबाप ॥ उजीवजासी एकलो, साथे पुन्यनेपाप ॥ ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्यातो डूंगरजेवडी, मरवोपगलारेहेठ ॥ धनसंची संचकांइकरो, करवीदेवनीवेठ ॥ ४ ॥ जू० ॥ लखपति छत्रपती सबगए, गए लाखोकेलाख ॥ गरबकरी गोखेबैठता, जइ जलबलराख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसायरजलदुखजर्यो, तिरवोछेरेजेह ॥ वीचमेंबीह सबलोअछे, करमें वायनेमेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ उलट नहि मारगचालवो, जायवोपहिलेरे पार ॥ आगलनहि हटवांणियो ॥ संबललेज्योरेलार ॥ ७ ॥ जू० ॥ मूरखकहे धनमाहरो, धनकेहनो हतो न थाय ॥ वस्त्रविनाजाय पोढवो, लखपतिलाकरूमाय ॥ ८ ॥ जू० ॥ महमंदकहे वस्तुवोरीये, जे कुछआवेरेसाथ ॥ अपणो लाजउवारिये, लेखोसाहिबहाथ ॥ जू० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबलिसज्झाय ॥

॥ राजतणा अतिलोजिया, जरतबाहूबली झूझेरे ॥ मूंठी उपाडीमारिवा, बाहूबलिप्रतिबूझेरे ॥ १ ॥ वीराम्हारागजथकीउतरो, ब्राह्मीसुंदरीजासैरे ॥ ऋषजजिनेसरमोकली, बाहूबलीनैंपासैरे ॥ वी० ॥ गजचढ्यां केवलनहोईरे ॥ वी० ॥ २ ॥ लोचकरी चारित्रलियो, वलिआयो अजिमानोरे ॥ लघुबांधववांदूनंही, काउसग्गरह्यो शुजध्यानोरे ॥ ३ ॥ वी० ॥ वरसदिवस काउसग्गरह्यो, वेलडियांवींटाणोरे ॥ पंखीमालामां-

रूियां, सीततापसूकाणोरे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवीवचनसुएया-
इसा, चमक्योचित्तमझारोरे ॥ हयगयरथमें परिहस्या, नवि-
मूंक्योअहंकारोरे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मनवालियो, मूंक्यो
निजअभिमांनोरे ॥ पांवउपाडीवांदिवा, ऊपनोकेवलज्ञानोरे ॥
वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवलीपरखदा, बाहुबलरूषिरायारे ॥
अजरअमरपदवीलही, समयसुंदरवंदेपायारे ॥७॥ वी०॥ इति ॥

॥ अथ अरणकमुनि सज्झाय ॥

॥ अरणकमुनिवर चाल्यागोचरी, तरूके दाझे सीसोजी ॥
पायउभराणारे वेलूपरजलै, तनसुकमालमुनीसोजी ॥ अर०
॥ १ ॥ मुखकमलाणोरे मालतीफूलज्यूं, ऊभोगोखने हेठोजी॥
खरैउपहरैरे दीठोएकलो, मोहीमाननीमीठोजी ॥ २ ॥ अ०
वयणरंगीलीरे नयणेविंधियो, रूषिथंभ्योतिणवारोजी ॥ दासी-
नेकहे जायऊतावली, उंरिषितेडीआंणोजी ॥ ३ ॥ अ०
पावनकीजे रूषिघरआंगणो, वहिरो मोदकसारोजी ॥ नव-
जोवनरसकायाकांइदहो, सफलकरोअवतारोजी ॥ ४ ॥ अ० ॥
चंद्रावदनीरे चारितचूकव्यो, सुखविलसै दिनरातोजी ॥ इक-
दिनगोखैरमतोसोगठै, तवदीठी निजमातोजी ॥ ५ ॥ अ० ॥
अरणक २ करतीमायफिरे, गलियै २ मझारोजी ॥ किणहिक-
दीठोरे माहरोअरणलो, पूछैलोकहजारोजी ॥ ६ ॥ अ० ॥
उतरतिहांथीरे जननीरेपायनमे, मनमेंलाज्योतिवारोजी ॥
धिग् २ पापीरे माहाराजीवने, एहमें अकारजधार्योजी ॥७॥
अ० ॥ अगनधुखंती रे सिल्ला ऊपरै, अरणक अणसण

कीधोजी ॥ समयसुंदरकहे धनतेमुनिवरू, मनवंछितफलसीधो-
जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अकरणमुनिसज्कायसंपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्रसज्झाय लिख्यते ॥

नामइलापुत्रजांणियै, धनदत्तसेठनोपूत ॥ नटवीदेखीरे
मोहियो, नहिराख्योघरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटेरे प्राणिया,
पूरबनेहविकार ॥ निजकुलछंडीरे नटथयो, नाणीसरमलि-
गार ॥ क० ॥ २ ॥ इकपुरआयोरे नाचवा, उंचोवंसविशेष ॥
तिहां रायजोवारे आवियो, मिलियालोकअशेष ॥ क० ॥ ३ ॥
दोयपगपहरीरे पावडी, वंसचढ्योगजगेल ॥ निरधाराऊपर
नाचतौ, खेलेनवनवाखेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोलबजावेरे नाटवी-
गावेकिन्नरसाद ॥ पायतलघूघरा घमघमें, गाजैअंबरनाद ॥
क० ॥ ५ ॥ तवतिहांचिंतेरे राजियौ, लुब्धयोनटवीरे साथ ॥
जोनटपडेरेनाचतो, तोनटवीमुझहाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांनन-
आपैरेनृपती, नटजांणीनृपवात ॥ हूंधनवंछुरे रायनो, रायवंछे
मुझघात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांइक मुनिवरपेखियौ, धन २
साधु नीराग ॥ धिक् २ विषयारेजीवने, मनआण्योवैराग ॥
क० ॥ ८ ॥ संबरभावैरे केवली, ततखिणकर्मखपाय ॥ केवलि
महिमारेसुरकरै, समयसुंदरगुणगाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमारमुनिसज्झाय लिख्यते ॥

वीरजिनंदसमोसर्याजी, वंदेमेघकुमार ॥ सुणीदेशनावैरा-
गीयौजी, एसंसारअसाररे मायडी ॥ अनुमतिद्यो मुझआज ॥
संयमविषमअपाररे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछतूंकेणे भोल-
व्यौरे, श्रेणिकताततनरेस ॥ कांइकणौ किणदूहव्योरे, हूंनविछुं

आदेशरे जाया ॥ संयमविष० ॥ किमनिरबाहिसन्नाररे जाया ॥ हूं न० ॥ २ ॥ आदिनिगोदेहूं रुल्योजी, सहियाडुक्खअणंत ॥ सासोश्वासें नवपूरीयाजी, तेह नजांणूअंतहे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणातूंबालक अछेजी, जोबनन्नरथोरे कुमार ॥ आठरमणिपरणावियोरे न्नोगविसुक्खअपाररे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनममरण निरयातणीजी, डुक्खनसहियोजान ॥ वीरजिणंदवखाणियोजी, ते मैसुणियौकांनहे मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछकांचलीयैजीमणोजी ॥ अरसविरसआहार ॥ भुंइपाला नितहींमणोजी, जाणसीतळकुमाररे जाया ॥ हूं न० ॥ ६ ॥ न्नमतांजीवअनंतन्नम्योजी, धर्मडुहेलो होय ॥ जराव्यापे जोवनखिसेजी, तबकिमकरणोहोयरे मायमी ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणीआठे रमेजी, तोमे नवसरहार ॥ जोवनन्नर छोरूनहीजी, कांइमूकोनिरधारकुमरजी ॥ हूं न० ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजमीजी, रूपरमणि रसन्नोग ॥ अतहि सुंहाली देहमीजी, किम हुयसंजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥ ए ॥ स्वारथनोसहूएसगोजी, अरथपखेसहुकोय ॥ विषयविषममहुराकह्याजी, किमन्नोगवियेसोयहे मायमी ॥ अ० ॥ १० ॥ खमि २ माउपसायकरी जी, मेंदीधुं तुझडुक्ख ॥ दिउंआदेस जिम हुंसुखीजी, वीरचरणेंल्युंदीक्खहे ॥ मां० ॥ अ० ॥ ११ ॥ तनफाटे लोयणझरेजी, डुख न सहणाजाइ ॥ वछसुखीहुवो तिमकरोजी, मेंदीधोआदेसरे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२ ॥ मणिमाणकमोतीतज्याजी, तोड्यो नवसरहार ॥ मृगनयणी आठैरमेजी, हिवअह्मकवणआधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥ कुमरन्नणै सुकुलीप्रियाजी, बहुडुख-

एसंसार ॥ नेहतुमारोजांणियोजी, जो ह्यो संयमन्नाररे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथसिविका तब सझीकरीजी, कुंवरधारणी-माय ॥ श्रेणिकरायउछवकरैजी, चारित्रलियो रिषिरायरे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इमजांणीवैरागियौजी, वरजैजेनरनारि ॥ कर-जोमी पूनोन्नणेजी, ते तरस्यैसंसारहे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिज्झाई निर्णय सज्झाय ॥

श्रावणकातीमिगसरमास, पहिलीपमवा तीनविमास ॥ चौथीपमवा वदिवैशाख, च्यारपुहर असिझाइन्नाख ॥ १ ॥ जांलगिधूलीझमेवार, धुंवरपमतीहुवैजिवार ॥ जां परचक्रनो न्नयनविजाय, तांलग असिज्झाईकहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने केसपाखांण, वरसैतांलग असिज्झाईजांण ॥ झूझैमल्लमांहोमां-हिजांम, तांलग असिज्झाईतिणगांम ॥ ३ ॥ नृपति परन्नवपो-हतोहोय, जांलग पाटनबैसेकोइ ॥ तांलग वोलीछे असिझाइ, सहुकोसरदहज्यो मनमांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एकपोहर असिज्झाईथाय ॥ निबल मेह तिम जांणोसही, आठपहोरसबलजलकही ॥ ५ ॥ चैत्रसुदिपांचमदिनथकी, पमिवालग असिझाइवकी ॥ पमिवाबीजतीजचांदणी, समी-सांझ असिझाईगिणी ॥ ६ ॥ आद्रानक्षत्र न लागैजांम, गाज-वीजअसिझाइताम ॥ गाजवीजजोहुवेअकाल, असिज्झाइबेपु-हरसंन्नाल ॥७॥ चंद्रग्रहणअसिज्झाईन्नणी, वारह पोहर उत्कृष्टी-गिणी ॥ जघन्य प्रकारै आठविचार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्यै-बार ॥ ८ ॥ सोलप्रहरउत्कृष्टीकही, सुगुरुमुखै न्नवियणसर-

दही ॥ नगरप्रधांन मरेजोकोइ, आठपुहरअसिज्झाईहोय ॥९॥ वसतीथकीं सातांघरमांहि, नरविहूणैअहोरतिअसिज्झाई ॥ पुरुष पड्योहोयमृतकअनाथ, तां असिझायकही सोहाथ॥१०॥ पुत्रतणै प्रसवै दिनसात, वेटीआठदिवसविख्यात ॥ सोकर मांहि कहीअसिझाई, नारीऋतु दिनतीनकहाइ ॥ ११ ॥ ईंडोफूटै प्रसवैगाइ, जांजररुधिरपड़ै तिनगाइ ॥ असिज्झाइ साठकर-मांहि, त्रिणहपोहर के ऊपरनांही ॥ १२ ॥ आसाढैचौमासै-दिनै, पडिकमणाठायांथीगिणै ॥ वारपोहर असिझाईकही, कातीचौमासैइणपरिसही ॥ १३ ॥ इण परअसिझाईछैवहू, गीतारथगुरुजांणैसहू ॥ सांभलिए में कहीसंखेवि, हरखैपय-प्रभूकीजैहेवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतक्षरजे, च्यारमात्रदीजे-तेह ॥ सत्तमवर्गवीअअक्षरै, तवकविनांमकहियोइणपरै ॥१५॥ इति असिझाइ सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीसअभक्षसज्झाय लिख्यते ॥

जिनशासनरे सूधीसरदहिणाधरो, श्रीगुरुमुखरे नवतत्व ए निरताकरो ॥ मिथ्यामतरे कुमतिकदाग्रहपरिहरौ, सहि पालो-रे तेनर समकितमनखरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मनखरौ समकित-शुद्धपालौ, टालोदोष दयापरो ॥ धुरिपंचअणुव्रत तीनगुणव्रत, च्यारसिक्षाव्रतधरौ ॥ इमदेशविरती क्रियानिरती, सुणो भवि-यणमनरली ॥ दाखविएगुणपरह केरा, दोषममकाढौवली ॥२॥ ममकाढोरे लोभीनर कूडौकरौ, जांणीसावद्यरे अभक्षवावीसे-परिहरौ ॥ वड पींपलरेपिलखणनेंकवुंवरो, ऊंवरफलरे खेतुमें, भक्षण करो ॥ ३ ॥ उल्लालो ॥ खेतुमेंभक्षणकरौ मांखण,

मद्यमधु आमिषतणो ॥ विषहेमकरहांझरिपरहा, दोषमूलमाटी घणो ॥ परिहरोसज्जन रयणीभोजन, प्रथमदुरगतिबारणौ ॥ मतकरौव्यालू अतिअसूरौ, रविउदयविनपारणो ॥४॥ अथाणोरे अनंतकायसबनिमिये, काचागोरसरे मांहि कठोलनजिमिये ॥ एहवेंगणरे तुच्छफलासविझांरूए, आपणपूंरे व्रतलीधोनविखंरूए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नविखंरूए व्रतनियमलेइ, वेइफलव्रतभंगनौ ॥ अज्ञातफलबहुबीज भोजन, चलितरस होयजेहनो ॥ संबरआणी अभक्षजानी, तजोए बावीसए ॥ गुरुवयणविगतैं वलीपूछयौ, अनंतकाय बत्तीसए ॥ ६ ॥ अनंतीरे कंदजाति जाणोसहू, जसुभक्षण रे पातिकबोल्याछैंवहू ॥ कचूरौरे हलदनीआदूंबली ॥ वजचूरणरे कंदबहूंकुंवलीफली ॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंमली फली कुंवलीबीजपाखै, चाखैचतुरनरआंविली ॥ रतालु पिंरालु थेगथोहर, सतावरीलसणकुली ॥ गाजरमूला गिलौ रींगण विरहालीटुकवत्थुलौ, पल्यंकसूरणवालवीली मौथ नीलीसांभलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेलारे कूंपलकवलातरुतणा, अंकूरारे लोटाते जलपोयणा ॥ कुमारीरे भमरवृक्षनीछालरी, जेकहियेरे लोकेअमृतबेलरी ॥ ए ॥ वेलरीतानुताजा खिलोरा ने खरसुआ, भूयभूंफोरा छत्राकार जांणौ नीलफल सेवेजूआ ॥ बत्तीसबोलप्रसिद्धबोल्या लक्ष्मीरतनसूरिइम कहे, परिहरेजे नर दोषजांणी प्रांणी ते सविसुखलहे ॥ १० ॥इति बावीस अभक्ष सझाय सं० ॥

॥ अथ गजसुकमाल सज्झाय ॥

॥ संवेगरसमेझीलता, मनसुंकरेआलोच ॥ देखीनेदोहग

टलै, तासुसाध्योरे मेंकरिलोच ॥ १ ॥ यादवरायधन २ गजसुकमाल, तेहने करूंरे प्रणामत्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रभूपासेसंयमआदस्यौ, तेहनोएपरिणाम ॥ मनवच कायावसिकरी, जोहूंपामूंरे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनिमुगतिजायवाअलजयो, पक्षैन दिनदसवीस ॥ साहसीकइमउच्चरतो, पिण दिनजावेरे तो छेहदीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांणजायकाउसग्गरह्यौ, तिणसांझि प्रभुने पूछ ॥ मुनिवरअवरइमाचिंतवै, एहनैं साचीरैछै मुंहमूंछ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुझसुताविनअवगुणतजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगमीरचि सिरऊपरैं, चिहुंदिसिबांधीरे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदनाजिम अधिकवधै, तिमवधै मन परिणांम ॥ चवदमेंगुणठाणेंचढ्यो, मुनिवरपांम्योरे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकीजांमणनेथई, तेरयणवरस हजार ॥ वांदवाआवीप्रहसमें, पिण नविदेखेरेप्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूछतां प्रभु मांमींकरी, रातिनीवीतग वात ॥ हरिदेखीहियमोफूटसी, तेणेंकीधोरे ऋषिजीनो घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसमसुधारससेवतां, पांमियो अविचलराज ॥ मनरंगसाधुमहंतना, गुणगावेरे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥ गज० सं० ॥

॥ अथ प्रषणचंद्र सज्झाय ॥

॥ राजछंमीरलियामणोरे, जांणीअथिरसंसार ॥ वैरागै मनवालियो, कांइलीधोसंजमभार ॥ प्रषणचंद प्रणमूं तुमारा पाय, तुमेमोटामुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहेकाउसग्ग रह्योरे, पगऊपरपगठाय ॥ बांहवेउं उंचीकरी, सूरज सांमी दृष्टिलगाय

॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिकवंदननीसस्योरे, वीरजीने वंदनजाय ॥ देइतीनप्रदक्षिणा, त्रिविध २ खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ उुरमुखदूतवचनसुणीरे, कोपचढ्योततकाल ॥ मनसुंसंग्राममांमियो, जीव पड्योजंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्नपूछियोरे, एहनी सीगतिथाय ॥ ज्ञगवंतकहे छिवणांमरेतो, सातमीनरकेजाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिणइकअंते पूछियोरे सर्वार्थसिद्धविमांन ॥ वाजी देवनी उुंऊज्ञी, मुनिपांम्याकेवलज्ञान ॥ प्र० ॥ ६ ॥ प्रष्णचंद मुनिमुगतेगयारे, श्रीमहावीरनाशिष्य ॥ रिद्धहरखकहे धन्यते, जिणदीठारेपरतक्ष ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंडितश्रीजेतसी मुनिकृत दशवैकालिक सज्झाय लिख्यते ॥

॥ मुनिवृषज्ञ श्रीमनक मुनयेनमः ॥ श्रीदशवैकालिकसूत्रकृत चतुर्दशपूर्वधर श्रीशय्यंज्ञवसूरिं वंदे ॥

॥ तत्र प्रथमाध्ययन सज्झाय लिख्यते ॥

॥ धर्ममंगलमहिमानिलो । धरमसमोनहींकोय । धर्म सूधे नमेंदेवता । धरमेंशिवसुखहोय ॥ १ ॥ "धर्म०" जीवदयानितपालीये । संयमसतरप्रकार । बारेज्ञेदें तपतपें । धर्मतणो ए सार ॥ २ ॥ धर्म० ॥ जिम तरुवरनें फूलडे । ज्ञमरोरसलेजाय । तिम संतोषे साधुआतमा । फूलपीडानविथाय ॥ ३ ॥ धर्म०॥ इणविधिविचरे गोचरी । वहिरेशुद्धआहार । ऊंचनीच मध्यमकुले । धन धन तेअणगार ॥ ४ ॥ धर्म० ॥ मुनिवरमधुकर समकह्या । नाहिंनिश्रानाहिंलोज्ञ । लाधेज्ञाडोघेंदेहीनें । अणलाधे संतोष ॥ ५ ॥ धर्म० ॥ अध्ययनपहिलोद्रुमपुष्फीने ।

सखरा अरथविचार । पुन्यकलसशिष्यजैतसी । धर्मजयजयकार ॥ ६ ॥ धर्म० ॥ इति श्रीप्रथमाध्ययन सज्झाय सं० ॥

॥ अथ द्वितीयाध्ययनसज्झाय लिख्यते ॥

दीक्षादोहिलीआदरीजी । कामभोगफलछांरु । संकल्पवसें दुखपगपगेजी । वैरागेरंगमांरु ॥ १ ॥ मुनीसर धनधनतेअणगार । भोगतजी जोगआदरेजी । तेहनें हुं बलिहार मुनीसर धनधनतेअणगार ॥ २ ॥ मनवालेभूलो चूकतोजी । नकरे ढीललगार । जाणे न को जगकेहनोजी कुंणहुं कुंणतेनारि ॥ मुनी० ॥ ३ ॥ करिआतपनाआकरी जी । कोमलमकरेदेह । रागद्वेषतजीपाडूआजी । जिम सुखपामेअछेह ॥ मुनी० ॥ ४ ॥ अग्निकुंरुजलतेंपरुेजी । अगंधनकुलसाप । वम्युंनवांछे विषवलिजी । तिम आपणेकुलचाप ॥ मुनी० ॥ ५ ॥ धिगधिगतुं जसवांछतो जी । वांछेवम्युंआहार । जीवाथीमरवोभलोजी । निर्लज्ज नलाजेलिगार ॥ ६ ॥ मुनी० ॥ नारिसारिपारकीजी । देखी देखी मतभूल । वाऊझकोल्ह्यातरूपरेजी । अथिरहुइसकुलीर ॥ ७ ॥ मुनी० ॥ जिमहाथीअंकुशवशेजी । थिरठामआवेतेम, राजीमतीसती बुझव्योजी । स्थिरठामआण्यो रहनेम ॥ ८ ॥ मुनी० ॥ अध्ययनसामणपुप्फियाजी । सखरा अरथविचार । पुन्यकलशशिष्यजैतसीजी । प्रणमेसूत्र सुखकार ॥ ए ॥ मुनी० ॥ इति श्रीद्वितीयाध्ययनसज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ तृतीयाध्ययन सज्झाय लिख्यते ॥

॥ सूधासाधुनिर्ग्रंथ । साधे मुक्तिनोपंथ । आतमसंवस्यो ए ।

संबरआदरुोए ॥ १ ॥ दूषणटालेदीख तेहनेंएहवी शीख । वीरजिनवरकहेए । मुनिवरसरदहेए ॥ २ ॥ उद्देशकआदि-देय । एहवापिंरू नलेय । कृतकरूजाणियेए । सामहोआणियेए ॥ ३ ॥ लेवे न राईभत्त । न जीमे गृहिनें पत्त । रायपिंरू न आदरे ए । सज्यातरपरिहरेए ॥ ४ ॥ राखे न संनिधिराय । दान-शाला नविजाय । वाय न वींजणों ए । राग न रींजणोंए ॥ ५ ॥ चोवाचंदनचंपेल । तन न लगारुेतेल । जोवे नहिं आरशीए । तेगुरु तारसीए ॥ ६ ॥ खेले न पासासार । तेकिम बोलेसार । छत्रनवि शिरधरे ए । गृहीसंगति परिहरेए ॥ ७ ॥ मांचांखाट-पलंग । तजे चिकित्साअंग । जूतीनवि पगतलेए । जीवदया-पलेए ॥ ८ ॥ आदरेतीनरतन्न । छोरूे तीनजतन्न । कोरूकोरू मोलनाए । अगनिजलअंगनाए ॥ ए ॥ मूलाआदिकंद मूल । सचित्तबीजफलफूल । तजेतिम सेलरूीए । लूंण धूपन वरूीए ॥ १० ॥ वमन विरेचनकर्म । करी नगमावे धर्म । दांतेदांतण नघसए । नलगारुेमिसिए ॥ ११ ॥ पहिरे नहीं हीरचीर । सोन्नानकरेशरीर । पीठी न मंजणि ए । आंखिनआंजणिए ॥ १२ ॥ सूत्रमेंबावनबोल । वरजे साधुअमोल । तपकिरिया-करीए । पहुचे शिवपुरीए ॥ १३ ॥ नामे एखुड्डीयार । अध्य-णतीजोसार । अरथअनेक छेए । जैतसी मनरूचेए ॥ १४ ॥ इतितृतीयाध्ययन सझायसंपूर्णम् ॥

॥ अथ चतुर्थाध्ययन सझाय लिख्यते ॥

महावीरन्नाख्योएम । सामिसुधरमाउपदिसे । जीहो मुनि-वर महावीरन्नाख्योएम । सुणसुणजंबुतेम । चोथो अध्यणछ-

जीवनीजीहो मुनिवर महावीरजाख्यो एम ॥ १ ॥ सुणसुणजंबूतेम। पृथवीअपतेऊ वाऊ वनस्पतित्रस जांणियें। जीहो मुनिवर । पृथवीअपतेऊ वाऊ वनस्पति त्रस जांणियें। एह छएजीवनिकाय। हिंसाटालीदयापाली ये। जीहो मुनिवर महा० ॥ २ ॥ महाव्रतपांचसदेव । वलीछठो व्रत पालीये । जीहो मुनिवर। महाव्रतपांचसदेव। वलीछठो व्रत पालीये । त्रिविधे त्रिविधे जावजीव। गरहीनिंदीपडिक्कमि । जीहो मुनिवर ॥ त्रिविधे त्रिविधे जाव जीव गरही निंदी पडिक्कमि म० ॥ ३ ॥ शिष्यपूछे लेईदीख। किमचालुं बोलुंकिमरहुं। जीहो मुनिवर । शिष्यपूछे लेईदीख। किमचालुं बोलुंकिम रहुं । समजावेगुरुशीख। जयणायेंचालेबोलजेरे। जीहो मुनिवर ॥ समजावेगुरुशीख। जयणायेंचालेबोलजेरे म० ॥४॥एजिनसासनसार प्रथमज्ञान पछिदयापालजोरे। जीहो मुनिवर ॥ एजिन०। जीवाजीवविचार। जाणेअनुक्रमज्ञानथी। जीहो मुनिवर म० ॥ ५ ॥ जाणे० ॥ केवलदंसणज्ञान। पामे कर्मखपायने। जीहो मुनिवर ॥ केवल० ॥ छेहडे लहे सिद्धथान। अजरअमरसुखसासता। जीहो मुनिवर म० ॥ ६ ॥ छेहडे० ॥ अज्झयणछजीवणियानाम। सुणतां तनमन उल्लसें। जीहो मुनिवर। सरदहे सुद्धपरिणाम । पुण्यकलश शिष्यजैतसी जीहो मुनिवर ॥ ७ ॥ महावीरजाख्योएम। इतिचतुर्थाध्ययनसज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ पंचमाध्ययन सज्झाय लिख्यते ॥

॥ तुंगीयागिरि शिखरसोहे ॥ ए देशी ॥

॥ पंचमपिंडेषणअज्झयणे। उद्देशा बे साररे। विधिसुंआंणी

ज्ञातपाणी । करोतरो संसाररे ॥ १ ॥ दीखपालो दोषटालो । धरोध्यानसमाधिरे । सूत्रसाचो अरथआछो ज्ञणोवाचो साधरे ॥ २ ॥ संचरेमुनि गोचरीनें । नगरगाममझाररे । जीव निहाले दयापाले । बोले हसे न लिगाररे ॥ ३ ॥ दी० ॥ अशनपाणी खादिमस्वादिम । सूझता हये जेहरे । असूझते मुनि दोषजाणी । कहे न कलपे तेहरे ॥ ४ ॥ दी० ॥ छकायमरदी साधुअरथे । कीयाज्ञोजनजेहरे । तेह नगर जे जतिवरजे । सूआवरू आदिदेहरे ॥ ५ ॥ पिंरूनिषेध्या कुलनिषेध्या । तजे ज्ञजे निरदोषरे । मुधादाई मुधाजीवी, बेऊंजावे मोखरे ॥ ६ ॥ दी० ॥ विधिलेवे विधिआलोवे, विधिकरेआहाररे । लूखोसूखो अरसनीरस, हीलेनहींलिगाररे ॥ ७ ॥ दी० ॥ कालेआवे कालेजावे । विचरेनहीं अकालरे । काले कालसमाचरेजे । बांछु साधुत्रिकालरे ॥ ८ ॥ दी० ॥ ज्ञातपाणी सयणआसण । छता न देवेजेहरे । जती रतीतसु रोषनकरे । निंदे वंदे सम एहरे ॥ ९ ॥ दी० ॥ तपचोरनें वयचोरादिक । हुवेकिलवीषी देवरे । दुर्गतिदुर्लज्ञबोधजांणी । धरममारगसेवरे ॥ १० ॥ दी० ॥ शिष्यशिक्षा ग्रहेंज्ञिक्षा । ते लहे सिवलोयरे । जैतसीकहे शास्त्रमांहे, बोलबहुछे जोयरे ॥ ११ ॥ दी० ॥ इतिपंचमाध्ययनसज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ षष्ठाध्ययनसज्झाय लिख्यते ॥

॥ वैरागीनीरागीहो सूधासाधुजी । दंसणनाणसंपन्न, वनवारूीमांहीआविसभोसर्या । सुमतिगुपति प्रतिपन्न ॥ १ ॥ वैरा० ॥ मिलमिलराजाहो राजानामुंहता । ब्राह्मणक्षत्रिय

लोक। साधूनेंपूछे हो किमछे ताहरो । आचारगोचरलोग ॥ २ ॥ वैरा० ॥ मुनिवरपन्नणे हो मारगसाधुनो । कठिन आचारविचार। हुयोनहुस्ये हो धरमकोइ इणसमो । मुगति-तणोदातार ॥ ३ ॥ वैरा० ॥ षट्व्रतपालेहो छकायराखतो। नहीं नाहणसिंणगार । पल्लंगनिषेध्याहो गृहीनाजन तज्या, अकल्पथानअढार ॥ ४ ॥ वैरा० ॥ तेललूणगुलथीहो संनि-धिजेकरे। तेगृही नहींअणगार, नित्यतपच्चाख्योहो एकवार नोजने। वरजे विसनविकार ॥ ५ ॥ वैरा० ॥ वस्त्र पात्रराखे हो संयमराखवा। नधरेममताप्रेम। विनूषण करतां हो करे-बंधचीकणो। अकल्पकल्पेकेम ॥ ६ ॥ वैरा० ॥ जीवदयापाले हो। पगपगदिनसमे। वरजे रातविहार । एककायहणतां हो त्रसथावरहणे । लहेडुर्गति अवतार ॥ ७ ॥ वैरा० ॥ तपजप करणीहो डुःखहरणीकरे। निरमम निरहंकार। संवेगीसोनागी हो चंदसमनिरमलो । पुहचे मुगतिमझार ॥ ८ ॥ वैरा० ॥ छगेअतिमीठोहो लागे वाचतां। नलोधरमारथकाम । नामें सुखपामेंहो जैतसी आतमा, उलसेमनपरिणाम ॥ वैरा० ॥ ए॥ इतिषष्ठाध्ययन सझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ सप्तमाध्ययनसज्झाय लिख्यते ॥

॥ साधुवूझोरे। नाषासुमतिविचार। नाषाचिहुंनेदे करी ॥ सा० ॥ सच्च असच्चा मीसा, असच्चमोसाचोथीकही ॥ १ ॥ सा० ॥ बोले निरवद्यवांणी, सच्च असच्चामोसा-वलि ॥ सा० ॥ नाषोनाष न वेय। वीजीनें त्रीजीवलि ॥ २ ॥ सा० ॥ निहचे कठिनकठोर, संकितसावद्यसंनवे ॥

सा० ॥ जिणथीलागेपाप । तेहवीवाणी नसंभवे ॥ ३ ॥ सा०॥ चोरनें न कहेचोर । न कहेकांणोकांणाभणी ॥ सा० ॥ परपीमाहुवेजेण । वाणीतेहवी नबोलणी ॥ ४ ॥ सा० ॥ असाधुनेनकहेसाधु । साधुनें साधुबोलावज्यो ॥ सा० ॥ सुरनर पसुह्वारजीत, कहि दोषनलावज्यो ॥ ५ ॥ सा० ॥ वक्कसुद्धिअफयण । बोलघणाछे सातमे ॥ सा० ॥ लागे जिणथीपाप । मपमतूं इणवातमे ॥ ६ ॥ सा० ॥ दस विधबोलोसाच । श्रीअरिहंतआज्ञाछेइसी ॥ सा० ॥ पुण्यकलश गणिसीस । सूत्ररागीभणेजैतसी ॥ ७ ॥ सा० ॥ इतिश्रीसत्तमाध्ययनसझायसंपूर्णम्॥

॥ अथाष्टमाध्ययन सझाय लिख्यते ॥

॥ जिनवरगणधरमुनिवरनेंकहेरे । हिंसाटालीनें दया पालरे। जूजूवाजीव जांणी छकायनारे । पगपगजयणाकरतो चालरे ॥ जिन० ॥ १ ॥ टालेसूक्ष्मआठविराधनारे । छोमी मदमत्सर परमादरे । तपजपखपकरीकाया सुखवीरे । जीते इंद्रियविषयसवादरे ॥ २ ॥ जिन० ॥ जरा न करे देहा जाजरीरे, नवधे रोगपीमाघटमाहिरे । इंद्रीहीणपमेनहीं जांलगरे, तांलगि धरम करमनोउत्साहरे ॥ ३ ॥ जिन० ॥ क्रोधै वैरवधे घटेप्रीतमीरे । माने विघटे विनयआचाररे । माया बाल्हेसरनीगमेरे । लोभे विणसे सहु संसागरे ॥ ४ ॥ जिन० ॥ ज्योतिष निमित्त सुहना फल कहेरे । मंत्र जंत्र माभा मूभा देइरे । कांमणटूमण ओषध केलवेरे । किमतरस्येंने तारस्ये केमरे ॥ ५ ॥ जिन० ॥ चीत भीत नजोवी नारीचीतरीरे। वाले लोचन रविजिमतेजरे। हीणी खीणी वली सो वरसनी रे । तिहांपण व्रतधर नकरेहेजरे॥६॥

जिन० ॥ कुकडी वछडाडरे विल्लीथकीरे । डरेब्रह्मचारिनारीशुं तेमरे । सिणगार सोन्ना षटरसखायवोरे । तालपुट जहर हला-हलजेमरे ॥ ७ ॥ जिन० ॥ वसही सयणासणपायपूछणोजी । पहिलेही लेज्यो लेवाजोगरे । धन धन मुनि ते चंदसूहडस-भारे । लहेसुख इहलोगरे ॥ ८ ॥ जिन० ॥ आचारपणही-नाम अझेणमे रे । आठमे सखरा आचाररे । सिद्धांतरीसाखे न्नाखे जैतसीरे । सूत्रथीथाज्यो भुजनिस्ताररे ॥ ए ॥ जिनवर० ॥ इति अष्टमाध्ययनसझायसंपूर्णम् ॥

॥ अथ नवमाध्ययन सझाय लिख्यते ॥

॥ उलगडी उलगडीकरिये गीतारथगुरूतणीरे । मानमोडी मदछोडी । आसातना असातनाटाली नमियेंपूजीयें । वंदिये करजोड । उलगडी० ॥ १ ॥ सिद्धांतसिद्धांतसुणावे सखरावां-चनेरे । बूझवेअरथविचार । इंद्रचंद्रचंद्रसूर जिम सद्गुरूसे-वीयेरे । विनयकरी वारंवार । उ० ॥ २ ॥ नवमे २ विनयस-माहिअझेणमेरे । नव नवा अरथविचार । उद्देसे उद्देसे चोथे-थिवरवरणव्यारे । समाधि थानकच्यार । उ० ॥ ३ ॥ पहिली पहिली विनयसमाधिविधिन्नलीरे । बीजीसूत्रसमाधि । त्रीजी तप २ चोथीआचारनीरे । च्यारन्नेदआराधि ॥ उ० ॥४॥ समाधी समाधीआराधे ते सुखसिद्धिलहेरे । अजरअमरपदटेव । वेकर-जोडी वेकरजोडी वांदे जेतसीरे । गुणवंतश्रीगुरूदेव ॥ ५ ॥ उ० ॥ इति नवमाध्ययनसझायसंपूर्णम् ॥

॥ अथ दशमाध्ययन सझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ अरिहंतवचने दीक्षाआदरीजी । निरूपम रस

जाण । दसम भिक्खुनामअज्झयणमेंजी, वम्यु न वांछे सुजाण ॥ अरि० ॥ १ ॥ प्रथवी न खणे खणावे नहीं जी । पीवे न पावे सीतलनीर । जाले न जलावेतेऊकायनें जी । वींजे न वींजावे समीर । अरि० ॥ २ ॥ छेदे न छेदावे तरू हरीकायनें जी । वरजेबीजसचित्त । पचे न पचावे भोजनरसवतीजी । तस थावर विधचित्त ॥ अरि० ॥ ३ ॥ पांचेव्रतपाले पांचेइंद्री दमें जी । गामकंटक सहेधीर । रहेसमसांणे पडिमा पडिवजेजी । तजे प्रतिबंधसरीर ॥ अरि० ॥ ४ ॥ रागद्वेषमदमत्सरमाया परिहरेजी । नकरे विणजव्यापार । तजे तमासा हासा मसक-रीजी । वांछे नहीं सतकार ॥ अरि० ॥ ५ ॥ भरम न भाखे धरमभाखेभलोजी । पामे परमपद सादिअनंत । आतमध्याने आतमउद्धरेजी । वाचे सूत्रसिद्धांत ॥ अरि० ॥ ६ ॥ श्रीसिज्जं-भवगणधररच्योजी । दसवैकालिकसूत्र । सखरो आचारप्ररूप्यो साधुनोजी । मनकतार्‍यो निजपूत ॥ ७ ॥ संवतसतर सतोतर समेंजी । वीकानेर मझार, पाठकपुण्यकलसगणी शिष्य जैत-सीजी, सिझायरचिसुखकार ॥ ८ ॥ अरि० ॥ इति दसमाध्य-यन सझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ कलस लिख्यते ॥

॥ दसवैकालिक सूत्रसुहामणोरे । रच्यो सिज्जंभवस्वाम । अझेण व्यालुवेलादसेहुवाजी । तिण दीयो एहवोनाम ॥ १ ॥ दसवैकालिकसूत्रसुहामणोरे । ऊपरचूलिका बे रलीयामणी रे । जिममेरूसिरचूल । सीमंधरस्वामीभणीजक्षणी भणीरे । सख-रीछे वातसमूल ॥ दस० ॥ २ ॥ अढारेठाणा हो पहिलीचूलि-

कारे । जाणों चतुरसुजांण । हयगयवाहण रसी अंकुशसढेरे । वसीहुवे मुनितिमठाण ॥ दस० ॥ ३ ॥ अरतीने वारे विरती-आदरेजी । लोपेनहीं जिनलीक । तपजपखप किरियाकरे । ते वंदनीकपूजनीक ॥ दस० ॥ ४ ॥ चूलिकाबीजी बोधवीजसं-पजेरे । बीजी तीजी वात । मुनिवर समताभरसंवररमेरे । धर मैत्रीनी सातधात ॥ दस० ॥ ५ ॥ संवेगी सोभागी वैरागीज-तीरे । पाले निरमलसील । केवलदंसणपामी भवजलतरीजी पामे अविचललील ॥ दस० ॥ ६ ॥ सुणतांभणतां सिद्धांतवा-चतांजी । कलसे अंगोअंग । नव नव मंगल पुण्यकलससदा जी । जयतसी जयजयरंग ॥ दस० ७ ॥ इति श्रीदसवैकालिक सूत्र सझाय पंडितजयतसीजीकृत संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीद्विमुखराजानी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ नयरीकपिलानोधणीरे ॥ जयराज गुणखाणी । न्याये नितपाले प्रजारे । गुणमालापटराणी ॥ १ ॥ द्रुमूहराय बीजो प्रत्येकबुद्ध । वैरागे मनवालियोरे । समकितपालेसुद्ध ॥ द्रु० ॥ धरतीखणतां नीसर्योरे । मुगट एकअभिराम, मुख बीजो प्रति बिंबीयोरे तिण द्विमुखहुवोनाम ॥ द्रु० ॥ २ ॥ मुगटलेवा भणी मांडीयोरे । चंडप्रद्योतसंग्राम । पिण अन्यायकूशीलीयोरे । किम सरे तेहनांकाम ॥ द्रु० ॥ ३ ॥ इंद्रधज अति सिणगारी-योरे । जोतां त्रिपत नथाय । सकललोक खेलेरमेरे । महोत्सव मांड्योराय ॥ द्रु० ॥ ४ ॥ तिहांजाइ इंद्रधजदेखीयोरे । पड्यो मलमूत्रमझार । हा हा शोभाकारमीरे । ए सहुअथिर संसार ॥ द्रु० ॥ ५ ॥ वैरागे मनवालियोरे लीधो संजमभार । तप

संजमकीधा आकरां रे । पाम्या भवनोपार ॥ सु० ॥ ६ ॥ बीजो प्रत्येक बुद्धयोरे । डुमूहनामेरिषिराय । समयसुंदर कहे साधुनारे । नितनित प्रणमुंपाय ॥ सु० ॥ ७ इति द्विमुखराजानी सझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ नमीराजानी सझाय लिख्यते ॥

॥ नयरसुदरसणराय । होजी मणिरथराजकरेतिहां । कीधो सबलअन्याय । होजी जुगबाहुबंधवमारीयो ॥ १ ॥ मयणरेहा गइ नाश, होजी जायोपुत्रउद्यानमें । पडीय विद्याधरपास । पण शीलराख्योसाबतो । पदमरथभूपाल ॥ २ ॥ होजी घोडे अपहर्योआवीयो । तेणेतेलीधोबाल । होजी पुत्रपाली मोटोकीयो । शत्रुनम्या सहुताम ॥ ३ ॥ होजी नमीएहवुं नामथापीयुं । थयो मिथिलानोराय हो जी सहसअंतेउरसुंरमे । दाघज्वरचढ्योदेह ॥४॥ होजी करमथकी छूटेनहीं । अथिरसहु रिद्धिएह । होजी नमीराजा संजमलियो । इंद्रपरख्योआय ॥ ५ ॥ होजी चढते परिणामेचढ्यो । प्रणम्या सुरनरराय । होजी समयसुंदरकहे साधुना । नित्यनित्य प्रणमुंपाय ॥ ६ ॥ इति नमीराजानी सझाय सपूर्णम् ॥

॥ अथ नभगति राजानी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ पुंड्रवर्धनपुरराजीयो । म्हांकीसहीयर सिंहरथनाम नरिंदरे । इकदिनघोडेअपहर्यो म्हांकी० । पडीयो अटवी मांहीरे ॥ १ ॥ परवतऊपरपेखीयो ॥ म्हांकी० ॥ सतभूमिउं आवासरे । कनकमालाविद्याधरी ॥ म्हांकी० ॥ प्रणमीप्रेम उल्लासरे ॥ २ ॥ नगरीभणी राजानिसर्यो ॥ म्हांकी० ॥ नभगइनाम-

कहायरे । मारगमेंआंबोमिल्यो ॥ म्हांकी० ॥ सुंदरफलफूल-पानरे ॥ ३ ॥ कोयलकरे टहुकडा ॥ म्हांकी० ॥ मांजररही महकायरे । राजा इक मांजरग्रही ॥ म्हांकी० ॥ तिम मंत्री-प्रधानरे ॥ ४ ॥ वलतो राजा ते वल्यो ॥ म्हांकी० ॥ वृक्ष दीठोवीलायरे । शोभासघलीकारमी ॥ म्हांकी० ॥ खीणमें खेरुथायरे ॥ ५ ॥ जातिस्मरणपामीयो ॥ म्हांकी० ॥ संयम-पालेसूधरे । समयसुंदरकहेसाधुने ॥ म्हांकी ॥ चोथाप्रत्येकबु-द्धहो ॥ ६ ॥ इति च्यार प्रत्येकबुद्धसझाय नग्गतिराजानी सझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिरचित प्रथमकषाय सज्झाय लिख्यते ॥

क्रोध मकरसो भोलाप्राणियारे । क्रोधथीआये क्रोडकले-सरे । आधिव्याधिवधे घणीरे । धर्मनोरहेनहिं लवलेसरे ॥ १ ॥ बहुकाले जे तपजपआदरेरे । क्रोधथी खिणमांखेरु थायरे । कुणाला नगरीना मुनिजाणियेरे । क्रोधथी दुरगतिमां ते जायरे ॥ २ ॥ क्षणक्षणमां जे क्रोध करे मुनिरे । पाप श्रमण ते कहिवाय रे । शिष्यनाऊपरक्रोधकरीथयोरे । चंडकोशियो कह्यो जिनरायरे ॥ ३ ॥ पोताना आत्मगुणबालेसहिरे । पछे परनोघरबालंतरे । अग्निसमानजाणोतुमे क्रोधनेरे । जेत्यागेते मोटाकहंतरे ॥ ४ ॥ अनंतानुबंध्यादिक चउभेदथीरे । न लहे दरशनआदिसमृद्धिरे । सूरिकृपाचंद्र कहे धारज्योरे । क्षमा-थीपामे अविचलरिद्धिरे । इति संपूर्ण ॥

॥ अथ द्वितीय कषाय लिख्यते ॥

मानवज्ञवपामी करीजी । विनयकरो निशिदीस । मान महागजटालवाजी । भाखेश्रीजगदीस । चतुरनर मेलो माननी-वात । जिमथायैं सुखसात । च० मे० ॥ १ ॥ मोह महाराजा-तणोजी । मान अे अंगजजाण । जातिमदादिक एहनाजी । परि-करजाणोसुजाण ॥ च० ॥ मे० ॥ २ ॥ मानतणे वस जेपड्या-जी । तेरुळ्यासंसार । मानत्यागथी बाहूबलीजी । पायो केवलसार ॥ च० ॥ मे० ॥ ३ ॥ विनयथी विद्या संपजेजी । समकितलहेसुखकार । चारित्र पाली निरमलोजी । पोहचे मुक्तिमझार ॥ च० ॥ मे० ॥ ४ ॥ रावणराजगमावीयोजी । दुर्योधन दुखलीन । प्रतिविष्णु नरकेगयाजी । माननी संगति-कीन ॥ च०॥ मे०॥ ५ ॥ विनयमूल जिनधर्मनोजी । भाख्यो-श्रीजिनराज, सूरिकृपाचंद्रगुणस्तवेजी । विनयजाणो सिरताज ॥ च० ॥ मे० ॥ ६ ॥ इति मानसझाय ॥

॥ अथ मायानी सझाय लिख्यते ॥

॥ माया विषवेली विषवेली एतो दे दुरगतिमां ठेली । माया विषवेली०॥ ए आंकणी ॥ मायावेलमीमनमांडगी । आर्यव कीदे-उखेली ॥१॥ मायावि० ॥ मायाकायाजगमेंझूठी, ममतामांहि-कहेली ॥ २ ॥ माया० ॥ कपटदपटकरि लोकने धूते । बहूरूपे नरमेली॥माया० ॥३॥ आपाढभूतिये मायामूंकी । लहीसिवपद-नीसेली ॥ माया० ॥४॥ मल्लिजिनेश्वरपूरवभवमे, मित्रथीमाया-करेली ॥ माया० ॥ ५ ॥ स्त्रीतीर्थंकरपाम्यातेहथी । उत्तमगु-णगणमेली ॥ माया० ॥ ६ ॥ धूतारां बहुमाया करके, धूते

जगजनहेली ॥ माया० ॥ ७ ॥ मायात्यागकरो गुरुसंगे । कृपाचंद्रसुखवरेली ॥ माया० ॥ ८ ॥ इतिमायानीसझाय ॥

॥ अथ लोभनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ राग भैरवि ॥ लोभतजो भविप्राणिया, लोभे सवगुण जावे, लोभेसुखनहिहूवेकदा, तोकिम निजगुण पावे लो०॥१॥ सागरसेठ बहुलोभीयो, नरकगयोनिरधार, मम्मण तिमबहूला-ज़ना, थयादुरगतिनाभरतार ॥ लो० ॥२॥ सुभुमचक्री साधनभणी, लोभपिशाचग्रहाणो, मध्यसमुद्रमां बूडीयो, थयोनरकनोराणो ॥ लो० ॥ ३ ॥ सुखमलोभजिहां लगे, शिवसुखअभिलाषा, लोभशत्रुदूरेकरी केवलज्ञान प्रकाशा ॥ लो० ॥ ४ ॥ च्यारभेदलोभनाकह्या, जिणगणधरदेवे, तेहतजी लहेक्रमथकी, निजगुणनेसेवे ॥ लो० ॥ ५ ॥ च्यारकषायनिवारवा, कषायगंजणतपकीजे, कृपाचंद्रसूरि इमभणे, वंछितफललीजे ॥ लो० ॥ ६ ॥ इति लोभ सझाय ॥

॥ अथ दीवालीनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ हांरेमारे ठामधर्मना साढा पचवीशदेशजो ॥ ए देशी ॥ हांरेमारे दीवालीदिनआव्यो सजनीजाणजो । वीरजिनेश्वर अंतिमचउमासीरह्यारे लोय॥ १॥ हांरेमारे पावापुरीमांवसिया त्रिभुवननाथजो । सोलेपहोरलगे देशना दीधी सुखकरुरेलो० ॥ २ ॥ हांरेमारे पुन्यपालराजापूछे सुहणानो अर्थजो । भावीफलकह्योपंचमआरानोसहीरे लो० ॥ ३ ॥ हांरेमारे गौतमस्वामीने मुकया बोधनकाजजो । अमावसनीरजनीये प्रभुसिवबयौंरे लो० ॥४॥ हांरेमारे चोसठसुरपतिआव्या तत-

खिणतामजो । कल्याणकनिर्वाणनो उछवसोकशुं रे लो० ॥ ५ ॥ हांरेमारे पाछावलता गौतम जाणयोनिर्वाणजो । वज्राहतपरे मुर्छितथई जागृतथयारे लो० ॥ ६ ॥ हांरेमारे विविधविलाप-करेश्रीगौतमस्वामी जो । वीतरागथईकेवललछिपामीयारे लो० ॥ ७ ॥ हांरेमारे काशीकोसलदेशतणा गणरायजो । अढारे-मिलि पोसहबिधिशुंआदर्योरे लो० ॥ ८ ॥ हांरेमारे जावउद्योत गयांथकां द्रव्यउद्योतजो । रयणमुकीने दीवालीकरी तिन समेरे लो० ॥ ए ॥ हांरेमारे गौतमकेवल महिमाकरेइंद्रजो । जाइबीजजमाड्यो बेहनीये जाइनेंरे लो० ॥ १० ॥ हांरेमारे दीवालीनो छठकरीचौवीहारजो । सोलपहोरनो पोसहतपआ-राधियेरे लो० ॥ ११ ॥ हांरेमारे गुणनोकरी परजाते मंगल-काजजो । गौतमस्वामीनुं एकासणोकरे जावशुंरे लो० ॥ १२ ॥ दीवालीपर्व लोकोत्तर लोकीकजो । परसिधथयो कारतिकव-दिअमावसेरे लो०॥ १३ ॥ हांरेमारे पर्वाराधनकरो जवि मनउ-छरंगजो । जिनकृपाचंद्रसूरिकहे सुखसंपति वरोरे लो० ॥ १४ ॥ हांरे मारे० ॥ इति दीवालीसझाय ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणपर्वनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ देशी यतनी ॥ सखी पर्वपजुषणआव्या । जविजनना मनमांजाव्या । एमां आश्रवपांचहटाव्या, एतो सर्वजीवसुख-पाव्या सनेही पर्व पजुषण सेवो । एतो सेवी शिवसुख लवो । सनेही पर्व० ॥ १ ॥ श्रीवीरजिनेश्वरजाखे । एपर्वसेवो श्रुतसाखे । श्रीजद्रबाहुस्वामीदाखे । एतोकल्पसूत्रइम आखे ॥ स० ॥ पर्व० ॥ २ ॥ आठदीवसअमरपलावे । जिनचैत्ये

पूजारचावे । कल्पसूत्रघरे पधरावे । देवेरात्रिजागो नले-
न्नावे ॥ स० ॥ पर्व० ॥ ३ ॥ रथहयवरगजसणगारे । साशन-
नीशोन्नावधारे । वाजित्रध्वनिमनुहारे । वरघोमोसजे दिल-
सारे ॥ स० ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ आरूंबरकरीने लावे । श्रीकल्प-
सूत्र शुन्नन्नावे । सदगुरुनें हाथे गवे । सुहवमिल मंगलगावे ॥
स० ॥ ५ ॥ सदगुरुनीमीठीवाणी । सुणो चजविहसंघ गुण
खाणी, मनमाअतिजल्लटआणी । संसारतरे न्नविप्राणी ॥
स० ॥ पर्व० ॥ ६ ॥ इकवीशवार सुणीजे । पूजापरन्नावना
कीजे । ठठ अठम चौथकरीजे । सुणीवीरजन्म जसलीजे ॥
स० ॥ पर्व० ॥ ७ ॥ आषाढ चोमासेथी जाणो । पचासदिव-
स परमाणो । संवछरीपर्व कहाणो । न्नाखे श्रीजिनवरन्नाणो ॥
स० ॥ पर्व० ॥ ८ ॥ इमपर्वआराधनकरीये । पंचकारणमनमां
धरीयें । श्रीजिनवाणीअनुसरीयें । कृपाचंद्रसूरि जसवरीये ॥
स० ॥ पर्व० ॥ ए ॥ इति श्रीपजुषणपर्वनी सफाय संपूर्ण ॥

अथ रांदेर श्रीऋषभ जीर्णचैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं लिख्यते ॥

(राग) सारंग ॥ ऋषन्नचरणकजध्यावो मनन्नमरा ॥ ऋ० ॥
परमानंदरसपावो ॥ मन न्न० ॥ ऋष० ॥ १ ॥ अपरकमलतु-
हिन संयोगे । मुद्रितहोयकमलावे ॥ म० ॥ २ ॥ प्रन्नुपदपंकज
अहनिशिविकसे । तेहथीचित्तललचावे ॥ मनन्न० ॥ ३ ॥ चंद्र-
विकासीकुमुदकुमुदनी । दिनमे ते मुरफावे ॥ म० ॥ ऋ० ॥४॥
जिनपादांबुजनिरुपमदेखी । अंतरज्योतिजगावे ॥ म० ॥ ऋ०
॥ ५ ॥ तनमनथिरकर जिनकजध्यावे । रूपातीत सुखपावे ॥

म० ॥ रु० ॥६॥ प्रथमजिनेसर प्रथमधराधिप, प्रथममुनि जगगावे ॥ म० ॥ रु० ॥७॥ प्रथमजगतगुरुजिनउपगारि। प्रजापतिनाम धरावे ॥ म० ॥ रु० ॥८॥ महागोप महामाहनप्रभुजी। भवअटवीसत्थवाह ॥ म० ॥ रु० ॥ ९ ॥ भवजलधिनिर्यामकजगपति। सुजश सदासुकहावे ॥ म० ॥ रु० ॥१०॥ उगणीसेंचमोत्तर बरसे माघशुदिमन भावे ॥ म०॥ रु० ॥११॥ शुभ दशमी रांदेरनगरमां। जिनचैत्येपधरावे ॥ म ० ॥ रु० ॥ १२ ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिभक्तें। संतसुयशमिलगावे ॥ म० ॥ रु० ॥१३॥ इतिरांदेरमध्ये जीर्णचैत्योध्धारे श्रीरिषभजिनबिंबप्रतिष्ठास्तवनंसंपूर्णं॥

॥ अथ बीजनी थुइ लिख्यते ॥

॥ वासपूजजिनअंतरजामी । मनविसरामीस्वामीजी, भविजन तारण सिवसुखकारण, निजगुणनाप्रभुकामीजी, बीजदिवस जिनवरशिवसुखकर । चंद्रविमानेपामीजी, नगरबुहारिमांमनुहारि सेवोजिनसुखधामीजी ॥ १ ॥ वासुपूज्य पद्मप्रभुराता चंद्रसुविधिजिनधवलाजी मल्लिपासदोयनीलाजाणो मुनिसुव्रतनेमीकालाजी, आठद्विगुणजगनायकलायक सोवनवरणसुहायाजी बीजदिवश नव नव चउद्धिकजिनवंदुं अहनिशिपायाजी॥२॥ दुविधधर्मजिनवरप्रकाश्यो अर्थअधिकसुखकारिजी। सूत्रेकरिगणधरगुरुभाख्यो भविजननाउपगारिजी। दोयशिक्षा दोयनयनिक्षेपा चउभंगीमनआणोजी, बीजआराधिसंपदासाधि परमारथपहिचाणोजी ॥ ३ ॥ बीजदिवस उपवासकरीजे । पडिक्कमणादिकसारोजी । एतपसुरतरुसरिखोजाणो निरुपमसुखदातारोजी, कुमारयक्ष तिम शासनदेवी चंडासानिधकूरिजी।

शुभ फलदायकसंघनेहोज्यो श्रीजिनकृपाचंद्रसूरीजी ॥ ४ ॥
इतिबीजनी थुइ संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपजुषणपर्वनी थुइ लिख्यते ॥

॥ वीरजिनेसरजगअलवेसरराजग्रहीसमोसरियाजी, पर्वपजुषणइणपरिभाखे चउविहसंघपरिवरियाजी, आषाढचोमासाथी पच्चाशदिननीसंख्याजाणोजी । संवछरीपडिक्कमणो करिने आतमनिजघरआणोजी ॥ १ ॥ दोयरातादोयधोलाजिनपति । दोयकाला दोयनीलाजी, सोलनवरणप्रमाणसुसोभितसोले जिनवरपीलाजी । सतरेभेदीपूजाकरिने चैत्यपरवाडीकरीजेजी । परवपजुषण पुरवपुन्ये पाम्या लाभजाणीजेजी ॥ २ ॥ कल्पसूत्रनिज घरेपधरावी रात्रिजागोतिहांकीजेजी । वरघोडोसजिसंघसदिने सदूगुरुने आणीदीजेजी । नव इग्यारे तेरे वायण सुणिनेदुरगतिवारोजी । पूजाप्रभावनासदूगुरुभक्ति करिने जन्मसुधारोजी ॥ ३ ॥ साहमीवछलकरियेभावे वारंवारउजमंताजी । केइशीयलतपसंयमपाले भाव अधिकउलसंताजी । आठदिवस पजुषणसेवो जिमसेवे सुरइंदाजी । सुयदेवीसुपसाये भाखे जिनकृपाचंद्रसूरिंदाजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीपजुषणपर्वनीथुइसंपूर्ण ॥

॥ अथ छींक विचार सज्झाय लिख्यते ॥

॥ छींकशुकननो कहुंविचार । सुगुरुसमीपसुण्यो में सार । आगलमांजो छींकजहोय । अशुभतणीजाणेजो कोय ॥ १ ॥ पहेलाशुकनहुवा शुभघणा । छींकहुवां निरफलतेतणां । छींकजहुवांपछी जोजाण । शुकनहुवांते करो प्रमाण ॥ २ ॥ डाबी

छींकहोय अर्धफलकहे । जमणीछींक बूरीसहुकहे । पूंठेछींकसुखदायकसही । घणी छींकते निरफलकही ॥ ३ ॥ हांसेन्नयउपाधीयेकरी । हठघणो मनमांहेधरी । एकछींक ते निरफलजाण । कूतरछींकतो निःखरजाण ॥ ४ ॥ मंजारछींकते मरणजकरे । इसीछींक कष्टकारीसरे । वस्तुवेचतां छींकजहोय, आएयुं किरियाणुं मोघुं होय ॥ ५ ॥ वस्तु लेतां छींकजो होय । बमणो लाभ सघलानो जोय । गइवस्तुजो जोवाजाय । छींकहोयतो लाभ न थाय ॥ ६ ॥ नवांवस्त्रवली पहेरतां । छींकहोये आगल आणतां । जोजनहोमपूजानुंकाम । मंगलिकधर्मसुठाम ॥ ७ ॥ कामएटलां कीधानीअंत । वलीक्रियाकरावेखंत । रतिस्नानकरीनेरहे । छींकहोयतो पुत्रजलहे ॥ ८ ॥ ऋतुवंतीने दीधेदान । पछीहोवे पुत्रनिदान । वैरीजीती जाशुं जोय । छींकेवैरीसबलोहोय ॥ ए ॥ रोगीकाज वैद्यतेरूवा । जातांछींके जोनवनवा, ते रोगीने मृत्युजाणीये । कामविना वैद्य नाणीये ॥ १० ॥ वैद्यरोगीने घरेआवतां । छींक होये औषध आपतां । रोगीतणो रोगते समे । आहार लेते जमवुंगमे ॥ ११ ॥ व्यापारेलिधेव्यापार । छींकहोयतोवृद्धिअपार । लेखुं शुद्धदीधुंरायने । छींकफोकथायेतेहने ॥ १२ ॥ पाणी पीतांअथ विसंवाद । छींकदृष्टिदोषअनिवाद । नवेघरे वसवाआवीये । छींकहोयेते उचालीये ॥ १३ ॥ व्याजे द्रव्य केहनेआपतां, वली पृथ्विमांधनदाटतां । कर्षजोवाजातां वली । ष्टिहोयपुहवीमनरली ॥ १४ ॥ छींकशुकन नर जाणेजेह ।

पगपगसंपदपामेतेह । ढींकविचारजाणे जोकोइ । ऋद्धिवृद्धिकल्याणजहोय ॥ १५ ॥ इति ढींकविचारसज्झाय ॥

॥ अथ श्रीअइमत्ता मुनिनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ली ॥ वीरजीआव्यारे चंपावनकेउद्यान एदेशी ॥ शासनस्वामिरे निरमलनामि । शिवगतिगामिरे । वीरजिनेसरु ॥ १ ॥ नगरपोल्हासेरे नविकउल्लासे । श्रीवनउद्यानेरे स्वामिसमोसस्या ॥ २ ॥ राजातिहांराजेरे । चढतदिवाजे ॥ राजससाजे रे विजयनरेसरु ॥ ३ ॥ गुण मणिखाणीरे श्रीदेवीराणी । अइमत्तोनामेनंदनतेहने ॥ ४ ॥ कुंमरकुमारीरे बहुसुकुमारी । तेहसंघाथे रे निज उल्लरंगशुं ॥ ५ ॥ इंद्रध्वजठामेरे कौतुककामे । कुमरअइमत्तोरे । रमतो आवीयो ॥ ६ ॥ प्रजुआणाधामी रे गौतम स्वामि । गोचरीआव्यारे । तिहांकणेतेसमे ॥ ७ ॥ कुमर अइमत्तेरे निरमलचित्ते । गौतमपासेरे आवीइमकह्युं ॥ ८ ॥ कुणतुमेनामेरे फरो किणकामे । तवकहेगौतमरे । वाणीअतिनली ॥ ए ॥ साधुआचारीरे । अमे ब्रह्मचारी । गोचरीनमियेरे देवाणुप्पिया ॥ १० ॥ मुजघरआवोरे । निक्षापावो । इमकहीआंगुलि रे । झालीगुरुतणी ॥ ११ ॥ निजघर लावेरे । दिलसुखपावे । श्रीदेवीनिरखीरे । हरखि अतिघणी ॥ १२ ॥ आसनठोमीरे । बेकरजोमी । वांदी पमिलान्नीरे । गुरुबोलावीया ॥ १३ ॥ ढाल २ जी ॥ आवीरे पनोतीजरासिंधने एदेशी । तवकहे कुंमर गौतमन्नणी । किहां वसोठोतुमेस्वामरे । गौतमकहे पुरपरिसरे । जिहां अम गुरुगुणधामरे । वीरजिनवरत्रिन्नुवनधणी ॥ १४ ॥ ए आंकणी ॥ कुंमरकहेहुं-

पणप्रभुजीने । वांदिशुंआजतुम साथरे । जिमसुखतिमकरोगुरुकहे । आवेते जिहां जगनाथरे वीर० ॥ १५ ॥ विनयकरी कुंमरबेसेतिहां । सेवतो प्रभुतणापायरे । धर्मदेशनाजिनवरदिये । सांभली हरखितथायरे ॥ वीर० ॥ १६ ॥ कुमरकहेमाताभणी । पूछी लेशुं संयमभाररे । प्रभुकहे जिमसुखतिमकरो, मकरो प्रतिबंधलगाररे ॥ वीर० ॥ १७ ॥ कुमरघरआवीमातजी । तातजीकरीकृपासाररे । अनुमतिदीजिये मुजभणी । लेइश हुं संयमभाररे ॥ वीर० ॥ १८ ॥ मातकहे पुत्रतुं बालछे । शुंसमजे व्रतवातरे । कुमरकहे जेहजाणुंअछुं, ते नवि जाणुंहुंमातरे ॥ वीर० ॥ १९ ॥ जेहवलि हुं नविजाणुं अछुं । जाणुंछुं मातजीतेहरे । इमसुणी मातापिताभणे । कहेकिम बालकएहरे ॥ वीर० ॥ २० ॥ ढाल ३ ॥ धनना लोभीवाणिया एदेशी ॥ कुंमरकहे जाणुंसही । जायेजीव मरेवोरे । नविजाणुं किणकालमें । किणगामे वलीकेवोरे । मातसुणोमुजवातमी ॥ २१ ॥ ए आंकणी ॥ नविजाणुं किणकर्मथी । जीवभमे संसारोरे ॥ पणजाणुं निजकर्मथी । जीवभमे संसारोरे ॥ मात० ॥ २२ ॥ तिणकारणसंयम भणी, अनुमतिमुजनेदीजेरे । आतमकारजसाधतां । सुजने विलंबनकीजेरे ॥ मात० ॥ २३ ॥ विविधवचनेकरी भोलव्यो । पणनिजभाव न छंडेरे । मातपिता तववेगशु । ओछवकरवामंमेरे ॥ मात० ॥ २४ ॥ कुंमरअइमत्ते आदरी । प्रभुपासेजइदीक्षारे । गुणरयणादिक तपकर्यां । अंग इग्यारेशीख्यारे ॥ मात० ॥ २५ ॥ सिद्धथयाविपुलाचले । अइमत्तो मुनिरायारे । अन्तमअंगथीउद्धरी । लेशेमुनिगुण

गायारे । मात० ॥ २६ ॥ एहवाश्रीमुनिरायनो । अमृतधर्म उदारोरे । शिष्यक्षमाकल्याणनी वंदनावारंवारोरे । मात सुणो मुजवातरूी ॥ २७ ॥ इति एमत्ताजी स० ॥

॥ अथ श्रीउपाध्याय समयसुंदरजी कृत मायानी सझाय लिख्यते ॥

॥ मायाकारमीरे । माया मकरोचतुरसुजाण ॥ मा० ॥ ए आंकणी ॥ मायायेंवाह्या जगतविलुध्धा । दुखीयाथाये अजाण ॥ मा० ॥ १ ॥ न्हानामहोटानरनेमाया । नारीने अधिकेरी । वली विशेषे अतिघणीव्यापे । गरडामेकाफेरी ॥ मा० ॥ २ ॥ योगी जंगम यती संन्यासी । नग्नथइ परवरिया । उंधेमस्तकअगनीधुखंती, मायाथी नविडरिया ॥ मा० ॥ ३ ॥ मायामेलीकरी बहुभेली । लोभेलक्षणजाय । चोरडरे धरतीमांघाले । ऊपर विसहरथाय ॥ मा० ॥ ४ ॥ मायाकारदूरदेशांतर । अटवीवनमांजाय । प्रवहण बेसी द्वीपद्वीपांतर । सायरमांजंपाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ शिवभूतिसरिखा सत्यवादी । सत्यघोषकहावे । रतनदेखी मनतेहनुं चलिउं । मरीनेदुर्गतिजावे ॥ मा० ॥ ६ ॥ लब्धिदत्तमायायें नडीयो । पडीयोसमुद्रमझाररे । मुख मा खणीउं थइने मरीयो । पडीयो नरकदुवार ॥ मा० ॥ ७ ॥ इंद्रे तो सिंहासनें आपी । संभूयें माया राखी । नेमीसर तो मायामेली । मुगतीमां थयासाखी ॥ ८ ॥ मा० ॥ मनवचनकायायें माया । मदेलीवनमांजाय । धन्य धन्य तेह मुनिसरजेहना । तीन भुवनगुणगाय ॥ मा० ॥ ए ॥ एवुंजाणीने भविप्राणी । मायामूकोअलगी । समयसुंदर कहे सारछे जगमां ।

धर्मरंगशुं वलगी ॥ मा० ॥ १० ॥ इति श्रीसमयसुंदरोपाध्यायकृत मायानी सझाय संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीपंडितजिनहर्षजीविरचितसमकितनी वृद्ध सज्झाय लिख्यते ॥

ढाल पहेली ॥ तेमुजमिछामिडुक्कडं ॥ ए देशी ॥ सांजलरे तुं प्राणीया । सद्गुरुउपदेशो । मानवजवदोहिलो लह्यो । उत्तमकुलएसो ॥ १ ॥ सां० ॥ देवतत्त्वनविउंलख्यो । गुरुतत्त्वनजाण्यो । धर्मतत्त्वनविसर्दह्यो । हियरेज्ञान न आण्यो ॥ २ ॥ सां० ॥ मिथ्यात्वीसुरजिनप्रत्यें । सरखाकरी जाण्या, गुणअवगुणनविउंलख्या । वयणेंकरीवखाण्या ॥ ३ ॥ सां० ॥ देवश्रया मोहेंग्रह्या । पासेंरहेनारी । कामतणेवशें जेपड्या । अवगुणअधिकारी ॥ ४ ॥ सां० ॥ केइ क्रोधीदेवता । वली क्रोधनावाह्या । केइकोईथीबीहता । हथीयारसंवाह्या ॥ ५ ॥ सां० ॥ क्रूरनजर जेहनीघणी । देखतांडरीयें । मुद्राजेहनीएहवी । तेहथी शुंतरीयें ॥ ६ ॥ सां० ॥ आठकरससांकलजड्यां । जमेजवहीसझारो । जनममरण जवदेखीयें । पाम्यानहींपारो ॥ ७ ॥ सां० ॥ देवथइ नाटककरे । नाचेजणजणआंगें । वेषकरी राधा कृष्णनो । वली जिक्षामांगे ॥ ८ ॥ सां० ॥ मुखेंकरी वाये वांसली । पेहेरे तनवागा । जावताजोजनकरे । एहवाजमलागा ॥ ए ॥ सां० ॥ देखोदैत्यसंहारवा । थयोउद्यमवंतो । हरि हरणांकुशमारीयो । नरसिंहबलवंतो ॥ १० ॥ सां० ॥ मछकछअवतारले । सहु असुरविदास्या । दशअवतारें जूजूआ । दशदैत्यसंहास्या ॥ ११ ॥ सां० ॥ मानेमूढमिथ्यामति ॥

एहवापणदेवो । फरीफरी अवतारले । देखी कर्मनीटेवो॥१२॥ सां० ॥ स्वामीसोहेजेहवो । तेहवो परिवारो । एमजाणीनेपरि- हरो । जिनहर्षविचारो ॥ १३ ॥ सां० ॥ इति ॥ ढाल बीजी॥ ऊंधवमाधवनेकेहेजो ॥ ए देशी ॥ जगनायकजिनराजने । दाखवियें सहीदेव । मूकाणाजेकर्मथी । सारे सुरपतिसेव ॥ १४ ॥ ज० ॥ क्रोधमानमायानहीं । नहीं लोभअज्ञान । रतिअरति वेदेनहीं । छांड्या मदथान ॥ १५ ॥ ज० ॥ निद्रा शोक चोरीनहीं । नहीं वयणअलीक । मछर भय वधप्राणनो। नकरे तहकीक ॥ १६ ॥ ज० ॥ प्रेम क्रीडा न करेकदी । नहीं नारीप्रसंग । हास्यादिकअढारए । नहींजेहनेअंग ॥ १७ ॥ ज० ॥ पद्मासनपूरीकरी । बेठा अरिहंत । निश्चललोयणते- हना । नासाग्ररहंत ॥ १८ ॥ ज० ॥ जिनमुद्रा जिनराजनी । दीठापरमउल्लास । समकितथाये निर्मल । तपे ज्ञानउजास ॥ १९ ॥ ज० ॥ गतिआगति सहु जीवनी । देखेलोकालोक । मनःपर्यायसवीतणा । केवल ज्ञानआलोक ॥ २० ॥ ज० ॥ मूर्तिश्रीजिनराजनी । समता भंडार । शीतलनयणसुहामणां । नहींवांकलगार ॥ २१ ॥ ज० ॥ हसतवदन हरखेहैयुं । देखी- श्रीजिनराय । सुंदरछबि प्रभुदेहनी । शोभावरणी नजाय ॥ २२ ॥ ज० ॥ अवरतणी एहवीछबि । किहांएनदीसंत । देवतत्त्व एजाणीये । जिनहर्षकहंत ॥ २३ ॥ ज० ढाल ३ जी॥ यतणीनी देशी ॥ श्रीजिनवरप्रवचनभाख्या । जेकुगुरुतणागुण दाख्या । पासत्थादिकपांचेइ । पापश्रमण कह्यासाचेइ ॥ २४ ॥ गृहीनामंदिरथीआणी । आहारकरे भातपाणी । सुए ऊंघेनि-

शदीस । परमादीवीशवावीश ॥ २५ ॥ किरिया न करे किणि-
वार । पमिक्कमणुंसांऊसवार । नकरेपच्चरकाण सज्राय । विक-
थाकरंतांदिनजाय ॥ २६ ॥ घृत दूध दहीं अप्रमाण । खाए
नकरेपच्चरकाण । ज्ञानदर्शननेंचारित्र । मूकीदीधांसुपवित्र
॥ २७ ॥ सुविहितमुनिसामाचारी । पालेनहिं तेअणगारी ।
आहारनादोषबायाल । टालेनहीं किणहीकाल ॥ २८ ॥ धब-
धबधसमसतो चाले । काचेजलें देहपखाले, अर्चारचनावंदावे ।
वस्त्रादिकशोन्नावनावे ॥ २ए ॥ परिग्रहवली ऊाऊाराखे ।
वलीवली अधिकानेधाखे । माठीकरणी जेकहियें । ते सघली-
जिणमेंलहियें ॥ ३० ॥ एहवाजे कुगुरुआरंन्नी । मुनि साधुक॰
हेवायेदंन्नी । किम कम्मप्रशंसाकरीये । न्नवन्नवगृहमांअवत-
रियें ॥ ३१ ॥ लोहानीनावातोले । न्नवसायरमां जेबोले, जिन-
हर्षन्नले अहिकालो । पणकुगुरुनीसंगतिटालो ॥ ३२ ॥ ढाल
चोथी ॥ करजोमीआगलरही ॥ ए देशी ॥ गुणगिरुआ गुरु
उंलखो । हियमे सुमति विचारीरे । गुरु सुपरीक्षादोहिली ।
न्नूलपमे नरनारीरे ॥ ३३ ॥ गु० ॥ पांचेइंन्डियवशकरे । पांच॰
महाव्रतपालेरे । चारकषायतजीजेणें । पांचे किरिया टालेरें
॥ ३४ ॥ गु० ॥ पांचसमिति सुमतारहे । तीन गुपति जे धारे
रे । दोषबेंतालीशटालीने । पाणी न्नात आहारेरे ॥ ३५ ॥
गु० ॥ ममतांबांमीदेहनी । निर्लोन्नीनिर्मायीरे । नवविध परि-
ग्रहपरिहरे । चित्तमेंचिंत्तें नकाइरे ॥ ३६ ॥ गु० ॥ धर्मतणा-
उपगरणधरे । संजम पालवाकाजेंरे । न्नूमिजोई पगला न्नरे ।
लोकविरुधथीलाजें रे ॥ ३७ ॥ गु० ॥ पमिलेहण निरतिविधें ।

करे प्रमादनिवारीरे ॥ कालें शुद्धक्रियाकरे । इछाजो निवारीरे ॥ ३० ॥ गु० ॥ वस्त्रादिकशुद्धएषणी । लेदेखीसुविशेषेरे । कालप्रमाणें खपकरे । दूषणटलतां देखे रे ॥ ३ए ॥ गु०॥ कुखी संवल जे कह्यां । संनिधिकेमही न राखेरे । दे उपदेशयथास्थितें । सत्य वचन मुखभाखेरे ॥ ४० ॥ गु० ॥ तनमेहेलां मनउजला । तपकरी खीणीदेहीरे । बंधन बे छेदीकरी । विचरे जननिःस्नेहीरे ॥ ४१ ॥ गु० ॥ एहवा गुरु जोईकरी । आदरीयें शुभभावें रे । बीजुंतत्त्व सुगुरुतणुं । ए जिनहर्ष कहावेरे ॥ ४२ ॥ गु० ॥ ढाल ५ मी ॥ कर्म न बूटेरेप्राणीआ ॥ ए देशी ॥ भवसायरतरवाभणी धर्मकरे हो सारंभ । पत्थरनावेंरे वेसीने । तरवोसमुद्र दुर्लंभ ॥ ४३ ॥ भ० ॥ आपे गोकुलगायनां । आपे कन्यारे दान । आपे खेत्रपुण्यार्थें । ब्राह्मणने देइमान ॥ ४४ ॥ भ० ॥ लूंटावेघाणीवली । पृथिवीदानसुप्रेम । गोलाकलशारे मोरीया । आपेहलतिलहेम ॥ ४५ ॥ भ० ॥ वलीखणावेरे खांतशुं । कूआ सुंदरबाव । पुष्करिणी करणीभणी । सरवर सखरतलाव ॥ ४६ ॥ भ० ॥ कंद मूल मूके नहीं । इग्यारसने हो दीस । आरंभते दिनअतिघणो । धर्मकीहांजगदीस ॥ ४७ ॥ भ० ॥ यागकरे होमेतिहां । घोमानरनेरेछाग । होमे जलचरमीमका । धर्मकिहांवीतराग ॥ ४८ ॥ भ० ॥ करे सदाएरे नोरतां । जीवतणाआरंभ । हणे महिषनेंबोकमा । जेहथी नरकसुलंभ ॥ ४ए ॥ भ० ॥ सारेसरावेब्राह्मण कने । पूर्वजनांरे सराध । तेमीपोषेरेकागमा । देखोएह उपाध ॥ ५० ॥ भ० ॥ तीरथजाए गोदावरी । गंगागयाप्र-

याग । नाये अणगलनीरमें । धर्मतणो नहींलाग ॥ ५१ ॥ ज० ॥ इत्यादिक करणीकरे । परजवेंसुखनेंरेकाज । कहेजिन-हर्ष मिलेनहीं । एहथीशिवपुरराज ॥ ५२ ॥ ज० ॥ ढाल ६ ठी ॥ रे जाया तुऊविनघमीरेछमास ॥ एदेशी ॥ धर्मखरो जिनवरतणोजी, शिवसुखनोदातार । श्रीजिनराजेंप्रकाशी-योजी । जेहनाचारप्रकार ॥ ५३ ॥ जविकजन ज्ञानविचारी रेजोय । डुर्गतिपमतां जीवनेजी । धारेते धर्महोय ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमहाव्रतसाधुनांजी । दशविध धर्मविचार । हितकरीनेजिनवरकह्यांजी । श्रावकनाव्रतवार ॥ ५४ ॥ ज० ॥ पंचुंवर चारेविगयजी । विषसहु माटीरेहीम । रात्रिजोजनने कह्यांजी । बहुबीजनोनीम ॥ ५५ ॥ ज० ॥ घोलवमांवली रींगणांजी । अनंतकायवतीश । अणजाण्यां फल फूलमांजी । संधाणांनिशदीस ॥ ५६ ॥ चलित अन्नवाशीथयुंजी । तुछसहु-फलदक् । धर्मीनरखाये नहींजी । एबावीशअजक्ष ॥ ५७ ॥ ज० ॥ नकरेनिध्वंसपणेजी । घरनापणआरंज । जीवतणीजय-णाघणीजी । नपीये अणगलअंज ॥ ५८ ॥ ज० ॥ घृतपरेंपाणी वावरे जी । वीये करतो पाप । सामायिकव्रत पोषधेंजी । टाले जवना पाप ॥ ५९ ॥ ज० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनीजी । सेवा-जक्ति सदीव । धर्मशास्त्र सुणतांथकां जी । समजेकोमलजीव ॥ ६० ॥ ज० ॥ मास मासनें आंतरेंजी । कुशअग्रजुंजेबाल । कला न पोहोंचें शोलमीजी । श्रीजिनधर्मविशाल ॥ ६१ ॥ ज० ॥ जिनधर्म मुक्तिपुरीदीयेजी । चउगतिभ्रमणमिथ्यात्व । एम जिनहर्षप्रकाशियेंजी । जीजुंतत्त्वविख्यात ॥ ६२ ॥ ज० ॥

॥ ढाल ७ मी ॥ मधुकरआजरहोरे मतचलो ॥ ए देशी ॥ श्रीजिनधर्मआराधियेंजी । करी निज समकित शुद्ध ज्ञवियण। तपजपकिरिया कीधलीजी । लेखेपमेविशुद्ध ॥ ६३ ॥ ज्ञ० ॥ श्री० ॥ कंचनकशीकशी लीजीयेंजी । नाणुंलीजेंपरीख ॥ ज्ञ०॥ देवधर्मगुरुजोइनेंजी । आदरीयेंसुणीशीख ॥ ६४ ॥ ज्ञ० ॥ श्री० ॥ कुगुरु सुदेव कुधर्मनेंजी । परहरियें विषजेम ॥ ज्ञ० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनेंजी । ग्रहियें अमृत तेम ॥ ६५ ॥ ज्ञ० ॥ श्री० ॥ मूलधर्म तो जिनकह्योजी । समकितसुरतरुएह ॥ ज्ञ० ॥ ज्ञवज्ञवसुखसंपतिथकीजी । समकितशुं धरींनेह ॥ ६६ ॥ ज्ञ० ॥ श्री० ॥ सत्तरसेंछत्रीशसमेजी । नज्ञशुदि दशमीदीस ॥ ज्ञ० ॥ समकितसीत्तरी ए रचीजी । पुरपाटणसुजगीश ॥ ६७ ॥ ज्ञ० ॥ श्री० ॥ ज्ञणजो गुणजो ज्ञावशुंजी । तो लेशो अविचलश्रेय ॥ ज्ञ० ॥ शांतिहर्ष वाचकतणोजी । कहे जिनहर्षविनेय ॥ ६८ ॥ ज्ञ० ॥ श्री० ॥ इति श्रीसमकितसीत्तरी संपूर्णा ॥ सञाय रूप छे ॥

॥ अथ समकितनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ देशी चोपाइनी ॥ धुरप्रणमुं जिनवरचोवीश । सविगणधरने नामुंशीश । तेहनांवयणसुणेंजेकान । मनराखे समकितनोध्यान ॥ १ ॥ साचोदेव एकवीतराग । धर्मतणो जेणें दाख्योमाग । तेजिनवरनि पालुंआंण । जे होये साचा सुगुरुसुजांण ॥ २ ॥ पंचमहाव्रत मनमांधरे । रागद्वेष पेहेलुंपरिहरे । चारित्रपालेटालेदोष । लीयेआहारथोमे संतोष ॥ ३ ॥ दोषमांहे जे आधाकर्म । टालेते त्रोमेआठ कर्म । आधा कर्म करेनरनार, तेपण

घणुं रुलेसंसार ॥ ४ ॥ मूकी देहतणा सुखवास । सहेपरीसह-
बारेमास । तपें करिने जेणेंजसलिद्ध । वंदनीक ते त्रिभुवन-
सिद्ध ॥ ५ ॥ एक संयमने बीजीक्षमा । शत्रुमित्र जेहनेबेहुं-
समा । दृष्टिरागनें तरीऊतरी । ते जाशे नवसायरतरी ॥ ६ ॥
एकआपणुं करीमनगम । नणे गुणे सिद्धांतप्रमाण । सद्गुरुनो
उपदेश आचार । जोइ समजो हैयेविचार ॥ ७ ॥ एकपहेरे
मुनिवरनोवेश । पण साचो न दीये उपदेश । जेह उत्थापे जि-
नवरवयण । तेहने किहां हियानानयण ॥ ८ ॥ घरमूकीने थया-
महातमा । ममता जइ लागाआतमा । महारुंमहारुं एम कहे-
घणुं । तेह मूरखवचनतापणुं ॥ ए ॥ एकतजी दीसेछे इस्या ।
लोनेशिष्यकरे अणकस्या । पंचमहाव्रतकहे उच्चरे । उपशम-
रस ते कहो किमठरे ॥ १० ॥ आधाकर्मी वहोरेघणुं । धर्मवि-
गोवे जिनवरतणो । यंत्र तंत्र मूली करी करी । चूरण आपे
घरघरफरी ॥११॥ कुगुरु तणाजाणी अहिनाण । सेवा न करे जे
होयेजाण । जिनवाणी सांनलीयें इसी । सोनुं गुरु बे लीजें-
कसी ॥ १२ ॥ सोनाथीहोय एक नवहांण । कुगुरुकरे नवन
वनीहांण । सोने घाठपणते मले । कुगुरु पसायें नवनवरुले
॥ १३ ॥ सर्पडसेंडुवे नवनोअंत । कुगुरु करे संसारअनंत ।
एमजाणी वली लीजे साप । कुगुरुनमि नवि बोलियें आप
॥ १४ ॥ एकवहे जिनवरनीआण । वैरवहे तिहां एकअजाण ।
एहआपणा नहींगुरुएम । बोलीलीये वदंतुंतेम ॥ १५ ॥ एक-
नणे महारा गुरुदेव । मेंकरवी एहिजनीसेव । पक्षतणास्वामीने
मान । अवरपक्षने देअपमान ॥ १६ ॥ एकसगाजाणी माहा-

तमा । गुणपाखें तारेआतमा । पात्रत्नणी पूजेतेहनें । कहो समकित केम ढे तेहने ॥ १७ ॥ देखीपरखी गुरुगुणवंत । श्रावकनें मनसंयमवंत । एहआपणा नहीं इमत्नणे । दानमान-सघलेअवगणे ॥ १८ ॥ एकानेंगह्रनोअनुराग । पण न लहे साचोजिनमाग । वीरवचन लेइनेंपाधरुं । कुगुरु सुगुरु जोइ आदरुं ॥ १९ ॥ जेहने आगमनुंबहुमान । तेहना ठघरूएणें कान । ए साधारण गुरुनीवात । जोइनेलेजो मुक्तिमात ॥२०॥ हृदयनयनतमे जूउंसुजाण । ढंमो कुगुरु ए जिनआण । सद्गुरु-तणा चरणआदरो । जेम त्नवसायरलीलायेंतरो ॥ २१ ॥ जेजिनआणवहेनिशदीश । ते ऊपर जे नाणेरीश । नवेतत्त्व निरतासर्दहे । सूधुं समकितढे तेकन्हे ॥ २२ ॥ एहवुंसमकित-सूधुंजाण । धर्मकाजनुं मकरीशहाण । जिनवरपूजा सद्गुरु-त्नक्ति । त्नावें करवी आतमशक्ति ॥ २३ ॥ पमिक्कमणुने फासुं-नीर । कीजें धर्म कह्युजेवीर । धर्में ऋद्धि सिद्धि घरहुंत । धर्में-संकट सवि त्नाजंत ॥ २४ ॥ धर्मसूर्य निरतोतपे । धर्में पाप-करमसवि खपे । धर्मेंहोये रूपनोयोग । धर्मपसायें संपत्तित्नोग ॥ २५ ॥ त्नणे गुणेने बहुतपकरे । पण समकित सूधुंनादरे । समकित विण ते सहुएफोक । समकितआदर करवुंरोक॥२६॥ समकित माय बाप संसार । समकित सुखसंपत्तिसार । सम-कित एह धर्मनुंमूल । समकितथीसहुएअनुकूल ॥ २७ ॥ सम-कित ऋद्धिसिद्धि घरघणी । समकित लगें होयसुरधणी । सम-कित सीजे सघलांकाज । समकित लगेंत्रित्नुवननुंराज ॥ २८ ॥ समकित सहितनुं सुणो प्रमाण, कृष्णरायनुं जुउंमंमाण । तप-

विण श्रेणिकराजग्रहधणी । लेशेपदवी अरिहंततणी ॥ २ए ॥ समकितपाले जेनरनार । वली न आवे तेसंसार । एम जाणी समकितआदरो । सिद्धिरमणी जेम लीलावरो ॥ ३० ॥ इति श्रीसमकितनी सझाय संपूर्णा ॥

॥ अथ सद्गुरुपरीक्षारूप श्रीसुगुरुपच्चीशी लिख्यते ॥

॥ सुगुरु पीढाणो एणे आचारें । समकित जेहनुंशुद्धजी ॥ ॥ ए आंकणी ॥ कहेणीकरणी एकजसरखी । अहर्निशधर्म विशुद्धजी ॥ सु० ॥ १ ॥ निरतिचार महाव्रतपाले । टाले सगलादोषजी । चारित्रशुं लयलीनरहेनित्य । चित्तमां सदासंतोषजी ॥ सु० ॥ २ ॥ जीवसहुना जेढेपीयर । पीफे नहीं खटकायजी । आपवेदन परवेदनसरखी । नहणे न करे घायजी ॥ सु० ॥ ३ ॥ मोहकर्मनें जेवश नपफे । नीरागीनिरमायजी । जयणाकरतो हलुयेचाले । पूंजी मूके पायजी ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ अरहोपरहो दृष्टि न देखे । न करे चालत वातजी । दूषणरहितसूजतोदेखे । तो लिये पाणी ज्ञातजी ॥ सु० ॥ ५ ॥ नूखतृषापीड्या डुःखपीफे । बूटे जो निजप्राणजी । तोपणअशुद्ध आहार न लेवे । जिनवरआणप्रमाणजी ॥ सु० ॥ ६ ॥ अरसनिरस आहार गवेषे । सरसतणी नहींचाहजी । इमकरतां जो सरस मले तो । हरखनहीं मनमांहजी ॥ सु० ॥ ७ ॥ शीतकालेंशीतें तनुसूके । उनालेरवि तापजी । विकटपरिसहघटअहीयासे । नाणे मन संतापजी ॥ सु० ॥ ८ ॥ मारे कूटे करे उपद्रव । कोइ कलंकदे शीशजी । कर्मतणा फलजाणीउदीरे । पण नाणे मन रीशजी० ॥ सु० ॥ ए ॥ मन वच-

काया जे नविदंके। ठंके पांचप्रमादजी। पंचप्रमादसंसारवधारे। जाणे तेनिःस्वादजी ॥ सु० ॥ १० ॥ सरलस्वभाव भावमनरूको। नकरे वाद विवादजी। चारकषाय कर्मनाकारण। वरजेमदउनमादजी ॥ सु० ॥ ११ ॥ पापस्थानअढारे वरजे। न करे तास प्रसंगजी। विकथामुखथी चारनिवारे। समिति गुपति शुं रंगजी ॥ सु० ॥ १२ ॥ अंग उपांग सिद्धांत वखाणे। द्ये सूधो उपदेशजी। सूधेमारगे चालेचलावे। पंचाचारविशेषजी ॥ सु० ॥ १३ ॥ दशविधयतिधर्म जिन भाख्यो। तेहना धारणहारजी। धरमथकी जे किमही न चूके। जो होये कोमिप्रकारजी ॥ सु० ॥ १४ ॥ जीवतणी हिंसा जे न करे। नवदे मिरषावादजी। तृणमात्रअणदीधुं नलीये। सेवे नहीं अब्रह्मजी ॥ सु० ॥ १५ ॥ नवविध परिग्रहमूल नराखे। निशिभोजनपरिहारजी। क्रोधमान मायानें ममता, न करे लोभलगारजी ॥ सु० ॥ १६ ॥ ज्योतिष आगमनिमित्त न भाखें। नकरावे आरंभजी। औषध न करे नाकीनजूवे। सदारहे निरारंभजी ॥ सु० ॥ १७ ॥ काकिणी शाकिणी भूत न काढे। न करे हलवोहाथजी। मंत्र यंत्रनें राखकीकरी ते। नवी आपे परमार्थजी ॥ सु० ॥ १८ ॥ विचरे गाम नगर पुर सघले। न रहे एकण गामजी। चोमासाऊपरचौमासुं। नकरे एकणग्रामजी ॥ सु० ॥ १९ ॥ चाकर फरमासेंनविराखे। नकरावे कोइकाजजी। न्हावण धोवण वेसवनावण। न करेशरीरनीसाजजी ॥ सु० ॥ २० ॥ व्याजवटानुं नाम नजाणे। नकरे वजणव्यापार जी। धर्महाटमांकीनेवेठा। वणिजठे परउ-

पगारजी ॥ सु० ॥ २१ ॥ ते गुरु तरे अवरांनेतारे । सायरमां-जिम जिहाजजी । काष्ट प्रसंगें लोहतरेजिम । तेम सुगुरु संग-ते भव्य जी ॥ सु० ॥ २२ ॥ सुगुरुप्रकाशक लोचनसरिखा । ज्ञानतणादातारजी । सुगुरुदीपक घटअंतरकेरा । दूरकरे अंधकारजी ॥ सु० ॥ २३ ॥ सुगुरु अमृतसरिखाशीला । दीये अमरगतिवासजी । सुगुरुतणीसेवा नित्यकरतां । छूटे करम-नापासजी ॥ सु० ॥ २४ ॥ सुगुरुपचीशी श्रवण सुणीने । कर-जो सुगुरु प्रसंगजी । कहे जिनहरख सुगुरु सुपसायें । ज्ञानह-रख उछरंगजी ॥ सु० ॥ २५ ॥ इति श्रीसुगुरु पच्चशी समाप्ता ॥

॥ अथ स्वार्थउपर सज्झाय ॥

॥ स्वारथकीसवहैरेसगाई । कुणमाताकुणवेनरुभाई स्वा०॥१॥ स्वारथभोजनभुक्तसगाई । स्वारथविणकोइ पाणीनपाई स्वा० ॥ २ ॥ स्वारथमावापसेठवडाई । स्वारथविननहुदेत सहाई स्वा० ॥ ३ ॥ स्वारथनारीदासीकहाई । स्वारथविनलाठिलेधाई स्वा० ॥ ४ ॥ स्वारथचेलागुरुगुरुभाई । स्वारथविननितहोत-लडाई स्वा० ॥ ५ ॥ समयसुंदरकहे सुणोलोकलुगाई । स्वारथ है भाइ परमसगाई स्वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद्मावती राणीनी सज्झाय लिख्यते ॥

हिवराणीपद्मावती । जीवरासखमावे । जांणपणोजग दोहि-लो । इणवेलाआवे तेमुझ मिछामिडुक्कडं ॥ १ ॥ अरिहंतनी-साख । जेमेंजीवविराधिया । चोरासीलाख ॥ तेमु० ॥ २ ॥ सातलाख पृथवीतणा । सातेअप्पकाय । सातलाख तेऊकायना, सातेवलिवाय ॥ तेमु० ॥ ३ ॥ दसप्रत्येकवनस्पती । चवदेला-

खसाधारण । बि ति चउरिंद्रीजीवना । बे बे लाखविचारण ॥ तेमु० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, च्यार च्यार लाख प्रकाशी । चवदे लाख मनुष्यना । ए लाखचोरासी ॥ तेमु० ॥ ॥ ५ ॥ इणभव परभवसेविया । जेपापअढार । त्रिविध त्रिविधकर वोसरूं । दुरगतिदातार ॥ तेमु० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधीजीवनी । बोल्यामृषावाद । दोष अदत्तादानना । मैथुन उनमाद ॥ तेमु० ॥ ७ ॥ परिग्रहमेल्योकारमो कीधो क्रोध विशेष। मांन माया लोभमेंकीया वलि रागनेद्वेष ॥ तेमु० ॥ ८ ॥ कलहकरी जीवदूहव्या । दीधाकूडाकलंक । निंद्या कीधीपारकी । रति अरतिनिस्संक ॥ तेमु० ॥ ए ॥ चाडी कीधीचोतरे । कीधो थांपणमोसो । कुगुरु कुदेवकुधर्मनो । भलोआण्योभरोसो ॥ तेमु० ॥ १० ॥ खाटकीनेभव जे कीया, जीवनावधघात । चिडीमारभवचिडकला । मार्या दिननेरात ॥ तेमु० ॥ ॥ ११ ॥ माछीगरभवमाछला । झाल्या जलवास । धीवर भील कोलीभवे । मृग मार्यापास ॥ तेमु० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लानेभवे । पढीमंत्रकठोर । जीवअनेक जबेकीया । कीधा पापअघोर ॥ तेमु० ॥ १३ ॥ कोटवाल भवमेंकीया । आकराकरदंड । बंदीवानमराविया । कोरडा छडी दंड ॥ तेमु० ॥ १४ ॥ परमाधामीनेभवे । दीधा नारकीदुख । छेदनभेदनवेदना । ताडनाअतितिक्ख ॥ तेमु० ॥ १५ ॥ कुंभारनेभवमेंकिया । निवाहपचाया । तेलीभवतिल पिलिया । पापपेटभराया ॥ तेमु० ॥ १६ ॥ हालीनेभव हलखड्या, फाड्या पृथ्वीपेट । सूडनिदानकीयाघणा । दीधा बलधचपेट ॥ तेमु० ॥ १७ ॥ माली-

नेजवरोपिया । नाना विधवृक्ष । मूलपत्र फलफूलना । लागा-
पापतेलक्ष ॥ तेमु० ॥ १८ ॥ आधोवाही आगमी । जख्याअ-
धिकाजार । पोठी ऊंठ कीरूा पज्या । दया नावी लिगार ॥
तेमु० ॥ १९ ॥ ठींपानेजवठेतख्यो । कीधारांगणपास । अगनि-
आरंज कीयाघणा । धातुरवादअज्यास ॥ तेमु० ॥ २० ॥ सूर-
पणे रणझूझतां । माख्यामाणसवृंद । मदिरामांस माखणजख्या
खाधामूलनेकंद ॥ तेमु० ॥ २१ ॥ खाणखिणाईधातुनी । पाणी-
उलंच्या । आरंजकीधा अतिघणा । पोते पापतेसंच्या ॥ तेमु०
॥ २२ ॥ अंगारकर्म कियावली । धर्मे दवदीधा । सूंसलेइ
वीतरागना कूरूासुंसजकीधा ॥ तेमु० ॥ २३ ॥ बिल्ली जव
ऊंदर गिल्या । गिलोइ हत्यारी । मूढगिमार तणे जवे, में जूं
लीख मारी ॥ तेमु० ॥ २४ ॥ जरुजूंजातणे जवे । एकेंद्रि
जीव । ज्वार चिणा गहुं सेकिया । पारूतारीव ॥ तेमु०॥ २५ ॥
खांरूणपीसण गारना । आरंज अनेक । रांधण इंधणअगनि-
ना, कीया पाप अपार ॥ तेमु० ॥ २६ ॥ विकथाच्यारकीधी-
वलि । सेव्यापंचप्रमाद । इष्टवियोगपमारूिया । रोदनविखवाद
॥ तेमु० ॥ २७ ॥ साधुअने श्रावकतणा । व्रतलेइनेजागा ।
मूलअनेउत्तरतणा । मुऊदूषण लागा ॥ तेमु० ॥ २८ ॥ साप
विछु सिंहचीतरा । सिकराने समली । हिंसक जीवतणेजवे ।
हिंसाकीधी सबली ॥ तेमु० ॥ २९ ॥ सूवावरूे दूषण घणा ।
वलिगरजगलाया । जीवाणीढोल्याघणा । शीलव्रतजंजाया
॥ तेमु० ॥ ३० ॥ जवअनंतजमतांथकां । कीयाकुटुंब संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करिबोसरूं । तिणसुं प्रतिबंध ॥ तेमु० ॥ ३१ ॥

इणनवपरनवइणिपरे । कीधापापअखत्र । त्रिविधपरे करिवो-सरूं । करुंजनमपवित्र ॥ तेमु० ॥ ३२ ॥ रागवेरामीजेसुणे । एतीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी । बूटे ततकाल ॥ तेमु० ॥ ३३ ॥ इति आलोयण पद्मावती सज्झाय ॥

॥ श्रीउपाध्यायक्षमाकल्याणजीकृत श्रीथूलभद्रजीनी सज्झाय लिख्यते ॥

तीरथतेनमूरे ए देशी ॥ श्रीमहावीरजिनेसरु । त्रिनुवनगुरुजी । तसुअष्टमपटधार । श्रीथूलिनद्दनमो ॥ १ ॥ पाडलीपुर-सोहामणुं । महिमंमणुंजी । तिहांपायोअवतार । श्रीथूलि० ॥२॥ नंदनरिंदमंत्रीश्वरु । गुणआगरुजी । श्रीसकडालसुपुत्र ॥ श्री० ॥ ३ ॥ लाछनदेनंदननलो ॥ मुनिगुणनिलोजी । नागरद्विज-कुलदीप ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीसंनूतिविजयगुरु । पूरवधरुजी । व्रतलीधातसुपास ॥ श्री० ॥५॥ कोश्यावेश्याप्रतिवोधवे । सद्गुरुतवेजी । डुक्कर डुक्करकार ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चौदपूरवशिष्योवली । श्रुतकेवलीजी । श्रीनद्रवाहुसमीप ॥ श्री० ॥ ७ ॥ संयमपाल्यो निर्मलो । त्रिविधेंनलोजी । जंगमयुगप्रधान ॥ श्री० ॥ ८ ॥ पंचमासपंचदिनसही । ऊपरकहीजी । वरसनवाणुआय ॥ श्री० ॥ ए ॥ करि अणसणआराधना । शुनवासनाजी । पहोतास्वर्गमऊार ॥ श्री० ॥ १० ॥ चुलसीचोवीशीलगें । जसऊगमगेजी ॥ रहेशेजेनुंनाम ॥ श्री० ॥ ११ ॥ वसु युगवसु चंद्रवत्सरे (१८४८) पाडलीपुरेजी । जसुपदथापना कीध ॥ श्री० ॥ १२ ॥ वाचकअमृतधर्मनो । शुणेशुनमनोजी ॥

शिष्यक्षमाकल्याण ॥ श्री० ॥ इतिश्रीथूलिभद्रजीनीसझाय संपूर्णा ॥

॥ अथ श्रीदेवचंद्रजीकृतअष्टप्रवचनमातानी सझाय लिख्यते

॥ दोहा ॥ सुकृतकल्पतरुश्रेणिनी । वरउत्तरकुरुभोमि । अध्यातम रस शशिकला । श्रीजिनवाणीनौमि ॥ १ ॥ दीपचंदपाठकसुगुरु । पदवंदीअवदात । सारश्रमणगुणभावना गाशुं प्रवचनमात ॥ २ ॥ जननीपुत्र जिमशुभकारी । तिम ए पवयणमाय । चारित्रगुणगणवर्द्धिनी । निर्मलशिव सुखदाय ॥ ३ ॥ भावअयोगी करणरुचि । मुनिवरगुप्ति धरंत । यदिगुप्तिजो न रहिशके । तो समितिविचरंत ॥ ४ ॥ गुप्तिएक संबरमयी । औदरंगिक परिणाम ॥ संवर निर्जर समितिथी । अपवादे गुणधाम ॥ ५ ॥ द्रव्ये द्रव्यत चरणता, भावे भाव चरित्त ॥ भावदृष्टिद्रव्यतक्रिया । करतां शिवसंपत्त ॥ ६ ॥ आतमगुणप्राग्भावथी । जेसाधकपरिणाम । समिति गुप्ति ते जिनकहे । साध्यसिद्धिशिवठाम ॥ ७ ॥ निश्चयकरणरुचिथइ । समिति गुप्तिधरसाधि ॥ परमअहिंसकभावथी । आराधेनिरुपाधि ॥ ८ ॥ परममहोदय साधवा । जेहथया उजमाल ॥ श्रमणभिक्षुमाहण यति । गाउं तस गुणमाल ॥ ए ॥

॥ अथ प्रथमईर्या समिति सझाय लिख्यते ॥

प्रथम गोवालतणे भवेंजी ॥ एदेशी ॥ प्रथमअहिंसक व्रततणीजी । उत्तमभावनाएह ॥ संवरकारणउपदिशी जी । समतारसगुणगेह ॥ मुनीश्वर । ईर्यासमितिसंभार ॥ आश्रवकरत-

नुयोगथीजी । छुटचपलतावार ॥ मुनी० ॥ ईर्या० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कायगुप्तिउत्सर्गनोजी । प्रथम समितिअपवाद ॥ इर्या ते जेचालवुंजी । धरिआगम विधिवाद ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ २ ॥ ज्ञानध्यानसज्झायमेजी । स्थिरवेग मुनिराज ॥ शाने चपलपणुं करेजी ॥ अनुभव रससुखराज ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ३ ॥ मुनि-उठे वसहीथकीजी । पामी कारणचार ॥ जिनवंदन ग्रामांतरे जी । के आहार निहार ॥ मुनि० ॥ ईर्या० ॥ ४ ॥ परमचर-णसंवरधरुंजी । सर्वजाणजिनदिठ ॥ शुचिसमतारुचि ऊपजे जी । तिणे मुनिने एइठ ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ५ ॥ रागवधे स्थिरभावथीजी । ज्ञानविना परमाद ॥ वीतरागता ईहताजी । विचरे मुनिसाल्हाद ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ६ ॥ एशरीरभवमूलछे जी । तसुपोषकआहार ॥ जावअयोगी नवि हुवेजी । तां अनादिआचार ॥ मुनी० ॥ ईर्या० ॥ ७ ॥ कवलाहारे निहार-छेजी ॥ एह अंगव्यवहार ॥ धन्य अतनुपरमातमाजी । जिहां निश्चलतासार ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ८ ॥ परपरिणतिकृत चपल-ताजी । केममूकशेएह ॥ एमविचारीकारणें जी ॥ करे गोचरी-तेह ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ए ॥ क्षमावंतदयालुआजी । निःस्पृह-तनुनीराग ॥ निरविषे गजगतिपरेंजी । विचरे मुनिमहाभाग ॥ मुनी० ॥ ईर्या० ॥ १० ॥ परमानंद रसअनुभव्याजी । निज-गुणरमताधीर ॥ देवचंद्रमुनि वंदतांजी । लहीयें भवजलतीर ॥ मु० ॥ ईर्या० ॥ ११ ॥ इति प्रथमसमितिसज्झायसंपूर्ण ॥

॥ अथ द्वितीय भाषासमितिसज्झाय लिख्यते ॥

॥ भावना मालतीचूशीयें ॥ ए देशी ॥ साधुजी समिति बीजी

आदरो । वचननिर्दोषप्रकाशरे । गुप्तिउत्सर्गनो समिति ते । मार्गअपवादसुविलासरे ॥ सा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नाव-नाबीजी महाव्रततणी । जिनजणी सत्यता मूलरे ॥ नावअ-हिंसकतावधे । सर्वसंवरअनुकूलरे ॥ सा० ॥ २ ॥ मौनधारी मुनि नविहुवे । वचनजेआश्रव गेहरे ॥ आचरणज्ञाननें ध्याननो । साधकउपदिशे तेहरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ उदितपर्याप्ति जे वचननी । तेकरिश्रुतअनुसाररे । बोधप्राग्नावसज्झायथी । वलिकरेजगतउपकाररे ॥ सा० ॥ ४ ॥ साधु निजवीर्यथी परतणो । नविकरे ग्रहणनें त्यागरे । तेजणी वचनगुप्तिरहे । एहउत्सर्ग मुनि मार्गरे ॥ सा० ॥ ५ ॥ योगजे आश्रवपदहतो । ते कस्यो निर्जरारूपरे ॥ लोहथीकंचन मुनिकरे, साधता साध्य-चिद्रूप रे ॥ सा० ॥६॥ आत्महितपरहितकारणें । आदरे पांच सज्झायरे ॥ तेजणी अशनवसनादिका । आश्रयसर्वअववायरे ॥ सा० ॥ ७ ॥ जिनगुणस्तवननिजतत्त्वने । जोइवा करे अविरो-धरे ॥ देशना जव्यप्रतिबोधवा । वायणाकरण निजबोधरे ॥ सा० ॥ ८ ॥ नय गम जंग निक्षेपथी । स्वहित स्याद्वादयुतवा-णिरे ॥ शोलदशचार गुणशुंमलि । कहे अनुयोग सुपहाण रे ॥ सा० ॥ ए ॥ सूत्रने अर्थ अनुयोगए । बीयनिर्युक्तिसंजुत्तरे॥ तीयजाष्ये नयें जावियो । मुनिवदे वचन एम तंतरे ॥ सा० ॥ ॥ १० ॥ ज्ञानसमुद्रसमताजस्या । संबरी दयाजंमाररे ॥ तत्त्व-आनंदआस्वादता, वंदियें चरण गुणधाररे ॥ सा० ॥ मोहउ-दयें अमोहीजेहवा । शुद्ध निजसाध्य लयलीनरे ॥ देवचंदेतह

मुनिवंदियें । ज्ञानअमृतरसपीनरे ॥ सा० ॥ १२ ॥ इति नाषा समिति सझाय ॥

॥ अथ तृतीय एषणासमिति सझाय लिख्यते ॥

झांझरीया मुनिवर धनधन ० ॥ ए देशी ॥ समितितीसरी एषणाजी । पांचमाहाव्रतमूल ॥ अनाहारी उत्सर्गनोजी । एअपवादीअमूल ॥ १ ॥ मनमोहनमुनिवर । समितिसदा चित्तधार ॥ ए आंकणी ॥ चेतनता चेतनतणीजी । नवि पर संगीतेह ॥ तिण परसनमुख नवि करेजी । आतमरतिवती जेह ॥ म० ॥ स० ॥ २ ॥ काययोगपुद्गलग्रहेजी । एह न आतमधर्म ॥ जाणंग करतानोगताजी । हुं माहरोएमर्म ॥ म० ॥ स० ॥ ३ ॥ अननिसंधिचलवीर्यनोजी । रोधक शक्ति अनाव ॥ पणअनिसंधि जे वीर्यथीजी । केमग्रहे परनाव ॥ म० ॥ स० ॥ ४ ॥ इमपरत्यागीसंवरीजी । न ग्रहे पुद्गलखंध ॥ साधक कारण राखवाजी । अशनादिक संबंध ॥ म० ॥ स० ॥ ५ ॥ आतमतत्त्वअनंतताजी । ज्ञान विना न जणाय ॥ तेहप्रगटकरवानणी जी । श्रुतसझाय उपाय ॥ म० ॥ स० ॥ ६ ॥ तेह देहथी देहरहेजी । आहारें बलवान ॥ साध्यअधूरे हेतुनेंजी । केम तजे गुणवान ॥ म० ॥ स० ॥ ७ ॥ तनुअनुयायी वीर्यनोजी । वर्तनअशनसंजोग ॥ वृद्धयष्टिसमजाणीनेंजी । अशनादिकउपनोग ॥ म० ॥ स० ॥ ८ ॥ ज्यां साधकता नवि अछेजी । तो न ग्रहे आहार ॥ बाधकपरिणतिवारवाजी । अशनादिकउपचार ॥ म० ॥ स० ॥ ९ ॥ सुरुतालीशे दूष्यणाजी । दोषतजी नीराग ॥ असंभ्रांत मूर्छाविनाजी । भ्रमरपरें वडनाग ॥ म०

॥ स० ॥ १० ॥ तत्त्वरुचि तत्त्वाश्रयीजी । तत्त्वरसी निर्ग्रंथ ॥ कर्मउदयें आहारताजी । मुनिमानेपलिमंथ ॥ म० ॥ स० ॥ ॥ ११ ॥ लाभथकी पण घनलहेजी । अतिनिर्जराकरंत ॥ पाम्ये अणव्यापकपणेजी । निर्मल संतमहंत ॥ म० ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ अणाहारता साधता जी । समताअमृतकंद ॥ भिक्षु श्रमण वाचंयमीजी । तेवंदे देवचंद ॥ म० ॥ स० ॥ १३ ॥ इति तृतीय एषणा समिति सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चतुर्थआदाननिक्षेपणासमिति सज्झाय लिख्यते ॥

॥ भोलिडा हंसारे विषय न राचियें एदेशी ॥ समिति चोथी रे । चउगतिवारणी । भाखी श्रीजिनराज ॥ राखी परम अहिंसकमुनिवरे । चाखी ज्ञानसमाज ॥ १ ॥ सहजसंवेगीरे समतिपरिणमे ॥ ए आंकणी ॥ साधनआतमकाज ॥ आराधन-एसंवरभावनो । भवजलतारणजहाज ॥ स० ॥ २ ॥ अभि-लाषी निजआतमतत्त्वना । साखीकरि सिद्धांत ॥ नाखी सर्व-परिग्रहसंगने । ध्यानाकाशीरे संत ॥ स० ॥ ३ ॥ संवरपंचतणी-एभावना । निरुपाधिक अप्रमाद ॥ सर्वपरिग्रहत्याग असंगता । तेहनो ए अपवाद ॥ स० ॥ ४ ॥ शाने मुनिवर उपकरणसं ग्रहे । जेपरभावविरत्त ॥ देहअमोही नवि लोहीकदा । रत्न-त्रयीसंपत्त ॥ स० ॥ ५ ॥ भावअहिंसकता कारणभणी । द्रव्य अहिंसकसाधि ॥ रजोहरण मुखवस्त्रादिकधरे । वरवा योगस-माधि ॥ स० ॥ ६ ॥ शिव साधननुंरे मूल ते ज्ञानछे, तेहनो हेतुसज्झाय ॥ ते आहारें ते बलि पात्रथी । जयणायें ग्रहेवाय

॥ स० ॥ ७ ॥ बालतरुण नरनारीजंतुनें । नग्न दुर्गंछाहेतु । तिण चोलपटग्रही मुनि उपदिसे । शुद्धधर्मसंकेत ॥ स० ॥८॥ डंश मशक शीतादि परिसह सहे । न रहे ध्यानसमाधि ॥ कल्पआदिकनिर्मोहिपणे । धारे मुनिनिर्बाध ॥ स० ॥ ए ॥ लेपअलेप नदीना ज्ञाननो । कारणदंमग्रहंत ॥ दशवैकालिक जगवइ साखथी । तनुस्थिरताने तंत ॥ स० ॥ १० ॥ लघु सजीव सचित्त रजादिनो, वारण दुःखसंघट्ट ॥ देखी पुंजेरे मुनिवरतेहथी । ए पूरव मुनिवट्ट ॥ स० ॥ ११ ॥ पुग्गलखंधग्रहणनिक्षेपणा । द्रव्यें जयणातास ॥ जावे आतम परिणतिनवनवी । ग्रहतांसमितिप्रकाश ॥ स० ॥ १२ ॥ बाधकजावअद्वेष पणे तजे । साधक ले गतराग ॥ पूरवगुण रक्षकपोषकपणे, निपजते शिवमार्ग ॥ स० ॥ १३ ॥ संयमश्रेणीरे संचरता मुनि । हरे कर्मकलंक ॥ धरता समतारसएकत्वता । तत्त्वरमणनिःशंक ॥ स० ॥ १४ ॥ जगउपगारी रे तारकजव्यना । लायकपूर्णानंद ॥ देवचंद एहवा ते मुनिराजना । वंदेपद अरविंद ॥ स० ॥१५॥ इतिचतुर्थआदाननिक्षेपणा समिति सजाय सपूर्ण ॥

॥ अथ पंचम पारिठावणिया समिति सज्झाय लिख्यते ॥

॥ चेतन चेतजो रे ॥ ए देशी ॥ पंचमीसमिति कहिअति सुंदरु रे, पारिठावणीयानाम ॥ परमअहिंसकधर्मवधारणी । मृडुकरुणापरिणाम । मुनिवर सेवजोरे । समिति सदा सुखदाय । थिरताजावे संयमसोहाय । धरे निर्मलसंवरथाय ॥ मु० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ देहनेहथी चंचलतावधे रे । विकसे दुष्टकषाय ॥ तिण तनुरागध्यानेरमेजी । ज्ञानचरण सुपसाय ॥

मु० ॥ २ ॥ जिहांशरीरतिहां मलकफजेरे । तेहतणो परिहार ॥ करेजंतु चरस्थिरअणदूहव्यारे । सकल दुगंछावार ॥ मु० ॥३॥ संयमबाधक आतमविराधनारे । आणाघातकजाणि ॥ उपधि अशन शिष्यादिकपरठवेरे । आयति लाजपिछाणि ॥ मु० ॥४॥ वध्या आहारे तपीया परिठवेरे । निजकोठे अप्रमाद । देह-अरागीजातअव्यापतारे । धीरनोएहअपवाद ॥ मु० ॥ ५ ॥ संलोकादिकदूषण परिहरीरे । वर्जीरागनेद्वेष ॥ आगमरीतेपर-ठवणीकरे । लाघवहेतुविशेष ॥ मु० ॥ ६ ॥ कल्पातीत आहा-लंदीक्षमी रे । जिनकल्पादि मुनीश । तेहने परठवणा एकम-लतणी रे । तेहअल्प वलि दीस ॥ मु० ॥ ७ ॥ रात्रे प्रश्रव-णादिक परठवेरे । विधिकृतमंरूलठाम ॥ थिविरकल्पनो प्रति अपवादछेरे । ग्लानादिकनहिंकाम ॥ मु० ॥ ८ ॥ वलिएह द्रव्यथी जावमांरे । बाधक जे परिणाम ॥ द्वेषनिवारी मादक ताविनारे । सर्व विजावविराम ॥ मु० ॥ ए ॥ अंतःपरिणति तत्त्वमयीकरेरे । परिहारता परजाव ॥ द्रव्यसमिति पणजाव जणीधरेरे । मुनिनो एहस्वजाव ॥ मु० ॥ १० ॥ पंचसमिति समतापरिणामथीरे । क्षमाकोष गतरोष ॥ जावन पावनसं-यम साधतारे । करता गुणगणपोष ॥ मु० ॥ ११ ॥ साध्यरसी निजतत्त्वे तन्मयारे । उछरंगी निर्माय । योगक्रियाफल जाव अवंचतारे । शुचिअनुजवसुखदाय ॥ मु० ॥ १२ ॥ आणा-जीतजुआ नाणी रसीरे । निश्चयनिग्रहयुत्त ॥ देवचंद्र एहवा निग्रंथजेरे । ते माहरुं गुरुतत्त्व ॥ मु० ॥ १३ ॥ इति पंचम पारिष्ठापनिका समिति सज्झाय ॥

॥ अथ षष्ठ मनोगुप्ति सज्झाय लिख्यते ॥

॥ वैरागी थयोरे ॥ एदेशी ॥ मुनिमनवशकरोरे ॥ मन ए आश्रवगेहो रे ॥ मन ममता रुपि मन्नथीरे ॥ टालो यतिवर तेहोरे ॥ मु० ॥१॥ पुष्टतुरगचित्ततेकह्युंरे। सो मोहनृपतिप्रधान। आर्त्त रौद्रनुं क्षेत्रएहरे। रोक तुं ज्ञान निधानोरे॥ मु० ॥ २॥ गुप्तिप्रथम ए साधुनेरे। धर्म शुक्लनोकंद। वस्तुधर्मचिंतनरम्या रे। साधेपूर्णानंदोरे ॥ मु० ॥ ३ ॥ योगते पुद्गलजोगछेरे। पांच अभिनव कर्म । योगवरगणाने कंपनारे । नवि ए आतमधर्म ॥ मु० ॥ ४ ॥ वीर्यचपलपरसंगमीरे। एह न साधकपद्द। ज्ञान चरणसहकारनारे । वरतावे मनदक्षरे ॥ मु० ॥ ५ ॥ सविकल्पकगुण साधुनारे। ध्यानीने न सुहाय। निर्विकल्प अनुभवरसीरे । आत्मानंदीथायोरे ॥ मु० ॥ ६ ॥ रत्नत्रयनी भेदतारे। एह समलव्यवहार ॥ त्रिगुणवीर्यएकत्वतारे। निर्मलआत्माचारोरे ॥ मु० ॥ ७ ॥ शुक्लध्यान श्रुतलंबनी रे। एपण साधनदाव। वस्तुधर्म उछरंगमेंरे । गुणगुणी एकस्वभावोरे ॥ मु० ॥ ८ ॥ परसहायगुणवर्त्तनारे । वस्तुधर्म न कहाय ॥ साध्यरसी तो किमग्रहेरे। साधु चित्त सहायो रे ॥ मु० ॥ ए ॥ आत्मरुचि आत्मालयीरे । ध्याता तत्त्वअनंत ॥ स्याद्वादज्ञानीमुनिरे। तत्त्वरमण उपशांतो रे ॥ मु० ॥ १० ॥ नवि अपवादरुचिकदारे। शिवरसिया अणगार ॥ शक्तियथागमसेवतारे । निंदे कर्मप्रचारोरे ॥ मु० ॥ ११ ॥ शुद्ध सिद्ध निजतत्त्वतारे। पूर्णानंदसमाज, देवचंद्र पर साधतारे। नमिये ते मुनिराजोरे ॥ मु० ॥ १२॥ इति षष्ठ मनोगुप्तिसज्झाय ॥

॥ अथ सप्तमवचनगुप्ति सज्झाय लिख्यते ॥

समिति सदा ए दीलमेंधरो ॥ एदेशी ॥ अथवा ॥ हमीरियानी देशी ॥ वचनगुप्ति सूधीधरो, वचन ते कर्मसहाय सलूणे ॥ उदयाश्रितजेचेतना, निश्चेतेहअपाय ॥ स० ॥ वचनगुप्ति सूधीधरो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वचनअगोचर आतमा। सिद्धते वचनातीत ॥ स० ॥ सत्ता अस्तिस्वन्नावमें । न्नाषक न्नावअनीत ॥ स० ॥ व० ॥ २ ॥ अनुन्नव रसआस्वादता । करता आतमध्यान ॥ स० ॥ वचन ते बाधकन्नावछे । न वदे मुनिअज्ञान ॥ स० ॥ व० ॥ ३ ॥ वचनाश्रवपलटायवा। मुनिसाधेस्वाध्याय ॥ स० ॥ तेह सर्वथागोपवो । परममहारसथाय ॥ स० ॥ व० ॥ ४ ॥ न्नाषापुफलवर्गणा । ग्रहणानिसर्गउपाधि ॥ स० ॥ करवा आतमवीर्यने । शानेप्रेरेसाधि ॥ स० ॥ व० ॥ ५ ॥ यावत् वीरजचेतना । आतमगुणसंपत्त ॥ स० ॥ तावत सरवे निर्जरो । आश्रवपर आयत्त ॥ स० ॥ व० ॥ ६ ॥ इम जाणी स्थिरसंयमी । न करे वदि पदिमंथ ॥ स० ॥ आत्मानंद आराधतां । आज्ञार्थीनिग्रंथ ॥ स० ॥ व० ॥ ७ ॥ साध्यशुद्ध परमातमा । तसु साधनउत्सर्ग ॥ स० ॥ बारन्नेदे तप द्विविधे । सकलश्रेष्ठ व्युत्सर्ग ॥ स० ॥ व० ॥ ८ ॥ समकितगुणठाणे कस्यो । साध्यअयोगीन्नाव० ॥ स० ॥ उपादानता तेहनी । गुप्तिरूपस्थिरन्नाव ॥ स० ॥ व० ॥ ए ॥ गुप्तिरुचि गुप्ते रम्या । कारणसमितिप्रपंच ॥ स० ॥ करता स्थिरता ईहता । ग्रहेतत्व गुणसंच ॥ स० ॥ व० ॥ १० ॥ अपवादे उत्सर्गनी । दृष्टि न चूकेजेह ॥ स० ॥ प्रणमे नित्यप्रत्येन्नावशुं ।

देवचंद मुनितेह ॥ स० ॥ व० ॥ ११ ॥ इतिसप्तमवचनगुप्ति सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथाष्टम कायगुप्ति सज्झाय लिख्यते ॥

फूलनाचोसरप्रभुजीने शिरचढे ॥ एदेशी ॥ गुप्तिसंभारोरे त्रीजी मुनिवरु । जेहथी परमआनंदोजी ॥ मोहटले घन घातिपरगले । प्रगटेज्ञानअमंदोजी ॥ गु० ॥ १ ॥ करीय शुभ अशुभभवजे जेहे । तिणतजि तनव्यापारोजी ॥ चंचलभाव ते आश्रवमूलछे । जीव अचल अविकारोजी ॥ गु० ॥ २ ॥ इंद्रियविषयसकलनुं धारए । बंधहेतु दृढएहो जी ॥ अभिनवकर्मग्रहे तनुयोगथी । तिण थिरकरीयें देहो जी ॥ गु० ॥३॥ आतमवीर्यफुरे परसंगजे । ते कहीयें तनुयोगोजी ॥ चेतनासत्तारे परमअयोगीछे । निर्मल स्थिर उपयोगोजी ॥ गु० ॥ ४॥ जावतकंपन तावतबंधछे । भाख्युं भगवइ अंगेजी । तेमाटे ध्रुवतत्वरसेंरमे । माहण ध्यान प्रसंगेजी ॥ गु० ॥ ५ ॥ वीर्यसहायीरे आतमधर्मनो अचल सहज अप्रयासोजी । ते परभावसहाया किम करे । मुनिवर गुणआवासोजी ॥ गु० ॥ ६ ॥ खंति मुत्ति युत्ति अकिंचनी । शौच ब्रह्मधरधीरोजी ॥ विषयपरिसहसैन्यविदारवा । वीर परमशौंडीरोजी ॥ गु० ॥ ७ ॥ कर्मपरूल दल क्षयकरवारसी । आतमऋद्धि समृद्धोजी ॥ देवचंद्र जिन आणापालतां । वंदुं गुरु गुणवृद्धोजी ॥ गु० ॥ ८ ॥ इति अष्टमकायगुप्तिसज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नवम साधुस्वरूपवर्णनसज्झाय लिख्यते ॥

रसीयानी देशी ॥ धर्मधुरंधर मुनिवरसुलही । नाण चरण

संपन्न ॥ सुगुणनर ॥ इंद्रियभोगतजी निजसुखभजी । भवचारक उदविन्न ॥ सु० ॥ १ ॥ द्रव्यभावसाचीसरधा धरी । परिहरी शंकादिदोष ॥ सु० ॥ कारणकारज साधन आदरी । धरी ध्यानसंतोष ॥ सु० ॥ ध० ॥२ ॥ गुण पर्यायें वस्तुपरिखतां । शीख उभयभंमार ॥ सु० ॥ परिणतिशक्तिस्वरूपमें परिणमी । करता तसुव्यवहार ॥ सु० ॥ ध० ॥ ३ ॥ लोकसन्न वितिगिछा वारता । करता संयमवृद्धि ॥ सु० ॥ मूल उत्तर गुण सर्वसंभारता । धरताआतमशुद्धि ॥ सु० ध० ॥ ४ ॥ श्रुतधारी श्रुतधर० निश्रारसी । वशकस्या त्रिक जोग ॥ सु० ॥ अभ्यासी अभिनवश्रुतसारना । अविनाशी उपयोग ॥ सु० ॥ ध० ॥ ५ ॥ द्रव्यभावआश्रवमलटालता । पालता संयमसार ॥ सु० ॥ साची जैनक्रियासंभालता । गालता कर्मविकार ॥ सु० ॥ ध० ॥ ६ ॥ सामायिकआदिक गुणश्रेणिमें । रमता चढतेरेभाव ॥ सु० ॥ तीनलोकथी भिन्नत्रिलोकमें । पूजनीयजसुपाव ॥ सु० ॥ ध० ॥ ७ ॥ अधिकगुणी निजतुल्यगुणीथकी । मलता ते मुनिराज ॥ सु० ॥ परमसमाधिनिधि भवजलधिना । तारणतरण जहाज ॥ सु० ॥ ध० ॥ ८ ॥ समकितवंत संयमगुणईहता । ते धरवासमरथ । संवेगपक्षी भावें शोभता । कहेतासाचोरे अर्थ ॥ सु० ॥ ध० ए ॥ आपप्रशंसायें नविमाचता । राचता मुनिगुणरंग ॥ सु० ॥ अप्रमत्तमुनिश्रुततत्त्व पूछवा, सेवे जासुअभंग ॥ सु० ॥ ध० ॥ १० ॥ सर्द्दहणा आगमअनुमोदता । गुणकर संयमचाल ॥ सु० ॥ विवहारें साची ते साचवे ॥ आयतिलाभपिछाण ॥ सु० ॥ ध० ॥ ११ ॥ दुक्करकारीथीअधिकाकहे ।

बृहत्कल्प व्यवहार ॥ सु० ॥ उपदेशमाला भगवइअंगमे । गीतारथअधिकार ॥ सु० ॥ ध० ॥ १२ ॥ भाव चरणस्थानक फरस्याविना । न हुवे संयम धर्म ॥ सु० ॥ ते शाने जूठ ते उच्चरे । जे जाणे प्रवचनमर्म ॥ सु० ॥ ध० ॥ १३ ॥ जसलाभें निजसंस्मृतथायवा । परजनरंजनकाज ॥ सु० ॥ ज्ञानक्रिया द्रव्यतविधिसाचवे । तेह नहि मुनिराज ॥ सु० ॥ ध० ॥ १४॥ बाह्य दया एकांतें उपदिसे श्रुतआम्नायविहीन ॥ सु० ॥ वगपरेंठगता मूरखलोकने । बहुभमशे तेहदीन । सु० ॥ ध० ॥ १५ ॥ अध्यातमपरिणति साधनग्रही । उचित वहे आचार ॥ सु० ॥ जिन आणा अविराधकपुरुषजे । धन्यतेहनो अवतार ॥ सु० ॥ ध० ॥ १६ ॥ द्रव्यक्रियानैमित्तिकहेतुछे । भावधर्म लयलीन ॥ सु० ॥ नैरुपाधिक तो जे निजअंशनी । माने लाभनवीन ॥ सु० ॥ ध० ॥ १७ ॥ परिणतिदोष भणीजेनिंदता, कहेता परिणतिधर्म ॥ सु० ॥ योगग्रंथना भावप्रकाशता । तेह विदारे होकर्म ॥ सु० ॥ ध० ॥ १८ ॥ अल्पक्रिया पण उपकारीपणे । ज्ञानी साधेहो सिद्ध ॥ सु० ॥ देवचंद्र सुविहित मुनि वृंदने। प्रणम्यां सयलसमृद्धि ॥ सु० ॥ ध० १९

इति नवमसाधुस्वरूपवर्णनसज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥

ते तरिया रे भाइ ते तरिया, जे जिनशासनअनुसरियाजी॥ जेहकहे सुविहित मुनिकिरिया । ज्ञानामृतरसदरिया जी ॥ ते० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विषयकषायसहूपरहरिया । उत्तम समतावरियाजी ॥ शीलसन्नाहथकीपाखरिया । भवसमुद्रजल-

तरियाजी ॥ ते० ॥ २ ॥ समिति गुप्ति शुं जे परवरिया । आत्मानंदेतरियाजी ॥ आश्रवद्वारसकल आवरिया ॥ वरसंवर-संवरियाजी ॥ ते० ॥ ३ ॥ खरतरमुनिआचरणाचरिया । राजसार गुणगरियाजी ॥ ज्ञानधर्म तपध्याने वसिया । श्रुतरहस्यना रसीयाजी ॥ ते० ॥ ४ ॥ दीपचंदपाठकपदधरिया । विनयरयणसागरियाजी ॥ देवचंद्रमुनिगुणउच्चरिया । कर्मअरिनिर्जरियाजी ॥ ते० ॥५॥ सुरगिरिसुंदर जिनवरमंदिर । शोभित नगरसवाईजी ॥ नवानगर चोमासुंकरीने । मुनिवर गुणथुति गाईजी ॥ ते० ॥ ६ ॥ अरिहंतनो यश जगमेंविचर्यो । विस्तरी जससंपदाजी ॥ निर्ग्रंथ वंदन स्तवन करतां । परममंगल सुखसदाजी ॥ ७ ॥ इत्यष्टप्रवचनमाता सज्झाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ पंडित श्रीदेवचंद्रजीकृत पंचभावना लिख्यते ॥

॥ स्वस्तिश्रीमंदिरपरम । धर्मधाम सुखठाम । स्यादवाद परिणामधरी । प्रणमुंचेतनराम ॥ १ ॥ महावीरजिनवर नमुं । भद्रबाहु सूरीश । वंदीश्रीजिनभद्रगणी । श्रीक्षेमेंद्र मुनीश ॥ २ ॥ सदगुरु शासनदेवनमी । बृहत्कल्पअनुसार । शुद्धभावनासाधुनी । भाविसपंचप्रकार ॥ ३ ॥ इंद्रिय योगकषायने । जीपे मुनिनिशंक । इणजीते कुध्यानजय । जाए चित्ततरंग ॥ ४॥ प्रथमभावनाश्रुततणी । बीजीतप तीयसत्त्व । तुरियएकत्वभावना । पंचमभाव सुतत्त्व ॥ ५ ॥ श्रुतभावना मनस्थिर-करे । टाले भवनोखेद । तपभावना कायादमे । वमे वेदउमेद ॥ ६ ॥ सत्वभाव निर्भयदशा । निज लघुता एकभाव । तत्त्वभावना आतमगुण । सिद्धि साधनादाव ॥ ७ ॥ ढाल पहली

लोकस्वरूपविचारो आतमारे ए देशी ॥ श्रुतअभ्यास करो मुनिवरसदारे, अतिचार सहुटाल ॥ हीणअधिकअक्षर मतउच्च-रोरे । शब्द अर्थ संभाल ॥ श्रु० ॥ १ ॥ सूक्ष्मअर्थ अगोचर-दृष्टीथीरे । रूपी रूप विहीण । जेह अतीतअनागत वर्त्ततारे । जाणे ज्ञानीलीन ॥ श्रु० ॥ २ ॥ नित्य अनित्य एक अनेकता रे । सद सद भावस्वरूप ॥ छएभाव एकद्रव्यपरिणम्यारे ॥ एकसमयमांअनूप ॥ ३ ॥ उत्सर्गे अपवाद पदेकरीरे । जाणे बहु श्रुतचाल । वचनविरोध निवारे युक्तिथीरे । थापे दूषण टाल ॥ श्रु० ॥ ४ ॥ द्रव्यार्थिक पर्यार्थिकधरेरे । नय गम भंगअनेक । नय सामान्य विशेषे बहुग्रहेरे । लोकालोकविवेक ॥ श्रु० ॥ ५ ॥ नंदीसूत्रे उपगारीकह्योरे । वली असुच्चागाम । द्रव्य श्रुतने वांद्योगणधरेरे । भगवइ अंगे नाम ॥ श्रु० ॥ ६ ॥ श्रुत अभ्यासे जिनपदपामियेरे । छठे अंगे साख । श्रुतनाणी केवलनाणीसमोरे । पन्नवणिजे भाख ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥ श्रुत-धारी आराधकसर्वनोरे । जाणे अर्थस्वभाव । निजआतम परमातमसमग्रहेरे । ध्यावे ते नयदाव ॥ श्रु० ॥ ८ ॥ संयमद-रशनते ज्ञानेवधेरे । ध्याने शिवसाधंत । भवस्वरूप चउग-तिनो ते लखेरे । तेणे संसार तजंत ॥ श्रु० ॥ ए ॥ इंद्रियसुख-चंचलजाणी तजेरे । नव नव अर्थतरंग । जिम जिमपामे तिम मनउल्लसेरे । वसे न चित्तअनंग ॥ श्रु० ॥ १० ॥ काल असं-ख्याताना भवलखे रे । उपदेशक पणतेह । परभवसाथीआलं-बनखरो रे ॥ चरणविना शिवगेह ॥ श्रु० ॥ ११ ॥ पंचमकाले

श्रुतबलपण घस्यो रे । तोपण एहआधार । देवचंद जिनमतनो तत्त्व एहरे । श्रुतस्युं धरजोप्यार० ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ जी अनुमतिदीधीमाये रोवती ए देशी ॥

॥ रयणावली कनकावली । मुक्तावली गुणरयण । वज्र मध्यने जवमध्यए । तपकरीने हो जीपोरिपुमयण ॥ १ ॥ नविय़ण तपगुणआदरो । तपतेजेरे छीजे सहुकर्म । विषय विकार-सहुटले । मनगंजेरे नंजे नवमर्म ॥ नवि० ॥ २ ॥ जोगजय ईंद्रियजय तदा । तपजाणो कर्म सूरुणसार ॥ ववहाणे योगडु-हाकरी । शिवसाधेरे शुधाअणगार ॥ नवि० ॥ ३ ॥ जिम-जिम प्रतिज्ञाऽढथको । वैरागीर्ज तपसी मुनिराय । तिमतिम अशुनदलछीजवे । रवितेजेरे जिम शीतविलाय ॥ नवि०॥४॥ जे निकुपमिमाआदरे । आसनअकंपसुधीर । अतिलीनसम-तानावमां । तृणनीपेरे हो जाणंतशरीर ॥ नवि० ॥ ५ ॥ जिणसाधु तपतरवारथी । सूड्यो छे हो अरिमोहगयंद । तिण साधुनो हुंदासबुं । नित्यवंडुंरे तसपयअरविंद ॥ नवि० ॥ ६ ॥ आचारसूयगमांगअंगमां । तिमकह्यो नगवईअंग । उत्तराध्य-यनगुणतीसमें । तपसंगे हो सहुकर्मनोनंग ॥ नवि० ॥ ७ ॥ ते डुविध डुक्करतपतपे । नवपासआसविरक्त, धनसाधु मुनिढं-ढणसमा । ऋषिखंधकहो तीसगकुरुदत्त ॥ नवि० ॥ ७ ॥ निज-आतमकंचननाणी । तपअग्निकरी सोधंत । नवनविलब्धि बल छते । उपसर्गेहो तेसहंत महंत ॥ नवि० ॥ ए ॥ धन्यतेह जेधनगृहतजी । तनस्नेहनो करीछेह । निसंगवनवासे वसे । तपधारीहो ते अनिग्रहगेह ॥ नवि० ॥ १० ॥ धन्यतेह गछगु-

फातजी । जिनकल्पभावअफंद । परिहारविशुद्धि तपतपे । तेवंदेहो देवचंदमुनींद ॥ भवि० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ३ जी हिव राणी पदमावती ॥ एदेशी ॥

रेजीव साहसआदरो । मतथाउदीन । सुखदुःख संपदआपदा । पूरवकर्मआधीन ॥ रे जीव० ॥ १ ॥ क्रोधादिकवशे रणसमे । सह्यादुःखअनेक । तेजोसमतामां सहे । तोतुज खरोविवेक ॥ रे जीव० ॥ २ ॥ सर्वअनित्य अशाश्वतो । जेहदीसेएह । धनतनसयणसगासहु । तिणस्युं श्योनेह ॥ रे जीव० ॥ ३ ॥ जिमबालक वेलूतणा । घरकरीयरमंत । तेहछते अथवाढहे । निजनिजग्रह जंत ॥ रे जीव० ॥ ४ ॥ पंथीजेमसराहमां । नदीनावनी रीति । तिमए परियणतोमिल्यो । तिणथीशीप्रीति ॥ रे जीव० ॥ ५ ॥ ज्यांस्वार्थ त्यांसहुसगा । विणस्वार्थदूर । परकाजे पापेभले । तुंकेमहोयसूर ॥ रे जीव० ॥ ६ ॥ तजि बाहिरमेलावडो । मिलियोबहुवार । जेपूरवमिलियो नहि । तिणस्युं धरप्यार ॥ रेजीव० ॥ ७ ॥ चक्रीहरिबल प्रतिहरी, तसविभवअमान । तेपणकालेसंहस्या । तुज धनश्योमान ॥ रेजीव० ॥ ८ ॥ हाहाहुंतो तुंफिरे । परियणनी चिंत । नरकपड्यां कहे ताहरी । कोणकरसे चिंत ॥ रे जीव० ॥ ए ॥ रोगादिकदुःखऊपने । मनअरतिमधरेव । पूरवनिजकृतकर्मनो । एअनुभवहेव । रेजीव० ॥ १० ॥ एहशरीरअशाश्वतो । खिणमेंसीजंत । प्रीतिकिसितेऊपरे । जेस्वारथवंत । रेजीव० ॥ ११ ॥ ज्यांलगे तुज इणदेहथी । छेपूरवसंग । त्यांलगेकोटीउपायथी । नवि थायभंग ॥ रे जीव० ॥ १२ ॥ आगलपाछलाचिंहुंदिने,

जे विणसीजाय । रोगादिकथी नविरहे । कीधेकोटीउपाय ॥ रेजीव० ॥ १३ ॥ अंतेपण एनेतज्यां । थायशिवसुख । तेजो- चूटे आपथी । तोतुजने स्योदुःखः ॥ रेजीव० ॥ १४ ॥ एतन- विणसे ताहरे नविकांइहाण । जोज्ञानादिकगुणतणो । तुज- आवेजाण ॥ रेजीव० ॥ १५ ॥ तुंअजरामर आतमा । अवि- चलगुणराण । क्षणभंगुरआदेहथी । तुज कीहांपिछाण ॥ रे जीव० ॥ १६ ॥ छेदनभेदनताडना । वधबंधनदाह । पुद्गलने पुद्गल- करे । तुंतो अमरअगाह ॥ रेजीव० ॥ १७ ॥ पूर्वकर्म उदये- सही । जे वेदनाथाय । ध्यावेआतम तिणसमे । तेध्यानीराय ॥ रेजीव० ॥ १८ ॥ ज्ञानध्याननीवातडी । करणीआसान । अंत- समे आपद पड्यां । विरलाकरेध्यान ॥ रेजीव० ॥ १९ ॥ अर- तिकरी दुःखभोगवे । परवसजेमकीर । तोतुजजाणपणातणो । गुणकेवोधीर ॥ रेजीव० ॥ २० ॥ शुद्धनिरंजननिरमलो निज- आतमभाव । तेविणसे कहे दुःखकिस्यो । जेमिलियो दाव ॥ रेजीव० ॥ २१ ॥ देहगेह भाडातणो । एआपणो नाहिं । तुज गृहआतमज्ञानए । तिणमाहेसमाहि ॥ रेजीव० ॥ २२ ॥ मेता- रजसुकोसलो । वलिगजसुकुमाल । सनतकुमारचक्रीपरे । तन- ममताटाल ॥ रे जीव० ॥ २३ ॥ कष्टपड्यां समतारमे । निज- आतमध्याय । देवचंद्र तिण मुनितणा । नितवंदुपाय ॥ रे जीव० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ४ थी प्राणी धरीये संवेग विचार ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानध्यानचारित्रनेरे । जोदृढकरवाचाहे । तो एकाकी विहरतारे । जिनकल्पादिसाहेरे । प्राणी एकलभावना भाव ।

शिवमारगसाधनदावरे ॥ प्राणी० ॥ १ ॥ साधुजणी गृहवास-जीरे । बूटीममतातेह । तोपणगह्रवासीपणोरे । गणगुरुपर छे नेहरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ वनमृगनीपेरे तेहथीरे । छोरूीसकल-प्रतिबंध । तुंएकाकीअनादिनोरे । किणथीतुजसंबंधरे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ शत्रुमित्रतासर्वथीरे । पांमीवारअनंत । कोणसज्जनछु-स्मन किस्योरे । काले सहुनोअंतरे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ बांधेक-रमजीवएकलोरे । जोगवेपण तेएक । किणऊपर किणवातनी-रे । रागद्वेषनी टेकरे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ जोनिजएकपणुंग्रहेरे । छोरूी सकलपरजाव । शुद्धातमज्ञानादिशुंरे । एकस्वरूपेंजावरे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ आव्योछेतुं एकलोरे । जाइसपण तुं एक । तोए सर्वकुटुंबथीरे । प्रीतिकीसीअविवेकरे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ वनमाहे–गजसिंहादिथीरे । विहरतां न टले जेह । जिणआ-सनरविआथमेरे । तिणआसननिशिछेहरे ॥ प्राणी० ॥ ८ ॥ आहारग्रहे तपपारणेरे । करमां लेप विहीन । एकवार-पाणीपीवतांरे । वनचारीचित्तअदीनरे ॥ प्राणी० ॥ ए ॥ एहदोषपरग्रहणथीरे । परसंगेगुणहाण, परधनग्राहीचोरतेरे । एक पणो सुखठाणरे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥ परसंयोगथीबंधछेरे । परवियोगथीमोक्ष । तेणे तजीपरमेलावमोरे । एकपणो निज-पोषरे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥ जन्म न पाम्यो साथकोरे । साथनम-रसेकोय । छुःख वेंचाउ को नहिरे । क्षणजंगुर सहु लोयरे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥ परिजनमरतो देखीनेरे । शोगकरे जनमूढ । अवसरेवारो आपणोरे । सहुजननीए रूढरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥ सुरपति चक्री हरिबलीरे । एकला परजवजाय । तन धन परि-

जनसहुमिलिरे । कोईसखाइनथायरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥ एक-आतमा माहरोरे । ज्ञानादिकगुणवंत । बाह्ययोगसहुअवरछेरे। पांम्योवारअनंतरे ॥ प्राणी० ॥ १५ ॥ करकंडू नमी नहगइरे । डुम्मुह प्रमुखरुषिराय । मृगापुत्रहरिकेषीनारे । वंदुहुं नितपायरे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥ साधु चिलातीसुतन्नलोरे । वली अनाथीतेम । एममुनिगुण अनुमोदतारे । देवचंद्र सुखखेमरे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥

॥ ढाल ५ मी एणीपरेच्चंचलआउखो ॥ एदेशी ॥

॥ चेतनए तनकारिमो । तुमेध्यावोरे । शुद्धनिरंजनदेव । न्नविक तुमे० ॥ शुद्धस्वरूपअनूप ॥ न्नविकतुमे० ॥ १ ॥ नरन्नव श्रावककुललह्यो तुमे० । लाधोसमकितसार न्नवि० । जिनआगमरुचिशुंसुणो तुमे० । आलसनींदनिवार ॥ न्नवि० ॥ २ ॥ समयांतरसहन्नावनो तुमे० ॥ दर्शनज्ञान अनंत न्नवि० ॥ आतमन्नावे थिरसदा । तुमे० ॥ अक्षय चरणमहंत ॥ न्नवि० ॥ ३ ॥ तीनलोक त्रिहुंकालनी तुमे० ॥ परिणतितीनप्रकार न्नवि० ॥ एकसमये जाणेतिणे । तुमे० ॥ नाणअनंतअपार ॥ न्नवि० ॥ ४ ॥ सकलदोषहर शाश्वतो तुमे० ॥ वीरजपरमअदीन न्नविक० ॥ सूक्ष्मतनुबंधन विना तुमे० ॥ अवगाहनास्वाधीन ॥ न्नवि० ॥ ५ ॥ पुग्गल सकलविवेकथी तुमे० । शुद्धअमूर्त्तिरूप न्नवि० ॥ इंद्रिय सुखनिस्पृहथइ तुमे० ॥ अकथअबाहस्वरूप ॥ न्नवि० ॥ ६ ॥ द्रव्यतणापरिणामथी तुमे० ॥ अगुरुलघुत्व अनित्य न्नवि० ॥ सत्यस्वन्नावमयीसदा तुमे० ॥ न्नोगीन्नावअसत्य ॥ न्नवि० ॥ ७ ॥ निजगुणरमतोरामए तुमे० ॥

सकलअकलगुणखाण ज्ञवि० ॥ परमातम परज्योतिए तुमे० ॥ अलखअलेप वखाण ॥ ज्ञवि० ॥ ७ ॥ पंचपूज्यथीपूज्यए तुमे० ॥ सर्वध्येयथी ध्येय ज्ञवि० ॥ ध्याताध्यानरु ध्येयए तुमे० ॥ निश्चे एकअज्ञेय ॥ ज्ञवि० ॥ ए ॥ अनुज्ञवकरतांए हनो तुमे० ॥ थाय परमप्रमोद ज्ञवि० ॥ एकस्वरूपअज्यासशुं तुमे० ॥ शिवसुखछे तसगोद ॥ ज्ञवि० ॥ १० ॥ बंध अबंध ए आतमा तुमे० ॥ करता अकरताएह ज्ञवि० ॥ एहज्ञोगता अज्ञोगता तुमे० ॥ स्यादवाद गुणगेह ॥ ज्ञवि० ॥ ११ ॥ एक अनेक स्वरूपए तुमे० ॥ नित्यअनित्यअनादि ज्ञवि० ॥ सद-सदज्ञावे परिणम्या तुमे० ॥ मुक्तसकलउन्माद ॥ ज्ञवि०॥१२॥ तपजपकिरियाखपथकी तुमे०॥ अष्टकरम न विलाय ज्ञवि० । ते सहु आतमध्यानथी तुमे० ॥ खिणमे खेरुथाय ॥ ज्ञवि०॥१३॥ शुद्धातमअनुज्ञवविना तुमे० ॥ बंधहेतु शुज्ञचाल ज्ञवि० ॥ आत-मपरिणामे रम्या तुमे० ॥ एहज आश्रवपाल ॥ ज्ञवि० ॥ १४ ॥ इमजाणी निजआतमा तुमे० ॥ वरजी सकलउपाध ज्ञवि० ॥ उपादेयअलंवने तुमे० ॥ परम महोदयसाध ॥ ज्ञवि० ॥ १ए ॥ ज्ञरत इलासुत तेतली तुमे० ॥ इत्यादिक मुनिवृंद ज्ञवि० ॥ आत-मध्यानथी ए तर्या ज्ञवि० ॥ प्रणमे ते देवचंद ॥ ज्ञवि० ॥१६॥

॥ ढाल ६ ठी ढोलग सेत्रुंजे सिद्धथया ॥ एदेशी ॥

ज्ञावना मुक्तिनिशाणीजाणी । ज्ञावो आशतिआणीजी । योगकषाय कपटनीहाणी । थाये निर्मलजाणीजी ॥ ज्ञावना० ॥ १ ॥ पंचज्ञावना ए मुनि मनने ॥ संवरखाणीवखाणीजी । वृहत्कल्पसूत्रनीवाणी दीठीतेमकहाणीजी ॥ ज्ञावना० ॥ २ ॥

कर्मकतरणी शिव नीशरणी । जाण ठाणअनुसरणीजी । चेतनराम तणीएघरणी । ज्ञवसमुद्रदुःखहरणीजी ॥ ज्ञव० ॥३॥ जयवंतापाठकगुणधारी । राजसार सुविचारीजी । निर्मल ज्ञानधर्मसंज्ञाली । पाठक सहुहितकारीजी ॥ ज्ञावना० ॥ ४ ॥ राजहंससुगुरु सुपसाये । देवचंद्र गुणगावेजी । ज्ञविक जीव जे ज्ञावनज्ञावे । तेह अमित सुखपावेजी । ज्ञावना० ॥ ५ ॥ जेसलमेर साह सुत्यागी । वर्द्धमान वरुज्ञागीजी । पुत्रकलत्रसकलसुज्ञागी । साधु गुणना रागीजी ॥ ज्ञाव० ॥ ६ ॥ तसआग्रहथीज्ञावनाज्ञाइ । ढाल बंधमां गाइजी । ज्ञणसे गुणसे जेएह ज्ञाता । लहेसे ते सुख साताजी ॥ ज्ञाव० ॥ ७ ॥ मनशुद्धे पंचे ज्ञावनाज्ञावो, पावन निजगुणपावोजी । मनमुनिवर गुणसंगवसावो । सुख संपति ग्रहआवोजी ॥ ज्ञावना० ॥ ८ ॥ इति श्रीपंरुितदेवचंद्रजीकृतसाधुनी पंच ज्ञावना संपूर्णा ॥

॥ अथ पंडित श्रीदेवचंद्रजीकृत प्रभंजना महासतीनीसज्झाय लिख्यते ॥

॥ नाटकीयानी देशी ॥ गिरिवैताढ्यनेऊपरे । चक्रांका नयरीरे लो । अहोचक्रा० ॥ चक्रायुधराजातिहां । जीत्या सवीवयरीरे लो ॥ अहो० ॥ १ ॥ मदनलता तससुंदरी । गुणशील अचंज्ञारे लो ॥ अहो० ॥ पुत्रीतासप्रज्ञंजना । रूपे रतिरंज्ञारे लो ॥ अहो० ॥ २ ॥ विद्याधरज्नूचरसुता, बहुमली एकपंतेरे लो ॥ अहो० ॥ राधा वेधे मंरुाविउं । वरवरवा खंतेरे लो ॥ अहो० ॥ ३ ॥ कन्याएकहजारथी । प्रज्ञंजना चालीरे लो ॥ अहो० ॥ आर्यखंरुमां आवतां, वनखंरुविचालीरे लो ॥

अहो० ॥ ४ ॥ निग्रंथी सुप्रतिष्ठिता । बहुगुणणी संगेरे लो ॥ अहो० ॥ साधुविहारेविचरती । वंदे मनरंगेरे लो ॥ अहो० ॥ ५ ॥ आर्या पूछे एवको । उमाउं स्योछेरे लो ॥ अहो० ॥ विनये कन्यावीनवे । वरवरवाइछेरे लो ॥ अहो० व० ॥ ६ ॥ एइयोहितजाणोतुमें । एहथी नविसिद्धिरे लो ॥ अहो ए० ॥ विषयहलाहलविषतिहां । सीअमृतबुद्धिरे लो ॥ अहो० ॥ सी० ॥ ७ ॥ जोगसंगकारमाकह्या । जिनराजसदाइरे लो ॥ अहो जि० ॥ रागद्वेष संगेवधे, जवभ्रमण सदाइरे लो ॥ अहो ज० ॥ ८ ॥ राजसुताकहेसाचए । जे जाखोवाणीरे लो ॥ अहो जे० ॥ पणएजूलअनादिनी, किम जाएछंमाणीरे लो ॥ अहो कि० ॥ ए ॥ जेहतजे तेहधन्य छे । सेवक जिनजीनारे लो ॥ अहो से० ॥ अमेतस पुद्गल रसरम्या । मोहे लयलीनारे लो ॥ अहो मो० ॥ १० ॥ अध्यातमरसपानथी । पीनामुनिरायारे लो ॥ अहो पी० ॥ ते परपरिणतिरतीतजी । निजतत्त्वसमायारे लो ॥ अहो नि० ॥ ११ ॥ अमनेपणकरवो घटे । कारणसंयोगेरे लो ॥ अहो का० ॥ पणचेतनतापरिणमे, जरु पुद्गल जोगेरे लो ॥ अहो ज० ॥ १२ ॥ अवरकन्यापणकह्युरे । चिंतित हवेकीजेरे लो ॥ अहो चि० ॥ पछी परमपदसाधवा । उद्यमसाधीजेरे लो ॥ अहो उ० ॥ १३ ॥ प्रजंजनाकहे हे सखी । ए कायरप्राणीरे लो ॥ अहो ए० ॥ धर्मप्रथमकरवोसदा । देवचंद्रनीवाणीरे लो ॥ अहो दे० ॥ १४ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ कहेसाहुणी सुणकन्यकारे । धन्या ए संसारकलेश । एहनेजेहितकरीघणेरे । धन्या ते मिथ्याआदेशरे ।

सुज्ञानीकन्या शांजलहितउपदेश । जगहितकारीजिनेशछे रे कहे० ॥ कीजेतसुआदेशरे ॥ सुज्ञा० ॥ १ ॥ सां० ॥ खरमीनें वली धोयवुंरे क० ॥ तेह न शिष्टाचार । रतनत्रयी साधनकरोरे ॥ क० ॥ मोहाधीनता वार रे ॥ सु० ॥ सां० ॥ २ ॥ जेह पुरुषवरवातणीरे क० ॥ इछे छे ते जीव । स्येसंबंधपणेजणोरे क० ॥ धारीकालसदीवरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ३ ॥ तवप्रज्ञंजनाचिंतवेरे अप्पा ॥ तुं छे अनादिअनंत । तेपणमुज सिद्धसत्तासमोरे अ० ॥ सहज अकृतमहंतरे ॥ सु० सां० ॥ ४ ॥ ज्जवज्जमता सवी जीवथीरे अप्पा । पाम्योसर्वसंबंध । मातपिताज्ञातासुतारे अप्पा । पुत्रवधूप्रतिबंध रे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ५ ॥ स्युंसंबंधकहुंइहांरे अप्पा । शत्रु मित्रपणथाय । मित्रशत्रुता वलीलहेरे अप्पा । एमसंसरणस्वज्ञावरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ६ ॥ सत्तासमसविजीवछेरे अप्पा । जोतांवस्तुस्वज्ञाव । एमाहरो एहपारको रे अप्पा । सविआरोपितज्ञावरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ७ ॥ गुरुणीआगल एहवुंरे अप्पा । कुवुकिमकहेवाय । स्वपरविवेचनकीजतांरे अप्पा । माहरोकोइ नथायरे ॥ सु० ॥ सां० ॥८॥ ज्ञोग्यपणुं पण जूलथीरे अप्पा । माने पुद्गल खंध । हुंज्ञोगी निजज्ञावनो रे अप्पा । परथीनाहिं प्रतिबंधरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ॥ ए ॥ सम्यक्ज्ञाने वहेचतांरे अप्पा । हुं अमूर्त्तचिद्रूप ॥ कर्त्ताज्ञोक्तातत्त्वनोरे अप्पा । अक्षयअक्रिय अरूपरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १० ॥ जुदो सर्व विज्ञावथीरे अप्पा । निश्चय निजअनुजूत । पूर्णानंदी परमएहरे अप्पा । नहिं परपरिणतिरीतरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ ११ ॥ सिद्धसमो एसंग्रहेरे अप्पा । पररंगेपल-

टाय, संगांगीन्नावेकरीरे अप्पा । अशुद्धविन्नावअपायरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १२ ॥ शुद्धनिश्चय नयेकरीये अप्पा । आतमन्नाव-अनंत । तेहअशुद्ध नयेकरीरे अप्पा । दुष्टविन्नावमहंतरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १३ ॥ द्रव्यकर्मकर्त्ताथयोरे अप्पा । नयअशुद्ध-व्यवहार । तेह नीवारोस्वपदेरे अप्पा । रमताशुद्धव्यवहाररे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १४ ॥ व्यवहारेसमरेथकीरे अप्पा । समरे निश्चयाचार । प्रवृत्तिसमारे विकल्पनेरे अप्पा । तेहस्थिरपरि-णती सार रे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १५ ॥ पुद्गलने परजीवथीरे अप्पा । कीधो न्नेदविज्ञान, बाधकता दूरेटलीरे अप्पा । हवे-कुण रोकेज्ञानरे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १६ ॥ आलंबनन्नावनवसेरे अप्पा । धरमध्यानप्रगटाय । देवचंदपदसाधवारे अप्पा । एह-उशुद्धउपाय रे ॥ सु० ॥ सां० ॥ १७ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ राग धन्याश्री ॥ आयोआयोरे । अनुन्न-वआतमचोआयो । शुद्धनिमित्तआलंबनन्नजतां, आतमा लंब-नपायोरे ॥ आ० ॥ १ ॥ आतमखेत्रे गुणपर्याय विधि । तिहां-उपयोगरमायो । परपरिणति पररीतेजाणी । तास विकल्पस-मायोरे ॥ आ० ॥ २ ॥ प्रथकत्ववितर्कसकलआरोही । गुण-गुणीएकसमायो । परजयद्रव्य वितर्क एकता । दुरधरमोहख-पायोरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अनंतानुबंधीसुन्नटनेकाढी । दर्शनमो-हगमायोरे । तिरिगतिहेतुप्रकृतिक्षयकीधी थयोआतमरसरायो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ द्वितीयतृतीयचोकमीखपावी । वेदयुगलक्षय-थायो । हास्यादिकसत्ताथीध्वंसी । उदयवेदमिटायोरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ थईअवेदीने अविकारी । हणयोसंजलनोकसायो । मायों

मोहचरणक्षायककरी । पूरणसमतासमायोरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ घन घातित्रिकयोधालरुीया । ध्यानएकत्वनेधायो । ज्ञानावरणादि-कन्नटपरुिया । जीतनिशाणघूरायोरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ केवलज्ञा-नदर्शनगुणप्रगट्यो । महाराजपद पायो । शेषअघातिकर्म क्षीण दल, उदयअबाधदिखायोरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ सयोगीकेवली-थयाप्रन्नुंजना, लोकालोक जणायो । तीनकालनी त्रिविधवर-तना । एकसमय उलखायो रे ॥ आ० ॥ ए ॥ सर्वसाधवीयें बंदनाकीधी । गुणीविनय उपजायो । देव देवीतवस्तवेगुणस्तुति । जगजयपरुह वजायोरे ॥ आ० ॥ १० ॥ सहसकन्यकानें दीक्षा-दीधी । आस्त्रवसर्वतजायो । जगउपकारी देशविहारी । शुद्ध धर्म दीपायोरे ॥ आ० ॥ ११ ॥ कारणयोगे कारजसाधे । तेह चतुरगाइजे । आतमसाधननिरमलसाधे । परमानंदपाइजेरे ॥ आ० ॥ १२ ॥ एहअधिकारकह्योगुणरागे। वैरागे मन न्नावी । वसुदेवहिंरुतणेअनुसारे, मुनिगुणन्नावनान्नावीरे ॥ आ०॥१३॥ मुनिगुणथुणतां न्नावविशुद्धे, न्नावविच्छेद न थावे। पूर्णानंदइहां-श्रीउलसे । साधनशक्तिजमावेरे ॥ आ० ॥ १४ ॥ मुनिगुण-गावो न्नावनान्नावो । ध्यावो सहजसमाधि । रत्नत्रयीएकत्वे-खेलो । मेटीउपाधिअनादिरे ॥ आ० ॥ १५ ॥ राजसारपाठक उपगारी । ज्ञानधर्मदातारी । दीपचंद्र पाठक खरतरवर, देव-चंद्रसुखकारीरे ॥ आ० ॥ १६ ॥ नयरलींबरुीमांहेरहीने । वाचंयमस्तुतिगाइ । आतम रसीकश्रोताजनमनने, साधनरुचि उपजाइरे ॥ आ० ॥ १७ ॥ इमउत्तमगुणमालागावो । पावोह-

र्षवधाइ । जैनधर्म मारगरुचिकरतां, मंगललीलसदाइरे ॥ आ० ॥ १० ॥ श्रीपंमितदेवचंद्रजीकृतप्रन्नंजनामहासतीसज्का-यसंपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद सज्झाय ॥

कृपानाथमुजविनतिअवधार ॥ एदेशी ॥ सिद्धचक्रफलदा-खव्योजी, श्रीगौतमगणधार, नृपश्रीपालआराधिनेजी, पामशे-न्नवनोपार, सुज्ञानि नवपदमनमांधार, जिमलहोसुख अपार ॥ सुज्ञानिन० ॥ १ ॥ तीनतत्वआराधसोजी, देवगुरुनेधर्म, दोयतीनचकन्नेदछेजी, जाणो नवपदमर्म ॥ सुज्ञानिन० ॥ २ ॥ अरिहंत सिद्ध दोयदेवनाजी, न्नेदलहो सुजाण, आचारज पाठकवलिजी, मुनि त्रण गुरुतत्वजाण ॥ सुज्ञा० ॥ ३ ॥ दर्शनज्ञान-चारित्रछेजी, तपचोथोधर्मन्नेद, एत्रणतत्वनाजाणजोजी, नव-पदसेवो उमेद ॥ सु० ॥ ४ ॥ कालअतीतजेसिद्धथयाजी, वर्त-मानमांथाय, अनागतमांशिवपामसैजी, ते नवपदसुपसाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ नवपदनापरन्नावथीजी, नवनिधिप्रगटेसार, आ-धिव्याधिदूरेटलेजी, कहेश्रीजगदाधार ॥ सु० ॥ ६ ॥ नवआं-बिलओलीकरीजी, जपतां नवपदजाप, त्रणटंकदेववंदनकरोजी, काउसग्गथी जायपाप ॥ सु० ॥ ७ ॥ नवओली विधि-युतकरीजी, उजमणो निरधार, गुरु मुखथी विधिजाणिनेजी, संघन्नगतिसुखकार, सु० ॥ ८ ॥ नवपदध्याता आतमाजी, ते नवपदकहिवाय, जिनकृपाचंद्रसूरिसेवतांजी, निरुपाधिकसु-खथाय ॥ सु० ॥ ए ॥ इतिनवपद स० ॥

॥ अथ बीजनीसज्झाय लिख्यते ॥

॥ पणिहारीनी देशी ॥

बीजआराधोभविजना म्हारावालाजी, जिम पामो भवपार। वालाजी ॥ दोयभेदजिनवरकह्या । म्हारावालाजी ॥ धर्मतणा दिलधार ॥ वालाजी ॥ बी० ॥ १ ॥ देसविरतिश्रावकतणो ॥ म्हा० ॥ बारे भेद कहेवाय ॥ वा० ॥ सर्वविरति बीजोसही ॥ म्हा० ॥ महाव्रतपांचमनभाय ॥ वा० ॥ बी० ॥ २ ॥ दोय सिक्षा ग्रहवी सदा ॥ म्हा० ॥ ग्रहणासेवनसार ॥ वा० ॥ ग्रहणा गुरुमुखजाणीये ॥ म्हा० ॥ आसेवनसुखकार ॥ वा० ॥ बी० ॥ ३ ॥ समकित दोयप्रकारनो ॥ म्हा० ॥ रूपीअरूपी-जाण ॥ वा० ॥ क्षयोपशमरूपी कह्यो ॥ म्हा० ॥ भिन्नभिन्न अरूवीआण ॥ वा० ॥ बी० ॥ ४ ॥ दुविह जीवजगजाणीये ॥ म्हा० ॥ संसारीमुक्ति प्रकार ॥ वा० ॥ संसारीबहुभेदना ॥ म्हा० ॥ पुहवीआदिदुगबार ॥ वा० ॥ ५ ॥ निर्वाणना पन्नरे-विध ॥ म्हा० ॥ जिनअजिनादिसार ॥ वा० ॥ सादिअनंत-स्थितिकही ॥ म्हा० ॥ ध्यावोभविकसुखकार ॥ वा० ॥ बी० ॥ ६ ॥ नयदुविधप्रभुभाखिया ॥ म्हा० ॥ द्रव्यपरयायविचार ॥ वा० ॥ द्रव्यभेद षट्सासया ॥ म्हा० ॥ पर्यायअनंतासार ॥ वा० ॥ बी० ॥ ७ ॥ उपयोगद्विविधवखाणीये ॥ म्हा० ॥ साकार ज्ञानसुजाण ॥ वा० ॥ अनाकर दरसणकह्यो ॥ म्हा० ॥ भेद ए मनमां आण वा० ॥ म्हा० ॥ बी० ॥ ८ ॥ उपवासा-दिककीजीये ॥ म्हा० ॥ धर्म सुकल ध्यावो ध्यान ॥ वा० ॥

जिनकृपाचंद्रसूरिजणे ॥ म्हा० ॥ मुक्तितणोनिदान ॥ वा० ॥ वी० ॥ ए ॥ इतिबीजनी सजाय संपूर्ण ॥

॥ अथ पांचमनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ कृपानाथमुजवीनतिअवधार ए देशी ॥

सुगुरुचरणप्रणमीकरीजी । सुयदेवी सुपसाय । ज्ञानप्रगटकरवाजणीजी । कहुं नाणसज्झाय । ज्ञविकजननाणवमोसंसार ॥ १ ॥ नाणज्ञवनदीपककह्योजी । सर्वजीव सुखकार । विनानाणनरज्ञवकह्योजी । पशुतणे अनुकार ॥ ज्ञ० ॥ ना० ॥ २ ॥ नाणथी शिवसुखसंपजेजी । नाणथीपरमकल्याण । वरदत्तनेगुणमंजरीजी । एहचरित्रमनआण ॥ ज्ञ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ नाणविराध्योबिहुजणाजी । पुरवज्ञवमां तेह । जणवोगुणवो निषेधिनेजी । फळपाम्योतिणएह ॥ ज्ञ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ आसातनाकरेनाणनीजी । मनथी जेह नरनार । सून्यचित्तमनमूढताजी । अविवेकीनिरधार ॥ ज्ञ० ॥ ना० ॥ ५ ॥ वचनेजेआशातनाजी । अवरणवादवदेजेह । तोतामुंगा बोबमाजी । खलितवचनहोवे तेह ॥ ज्ञ० ॥ ना० ॥ ६ ॥ त्रिकरणकरीविराधनाजी । नाणनीकरे दुःखदाय । संसारसागरमां रुलेजी । पज्ञणेश्रीजिनराय ॥ ज्ञ० ॥ ना० ॥ ७ ॥ कायाकरी विराधनाजी । करताज़ेमतिहीण । कोढी पांडु पांगुलाजी । आंधला होवे दुःखलीन ॥ ज्ञ० ॥ ना० ॥ ८ ॥ नाणसेवि सुखियाथयाजी । वहुलाजनसंसार ॥ जिनकृपाचंद्रसूरिसदाजी । नाणनमो सुखकार ॥ ज्ञ० ॥ ना० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ आठमनीसज्झाय ॥

॥ समकितमूलगुंभारेपेसताजी ए देशी ॥

आठमतपसेवो नवि सुनमनेजी । आणीनाव अपारजी । आठकरमनेजीतवाकारणेजी । ए तपसेविलहोसुखसारजी ॥ आ० ॥ १ ॥ आठप्रमादतजीने पाळिएजी । प्रवचनमाता आठजी ॥ पांचसुमति त्रणगुपतिकहीजी । एहथीहोवेसंजमठाठजी ॥ आ० ॥ २ ॥ इरियासमति वरदत्तमुनि करिजी । नाषा संगतमुनिसुविचारजी । एषणानंदिषेणउजवालतोजी । सोमिल चोथीनो अधिकारजी ॥ आ० ॥ ३ ॥ मुनिचंद्रपारिठावणसुमतितणोजी । कोंकण मनगुप्तिदृष्टांतजी ॥ गुणदत्तवचननो उपयोगी थयोजी । अरणक कायगुप्ति सुखशांतजी ॥ आ० ॥ ४ ॥ इंद्रियआठने वसकरी साधियेजी । आठमी, गतिगुणखानजी ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवनाजी, वचनामृत मनआणजी ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ एकादसीनीसज्झाय लिख्यते ॥

॥ वीरा म्हारा गजथकी ऊतरो ॥ ए देशी ॥

इग्यारस आराधिये । विधियुत संजमवंतारे । अंगइग्यारह आराधवा । एतिथी सेवो उजमंतारे ॥ इग्या० ॥ १ ॥ ए तिथीकर्मक्षय कारणी । नाखीश्रीजिननाणोरे । कल्याणक बहुलाथया । ते सहु दिलमां आणोरे ॥ इग्या० ॥ २ ॥ अरनाथदीक्षाआदरी । नमिलह्यो केवलनाणरे । जन्मदीक्षाकेवलत्रण । मल्लिजिनना कल्याणरे ॥ इग्या० ॥ ३ ॥ मागसर सुदि इग्यारसे । नरत पांचमा जाणोरे । एरवत क्षेत्रमां इमहीज ।

कल्याणकपहि चानोरे ॥ इग्या० ॥ ४ ॥ दसक्षेत्रना पच्चास हे। तीनकालना गणीयेरे । दोढसोकल्याणकथया । समरण करी दुःखहरियेरे ॥ इग्या० ॥ ५ ॥ एटलाबीजीइग्यारस । त्रणकालनाजाणीरे । त्रणसोकल्याणकनमो । गुणनोकरोगुणखानीरे ॥ इग्या० ॥ ६ ॥ अठपोहरी पोसो करी। मौनव्रत लइजावेरे। चउविहारउपवासथी । अशुभकरम मिटजावैरे ॥ इग्या०॥७॥ सुव्रतशेठपोसो कर्यो । मौनसहितमनरंगेरे । अग्निनो उपद्रव मट्यो । सुजस लह्यो सुखसंगेरे ॥ इग्या० ॥ ८ ॥ चोरथंभाना-तपथकी । अचरजथयोसहु जनमेरे । राजादिके मोटो कीयो । सुव्रत सुकृत करमेरे ॥ इग्या० ॥ ए ॥ खरतरगच्छगुणमणी समो। जिन आणारंगधारिरे । जिनकृपाचंद्रसूरिभणे । आगमसेवोइ-कतारीरे ॥ इग्या० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ पूनमनी सझाय ॥

[मेतारज मुनिवर धन २ तुम अणगार चा०] सुगुरु चरण प्रणमीकरीजी, सुयदेवी सुपसाय ॥ चारित्रतिथि आराधवाजी, कहुं पूनिम सिझाय । गुणवंताभविजननिसुणोजिनवरवाणि ॥ १ ॥ रिषभजिनेसरजगधणिजी विचरंतादेसविदेश, सेत्रुंज-सिखरेसमोसर्याजी, आव्या इंद्रनरेश ॥ गु० ॥ २ ॥ सम-वसरणसुरवररच्योजी, बेठात्रिजगभाण ॥ तीरथमहिमादाखि-नेजी, पुंडरीक मनआण ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रभुभाखे गणधर भणीजी, इणतीरथपरभाव ॥ सिवकमलातुमे पामसोजी, संवरी आतमस्वभाव ॥ गु० ॥ फागुणशुदिपूनिमदिनेजी, अणसणकी-धोसुजाण । पांचक्रोडपरिवारसुंजी, पुंडरीक सुखखाण ॥ गु०

॥ ५ ॥ चेत्रीदिनकेवललहीजी, पाम्योजवनोपार ॥ पुंमरीकते-
हथीथयोजी, नाम एहसुखकार ॥ गु० ॥ ६ ॥ चैत्रीदिनतप-
कीजीयेजी । पूजाविविध प्रकार ॥ दशवीशत्रीशचालीसनीजी ।
पंचासनी करोसार ॥ गु० ॥ ७ ॥ कार्त्तिकीपूनिमदिनेजी,
द्राविम वारिखिल्लजाण । सिद्धिवधुरंगेवस्याजी, दशक्रोमीगुण-
खाण ॥ गु० ॥ ८ ॥ पूनिमदिनचारित्रनोजी, आराधनसुवि-
चार, जावजले आराधताजी, पामेजवनोपार ॥ गु० ॥ ए ॥
दर्शनज्ञानचारित्रनीजी, तिथीजाखी जिनराज, सेवंतासिवसं०
पजेजी, सारेवंछितकाज ॥ गु० ॥ १० ॥ चंद्रोदयसमजाणि-
येजी, पूरणधरमसुजाण ॥ जिनकृपाचंद्रसूरिसदाजी ॥ सेवो-
गुणमणिखाण ॥ ११ ॥ इति पूनिमसज्झाय संपूर्णा ॥

॥ घुमर देशी ॥ सरसति सामणी समरीने, एतो सद्गुरू-
चरण नमीनेहे माय, पर्युषण गुण वरणवुं, एतो शास्त्र मांहि
सुणीनेहे माय ॥ १ ॥ पर्व आराधो जवियणा, एतो सहु पर्वमां
सिरदार है, माय तीर्थोमां शेत्रुंजगिरि, एतो मंत्रोमां नवकार
है, माय० पर्व आ० ॥ २ ॥ देवमां वीतराग देव छे, एतो
गिरिमांहि मेरू कहायो हेमाय, नदीयांमें सिरोमणी, एतो
गंगा नाम धरायो है, मा०, पर्व० ॥ ३ ॥ कल्पवृक्ष चिंता-
मणि, एतो कामगवी अधिकारी हे माय, इमहीज पजुषण वलि,
एतो सेवो जविक सुखकारी है, मा० पर्व० ॥ ४ ॥ कल्पसूत्र
सुणोइकमना, एतो एकवीश वार मनुहारी है, मा० जवसाग-
रतरवातणो, एतो उपायकह्यो गणधारी है, मा० पर्व० ॥ ५ ॥
आश्रवपांचेपरिहरि, एतो कषायचउ निवारीहैमाय, दानादि-

कधर्मसेवीने, एतोजिनपूजादिलधारीहे, मा० पर्व० ॥ ६ ॥ जिनदरशन अधिकारमे, एतो आरद्रकुमर अधिकारी है, मा० दरसनफरसनयोगसें, एतो चरण करणगुणधारी हे मा० प० ॥ ७ ॥ अमारीपरूह वजमावीयै, एतो आठदिवस मनुहारी है, मा० जिनकृपाचंद्रसूरि नणे, एतो पर्व सेवोइकतारी हे, मा० प० ॥ ८ ॥ इति अठाहि सझायसं० ॥

॥ ज्ञानादिक गुण संपदारे ए देशी ॥

पर्व पजुषणआवीयारे, सर्वजीवने सुखकार, पूरव पुन्य, पसाउलेरे, लह्यो मानव अवतार, सुज्ञानी सेवज्योरे, सेवज्यो पर्व प्रधान, सुज्ञा० ॥ १ ॥ चैत्यजुहारी नावथीरे, देववंदन दिलधार, द्रव्यनाव पूजा करोरे, यथाशक्ति निरधार, सुज्ञा० ॥ २ ॥ चउत्थ छठ अठम करोरे, पक्खमण वलि मास, उपवास करो शुन नावथीरे, लहो अक्षय सुखवास, सुज्ञा० ॥ ३ ॥ दानदेवो सुपात्रनेरे, सीयलपालो, मनरंग, कर्मक्षय कारण कह्योरे, तप उत्तम विधि संग, सुज्ञा० ॥ ४ ॥ ज्ञान नक्ति करवा नणीरे, कल्पसूत्र पधराय, रात्रि जागो रंगथीरे, धवलमंगल, बरताय, सुज्ञा० ॥ ५ ॥ वरघोमेमां संघमलीरे, हय गयरहवर साथ, चउविह वाजित्र वाजतारे, आपो सुगुरूने हाथ, सुज्ञा० ॥ ६ ॥ सुर्यजशा जिम तप करोरे, जिनआणा दिलधार, कल्पसूत्र सुणो इकमनारे, पूजा प्रनावना सार, सुज्ञा० ॥ ७ ॥ नव इग्यारे तेरे सुणोरे, वाचना श्रुत अनुसार, जिनकृपाचंदसूरि सदारे, नव नव धर्म आधार, सुज्ञा० ॥ ८ ॥ इति पजुषण सझायसं० ॥

॥ आज आपैं चालो सहिया सिद्धाचलगिरिजइये ॥
॥ ए देशी ॥

॥ पर्व पजुषण आव्या सजनी, चालो आपण जइये, देवगुरूना दरसण करीनें, मनवांछितफललइयेरे पर्व० ॥ १ ॥ अठाहि में अमरपलावी, जीव जयणा वर्तावी, सर्वजीव सुखकारी जगमे, जैनधर्म मन लावीरे प० ॥ २ ॥ कल्पसूत्र वरघोलो करीने, सुणो वखाण चितलायी, परिवारे दिन मंगलकारी, वीरजन्म सुखदायी रे, प० ॥ ३ ॥ सिद्धारथ राजा घर सुखकर, दिगकुमारी मिलआइ, सूतिकर्मकरी प्रभु मातानें, स्नानकरावे वरदाइरे प० ॥ ४ ॥ चोसठइंद्र सुमेरुसिखरपर, स्नात्रकरे रंगलाइ, बत्रीसक्रोड सोनइया वरसाके, प्रभुजीने निजघरलाइरे प० ॥ ५ ॥ बालपणे आमलकीक्रीडा करि, महावीर नाम पायो, लेखकशाळा जइने आव्या, जय जयकार वरतायोरे प० ॥ ६ ॥ मिगसरवदि दशमी दिन दीक्षा, लीनी मनमां उमंगे, परिषहरिपुबलदूरनिवारी, केवल लह्यो सुखसंगेरे प० ॥ ७ ॥ चउविहसंघने थापीजगतगुरु, विचर्‍या देशविदेश, कातिवदि अमावस राते, सिवपदपाम्यो जिनेशरे प० ॥ ८ ॥ षटकल्याणक वीर प्रभुना, भद्रबाहु स्वामी भाखै, श्रीजिनकृपाचंदसूरिसेवो, कल्पसूत्रनी साखेरे प० ॥ ९ ॥ इति एकमनी सज्झायसं० ॥

॥ श्री जिनवाणिरे धन्ना ए देशी ॥

॥ पास सोभागीहोजिनजी, तुमथी रढलागी मोराजिनजी, दशभवकैरोरे संबंध सोहामणो ॥ १ ॥ वणारसी नगरी होजि-

नजी, जनम्याछैसुखरी मोरा जिनजी, पोषदशमी कल्याणक-वीजोथयो ॥ २ ॥ इग्यारस दीक्षाहो जिनजी, कमठने दीधी-सीक्षा मो० जि० केवल पामीरे सिव रमणीलही ॥ ३ ॥ नेमि-जिनेसरहो जि० जगपरमेसर मो० जि० सोरी पुरमांरे प्रभुजी जनमीया ॥ ४ ॥ गिरनार उद्यानमेहो जि० दीक्षा सुखखान मो० जि० राजीमतीतजी संजमआदर्यो ॥ ५ ॥ केवल पायोहो जि० सुजससवायो मो० जि० संघथापीने प्रभुजी विहरीया ॥ ६ ॥ रथनेमी समजावीहो जि० वम्यो आहार वतावी मो० जि० राजीमतियै संयम आदस्यो ॥ ७ ॥ वस्त्र सुकावेहो जि० रहनेमीने ऊढलावे मो० जि० कर्मखपावी विहुं मुगते गया ॥ ८ ॥ नेमी जिनराजहो जि० मुक्ति सिर-ताज मो० जि० सहसवरसनो आयु पालीने ॥ ९ ॥ तेवीश आंतरा जाणो हो० जि० चोथे आरे प्रमाणो मो० जि० श्रीजिनकृपाचंदसूरि पर्व सेवोसदा ॥ १० ॥ इति वीजनी पर्यु-षणानी ॥ स०

॥ धारणी मनावेरे मेघकुमारनेरे ए देशी ॥

आदीसर अलवेसरने नमीरे, सद्गुरु चरण पसाय, सिझाय-कहस्युंरे पर्युषण तणीरे, सुगुणा जनमनलाय ॥ १ ॥ भविजन सेवोरे पर्वसोहामणोरे, वांछितफल दातार, लोकिक लोकोत्त-रमां इणसमोरे, दूजो नहि सुखकार, भवि० ॥ २ ॥ त्रीजे आरे प्रथमजिनेसररे, उपन्या भरतमझार, नाभिकुलगरमरु देवाभलीरे, जिण जाया जगदाधार भवि० ॥ ३ ॥ इक्ष्वाक-वंशथाप्यो इंद्र आवीनेरे, परणाव्या दोय नार, जुगलाधर्म-

निवारण कारणेरे, परावरतन कीधो सार ज्ञवि० ॥ ४ ॥ राज्य पामीने प्रज्ञुजी थापिनेरे, लोक तणोव्यवहार, ज्ञरतादिक सो पुत्रने सीखवीरे, वहुत्तरकला मनुहार ज्ञवि० ॥ ५ ॥ ब्राह्मी सुंदरी बिहुं कन्यांज्ञणीरे, लिखनकला विस्तार, आजीविकाना कारण सीखव्यारे, शिल्प कर्मादिक सार, ज्ञयि० ॥ ६ ॥ ज्ञरतादिकने राज देइनेरे, प्रज्ञु लीनो संजमज्ञार, वरसीतपपारणो आखातीजनेरे, करावे श्रेयांस कुमार ज्ञवि० ॥ ७ ॥

केवलपामी संघथापना करीरे, अष्टापद गिरिईश, दशसहसमुनिवर परिवारसुंरे, शिवरमणीवर्या जगदीश ज्ञवि० ॥ ८ ॥ ज्ञरतादिक सो पुत्रो पामीयारे, सिव बधुकेरो साथ, स्थविरतणो चरित्र सांज्ञलीरे, पामो सुकृत आथ, ज्ञवि० ॥ ए ॥ शुज्ञ उगणीसे सितोत्तर समेरे, वरुोदे कीधचोमास, कीनीरचनारलियायतथयारे, पजुषणनी ज्ञास ज्ञवि० ॥ १० ॥ श्रीखरतरगण जगमां दीपतोरे, ज्ञानादिगुणमणिखाण, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवो सदारे, पर्वए जिनवरणवाण ज्ञवि० ॥ ११ ॥ इति तीजनी सफाय ॥ संपूर्ण ॥

॥ त्रिशलाना जायारे महावीर अमघर आवजो ए देशी ॥

सद्गुरु म्हारारे मोहन गारारे, वीनती सांज्ञलो, सांज्ञलीने गुरु करो सेवकप्रतिपाल, स० बिरुद घणेरारे निसुण्या तुमतणा, तुमछो प्रज्ञु आतमना रखवाल, स० ॥ १ ॥ जिनसासन जगमां जयो, सर्वजीव सुखकार, जंगम सुरतरु प्रगटीयो, सद्गुरु तारणहार, तुमछो गुरु सबजनने सुखआल ॥ स०

॥ २ ॥ पंचनदीपर साधीया, पांचपीर परधान, सोभाव्यो जिनधर्मने, सार्यो वंछितकाम, करो प्रभुवांछितपूरण दयाल, स० ॥ ३ ॥ जीती चोसठ जोगिनी, वसकीया बावनवीर, झबकाकरती बीजली, स्थंभित करी गुणधीर, करजो प्रभु अमची सार कृपाल, स० ॥ ४ ॥ प्रतिबोध्या नरनारिने, शासन शोभा वधार, चारित्र पाली निरमलो, स्वर्ग लह्यो सुखकार, तुमे प्रभु संपदा पामी रसाल, स० ॥ ५ ॥ युगप्रधान जग परगडो, अंबा अक्षरदीध, जगगुरु चिंतामणिसमो, मनवांछित फल-लीध, सहुना मनवांछित पूरो रसाल, स० ॥ ६ ॥ इत्यादिक जशगुरुतणो, जाणे सकलजहान, परचा जगमे परगडा, सेवे रावराजान, सेवानो फल तुरत लहे निहाल, स० ॥ ७ ॥ संघ-उदय करो साहिबा, दया करी गुरुराज, अलिय विघन दूरे हरो, पूरो सहुजन काज, पूरीने प्रभु मेटो भव जंजाल, स० ॥ ८॥ गामगाम गुरु शोभता, थुंभघणा महिराण, भावे सेवै भवि-जना, सदा सुरंगे वाण, तुमठो गुरु भक्ततणा रिछवाल, स० ॥ ए॥ सदगुरु समजग को नही, जीवन प्राण आधार, कामित पूरण सुरगवि, सुखकारण दिलधार, गुणनिधि अमचा परम कमाल, स० ॥ १० ॥ श्रीजिनदत्तसूरीशरु, मणियाला जिन-चंद । कुशलकरण कुशलेसरु, प्रणमें जिनकृपाचंद, करजो प्रभु शासननी संभाल, स० ॥ ११ ॥ इतिश्रीदादासाहेबस्तवनं॥

॥ अथ दश अच्छेरानी सज्झाय ॥

॥ नंदीसर बावन जिनालय—ए देशी ॥

अरिहंत देवने नमन करीने, गाऊं गुण गुरुजननारे, सर-

सतिनो समरण करी चित्तमां, अछेरानी कहुं वरणनारे ॥ १ ॥
सुणो सुणो सुगुण श्रीजिनशासन, जेहथी करणपवित्ररे,
जीवाजीवस्वरूपने ज्ञाने, जाणपणो जगमित्ररे सु० ॥ २ ॥
उत्कृष्ट अवगाहना सीधा, इकसमय एकसो आठरे, रुषन्न
देव नवाणु पुत्रो, नरतना पुत्र वली आठरे सु० ॥ ३ ॥ पहलो
एह अछेरो जाणो, बीजो हरिवंस कुलनोरे, जुगलिया नरक
गया ते कारण, अछेरो थयो एहुनोरे सु० ॥ ४ ॥ सात अंत-
रमांही असंजतीनी, पूजा थई ते त्रीजोरे, सुविधिजिनेसरथी
सांतिलग, अछेरक ए गणजोरे सु० ॥ ५ ॥ कृष्ण गयो धातकी
खंरुमां, संखशब्दकरी मलियोरे, चोथो अचरिज ए कहि-
वाणो, तिहांथी पाछो फरियोरे सु० ॥ ६ ॥ मल्लीजिनेसर
स्त्रीतीर्थंकर, पांचमो आश्चर्य कहियेरे, निन्न निन्न समय ए
पांच, अचरज शास्त्रथी लहियेरे सु० ॥ ७ ॥ पहली प्रज्नुनी
देशना निष्फल, चमरनो थयो उत्पातरे, गोशाले तेजो लेश्या
मूकी, समवसरण मुनिघातरे सु० ॥ ८ ॥ चंद्र सूरज मूलगे
रूपे, आया वांदवा काजेरे, ब्राह्मणी कूखे उपना चरमजिन,
दशमो अचरिज छाजेरे सु० ॥ ए ॥ पांच अछेरा महावीरनी
वखते, हुवा इण विधजाणोरे, प्रथमनां मेल्यां दशनीसंख्या,
इम करी मनमां आणोरे सु० ॥ १० ॥ अनंतकाल गया ए
होवे, तेह आश्चर्य कहेवावेरे, अघटित घटित जो कहे लोको,
तिमअचरिज मन नावेरे सु० ॥ ११ ॥ वीरप्रज्नुनो शासन
जयवंतो, मोक्षतणो ए कारणरे, श्रीजिनकृपाचंन्द्रसूरि सेवो,
नव नव दुःखनो वारणरे, सु० ॥ १२ ॥ इति अछेरासज्झायस०॥

॥ रोहिणीसज्झाय ॥

॥ धारणी मनावेरेमेघकुमारनेरे ए देशी ॥

चंपानयरीजगमांदीपतीरे, अंगदेशमें जाण। मघवाराजाराज्य करेतिंहारे, दिनदिनवधतेवान ॥ १ ॥ ज्ञविजनसुणजोरे रोहिणी तपतणोरे, महिमा अगमअपार, लखमीनामे पटराणीरायनीरे, रूपवती सुकुमार, ज्ञवि० ॥ २ ॥ आठ पुत्र जायातिणेसुंदररूरे, देवकुमरअनुकार तेउनेऊपरे कुमरी अवतरीरे, रोहणीनाम उदार, ज्ञवि० ॥ ३ ॥ चित्रसेनपरणयोस्वयंवररे, इमज्ञोगवतां ज्ञोग, आठ पुत्र च्यार पुत्रीऊपनारे, पुन्यतणे संयोग, ज्ञवि० ॥ ४ ॥ क्रीमाकरतांवालखेलावतांरे रोहणीये दीठी एक नार, पुत्र मरणथी तेह विलपतीरे, आंसुनीवहे धार, ज्ञवि० ॥ ५ ॥ रोहिणीहसतिराजानेकहेरे, एनाचेकिमनार, राजा कहे ए पुत्र वियोगथीरे, तुं नही जाणे डुखदार, ज्ञवि० ॥ ६ ॥ इम कही राजा सुतने नांखीयोरे, हाहारवथयोतेण, रोहणीकहे पुत्र नीचे किम गयोरे, राजारोवेडुहेण, ज्ञवि० ॥ ७ ॥ सासणदेवतसिंघासणठव्योरे, नाटककरे वहुज्ञांत, राजा मनमां चिंते ज्ञानिगुरु मलेरे, तो पुढुं सुतवात ॥ ज्ञवि० ॥ ८ ॥ ज्ञानिपधार्यारे राजा वीनवेरे, सुतपूरवज्ञवस्वाम, पूरवज्ञवमांरोहिणीतपकर्योरे, तेहनो फलसुखकाम, ज्ञवि० ॥ ए ॥ राजाराणीतपविधिआदरीरे, उज्जमणोकरे खास, पुत्रसहितरायराणीदीक्षालेवेरे, वासुपूज्यजिनेसरपास, ज्ञवि० ॥ १० ॥ कर्मखपावीसहुसिद्धिलह्यारे, राजादिकसुखकार, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवोसदारे, तपउत्तमजयकार, ज्ञवि० ॥ ११ ॥ इतिरोहिणीसज्झायसं० ॥

अथ श्री जंबुद्वीपनी वा पूनमनि सज्झाय प्रारंभः ॥

जंबुद्वीप सोहामणोरे लाल, लाख जोजन परिमाणरे, सुगुण-नर, पूनिमशसिसम जाणियरे, लाल आकार एह पहिचाणरे, ॥ सु० ॥ १ ॥ वारिजाउं वाणि जिनतणीरे, ॥ ला० ॥ हुं जावुं वार हजाररे, ॥ सु० ॥ गु० ॥ वीरजिणंदै दाखवीरे ॥ ला० ॥ जंबूपन्नती मझाररे सुगुण० ॥ २ ॥ नवखेत्रे करि सोभतोरे, भरतादिकमनुहाररे ॥ सु० ॥ कुलगिरिपरवत अंतरेरे ॥ ला० ॥ रह्या मर्यादा धाररे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ३ ॥ महाविदेहे बिचराजतोरे, मेरुसुदर्शन जाणरे ॥ सु० ॥ लाख जोजन ऊंचो कह्योरे, गजदंताचार पहिचाणरे ॥ सुगु० ॥ वा० ॥ ४ ॥ षट् द्रह गिरिवर सहु भलारे, दोयसै गुणहत्तर गहरे ॥ सु० ॥ निवेनदी मोटी कहीरे ॥ ला० ॥ बीजी परि-वारनी तेहरे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कर्मभूमीमें मुनिवरारे, क्रोड सहस्स नव जाणरे ॥ सु० ॥ नवकोडी केवली नमुंरे ॥ ला० उत्कृष्टो परिमाणरे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ६ ॥ धर्म ध्यायनो जाणियेरे, चोथो भेद अभि रामरे ॥ सु० ॥ कृपाचन्द्र ध्याता थकारे ॥ ला० ॥ पामें अविचल धामरे ॥ सुगु० ॥ वारि० ॥ ७ ॥

इति जंबूद्वीपनी वा पूनमनी सज्झाय संपूर्ण ॥

अथ वीशस्थानक स्तुति लिख्यते ॥

आदीसर अलवेसर जगपति भविमनसायर चंदाजी, सेत्रुंज मंडण दुःख विहंडण अद्भुतज्योति सोहंदाजी, सुखसंपत्ति कारण जगतारण सेवै सुरनर इंदाजी, करुणाकर जिनवर उपगारी कामित सुरतरु कंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन आचा-

रजस्थविर पाठक मन आणो जी, साधु नाण दंशण दसमो पद विनय चारित्र वखाणोजी, ब्रह्मक्रिया तप गोयमजिनपद समाधि अपूर्वश्रुतजाणोजी, श्रुतभक्ति तीरथ प्रभावनवीस थानक पहिचानोजी ॥ २ ॥ श्रीमुखवीरजिनेसर भाखे एपद सेवो प्राणीजी, तीर्थंकर पद एहथी लहियै जिनआगमनी वाणीजी, ज्ञाताअंगे गणधरदेवै विवरीने घणी आणीजी, एआराधनथी सिवलहियै निरुपम सुखनिसानीजी ॥ ३ ॥ तीनकालपांचैशक्रस्तव देववंदनविधि कीजैजी, काउसग्ग परदक्षिणागुणनो विधिसुंजिनपूजीजैजी, खमासमण विहुं टंक परिक्कमणो स्तवनानित्य सुणीजैजी, कृपाचन्द्र सुयदेविपसाये मनवंछितफल लीजैजी ॥ ४ ॥

इति वीसथानक स्तुति ॥

अथ पंचमीनी थुइ लि० ।

नेमिजिनेसरजगपरमेसर, पंचमि गतिना दाताजी ॥ श्रावणसुदिपंचमिदिन जनम्या,-त्रिभुवनमें विख्याताजी ॥ समुद्रविजयनंदन, जगवंदन, सिवादेवीमाताजी ॥ सहसवरसप्रभु आयुषपाली, पाम्या सिवसुखसाताजी ॥ १ ॥ कातिवदि संभवकेवल पाम्यो, मगसर सुविधिजायाजी ॥ चैत्र चंद्रजन्म अजित संभव अनंत सुदि सिवपायाजी ॥ वैशाखवदि कुंथुजिनदीख्या, पंचमि जगत सुहायाजी ॥ धर्म धवलजेठ पंचमिसीधा सुरनरमिलजसगायाजी ॥ २ ॥ पंचमितपविधिभाखेजिनवर अर्थ अधिक सुखकारीजी ॥ सूत्रेगणधरगुरुशुभ दाखे, आगम मांहि सारिजी ॥ नंदिविधिकरी देवावांदीने

काउसग्गमनधारीजी ॥ इकावन ज्ञाननाभेदनमीने, श्रुतज्ञान-सेवो इकतारीजी ॥ ३ ॥ पडिक्कमणो दोयटंककरीने, ज्ञान आराधोप्राणीजी॥मगसरादि षट् मासमां उचरो, आगममांहि गवाणीजी। जिनआणाधारक, सुखकारक, खरतरगण श्रुत खाणीजी ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिपभणे, साशन देवी सुहाणीजी॥४॥

॥ इति पंचमीकी थुई संपूर्णा ॥

अथ अष्टमीनी थुई लि० ।

आठ प्रातिहारज जसुसोहे, मोहे भविजन चंदाजी ॥ चंद्र-प्रभु आठम दिन सेवो अनुभवरसना कंदाजी ॥ आठप्रमाद-तजीने, धारो परमातमपदसारोजी ॥ दीपनंदिसरयात्रा करतां, अरिहंतध्यानप्रकारोजी ॥ १ ॥ रिषभ अजित सुमति सुव्रत-नमि, सुपारससंभव आयाजी ॥ आदीश्वर दीक्षा अभिनंदन, नेमि पाससिवपायाजी ॥ भिन्नमासअष्टमी कल्याणक, तीन-कालमां जाणोजी ॥ आठजातिना कलशलेइने, स्नात्रकरे सुरराणोजी ॥२॥ आठै प्रवचनमातापालो दोषसर्वने टालोजी ॥ ज्ञानादिआठआचारसेवीने, आतमतत्वनिहालोजी ॥ वीर-जिनेसरअर्थप्रकासै, सूत्ररचैगणधारीजी ॥ आठमतपआरा-धिभविजन, आठवरस अधिकारीजी ॥ ३ ॥ पर्वतिथीमेंपो-षधभाख्यो, सिद्धांतछे जसु साखीजी ॥ पडिकमणोतपजप-आदरीयै, देववंदनविधिराखीजी ॥ आठमंगल आराधतां पावै, सुखसंपतिगुणभूरिजी ॥ श्रुतदेवीसुपसायलहीने, श्रीजि-नकृपाचंद्रसूरिजी ॥ ४ ॥

॥ इति आठम थुई संपूर्णा ॥

अथ इग्यारसनी थुई लि० ।

एकादसीआखीआदिदेवें, आराधिने जवि सिवशर्मलेवे ॥ धरोध्यान श्रीजिनराजकेरो । टले अनादिकालनो कर्महेरो ॥ १ ॥ मल्लिजन्मदीक्षाकेवलपहाणं । अरनाथ चारित्र नमि परमनाणं ॥ दशखेत्रना कल्याणक एम जाणो । दोरुसोने वलि त्रणसो पिछाणो ॥ २ ॥ इग्यारेवरसतिममासकीजै । आराधि अंगइग्यारह सुजस लीजै ॥ मौनमनधारी शुभधर्मकारी । श्रुतज्ञाननी भक्ति करिये विचारी ॥ ३ ॥ अठपोहरिपोषहकरि यथाशक्तें । तपजप करीउजमणोसुभक्तै ॥ इकचित्तध्यावै सुयदेवीपसायै । श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि सदासुखथायै॥४॥

॥ इति इग्यारस थुइ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदजीनी थुइ लि० ॥

श्रीसिद्धचक्रसुहंकरजाणो ध्यानएभविजन मनमां आणो आतमतत्व पिछाणो, निरुपम सिवसुखकारणजाणो आतमने निजघरमां आणो अविचलसंपदा खाणो ॥ श्रीपालराजा नवपद साधे सुरसुखपामी सेवि समाधे अरिहंतपद आराधे, मननोहन जिनगुणअगाधे दायक लायकसिद्धिअवाधे जगजशकीरतिलाधे ॥ १ ॥ बारे गुणकरि अरिहंतराजे सिद्ध आठ गुण गणिवर छाजे गुणछत्तीशविराजे । पचीशगुण उवज्झायाराजै सत्तावीसमुनिमहाराजे सेवीगुणसुसमाजे ॥ दर्शन ज्ञान चरण तप कहिये सिरुसठ इकावन सितर लहिये भेद पचाशक्रम कहियै, तेरसहशवलि गुणनो करियैचउवीसजिनपतिध्यानजधरियै इमभवसागर तरियै ॥ २ ॥ आसुमासनी सात-

मसेती नवआंबिलकरो सुखदैती, चेतरमासचहेती, नवओ-
लिशुधन्नावेलेति इक्याशीआंबिल सद्दुहेति बोधबीजनी-
खेति, श्रीश्रीपालने मयणाराणि हरषन्नरि हियरूं हुलसाणि
नवपद ध्यानधराणि, नवपदनीनित्य स्तवनाजाणि करोन्नवि-
कजन शास्त्रप्रमाणी आगममांहि गवाणि ॥ ३ ॥ त्रणटंकपां-
चशक्रस्तवकीजै दोयटंकआवश्यकलीजै काउसग्गनितकीजै,
खमासमण शुद्ध चितमां धारो प्रदक्षिणाकरी गुणसंन्नारो-
जिमछूटन्नवलारो, देवीचक्रेसरिसांनिधकारि विमलेसरपूरेआ-
सहमारि सिद्धचक्रविधिसारि, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरि न्नाखे जिन-
आणा मनमांहिराखे न्नवि सिवसंपदाचाखे ॥ ४ ॥

॥ इति नवपद थुइ संपूर्णा ॥

अथ नवपद थुइ ॥

" सिरिसिद्धचक्क सेवो न्नवियां, सुह संपय पावोअविच-
लिया ॥ १ ॥ सिरिअरिहाइ नवपयझावो, चउवीसजिणवइ-
गुणगावो ॥ २ ॥ नवआंबिल नवओलीकरिये, गुणनो-
जैति काउसग्ग धरिये ॥ ३ ॥ तीनटंक देववंदन कीजै, जिन-
कृपाचंद्रसूरि जशलीजै ॥ ४ ॥ इति नवपद थुइ ॥

सांतीनाथनी थुइ ॥

सांति जिनराया सर्वजीवसुक्खदाया, अचिरादेमायाजा-
या, विश्वसेनराया, जास गुणगणसोहाया, मृगलंछन
सुसोवन्नकाया, विश्वसेनराया, जास गुणगणसोहाया, मृगलंछन
पाया मोक्षमंदिर सिधाया ॥ १ ॥ पदम वासु विसाला रक्त
वर्णसुहाला, चंद्रप्रन्नुधवला सुविधिजिन सुक्खसबला, मुनिसुव्रत
सांमला नेमी जिनराज काला, मल्लिपारस नीला सोलजिन

राजपीला ॥ २ ॥ जिनवरनीवाणी मीठीसाकर समाणी, नवि-जनमननाणी, मोक्षनीछे निशाणी, नयगममनआणी सर्व नंग प्रमाणी, सेवो श्रुतखाणी जैनशास्त्रै वखाणी ॥ ३ ॥ शासनसुखदाइ गरुडराजा सहाइ,वांछितफलदाइ देविनिर्वाणी-माइ, जिनचरणसहाइ सर्वसंपत्ति कराइ कृपाचंद्रसूरिसदाइ संघमें शांतिवरताइ ॥ ४ ॥ इति शांतिनाथजी थुइ सं० ॥ ८ ॥

॥ वासुपूज्यरोहिणी थुइ ॥

वासुपूज्यजिनेशर वंदुमनधरि नेह, सुखसंपतिकारण आराधो गुणगेह, रोहणीतपकरतां पामेंनवनोपार, सातवरस सत्तावीश जघन्य उत्कृष्टदिलधार ॥ १ ॥ अतीत अनागत वर्तमान त्रिहुंकाल, सहुजिनवरप्रणमो आणीनावविसाल, जिनजन्ममहोछव सुरपतिकरे सुविचार, इम चोविशजिनवर पूजो विविध प्रकार ॥ २ ॥ चंद्ररोहिणीदिवसे तप आदरि-येसार, गुणनो प्रदक्षिणा खमासमण सुविचार, यथाशक्ति करिये चोविहार उपवास, चित्रसैन रोहिणीपरे पामेलीलवि-लास ॥ ३ ॥ पडिक्कमणो दोयटंक देववंदनत्रिहुंकाल, आठ पोहरिपोषध काउसग्ग सुविसाल सुयदेवि सांनिध रोग-सोगसहुजाय, जिनकृपाचंद्रसूरितपसेव्या सुखथाय ॥ ४ ॥ इति,

अथ पुनमनी थुइ ॥

श्रीसिद्धाचलतीरथसेवो, तीनजगतमां दूजो न एहवो,एहथी-शुनफललेवो ॥ श्रीआदीश्वरजिनवरराया, पूर्वनीवाणुं इण-गिरि आया, इंद्रादिकमननाया ॥ श्रीपुंडरीक प्रथमगण-धारी, पांचक्रोडमुनिवरपरिवारी, अणसणकर्योंहितकारी ॥

फागुणपूनिमसंलेखनाजाणो, चैत्रीदिननिरुपम गुणखाणो पाम्यापदनिरवाणो ॥ १ ॥ चैत्रीदिनदेववंदनकीजे, जाव-सहितप्रजुपूजारचीजै, जिनगुणगाइ जशलीजै ॥ तिलककरो प्रभुने दशवीश, चढता वलि तीश चालीश, पंचाशनी पूजा जगीश ॥ पुष्पअक्षतफल नेवेद्य सार, जिनवर पूजाविविध-प्रकार, धूपदीप मनुहार ॥ कलशअष्टोत्तरशतपूजाकरिये, चौवीश जिनवरध्यानज धरियै, जिमजवसागर तरिये ॥ २ ॥ चैत्रीदिनशुजवारमां लीजै, ॥ गुरुमुखथी एतपक्च रीजै, विधि-सहितवहीजै ॥ सोलवरस एतपआराधी, आतमगुणनिज संपदासाधी, पावे सहज समाधी ॥ तपपूरण उजमणोधारो, करिनेसासनसोजा वधारो, जिमहोवे जवनिस्तारो ॥ काउ-सग्गप्रदक्षिणाकरिये, गुणनोगुणी जिनगुण सांजरिये, आग-मविधिअनुसरिये ॥ ३ ॥ दोयटंकपडिक्कमणोकीजे, चैत्री-सेत्रुंजयात्राकरीजै, पुन्यजंडारजरीजै ॥ उहरीपालीजेनरजेटे, संघपतिथइ सहुडुखमेटे, जववनमे नविलेटे, बारहपूनिमपर्व-कहीजै, चारित्रतिथी शास्त्रमांहिलहीजै, चक्रेसरीसांनिधकीजे ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिराजै खरतरगछजिनआणाछाजै, सुखसं-पदासुसमाजै ॥ ४ ॥ इति चैत्रीपूनिमथुइ सं० ॥

॥ श्रीनेमिनाथजीनी थुइ लि० ॥

॥ नेमिजिनंदा पूनिमचंदा, समसुख सोजता, सिवादे जाया, सहुमनजाया, इंद्रादिकसेवता, सोरिपुरमें, त्रिजुवन सुखमें प्रजुपरमारथी, संघमे साता, जगनात्राता, धर्मनासारथी ॥ १ ॥ रिषजजिनेसर, जुवनदिनेसर, अष्टापदसिववस्या, वीरपावापुरी,

पूज्यचंपापूरी, निजकारजकस्या, गिरनारगिरिपर, नेमिजि-नवर, सिववधु करग्रह्यो, वीसजिनेसर, समेतसिखरपर, सिव-मंदिर लह्यो ॥ १ ॥ जिनवरवाणि अमियसमाणि, मिठीजिम सेलडी, अधिकसुहाणि, जविमनजाणि, अमृतरसवेलडी, जिनगुणगाति, समरसमाति, सुरवधुगावति, अनुजवसंगे, आतमजमंगे, निजगुणध्यावति, ॥ २ ॥ अंबिकादेवी सुजस-लहेवी, सुतदोयलालती, शासनदेवी सुरनरसेवी, संघरखवा-लती, गोमेधयक्ष, सांनिधदक्ष संघने कीजियै, जिनकृपाचंद्र सेविसूरिंद, जगमे जशलीजियै, ॥४॥ इति नेमिनाथ थुइ सं० ॥ पासजिनराया वामाजाया, नगरी वणारसी, अश्वसेनराजा, जग-मेंताजा, सवजनतारसी, वदिचोथदिवसे, चैत्रजगीसे, प्रजुजी अवतर्या, दशमीपोष, जगसंतोष, सव कारजसर्या, ॥१॥ प्रथम-जिनेसर, चारहजारे पास मल्लित्रयशत, वीर इकेला, षट्ट सत-साथे, वासुपूज्य अहिव्रत, जगणीस जिनपति सहससंघाते, संजम आदर्यो, कर्मखपावी, केवलपामी, निजकारजकर्यो ॥२॥ जिनपतिवाणी, मीठीजाणी, स्वर्गे सुरवेलडी, साकरखंडे गुलन-हि मंडे, पीलेरस सेलडी, डाखवनमांहे, अमृत अमराहे त्रणपसु चावती, एसहुलाजी, जिनगुणगाजी, इंद्राणी गावती ॥ ३ ॥ पारसयक्ष, कारजदक्षकरे सहुसंघनो, च्यारठेवाहु कछव साहु वरण सांमल वनो, देवीपद्मा, सुखनीसद्मा, दियेसुखसंपदा, जिनकृपा-चंद्र पन्नणे सूरिंद, सेवे सुरनर मुदा ॥४॥ इति पार्श्वनाथ थुई॥

॥ श्रीमहावीर स्वामी थुइ ॥

आषाढ शुदि छठी स्वर्गथी चवियाईश, आश्विनवदि तेरस

त्रिसलाकूखेजगीश, शुदि तेरस जनम्या चैत्रमास सुखकार, श्रीवीरजिनेसर वंदुन्नावउदार ॥ १ ॥ मिगसरवदि दशमी संजमसुं मनलाय, वैशाखसुदिमें केवल, दशमी न्नाय, काति अम्मावसि पाम्योपद निर्वाण, चोवीसै जिनवर आपो मुज-सुख खाण ॥ २ ॥ अरिहंत प्रकास्यो, उपधान तप श्रीकार, नवकार इरियावहि नमुत्थुणं मनुहार, अरिहंतचेश्याणं लोगस्स ऽव्यस्तवजान, सिद्धाणंबुद्धाणं मालसात उपधान ॥ ३ ॥ विधिसेतिवहिये गुरुमुखसुणि सुविचार, श्रीमहानिशीथे न्नाख्योए अधिकार सिद्धायिकादेवीवांछितदेंनिरधार, जिन-कृपाचंद्रसूरि तपसेव्या जयकार ॥ ४ ॥

॥ इति उपधान थुइ ॥

वीरजिनेंदे न्नाखीयो, उपधान तप विस्तार, सुत्रे गणधर साखियो, महानिशीथमकार, ॥१॥ पहलो वीसरू नवकारनो, इरिया वीसरूजाण, न्नावस्तव पेतीशनो, ठवणस्तवचउआण ॥२॥ लोगस अठावीसनो, दव्वत्थवछक्करूहोय, माला उपधान सातमो, सिद्धाणं बुद्धाणं जोय ॥ ३ ॥ सातन्नय निवारवा, सातकरो उपधान, क्रियाशुद्धकरवातणो, एह उपाय सुजान ॥ ४ ॥ विधियोगेआराधियेए, तप उत्तम सुखकार, जिन कृपाचंद्रसूरिसदा, आगमनो आधार ॥ ५ ॥

॥ इति चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ नवपदजी चैत्यवंदन लि० ॥

श्रीअरिहंतनाबारगुण, सिद्धना आठकहाय । छतीशगुण-सूरितणा । पचवीश कह्या उवज्झाय ॥ १ ॥ मुनिवरगुण सत्ता-

वीशछै, दरशण सत्तसठ जोय ॥ ज्ञान इकावनभेदछै, चारित्रसित्तर होय ॥ २ ॥ तप पचास गुणजाणियै, नवपदना श्रीकार ॥ एकंदर सहुध्याइयै, त्रणसैछयालीशसार ॥ ३ ॥ आंबिलकरि आराधियै, नवओलीसुजगीश ॥ त्रिकरणयोगे ध्यावतां, जिनकृपाचंदसूरीश इति नवपद चैत्यवंदनं ॥

॥ रोहिणीतप चैत्यवंदनं ॥ वासुपूज्यजिनवरनमुं, वारमजिनसिरताज, रोहिणीतप आराधतां, सारे वांछितकाज ॥१॥ चोविहारउपवासकरि, पूजक पूजीदेव, दोयसहसगुणनो करी, त्रिकरणथिरकरोसेव, ॥ २ ॥ सत्तावीशलोगसतणो, काउसग्ग दिलधार, खमासमण देइभावथी, प्रदक्षिणा सुविचार, ॥ ३ ॥ स्वस्तिक करि फलढोइयै, पूजाविविधप्रकार, जिन कृपाचंदसूरि सेवतां, पामे भवनोपार, ॥ ४ ॥ इति रोहणीतपनो चैत्यवंदन सं० ॥

अथ श्रीवीसस्थानक चैत्यवंदनं.

श्रीअरिहंत अनंत कांति सिद्ध निजगुणरामी, प्रवचन आचारिज स्थविर उवझाया हितकामी, साधु नाण दंसण नवम विनय चारित्र वखाणो, ब्रह्म क्रिया तप गोयम जिन वेयावच्च जाणो ॥ १ ॥ समाधि अपूर्वज्ञानग्रहै, श्रुतभक्तिनितसार, तीरथ प्रभावन वीसमो, निरुपम सुखदातार, प्रथम चरम जगदीश सकल सेवी लही संपदा, इक दो त्रण पद जपी वावीस जिनवर पदमुदा ॥२॥ ए विंशति थानक कह्या ए, ज्ञाताए जिनचंद, ए सेवनथी भवि लहे, त्रिभुवनपति कृपाचंद ॥ ३ ॥

॥ इति श्री वीसस्थानक चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री वीसविहरमानजीको चैत्यवंदन ॥

सीमंधर युगमंधर, बाहु सुबाहु जाण, सुजात स्वयंप्रभु
सातमा, ऋषन्नानन मनआण ॥१॥ अनंतवीर्यने सूरप्रभु, विमल
वज्रधर कहियै, चंद्रानन चंद्रबाहुजी, भुजंग नेम प्रभु लहियै
॥२॥ ईश्वर श्रीवयरसेनजी, महाभद्र जिनदेव, देवजस अजित-
वीर्यजी, सुरपति सारे सेव ॥ ३ ॥ पंच विदेहै विचरता ए, वीस
जिनेसर जाण, कृपाचंद त्रिहुं कालमें, नमतां कोरु कल्याण॥४॥

॥ इति वीस विहरमानजी चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन ॥

सिद्धाचल सेवुं सदा, सहुतीरथ सिरदार, सोरठदेश
सोहामणो, तिहां ए गिरिवरसार ॥ १ ॥ तीनभुवनविच
एहवो, तीरथ कोइ न होय, श्रीमंधर वयण करी, शेत्रुंज
महातम जोय ॥ २ ॥ श्रीयुगादि जिनराजजी, समवसर्या इण
ठाम, तेहथी ए तीरथ वरो, अविचल सुखनो धाम ॥ ३ ॥
काति पूनिम दशकोरुसुंए, द्राविड़ वारिखिल्ल जाण, सिद्धिवधू
रंगे वर्या, कृपाचंद मनआण ॥ ४ ॥

॥ इति सिद्धाचलजी चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री वीरजिन चैत्यवंदन ॥

चोविसम जिनवर नमुं, महावीर जिनदेव, शांति सुधा-
मय चंदलो, सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥ भद्रेसरमें दीपतो, देरा-
सर मनुहार, वीरजिनेसर जगजयो, बावन देहरी सार ॥ २ ॥
त्रिसलानंदन जग धणीए, सुख संपति करतार, त्रिकरण योगे
प्रणमतां, कृपाचंद सुखकार ॥ ३ ॥

॥ इति श्री वीरजिन चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री नेमिजिन चैत्यवंदनप्रारंभ ॥

नेमिसर जिन जगधणी, रैवतगिरि सिणगार, यादवकुल नभ दिनमणि, भवियण ने सुखकार ॥ १ ॥ तीनकल्याणक इहां थया, दिक्षानाण निरवाण, भव्य मनोरथ पूरवा, चिंता मणी समजाण ॥ २ ॥ शिवरमणी रंगे वर्या ए, बावीसम जिनचंद, कृपाचंद नितप्रति नमै, शिवसुखतरूनो कंद, ॥३॥

॥ इति नेमिजिनचैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री पुंडरीक गणधर चैत्यवंदन ॥

रिषभ जिनेश्वर रायना, पहिला गणधरदेव, पुंडरीक नामे सदा, सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥ चैत्रीदिन शिवपुरलह्या, पांचक्रोड परिवार, पुंडरीक तेहथी थयो, प्रगट नाम सुखकार ॥ २ ॥ आअवसरपणिकालमेए, प्रथमसिद्ध अभिराम, कृपाचंद गिरिराजने, प्रतिदिन करे प्रणाम ॥ ३ ॥

॥ इति पुंडरीक गणधर चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री चतुर्विंशति जिनलांछन चैत्यवंदन ॥

रिषभ वृषभ गज अजितने, संभव घोडो जाण, अभिनंदनने वांदरो, कौंच सुमति मनआण ॥ १ ॥ पद्म पद्म स्वस्तिक सुपार्श्व, शशिचंद्रप्रभ लहिये, मकर सुविधि शीतल श्रीवत्स, श्रेयांस खडगी कहिये ॥ २ ॥ वासुपुज्य महिषतणो, विमल वराह नो जाणो, अनंत श्येन वज्र धर्मने, शांति मृग पहिचानो ॥ ३ ॥ कुंथुनाथने बोकडो, अर नंद्यावर्त होय, मल्लीघट सुव्रत काछवो, नमि निलोत्पल जोय ॥ ४ ॥

नेमि संख फणि पार्श्वने, वीर सिंह कहाय, कृपाचंद्र ध्वज युतनसुं, चउवीसे जिनराय ॥ ५ ॥

॥ इति चतुर्विंशतिजिनलांछन चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥

॥ पूनिमनो चैत्यवंदनं ॥

श्रीजिनसासन जगजयो, पर्व सिरोमणिजाण, पूनिमपर्व मोटो कह्यो, त्रिकरणशुचिमन आण ॥ १ ॥ श्रावणसुदि पूनिमचव्या, मुनिसुव्रत जगदीश आसोजीपूनिमचव्या, नमित्रिहुं जगनाईश ॥ २ ॥ मिगसरपूनिम संभव, संयमलीधोसार, पौषी धर्म जिनेसरु, केवल ज्ञानउदार ॥ ३ ॥ चैत्री श्री पद्मप्रभु, केवल ज्ञान प्रधान, इम पूनिममांजाणीये, कल्याणक सुखकार ॥ ४ ॥ दशवीशत्रीश चालीशनी, पंचाश पूजासार, फलअक्षत नैवेद्यनी, पूजा विविध प्रकार ॥ ५ ॥ चैत्रीसेत्रुंजसेविये, जात्रा करी मनरंग, तिमकार्तिकी आराधिने, करो सद्गुरुनोसंग ॥ ६ ॥ बारहपूनिम आराधियेए, श्रीयुगादिजिनदेव, जिनकृपाचंद्रसूरि सदा, सुरनरसारेसेव ॥ ७ ॥

॥ इति पूनिम चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ सोलम जिनवर सेविये, शांतिनाथ सुखकार, अचिराउदरे ऊपना, भाद्रववदिसातमसार ॥ १ ॥ जेठवदितेरसप्रभु, जनम्या जगतदयाळ, मारिनिवारणथी थयो, शांतिनाम सुरसाल ॥ २ ॥ चक्रिपद पाम्यो प्रभु, चउदशसंजमलीध, पौषसुदि नवमीदिने, केवल सर्व प्रसीध ॥ ३ ॥ जनमदिवस प्रभु पामीयो, सिवसुख परमपवित्र, लाख वरसनो आउखो, सुणोश्री सांतिचरित्र ॥ ४ ॥ मृगलांछन सेवितसदा, गरुरुय-

द्रअभिराम, जिनकृपाचंद्रसूरि सेवितां, निर्वाणी पूरेकाम ॥५॥

॥ इति सांतिनाथजी चैत्यवंदन ॥

॥ वामानंदनपासजी, अश्वसेनकुलचंद, नीलवरणशुचि देहमी, सेवे सुरनर इंद ॥ १ ॥ चैत्रवदि चोथ ऊपना, माता कूखे स्याम, पोषदशमी जनम्या प्रभु, त्रिभुवन जन विसराम ॥ २ ॥ इग्यारस दीक्षा ग्रही, कमठ हरावी ईश, चैत्रकृष्णनी चोथने, केवल लह्यो जगीश ॥ ३ ॥ संघथापीने जगगुरु, विचर्या देशविदेश, वाणारसी नगरी थया, चउकल्याण विशेष ॥ ४ ॥ आषाढसित आठमे, सिववधु झाल्यो हाथ, जिनकृपाचंदसूरिसदा, सेवो जगना नाथ ॥ ५ ॥

॥ इति पारसनाथ चैत्यवंदन ॥

वीर जिनेसर जगधणी, त्रिशलानो जायो आषाढशुदिषष्ठी प्रभु, देवानंदा उदरे आयो ॥ १ ॥ आश्विनवदि त्रयोदशी, हरणेगमेषी ईश, त्रिशला उदरे संक्रम्या, चवदे स्वप्न लहीश ॥ २ ॥ चैत्रशुक्ल त्रयोदशी, जन्म थयो सुखकार, चौसठ इंद्र आव्या तिहां, स्नात्रकरे विधिसार ॥ ३ ॥ वर्धमान नाम आपीयो, बृद्धितणे अनुमान, मिगसरवदि दशमीलीयो, संजम सुखनी खान ॥ ४ ॥ वैशाख सुदि दशमी दिने, केवल पाम्यो सार, पावापुरी मुगते गया, दीवाली सुखकार ॥ ५ ॥ इमकल्याणक प्रभुतणा आराधे नरनार । जिनकृपाचंद्र सूरि कहे, पामे भवनो पार ॥ ६ ॥

॥ इति श्री महावीर स्वामी चैत्यवंदनं ॥

॥ शुद्धाशुद्धिपत्रकम् ॥



पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्धि.	शुद्धि.
४	७	पासजिणंद	पासजिनेंद
४ए	१३	परवर्तन	परावर्त्तन
५३	१५	कइ	इक
६३	१२	सकली	सफली
६५	२१	चौमुखवा	चौमुखवावि
७०	१६	श्रीसं	श्रीसंघ
७४	१२	जाणातां	जाणता
७ए	२३	नाप्रवादण	नाणप्रवाद
१०६	२	चित्तमकार	चित्तमकारए
१०७	२	राजा०	०
१२५	११	निराकारा	निराकार
१२७	८	आविवो	आवियो
१३०	१८	ऊढण पाटंबर ॥१ए॥	॥ १५ ॥ ऊढण पाटंबर
१३१	१८	निहाके	निहाले
१३३	२३	जेसलगिरि	जेसलमेरि
१३६	३	नवविधि	नवनिधि
१३ए	१५	निवारय	निवारइ
१४३	२३	अगावेन्न	अगावन

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्धि.	शुद्धि.
१४४	८	श्रीधर	श्रीघर
१४४	२१	अठवन	अठावन्न
१४४	२२	पूजअष्टप्रकार	पूजाअष्टप्रकार
१४४	२३	ज्ञानो पगरण	ज्ञानोपगरण
१४५	२	इछारोधन	इछारोधन
१५२	७	ज्ञानदिवोक०	ज्ञानदिवाक०
१५२	१२	॥७॥ पणपाठेंकहीए	पिणपाठेकहिए ॥ ७ ॥
१५४	२०	किहां	कियां
१५६	२०	नेमिनाथं	नमिनाथं
१६६	२	अवर	अंवर
१६६	ए	मुनतान	मुलतान
१६७	२	वंछितगावे	वंछितपावे
१७४	२८	सुहंकार	सुहंकर
१७७	११	मानमां	मनमां
१८०	२१	उपचरै	उपचारै
१८२	७	अंतरेजामी	अंतरजामी
१८४	७	चैत्री	चैत्र
१ए२	२२	सहसपरण	सहसफण
१एए	ए	सारणा	सारण
२१२	२४	वांछित	वांछित
२१२	२१	नीरयामक	निरयामक

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्धि.	शुद्धि.
२२१	१७	पांचा	पंच
२२४	२१	ज्ञरतनो पूत्र	ज्ञरतनो पुत्र
२२ए	२०	सूजाण	सुजाण
२४ए	२१	सुणखाण	सुखखाण
२ए१	२१	सुरसालरे	सुरसालरे
२ए४	१६	ज्ञव्यचकोरनैर	ज्ञव्यचकोरनैरे
२६४	१०	विनयट	विनय
२६७	१ए	सकचंद	सकलचन्द
२०१	३	परहरे	थरहरे
३२७	२१	ष्टिहोय	वृष्टिहोय
३३६	६	सुदेव	कुदेव
३४६	१०	तनुगीराग	तनुनिराग
३४७	२१	देवचंदेतह	देवचंद तेह

